श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

सिनगार

श्री किताब महासिनगार की जो हुकमें बरनन किया

मंगला चरण

बरनन करो रे रूहजी, हकें तुम सिर दिया भार।
अर्स किया अपने दिल को, माहें बैठाओ कर सिनगार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तुझे श्री राजजी महाराज ने अपने सिनगार को वर्णन करने का अधिकार दिया है। हम रूहों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बनाया है, इसलिए अपना सब तरह से सिनगार सजकर श्री राजजी महाराज को अपने दिल में बिठाओ।

रूह चाहे बरनन करूं, अखंड सरूप की इत।
सुपने में सत सरूप की, किन कही न हक सूरत।। २ ।।

मेरी आत्मा चाहती है कि श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप का वर्णन संसार में करूं, क्योंकि इस झूठे संसार में अखण्ड स्वरूप श्री राजजी महाराज की हकीकत किसी ने नहीं बताई।

रात दिन बसें हक अर्स में, मेरा दिल किया अर्स सोए।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, ऐसा हुआ न कोई होए।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज हमेशा ही अपने अर्श में रहते हैं। अब उन्होंने मेरे दिल को अपना अर्श बनाया है, इसलिए मुझे संसार में क्यों न उनकी साहेबी मिले? क्योंकि आज तक कोई ऐसा हुआ ही नहीं और न कोई होगा, जिसके दिल में पारब्रह्म विराजमान हुए हों।

किन कायम द्वार न खोलिया, अव्वल से आज दिन।
जो कोई बोल्या सो फना मिने, किन पाया न बका वतन।। ४ ।।

दुनियां जब से बनी है आज दिन तक किसी ने भी अखण्ड भूमि की पहचान नहीं कराई। जिस किसी ने कुछ कहा भी है तो सब संसार के अन्दर ही की बात बताई है। अखण्ड वतन की सुध किसी को नहीं मिली।

अर्स बका हक बरनन, सो बीच फना जिमी क्यों होए।
अव्वल से आज दिन लगे, बका सब्द न बोल्या कोए।। ५ ।।

जबसे दुनियां बनी है तब से आज दिन तक बेहद की वाणी किसी ने नहीं बोली तो फिर इस झूठी मिटने वाली जमीन पर अखण्ड परमधाम का तथा श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन कैसे हो?

Nijanand App

ए चेतन कहावे झूठी जिमी, सो सब जड़ तूं जान।
जो थिर कहावे अर्स में, सो चेतन सदा परवान।। ६ ।।

इस संसार में जो चेतन कहलाते हैं वह भी सब जड़ हैं, अर्थात् मिटने वाले हैं। जो परमधाम में स्थिर कहलाते हैं (महल, वृक्ष, आदि) वह सब सदा ही चेतन और अखण्ड हैं।

ए झूठी रवेसें और हैं, और अर्स में और न्यामत।
ए किया निमूना अर्स जानने, पर बने ना तफावत।। ७ ।।

इस संसार की झूठी रस्में अलग हैं और परमधाम की न्यामत अलग तरीके की है। उस अखण्ड की पहचान कराने के वास्ते ही यह संसार का नमूना बनाया है, परन्तु उनका फर्क बताना सम्भव नहीं है।

सतलोक मृतलोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत।
जो नीके किताबें देखिए, तो ए सब उड़सी असत।। ८ ।।

संसार में सतलोक और मृत्युलोक दोनों का वर्णन किया गया है। स्वर्ग को भी सुख का स्थान बताया है, परन्तु धर्मग्रन्थों को अच्छी तरह से देखने से पता चलता है यह सब झूठे हैं और मिट जाएंगे।

इन झूठी जिमी में केहेत हों, सांच झूठ हैं दोए।
जब आगूं अर्स के देखिए, तब इनमें न सांचा कोए।। ९ ।।

इस झूठे संसार में बैठकर मैं सत और झूठ दोनों को जाहिर करती हूं। यह संसार के सच्चे भी झूठे हैं, मिट जाने वाले हैं। इनका विवरण, जब परमधाम की पहचान होती है, तो पता चलता है, क्योंकि वहां की हर वस्तु अखण्ड है।

अर्स हमेसा कायम, ए दुनी न तीनों काल।
हुआ है ना होएसी, तो क्यों दीजे अर्स मिसाल।। १० ।।

परमधाम सर्वदा ही अखण्ड है। यह दुनियां भूत, वर्तमान और भविष्य में कभी न अखण्ड थी, न है और न होगी तो इसकी उपमा अखण्ड परमधाम को कैसे दी जाए?

ए बारीक बातें अर्स की, इत दिल जुबां पोहोंचे नाहें।
ए हुकम कहावे हक का, इलम हुकम के माहें।। ११ ।।

यह परमधाम की बहुत बारीक बातें हैं, जहां पर यहां का दिल और जबान नहीं पहुंचती। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही वर्णन कराता है तो मैं वर्णन करती हूं, क्योंकि परमधाम की सम्पूर्ण जानकारी श्री राजजी महाराज के हुकम (अर्थात् उन्होंने स्वयं दी है) से हुई।

सत सुख कई सरूप में, कई आनन्द आराम।
कई खुसाली खूबियां, अंग छूटे न आठों जाम।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप में कई प्रकार के अखण्ड सुख, आनन्द, आराम तथा खूबियां हैं, जो रात-दिन रूहों के तन से नहीं छूटतीं।

अर्स सबे है चेतन, हर चीज में सब गुन।
सब न्यामतें एक चीज में, कमी न माहें किन।। १३ ।।

परमधाम में सभी कण-कण चेतन हैं। हर कण में सभी गुण तथा न्यामतें हैं। किसी तरह की कमी किसी में नहीं है।

Nijanand App

इन झूठी जिमी में बरनन, सत सरूप को कह्यो न जाए।
कबूं किन कानों ना सुनी, सो क्यों जीव हिरदे समाए।। १४ ।।

इस संसार की झूठी जमीन है इसलिए श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप का वर्णन करना सम्भव नहीं है, क्योंकि जिनकी हकीकत इस संसार में कभी सुनने को ही नहीं मिली, वह हकीकत जीव के दिल में कैसे आए?

ए लीला जानें सृष्ट ब्रह्म की, जाए पोहोंच्या होए तारतम।
ए दृष्ट पूरन तब खुले, जाए अव्वल आखिर इलम।। १५ ।।

इस लीला को ब्रह्मसृष्टि ही जानती हैं, जिनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी है और उनकी ही इस ज्ञान से पूरी दृष्टि खुल गई है, जिन्हें मूल से आखिर तक की हकीकत का पता है।

कहे वेद वैराट कछुए नहीं, जैसे आकास फूल।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ना कछू डाल न मूल।। १६ ।।

वेद वैराट को आकाश के फूल की तरह कहा है, अर्थात् जैसे आकाश में फूल कभी नहीं होते इसी तरह से यह संसार कुछ नहीं है। इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड की न कोई डाली है न ही कोई जड़ है।

कतेबे भी यों कह्या, चौदे तबक ए जोए।
एक जरा नजरों न आवहीं, जाके टूक न होवें दोए।। १७ ।।

कतेब के प्रत्येक ग्रन्थ में भी कहा है कि चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड इतना भी नहीं है जिसके दो टुकड़े किए जा सकें।

ऐसा चौदे तबक का निमूना, क्यों हक को दिया जाए।
ए सब्द झूठी जिमी का, क्यों सकिए अर्स पोहोंचाए।। १८ ।।

ऐसे मिटने वाले चौदह तबकों का नमूना, जो परमधाम सदा सत्य है उसे कैसे दिया जाए? क्योंकि इस संसार के सब शब्द झूठे हैं, इनकी उपमा परमधाम से नहीं दी जा सकती।

कही जाए न सोभा इन मुख, ना कछू दई जाए साख।
एक जरा हरफ न पोहोंचहीं, जो सब्द कहिए कई लाख।। १९ ।।

संसार के मुख से न तो इसकी शोभा का वर्णन हो सकता है और न कोई उपमा ही दी जा सकती है, चाहे लाखों शब्दों का उपयोग क्यों न कर लें। परमधाम के एक कण को भी यहां के शब्द नहीं पहुंचते।

ना अर्स बका किन देखिया, ना कछू सुनिया कान।
तरफ भी किन पाई नहीं, तो करे सो कौन बयान।। २० ।।

अखण्ड परमधाम को न तो किसी ने देखा है और न किसी ने सुना है। यह भी जानकारी नहीं है कि वह कहां है? तो फिर उसकी हकीकत कैसे बताई जाती?

एक कह्या अर्स-अजीम, दूजा सदरतुल-मुंतहा।
तीसरा कह्या मलकूत, जो अर्स फरिस्तों का।। २१ ।।

एक अखण्ड परमधाम कहा गया है, दूसरा अक्षरधाम कहलाता है, तीसरा इस ब्रह्माण्ड का बैकुण्ठ है। बैकुण्ठ में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और देवी देवता रहते हैं।

Nijanand App

ए तीनों अर्स मुख थें कहें, पर बेवरा न पासे किन।
ए दुनियां क्यों समझे, हकीकत खोले बिन।। २२ ।।

बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम इन तीनों को अर्श कहते हैं, पर हकीकत का ज्ञान किसी के पास नहीं है। जब तक जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान (पराशक्ति का ज्ञान) न मिले, तब तक दुनियां कैसे समझ सकती है।

हक हुकम जाहेर हुआ, दोऊ हादी हुए मेहेरबान।
खुली हकीकत मारफत, तो जाहेर करूं फुरमान।। २३ ।।

श्री राजजी और श्री श्यामाजी की मेहर हुई तो श्री राजजी के हुकम से हकीकत और मारफत के भेद खुले, जिसे अब मैं जाहेर करती हूं।

ए तीनों गिरो का बेवरा, एक रूहें और फरिस्ते।
तीसरी खलक आम जो, कुन्न केहेते उपजे।। २४ ।।

कुरान में तीन प्रकार की सृष्टियों का विवरण है। एक रूहों (ब्रह्मसृष्टि) की, दूसरी फरिश्ते (ईश्वरीसृष्टि) की तथा तीसरी आम-खलक (जीवसृष्टि) की जो कुंन शब्द कहने से पैदा हुई है।

रूहें गिरो कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती।
और गिरो जो तीसरी, जो कही मलकूती।। २५ ।।

रूहों की जमात अखण्ड परमधाम की रहने वाली है। फरिश्ते (ईश्वरीसृष्टि) अक्षर की सुरताएं हैं। तीसरी जीवसृष्टि बैकुण्ठ की है।

अव्वल खासल खास रूहन की, गिरो फरिस्तों की खास कही।
और कुन्न की तीसरी, ए जो आम खलक भई।। २६ ।।

रूहों को खासल-खास कहा है। फरिश्तों को खास कहा है। तीसरी जीवसृष्टि जो कुंन शब्द के कहने से पैदा कही गई है 'आम खलक' कही जाती है।

दुनियां सरीयत फरज बंदगी, और फरिस्तों बंदगी हकीकत।
रूहों हकीकत इस्क, और इनपे है मारफत।। २७ ।।

दुनियां की जीवसृष्टि शरीयत की फर्ज बन्दगी करती है। ईश्वरीसृष्टि की बन्दगी हकीकत के ज्ञान की होती है। रूहों की इश्क की बन्दगी है। इन्हें हकीकत और मारफत का ज्ञान होता है।

रूहें आसिक सोई लाहूती, जाके अर्स-अजीम में तन।
कह्या हकें दोस्त रूहें कदीमी, जो उतरे अर्स से मोमिन।। २८ ।।

यह रूहें जिनको आशिक कहा है वही परमधाम की रहने वाली हैं। इनके मूल तन परमधाम में हैं। श्री राजजी महाराज के यह सदा से दोस्त हैं जो खेल में उतरे हैं और मोमिन कहलाते हैं।

अर्स कह्या दिल मोमिन, जो मोमिन दिल आसिक।
सो मोमिन कछुए न राखहीं, बिना अर्स बका हक।। २९ ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अपना अर्श बनाया है, क्योंकि यह मोमिन ही श्री राजजी महाराज के आशिक हैं। मोमिनों को सिर्फ अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज चाहिए बाकी कुछ नहीं।

Nijanand App

सोई मोमिन जानियो, जो उड़ावे चौदे तबक।
एक अर्स के साहेब बिना, और सब करे तरक।। ३० ।।

उसे ही मोमिन समझना जो चौदह तबकों को रद्द करके छोड़ दे और एक परमधाम के श्री राजजी के बिना और सब छोड़ दे।

उतरे हैं अर्स से, वे कहे महंमद मेरे भाई।
सो आखिर को आवसी, ए जो अहेल इलाही।। ३१ ।।

यह मोमिन परमधाम से उतरे हैं, जिनको रसूल साहब कुरान में अपने भाई बताते हैं। रसूल साहब ने यह भी लिखा है कि मेरे भाई आखिर के समय में आएंगे और खुदा के वारिस यही होंगे।

वे फकीर अतीम हैं, मुझे उठाइयो उनों में।
हक बरकत दुनियां मिने, होसी सब इनों से।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मेरे भाई मोमिन फकीरों और यतीमों की तरह होंगे। मुझे भी उनके साथ में उठाना। दुनियां के बीच श्री राजजी महाराज और परमधाम की हकीकत यह मोमिन ही जाहिर करेंगे।

मोहे इलम दिया हक ने, सो इनों को देसी इमाम।
आखिर बड़ाई इनों की, कहे मुसाफ हदीसें तमाम।। ३३ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि श्री राजजी ने मुझे बुलाकर कुरान का ज्ञान दिया है। अब इन रूह मोमिनों को स्वयं श्री राजजी महाराज इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी बनकर ज्ञान देंगे। कुरान और हदीसों में सब जगह इन मोमिनों की महिमा गाई है।

ए मांग्या अलिएं हकपे, मुझे उठाइयो आखिरत।
मेहेंदी के यारों मिने, मैं पाउं निसबत।। ३४ ।।

मुहम्मद साहब के यार अली ने भी खुदा से मांगा था कि मुझे भी आखिर समय में मोमिनों के बीच उठाना। इमाम मेंहदी के यार जो मोमिन हैं उनके बीच मुझे भी जगह मिले।

इमाम जाफर सादिक, उनोंने मांग्या हकपे।
मुझे उठाइयो आखिरत, मेहेंदी के यारों में।। ३५ ।।

जाफर, सादिक जो इमाम हुए हैं उन्होंने भी खुदा से मांग की है कि इमाम मेंहदी के यारों में, अर्थात् मोमिनों में आखिरत के वक्त में मुझे भी उठाना।

मूसा इबराहीम इस्माईल, जिकरिया एहिया सलेमान।
दाऊदें मांग्या मेहेंदी जमाना, उस बखत उठाइयो सुभान।। ३६ ।।

मूसा, इब्राहीम, इस्माईल, जिकरिया, एहिया, सुलेमान तथा दाऊद पैगम्बरों ने मेंहदी के जमाने में खुदा से मनुष्य तन देने के लिए विनती की है।

लिख्या यों फुरमान में, सब आवेंगे पैगंमर।
जासी जलती दुनियां सबपे, कोई सके न मदत कर।। ३७ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरत के वक्त में सब पैगम्बर आएंगे। सारी दुनियां जो दोजख में जल रही होगी अपने पैगम्बरों के पास जाएगी, परन्तु कोई भी उनकी मदद नहीं कर पाएगा।

Nijanand App

आखिर महंमद छुड़ावसी, और आग न छूटे किन से।
सब जलें आग दोजख की, ए लिख्या जाहेर फुरमान में।। ३८ ।।

अन्त में आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज दुनियां को आवागमन के चक्कर से छुड़ाएंगे और कोई भी इनके सिवाय दोजख की आग में जलने से नहीं बचा सकेगा। ऐसा कुरान में साफ लिखा है।

सब पैगंमर सरमिंदे, होसी बीच आखिरत।
इत छिपी न रहे कछुए, खुले पट हकीकत मारफत।। ३९ ।।

दोजख में जलती दुनियां के सामने वक्त-आखिरत में सभी पैगम्बर शर्मिन्दे होंगे, क्योंकि उस समय किसी की कोई भी बात छिपी नहीं रहेगी। सबको हकीकत और मारफत के ज्ञान की पहचान हो जाएगी।

पीठ देवे दुनी को, सो मोमिन मुतलक।
देखो कौल सबन के, सब बोले बुध माफक।। ४० ।।

जो दुनियां को पीठ देकर छोड़ दे, वही सच्चा मोमिन है। सबके धर्मग्रन्थों में उन्होंने अपनी बुद्धि के प्रमाण से इन शब्दों को लिखा है।

माहें मैले बाहेर उजले, सो तो कहे मुनाफक।
मासिवा-अल्लाह छोड़ें मोमिन, तामें कुफर नहीं रंचक।। ४१ ।।

जो अन्दर से काले हैं और ऊपर से निर्मल दिखाई देते हैं, वह दोगले (मुनाफक) हैं। जो मोमिन हैं वह परमात्मा अक्षरातीत अल्लाह ताला के सिवाय सबको छोड़ देते हैं। उनमें जरा भी झूठ नहीं रहता।

पाक दिल पाक रूह, जामें जरा न सक।
जाको ऊपर ना डिंभक, एक जरा न रखे बिना हक।। ४२ ।।

मोमिनों के दिल और रूह पाक (साफ) होते हैं। उनमें कोई आडम्बर नहीं होता और ऊपर का दिखावा नहीं होता। वह श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहते।

सरभर एक मोमिन के, कई कोट मिलो खलक।
जाको मेहेर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं दोजक।। ४३ ।।

संसार के करोड़ों लोग एक मोमिन की बराबरी नहीं कर सकते। जिसके ऊपर मोमिन की मेहर हो जाए उसे सपने में भी दोजख की आग नहीं जला सकती।

तुम सुनो मोमिनों वचन, जो धनिएं कहे मुझे आए।
साथ आया अपना खेलमें, सो लीजो सबे बोलाए।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते है, हे मोमिनो! उस वाणी को सुनो जो धनी ने आकर मुझे बताई है। उन्होंने कहा है कि अपना सुन्दरसाथ खेल में आया है। इन सबको बुलाकर परमधाम ले आओ।

मोहे कह्या आप श्री मुख, तेरी अर्स से आई आतम।
तोको दिया अपनायत जानके, हक बका अर्स इलम।। ४५ ।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने अपने श्री मुख से कहा कि तेरी आत्मा परमधाम से आई है और तुम्हें अपना जानकर ही श्री राजजी महाराज का और अखण्ड परमधाम का ज्ञान दिया है।

Nijanand App

निज हुकम आया सिर मोमिनों, जिनके ताले निज नूर।
ऐसे ताले हमारी रूह के, क्यों न करें हम हक जहूर।।४६ ।।

श्री राजजी महाराज के खुद का हुकम मोमिनों के वास्ते आया है। जिन मोमिनों के पास जागृत बुद्धि की तारतम वाणी है, जब ऐसी वाणी हमारी रूह के ताले हैं तो हम राजजी को जाहिर क्यों न करें?

ब्रह्मसृष्ट हुती बृज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन।
सो लछ अव्वल को ल्याय रूह अल्ला, पर न था आखिरी इलम पूरन। ४७ ।।

ब्रह्मसृष्टियां बृज-रास में आई थीं। तब उनके पास प्रेम तो था, परन्तु घर और सम्बन्ध की पहचान नहीं थी। अब रूहअल्लाह (श्यामा महारानी) यहां सबसे पहले तारतम ज्ञान लेकर आई हैं, परन्तु फिर भी इनके पास कुलजम सरूप का ज्ञान नहीं था।

जोलों मुतलक इलम न आखिरी, तोलों क्या करे खास उमत।
पेहेचान करनी मुतलक, जो गैब हक खिलवत।।४८ ।।

जब तक आखिरी इलम कुलजम सरूप का ज्ञान नहीं मिल जाए, तब तक मोमिन भी क्या करें? उन्हें श्री राजजी महाराज तथा मूल-मिलावा (खिलवतखाना) की पहचान करनी है जो आज दिन तक छिपी हुई थी।

लिख भेज्या फुरमान में, हक रमूजें इसारत।
सो पाइए इलम हक के, जब खुले हकीकत मारफत।।४९ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में यह बातें इशारतों में लिखी हैं। अब यह कुलजम सरूप के ज्ञान से ही हकीकत और मारफत के भेद खुल सकते हैं।

जो कीजे बरनन हक बका, होए जोस मेहेर हुकम।
निसबत हक हादीय सों, और आखिर इस्क इलम।।५० ।।

यदि श्री राजजी महाराज के स्वरूप की तथा अखण्ड घर (परमधाम) की पहचान कराएं तो यह सब श्री राजजी महाराज की मेहर, जोश, इलम, हुकम और इश्क से ही हो सकता है और इसी से श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों की निसबत जानी जा सकती है।

अर्स अरवाहों को चाहिए, खोलें रूह की नजर।
तब देखें आम खलक को, ज्यों खेल के कबूतर।।५१ ।।

परमधाम की रूहें अपनी आत्मदृष्टि तारतम वाणी (जागृत बुद्धि) से खोलकर देखें और अपनी पहचान करें, तो उनको यह संसार खेल के कबूतर की तरह लगेगा।

तो न लेवे निमूना इनका, ना लेवें इनकी रसम।
हक बिना कछुए ना रखें, अर्स अरवाहों ए इलम।।५२ ।।

इसलिए परमधाम की रूहें कभी भी संसार की नकल नहीं करेंगी और न उनके रस्मो-रिवाज पर ही चलेंगी। उनको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी मिल जाने से पारब्रह्म के बिना और कुछ चाहना बाकी न रहेगी।

Nijanand App

इत सब मुतलकियां चाहिए, बरनन करना मुतलक।
लिख्या आखिर जाहेर होएसी, सूरत बका जात हक।।५३ ।।

कुरान में लिखा है कि मोमिनों को किसी प्रकार का संशय कभी न होकर दृढ़ ईमान होना चाहिए, क्योंकि इन्हें ही अखण्ड को जाहिर करना है। ऐसे मोमिन ही श्री राजजी के अखण्ड तन हैं जो वक्त आखिरत को जाहिर होंगे।

लिख्या अव्वल फुरमान में, जाहेर होसी कयामत।
जो लों होए इलम मुकैयद, तोलों जाहेर न हक मारफत।।५४ ।।

कुरान में लिखा है कि ईमान वाले मोमिन ही कयामत को जाहिर करेंगे, क्योंकि जब तक अधूरा ज्ञान हो तब तक पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं होगी।

जेती चीजें अर्स में, सो सब मुतलक न्यामत।
सो मुतलक इलम बिना, क्यों पाइए हक खिलवत।।५५ ।।

परमधाम की जो भी चीजें हैं वह सब मोमिनों के लिए न्यामतें हैं, इसलिए अखण्ड वाणी के बिना श्री राजजी महाराज और मूल-मिलावा (खिलवतखाना) की पहचान नहीं हो सकती।

ए जो चौदे तबक का बातून, तिन बातून का बातून नूर।
ताको भी बातून नूर बिलंद, केहेना तिन बिलंद का बातून जहूर।।५६ ।।

चौदह लोकों का बातून बैकुण्ठ है, बैकुण्ठ का बातून अक्षर ब्रह्म है और उसका भी बातून नूर बिलंद (परमधाम) है। परमधाम का बातून श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के स्वरूप हैं जो मूल-मिलावे में बैठे हैं।

ए बातून अर्स बारीकियां, सो होए मुतलकियों इलम।
अर्स बका करें जाहेर, सबों भिस्त देवें हुकम।।५७ ।।

परमधाम की यह बारीक बातें, जागृत बुद्धि की बातें अखण्ड वाणी से ही समझी जा सकती हैं। अखण्ड परमधाम को मोमिन ही जाहिर करेंगे और सारे जगत को श्री राजजी महाराज के हुकम से अखण्ड मुक्ति देंगे।

बरनन करें बका हक की, हम जो अर्स अरवा।
लेवें सब मुतलकियां, हम सें रहे न कछू छिपा।।५८ ।।

हम जो अरवाहें (परमधाम की रूहें) हैं, वह अखण्ड अक्षरातीत के स्वरूप को जाहिर करेंगे। हम संशय रहित होकर दृढ़ता के साथ वर्णन करेंगे, क्योंकि हमसे कुछ छिपा नहीं है।

और बात बारीक ए सुनो, अर्स छोड़ न आए मोमिन।
और बातें मुतलक खेल की, करसी अर्स में देखे बिन।।५९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! एक और खास बात सुनो। मोमिनों के असल तन परमधाम को छोड़कर खेल में आए ही नहीं हैं। परमधाम में बिना संसार में आए ही संसार की सब बातें करेंगे।

हम झूठी जिमी में आए नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर।
ब्रह्मांड उड़ावे अर्स कंकरी, तो रूहों आगे रहे क्यों कर।।६० ।।

परमधाम की एक कंकरी के सामने ब्रह्माण्ड खड़ा नहीं रह सकता है, उड़ जाता है, तो फिर रूहों के आने से यह कैसे खड़ा रह सकता है? इसलिए यह निश्चित हो गया कि हम संसार में आए ही नहीं।

Nijanand App

(हमारे असल तन जब परमधाम में बैठे हैं, तो हम कैसे आए, यह सोचो) क्योंकि यह ब्रह्माण्ड हमारी नजर के सामने टिक नहीं सकता।

और माया देखाई हम को, करी वास्ते हमारे ए।
होसी पूरन हमारी अर्स में, रूहें उमेद करी दिल जे।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे वास्ते ही यह संसार बनाया है और माया का खेल हमको दिखाया है। हम रूहों ने परमधाम में जिस खेल को देखने की चाहना की थी, वह चाहना भी परमधाम में बैठे-बैठे पूरी हो जाएगी।

हम रूहें न आइयां खेल में, हक अर्स सुख लिए इत।
हक हुकमें इलम या विध, सुख दिए कर हिकमत।।६२ ।।

हम रूहें खेल में आई नहीं हैं, फिर भी श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम के सुखों का आनन्द खेल में लिया। श्री राजजी महाराज के हुकम और इलम ने इस तरह से बड़ी हिकमत (कारीगरी) के साथ हमको सुख दिए हैं।

हम तो हुए इत हुकम तले, मैं न हमारी हममें।
ए मैं बोले हक का हुकम, यों बारीक अर्स माएने।।६३ ।।

इस संसार में मेरे अन्दर अहंभाव नहीं है, क्योंकि हम यहां हुकम के अनुसार काम करते हैं। यह मैं जो बोल रही हूं यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही बोल रहा है। मैं तो परमधाम में बैठी हूं। यही तो परमधाम की बारीक गुझ बातें हैं।

हुकम किया चाहे बरनन, ले हक हुकम मुतलक।
करना जाहेर बीच झूठी जिमी, जित छूटी न कबूं किन सक।।६४ ।।

अब श्री राजजी महाराज का हुकम ही दृढ़ होकर परमधाम और राजजी को इस झूठी जमीन में वर्णन करना चाहता है, जहां किसी का कभी भी संशय दूर नहीं हुआ।

दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर।
हकें हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था महंमद के सिर पर।।६५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! इतने दिन तक जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से ही श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर किया। श्री राजजी महाराज ने अपना हुकम देकर मुझे काम सौंप रखा था। अब उस हुकम को श्री राजजी महाराज ने अपने हाथ ले लिया है।

|| प्रकरण || १ || चौपाई || ६५ ||

हुकमें इस्क का द्वार खोल्या है

अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम।
दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम।।१ ।।

अब श्री राजजी महाराज ने हुकम अपने हाथ में लेकर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं और मोमिनों के दिल में स्वयं अर्श बनाकर बैठ गए हैं।

Nijanand App

हक अर्स दिल मोमिन, और अर्स हक खिलवत।
वाहेदत बीच अर्स के, है अर्स में अपार न्यामत।। २ ।।

खेल में श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिनों का दिल है। परमधाम में मूल-मिलावा जहां पर हमारी परआतम बैठी है, वहां बेशुमार न्यामतें हैं।

ए साहेदी जाहेर सुनो, जो लिखी माहें फुरमान।
अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब पेहेचान।। ३ ।।

कुरान में जो हकीकत लिखी है उसकी एक बात और बताती हूं। मोमिनों के दिल को हक का अर्श कहा है, इसलिए परमधाम की पूरी हकीकत की जानकारी मोमिनों के दिल में है (क्योंकि श्री राजजी अन्दर बैठे हैं)।

हक हादी रूहें अर्स में, इस्क इलम बेसक।
जोस हुकम मेहेरबानगी, हकीकत मारफत मुतलक।। ४ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहें, इश्क, इलम, जोश, हुकम, मेहर, हकीकत और मारफत सब परमधाम में निश्चित रूप से हैं। वही सब मोमिनों के दिल में हैं, क्योंकि मोमिनों का दिल ही अर्श है।

दिल मोमिन अर्स कह्या, सब अर्स में न्यामत।
सो क्यों न करे दिल बरनन, जाकी हक सों निसबत।। ५ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और परमधाम की सब न्यामतें मोमिनों के दिल में हैं। यह श्री राजजी महाराज की अंगना भी हैं तो फिर यह श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन क्यों न करें?

सब बातें हैं अर्स में, और अर्स में वाहेदत।
हौज जोए बाग अर्स में, अर्स में हक खिलवत।। ६ ।।

यह सब बातें परमधाम की हैं, जहां रूहें मिलकर बैठी हैं। वहां एक दिली है। हौज कौसर ताल, जमुनाजी, बाग, बगीचे और मूल-मिलावा सभी परमधाम में हैं।

सो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो काहे न करे बरनन।
जिन दिल में ए न्यामत, सो मुतलक अर्स रोसन।। ७ ।।

अब वह परमधाम मोमिनों के दिल में है और जिनके दिल में यह सब न्यामतें दृढ़ता से हों तो फिर वह परमधाम की और श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन क्यों न करें?

हम सिर हुकम आइया, अर्स हुआ दिल हम।
एही काम हक इलम का, तो सुख काहे न लेवें खसम।। ८ ।।

अब श्री राजजी महाराज हमारे दिल को अर्श करके बैठे हैं तो उनके हुकम का अधिकार हमें मिल गया है। श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन करना उनके इलम का काम है तो अब उनके स्वरूप और सिनगार का वर्णन करने के सुख क्यों न लें।

कह्या अर्स हमारे दिल को, हैं हमहीं हक हुकम।
क्यों न आवे इस्क हक का, यों बेसक हैयाती इलम।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे दिल को अर्श कहा है, इसलिए हम ही श्री राजजी के हुकम के स्वरूप हैं। इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से हमारे सब संशय मिटा दिए हैं तो फिर हमें इश्क क्यों नहीं आता।

Nijanand App

चरन बासा हमारे दिल में, रहे रूह के नैनों माहें।
क्यों न्यारे हम से रहें, हम बसें हक हैं जांहें।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के चरण हमारे दिल में हैं और नैनों में हैं। वह हमसे कभी अलग नहीं हो सकते। अब श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में हैं और हम भी वहीं हैं जहां श्री राजजी महाराज हैं।

मेरे सब अंगों हक हुकम, बिना हुकम जरा नाहें।
सोई हुकम हक में, हक बसें अर्स में तांहें।। ११ ।।

अब मेरे रोम-रोम में श्री राजजी महाराज और उनका हुकम विराजमान है। बिना उनके कुछ भी नहीं है। अब वह हुकम भी मेरे दिल में है, जहां श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

हम अरस-परस हैं हक के, ए देखो मोमिनों हिसाब।
हम हकमें हक हममें, और हक बिना सब ख्वाब।। १२ ।।

हे मोमिनो! इस हिसाब को देखो कि हम और श्री राजजी महाराज अरस-परस एक हैं। श्री राजजी महाराज हमारे अन्दर हैं और हम श्री राजजी महाराज में एकाकार हैं। श्री राजजी महाराज के बिना सब मिटने वाला है (स्वप्न है)।

हक हुकमें सब मिलाइया, अर्स मसाला पूरन।
हादी रूहों जगावने, करावने हक बरनन।। १३ ।।

अब श्री राजजी महाराज के हुकम से श्री श्यामा महारानी को और रूहों को जगाने के लिए तथा अपने स्वरूप सिनगार का वर्णन कराने के लिए परमधाम की शक्ति मेरे तन में ला दी है।

आखिर मोमिन आकिल, कह्या जिनका दिल अर्स।
तो हक दिल का जो इस्क, सो मोमिन पीवें रस।। १४ ।।

आखिरत के समय के मोमिन बड़े बुद्धिमान होंगे। उनके दिल में श्री राजजी की बैठक होगी, तो श्री राजजी महाराज के दिल के इश्क की लज्जत मोमिन पिएंगे।

विचार करें दिल मोमिन, जो अर्स मता दिल हम।
तो हक दिल होसी कौन न्यामत, जो हक वाहेदत खसम।। १५ ।।

अब मोमिन इस पर विचार करें कि परमधाम की कुल न्यामतें उनके दिल में हैं, तो अब हमारे खसम श्री राजजी महाराज के दिल में और कौन सी न्यामत होगी, जो श्री राजजी महाराज की वाहेदत में है?

देखो मोमिनों के दिल में, कही केती अर्स बरकत।
विचार देखो हक दिल में, क्या होसी हक न्यामत।। १६ ।।

हे मोमिनो! देखो कि तुम्हारे दिल में परमधाम की कितनी न्यामतें हैं? अब फिर दिल से विचार करके देखो कि श्री राजजी के दिल में कितनी और कैसी न्यामतें होंगी?

हक हादी अर्स मोमिन, सो तो पेहेले हक दिल माहें।
जो चीज प्यारी रूह को, ताए हक पल छोड़ें नाहें।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी, रूहें और परमधाम सब तो श्री राजजी के दिल में पहले से हैं। रूहों को जो चीज प्यारी लगती है उसे श्री राजजी महाराज एक पल के लिए नहीं छोड़ते। (वह श्री राजजी महाराज का इश्क है)।

Nijanand App

जो मता कह्या दिल मोमिन, सो मोमिन दिल समेत।
सो बसत हक के दिल में, सो हक दिल मता रूह लेत।। १८ ।।

मोमिनों के दिल का खजाना श्री राजजी और इश्क हैं। वह मोमिन इन दोनों चीजों अर्थात् अपने दिल सहित श्री राजजी महाराज के दिल में लेकर बैठे हैं। अब जो श्री राजजी के दिल में न्यामतें हैं। उन सबका आनन्द मोमिन लेते हैं।

जो रूह पैठे हक दिल में, सो मगन माहें न्यामत।
जो तित पड़ी कदी खोज में, तो छूटे ना लग कयामत।। १९ ।।

जो मोमिन श्री राजजी महाराज के दिल में इस तरह से बैठे हैं, वह श्री राजजी महाराज के दिल की न्यामतों में ही मग्न हैं। इतने पर भी यदि उस मोमिन को कोई संशय हो गया तो ब्रह्माण्ड के कायम होने तक खोज में ही उलझी रहेगी।

जो सुराही हक की पीवना, सो इस्क हक दिल मिने।
सो मोमिन पीवे कोई पैठके, और पिया न जाए किने।। २० ।।

यदि कोई मोमिन श्री राजजी महाराज के दिल के गंजान गंज भरे इश्क की सुराही से इश्क का रस पीना चाहता है, तो वह श्री राजजी महाराज के दिल में ही बैठकर पी सकता है। दूसरा कोई नहीं पी सकता।

कुलफ था एते दिन, द्वार इस्क न खोल्या किन।
सो खोल दिया हकें मेहेर कर, अपने हाथ मोमिन।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल का इश्क रस आज दिन तक छिपा था। किसी को भी जानकारी नहीं थी। अब श्री राजजी महाराज ने मेहर करके अपने मोमिनों को यह जानकारी दे दी है।

गंज खोलसी इस्क का, मोहोर हुती जिन पर।
लेसी अछूत प्याले मोमिन, हकें खोली मोहोर फजर।। २२ ।।

यह गंजान गंज इश्क से भरी सुराही (श्री राजजी का दिल) जो आज दिन तक बन्द पड़ी थी, श्री राजजी महाराज ने फजर के ज्ञान (कुलजम सरूप की वाणी) से उसे खोल दिया है। अब मोमिन उन प्यालों से जिनको आज दिन तक किसी ने छुआ ही नहीं, इश्क रस का पान करेंगे।

ए पिएं प्याले मोमिन, हक सुराही सराब।
लाड़ लज्जत लें अर्स की, ए मस्ती माहें आब।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज की इश्क भरी दिल की सुराही से इश्क की शराब (मस्ती) मोमिन पिएंगे तथा मस्ती में आकर श्री राजजी महाराज के लाड़-लज्जत और परमधाम के सुख लेंगे।

हक सुराही ले हाथ में, दें मोमिनों भर भर।
सुख मस्ती देवें अपनी, और बात न इन बिगर।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ही अपनी इश्क भरी दिल की सुराही से इश्क के प्याले भर-भरकर अपने मोमिनों को देंगे। जिससे मोमिन इश्क की मस्ती में आकर अखण्ड सुख लेंगे। इसके बिना उन्हें और कुछ नहीं चाहिए।

Nijanand App

अमल ऐसा इन मद का, अर्स रूहें रही छकाए।
छाके ऐसे नींद सुपन में, जानों अर्स में दिए जगाए।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज की इश्क की मस्ती का ऐसा अमल है (नशा है) कि जिसमें रूहें तृप्त हो गईं (छक गईं)। अब उन्हें संसार में बैठे ही ऐसा लगता है कि जैसे वह परमधाम में जागृत अवस्था में बैठी हों।

पेहेले एक ए हक के दिल में, रूहों लाड़ कराऊं निस दिन।
बेसुमार बातें हक दिल में, सब इस्क वास्ते मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में पहले से यह बात रहती है कि अपनी रूहों को रात-दिन नए-नए लाड़ से सुख दूं। उनके दिल में ऐसे बेशुमार विचार हैं। वह सब मोमिनों के इश्क के वास्ते हैं।

ए खेल किया वास्ते इस्क, वास्ते इस्क पेहेचान।
जुदे किए इस्क वास्ते, देने इस्क सुख रेहेमान।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज ने इसी इश्क की पहचान के वास्ते ही यह खेल बनाया और मोमिनों को अपने चरणों में बैठाकर अपने से अलग किया, ताकि उनको उनके धनी के इश्क की पहचान का सुख मिल जाए।

मोमिन उतरे इस्क वास्ते, वास्ते इस्क ल्याए ईमान।
ईमान न ल्याए सो भी इस्कें, इस्कें न हुई पेहेचान।। २८ ।।

इस इश्क के वास्ते ही मोमिन खेल में अर्श से उतरे हैं। इश्क के वास्ते ही जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से पहचान कर ईमान लाए हैं। जिनको ईमान नहीं आया, इश्क की पहचान नहीं हुई तो वह भी इश्क की हंसी के वास्ते हुआ।

कम ज्यादा सब इस्कें, इस्कें दोऊ दरम्यान।
इस्कें बंदगी या कुफर, सब वास्ते इस्क सुभान।। २९ ।।

किसी मोमिन को कम, किसी को ज्यादा, किसी को बीच के इश्क की पहचान हुई। श्री राजजी महाराज के इश्क के वास्ते ही किसी ने बन्दगी की और कोई बेईमान बना।

छोटी बड़ी या जो कछू, ए जो चौदे तबक की जहान।
ए भी हक इस्क तो पाइए, जो होए बेसक पेहेचान।। ३० ।।

चौदह तबकों की दुनियां में छोटा या बड़ा जो कुछ भी है इस बात की जानकारी तो मिलती है। यदि उनका इश्क प्राप्त हो जाए तो उनकी दृढ़ता से पहचान हो।

जो न्यामत हक के दिल में, तिन का क्योंए ना निकसे सुमार।
सो सब इस्क हक का, रूहों वास्ते इस्क अपार।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में बेशुमार न्यामतें हैं। यह सब रूहों के इश्क के वास्ते ही हैं। रूहों के वास्ते यह बेशुमार हैं।

ए इलम आया जब रूह को, तब पेहेचान आई मुतलक।
जो हरफ निकसे दुनी का, सो सब देखे इस्क हक।। ३२ ।।

जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी जब रूह को मिली, तब पारब्रह्म और परमधाम की दृढ़ता से पहचान हुई। अब यदि उनके मुख से दुनियां का भी कोई हरफ निकलता है तो वह सब भी श्री राजजी महाराज के इश्क के वास्ते ही होता है।

Nijanand App

जब ए इलम रूहों पाइया, इस्क हो गया चौदे तबक।
और देखे न कछुए नजरों, सब देखे इस्क हक।। ३३ ।।

जब जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी रूहों को मिली तो उनको चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड भी इश्क का रूप दिखने लगा। उन्हें फिर कुछ दिखाई ही नहीं देता। सभी में श्री राजजी महाराज का इश्क ही देखती हैं।

रूह देखे अपने इस्क सों, होसी कैसा हक इस्क।
कैसा इलम तोकों भेजिया, जामें सक नहीं रंचक।। ३४ ।।

रूहें अपने इश्क से श्री राजजी महाराज के इश्क का मिलान करती हैं और हैरान होती हैं कि श्री राजजी महाराज ने यह कैसा बेशकी का ज्ञान उनके पास भेज दिया है।

त्रिलोकी त्रैगुन में, कहूं नाहीं बेसक इलम।
सो हकें भेज्या तुम ऊपर, ए देखो इस्क खसम।। ३५ ।।

चौदह लोकों और ब्रह्मा, विष्णु, महेश किसी के पास भी जागृत बुद्धि का ज्ञान नहीं था। अब श्री राजजी महाराज के इश्क को देखो कि उन्होंने वह ज्ञान तुम्हारे पास भेज दिया है।

किए चौदे तबक तुम वास्ते, इनमें मता है जे।
ए भी हक इस्क तो पाइए, जो देखो हक इलम ले।। ३६ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड तुम्हारे वास्ते ही बनाया है। इसमें जो कुछ भी ज्ञान है उसकी पहचान भी जागृत बुद्धि से देखो तो तुम्हें पता लगेगा कि यह सब श्री राजजी महाराज के ही इश्क की लीला है।

फुरमान भेज्या हकें इस्कें, इस्कें लिखी इसारत।
तुमें कुन्जी दई हकें इस्कें, खोलनें हक मारफत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में इश्क के वास्ते ही इशारतें लिख कर भेजी हैं और उन इशारतों को खोलने के लिए तुम्हें जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है। जिससे श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्यों को अच्छी तरह खोल सको। यह भी इश्क-परीक्षा के वास्ते किया है।

फुरमान कोई न खोल सके, सो भी इस्क कारन।
खिताब दिया सिर एक के, सो भी वास्ते इस्क मोमन।। ३८ ।।

आज तक कुरान में छिपे रहस्य को कोई नहीं खोल सका। वह भी इश्क के वास्ते अब उनके खोलने का अधिकार एक श्री प्राणनाथजी को दिया है।

सब दुनियां हक इस्क हुआ, तो देखो अर्स में होसी कहा।
ए आया इलम रूहन पर, हकें भेज्या ए तोफा।। ३९ ।।

इस तरह से सारी दुनियां श्री राजजी महाराज के इश्क से इश्कमयी हो गई है। तो अब विचार कर देखो कि परमधाम में कितना इश्क होगा? जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी मोमिनों को अर्श का तोहफा भेजा है।

Nijanand App

विचार किए इत पाइए, हुआ एही अर्स सहूर।
वाको लिख्या कुरान में, ए जो कह्या नूर का नूर।।४०।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से विचार करके देखें तो कुरान में जो नूर का नूर, अर्थात् अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान लिखी है, वही जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी अब मोमिनों के दिल में है।

ए जाहेर कही हक वाहेदत, हक हादी उमत बातन।
सो करूं जाहेर बरकत हादियों, पर अव्वल नफा लेसी मोमिन।।४१।।

श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी जी और रूहों की एकदिली की बातें जाहिर में कही हैं। अब मैं श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी की कृपा से उन रहस्यों को खोलती हूं। इसका सबसे पहले लाभ (सुख) मोमिन लेंगे।

चरन ग्रहों नूर जमाल के, जिनने अर्स किया मेरा दिल।
सो बयान करत है हुकम, हक सुख लेसी मोमिन मिल।।४२।।

मैंने श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़ती हूं जो मेरे दिल में बैठे हैं। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से मैं बोल रही हूं, इसलिए श्री राजजी महाराज के सुखों को सब मोमिन मिलकर लेंगे।

अर्स हमेसा कायम, जो हक का हुआ तखत।
सो कायम दिल मोमिन का, जित है हक खिलवत।।४३।।

परमधाम हमेशा अखण्ड है, जहां श्री राजजी महाराज तख्त पर मूल-मिलावे में विराजमान हैं। श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिन का दिल है, इसलिए अखण्ड है।

कदमों लागूं करूं सिजदा, पकड़ के दोऊ पाए।
हुकम करत हैं मासूक, बीच आसिक के दिल आए।।४४।।

माशूक श्री राजजी महाराज आशिक मोमिनों के दिल में बैठकर हुकम करते हैं। मैं उनके दोनों चरण कमलों को पकड़कर सिजदा करती हूं।

मासूक तुमारी अंगना, तुम अंगना के मासूक।
ए हुकमें इलम दृढ़ किया, अजूं रूह क्यों न होत टूक टूक।।४५।।

हे धनी! आपके हुकम ने और इस अखण्ड वाणी के ज्ञान ने यह दृढ़ कर दिया है कि आप मेरे माशूक हैं और मैं आपकी माशूक हूं (अर्थात् मैं आपकी आशिक हूं और आप मेरे आशिक हैं)। इतना जानकर भी मेरी रूह फना क्यों नहीं हो गई?

इतहीं सिजदा बंदगी, इतहीं जारत जगात।
इतहीं जिकर हक दोस्ती, इतहीं रोजा खोलात।।४६।।

अब जिस दिल में श्री राजजी बैठे हैं, वहीं पर मोमिनों का सिजदा है, बन्दगी है। उसी के दर्शन ही यात्रा है और वहीं पर ही समर्पण है। वहीं पर बैठकर चर्चा सुनकर आत्मा को खुराक देनी है।

दिल को तुम अर्स किया, तुम आए बैठे दिल माहें।
हम अर्स समेत तुम दिल में, अजूं क्यों जोस आवत नाहें।।४७।।

हे श्री राजजी महाराज! आप आकर मेरे दिल को अर्श बनाकर बैठे हो। मैं अपने दिल सहित आपके दिल में बैठी हूं। फिर भी हमें तड़प (जोश) क्यों नहीं आती है?

Nijanand App

दिल अर्स हुआ हुकमें, तुम आए अपने हुकम।
इस्क इलम सब हुकमें, कहूं जरा न बिना खसम।। ४८ ।।

आप अपने हुकम से ही मेरे दिल में आकर अर्श कर बैठे हो, इसलिए आपका इश्क और इलम सब आपके साथ मेरे दिल में है। इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

बुध जाग्रत इलम हक का, और हकै का हुकम।
जोस अर्स का दिल में, ए सब मिल दिल में हम।। ४९ ।।

आपकी ही जागृत बुद्धि का ज्ञान और आपका ही हुकम और जोश मेरे अर्श दिल में है। इस तरह से मैं और आप मेरे दिल में मिलकर बैठे हैं।

अब दिल में ऐसा आवत, ए सब करत चतुराए।
फेर देखूं इन चतुराई को, तो हक बिन हरफ न काढ़्यो जाए।। ५० ।।

अब मेरे दिल में ऐसा विचार आता है कि कहीं यह मेरी चतुराई तो नहीं है? दुबारा इस चतुराई के लिए सोचती हूं तो देखती हूं कि चतुराई कुछ नहीं, सब श्री राजजी के हुकम से हो रहा है।

हक चतुराई ना चौदे तबकों, हक बका कही न किन तरफ।
ला मकान सुन्य छोड़ के, किन सीधा कह्या न एक हरफ।। ५१ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी ने भी अपनी चतुराई से श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम किस तरफ है इतना भी नहीं बताया। कोई भी निराकार और शून्य को छोड़कर बेहद तक का एक शब्द नहीं बोल सका।

हक चतुराई हक इलम, और हकै का हुकम।
ए तीनों मिल केहेत हैं, है बात बड़ी खसम।। ५२ ।।

श्री राजजी महाराज की चतुराई, इलम और हुकम तीनों मिलकर श्री राजजी महाराज की बड़ी महिमा बताते हैं।

ला मकान सुन्य के परे, हुआ नूर अछर।
कोट ब्रह्मांड उपजे खपे, एक पाउ पल की नजर।। ५३ ।।

निराकार और शून्य के आगे अक्षरधाम है। अक्षर ब्रह्म के हुकम से एक पल के चौथाई भाग में ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा-फना होते हैं।

अछरातीत नूरजमाल, ए तरफ जानें अछर नूर।
एक या बिना त्रैलोक को, इन तरफ की न काहू सहूर।। ५४ ।।

केवल अक्षरब्रह्म ही अक्षरातीत नूरजमाल को जानते हैं। उनके सिवाय इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी को भी जानकारी नहीं है।

तो कह्या आगूं हक बुध के, चौदे तबकों सुध नाहें।
सो बुध जाग्रत महंमद रूहअल्ला, दई मेरे हिरदे माहें।। ५५ ।।

इसलिए पहले से ही लिखा है कि श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के आगे चौदह लोकों में किसी की सुध नहीं चलती। उस जागृत बुद्धि को श्यामा महारानी ने मुझे दिया।

Nijanand App

पातसाही एक खावंद की, बीच साहेबियां दोए।
ए वाहेदत की हकीकत, बिना मारफत न जाने कोए।।५६।।

परमधाम के मालिक एक श्री राजजी महाराज ही हैं। जिनकी दो धाम में दो साहेबी हैं। एक रंग महल में और दूसरी अक्षरधाम में। इस परमधाम की हकीकत की, मारफत के ज्ञान के बिना किसी को जानकारी नहीं हो सकती।

सो बुध दोऊ अर्सों की, दोऊ सरूप थें जो गुझ।
ए सुख कायम अर्स रूहन के, सो कायम कुंजी दई मुझ।।५७।।

अब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि तारतम वाणी ने रंग महल और अक्षरधाम की तथा श्री राजजी महाराज और अक्षरब्रह्म के स्वरूप की जानकारी दी। इन्हें आज दिन तक कोई नहीं जानता था। इस तरह से अर्श की रूहों के अखण्ड सुखों की जानकारी किसी को नहीं थी। उस अखण्ड की जानकारी जागृत बुद्धि के ज्ञान से मुझे दी है।

और सुख बारीक ए सुनो, कहे नूर नूरतजल्ला दोए।
नूरतजल्ला के अंदर की, सुध नहीं नूर को सोए।।५८।।

आनन्द की एक खास बात और सुनो अक्षर और अक्षरातीत जो दो स्वरूप बताए हैं उनमें अक्षरातीत के धाम के अन्दर रंग महल की लीला की सुध अक्षरब्रह्म को नहीं है।

जित चल न सके जबराईल, कहे आगूं जलत मेरे पर।
जलावत नूर तजल्ली, मैं चल सकों क्यों कर।।५९।।

यह अक्षरातीत का परमधाम वह ठिकाना है जहां जबराईल फरिश्ता भी नहीं जा सका। कहता था कि आगे जाने से अक्षरातीत के नूर का तेज मेरे पर जलाता है, इसलिए मैं आगे किसी तरह भी नहीं जा सकता।

सो सुध बातून नूरजमाल की, अर्स अजीम के अन्दर।
दोऊ हादियों मेहेर कर, पट खोल दिए अंतर।।६०।।

उस परमधाम के अन्दर की लीला के रहस्य की श्री राजजी और श्री श्यामाजी ने कृपा करके मेरे अन्दर बैठकर जानकारी दे दी है।

जो सुध नहीं नूर जाग्रत, नूरजमाल का बातन।
सो बेसक सुध हकें मोहे दई, सो मैं पाई वजूद सुपन।।६१।।

श्री राजजी महाराज के अन्दर के रंग महल की लीला का ज्ञान जागृत अवस्था में अक्षरब्रह्म को नहीं है। वह जानकारी श्री राजजी महाराज ने मुझे सपने के तन में दे दी।

रूहें अंदर अर्स अजीम के, जो अरवा बारे हजार।
हक ऊपर बैठ देखावत, ए जो खेल कुफार।।६२।।

परमधाम के अन्दर बारह हजार रूहें हैं, जिनको श्री राजजी महाराज मूल-मिलावे में सिंहासन पर बैठकर इस माया का झूठा खेल दिखा रहे हैं।

सो भिस्त दई हम सबन को, कर जाहेर बका अर्स इत।
करें त्रैलोकी त्रिगुन कायम, ब्रह्मसृष्ट की बरकत।।६३।।

इस सपने के संसार में अखण्ड परमधाम को जाहिर करके हम सभी रूहों का अखण्ड स्थान परमधाम बताया और ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से चौदह लोकों और त्रिगुण को अखण्ड मुक्ति दी।

Nijanand App

ए बात बारीक अति बुजरक, दोऊ सरूपों सुख बातन।
करी परीछा इस्क साहेबी, सुख होसी नूर रूहन।। ६४ ।।

यह बात खास है और इसकी बड़ी भारी महिमा है कि दोनों स्वरूपों के सुख अलग-अलग तरह के हैं। इश्क और साहेबी दिखाने के वास्ते ही यह खेल बनाया जिससे अक्षर और रूहों को सुख प्राप्त होगा।

करसी कायम खाकीबुत को, करके नूर सनमुख।
इन से अछर और मोमिन, लेसी कायम अर्स के सुख।। ६५ ।।

अक्षरब्रह्म के सामने जीवों को खड़ा करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे जिससे अक्षरब्रह्म और मोमिन अखण्ड घर के सुख लेंगे।

ए सुख जानें नूरजमाल, या जानें नूर अछर।
या हम रूहें जानहीं, कहे महामत हुकमें यों कर।। ६६ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से कहते हैं कि इस सुख को अक्षरातीत श्री राजजी महाराज, अक्षरब्रह्म और हम रूहें ही जानती हैं।

|| प्रकरण || २ || चौपाई || १३१ ||

आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन।
एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन।। १ ।।

हम रूहों के तन श्री राजजी महाराज के चरणों के आशिक हैं, श्री राजजी महाराज के चरण ही हमारी रूह हैं, इसलिए तन और रूह कभी भी जुदा नहीं हो सकते।

जो रूह अर्स की मोमिन, तिन सब की ए निसबत।
दिल मोमिन अर्स इन माएनों, इन दिल में हक सूरत।। २ ।।

जितनी भी परमधाम की रूहें हैं, सबकी यही निसबत (सम्बन्ध) है। इस तरह से श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिनों का दिल है, क्योंकि श्री राजजी महाराज स्वयं मोमिनों के दिल में विराजमान हैं।

हक सूरत रूह मोमिन, निसबत एह असल।
मोमिन रूहें कही अर्स की, तो अर्स कह्या मोमिन दिल।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप और मोमिनों की रूह का सम्बन्ध (निसबत) मूल परमधाम से है, क्योंकि मोमिन परमधाम के हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल माहें।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, आई न्यामत हक हैं जांहें।। ४ ।।

इस संसार में श्री राजजी महाराज के चरण कमल मेरे दिल में विराजमान हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को इस संसार में अर्श कहा है। श्री राजजी महाराज स्वयं जिसके दिल में बैठे हैं, सभी न्यामतें स्वयं वहां आ गईं।

ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल हम माशूक रूहों का अर्श है, इसलिए जिस दिल में श्री राजजी महाराज आ गए, वह दिल दोनों का अर्श हो गया, क्योंकि हमारा अर्श श्री राजजी के चरण कमल हैं और श्री राजजी का अर्श मोमिनों का दिल है, इसलिए दोनों अर्श एक हो गए, इसलिए यह दोनों जुदा कैसे हों जो मूल से ही एक हैं।

Nijanand App

अर्स अरवाहें जो वाहेदत में, सो सब तले हक नजर।
इस्क सुराही हाथ हक के, रूहों पिलावें भर भर।।६।।

परमधाम में जो रूहें श्री राजजी महाराज के चरणों तले मूल-मिलावे में श्री राजजी की नजर के सामने बैठी हैं, उन्हें श्री राजजी महाराज अपने दिल की गंजान गंज इश्क से भरी सुराही से भर-भरकर प्याले पिलाते हैं।

इस्क हक के दिल में, सो दिल पूरन गंज अपार।
असल तन इत जिनों, सोए रस पीवनहार।।७।।

श्री राजजी महाराज का दिल गंजान गंज इश्क से भरा है। परमधाम में जिनकी परआतम है, वही उस इश्क के रस को पीती हैं।

सराब हक सुराही का, पिया अरवाहों जिन।
आठों जाम चौसठ घड़ी, क्यों उतरे मस्ती तिन।।८।।

श्री राजजी महाराज की इश्क की सुराही से जिस रूह ने इश्क का रस पी लिया, वह रात-दिन अपने श्री राजजी महाराज में मग्न रहती है।

असल अरवाहें अर्स की, जो हैं रूह मोमिन।
एक निसबत जानें हक की, जिनों मासूक प्यारे चरन।।९।।

परमधाम की जो रूहें असल मोमिन हैं, उन्हें ही अपने माशूक श्री राजजी महाराज के चरण प्यारे हैं। वही समझती हैं कि मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं।

मोमिन वासा चरन तले, अर्स अरवाहों का मूल।
मोमिन आए इत अर्स से, तो फुरमान ल्याए रसूल।।१०।।

मोमिन सदा ही श्री राजजी महाराज के चरणों तले जहां उनका मूल ठिकाना है, रहते हैं, क्योंकि चरण ही उनका अर्श है। अब खेल में मोमिन अर्श से उतरे हैं। उनके वास्ते श्री राजजी महाराज ने कुरान के ज्ञान को लेकर रसूल को भेजा।

तो कह्या मोमिन खाना दीदार, पानी पीवना दोस्ती हक।
तवाफ सिजदा इतहीं, करें रूह कुरबानी मुतलक।।११।।

मोमिनों का खाना, दीदार है और पानी पीना श्री राजजी महाराज से दोस्ती है, इसलिए मोमिनों की परिकरमा और सिजदा श्री राजजी के चरणों में ही होता है, इसलिए रूहें निश्चित रूप से अपने धनी के लिए कुर्बानी करेंगी।

रूहें अव्वल आखिर इतहीं, मोमिन ना दूजा ठौर।
कहे चौदे तबक जरा नहीं, बिना वाहेदत ना कछू और।।१२।।

मोमिनों के लिए शुरू से आखिर तक श्री राजजी महाराज के चरणों तले ही उनका ठिकाना है, इसलिए कुरान में लिखा है कि मोमिन चौदह तबकों को रद्द करके श्री राजजी के चरणों में अपना चित्त लगाएंगे।

Nijanand App

जो अब भी जाहेर ना होती, बका हक सूरत।
तो क्यों होती दुनी हैयाती, क्यों भिस्त द्वार खोलत।। १३ ।।

यदि अब भी श्री राजजी महाराज का स्वरूप और अखण्ड परमधाम की हकीकत जाहिर न होती तो बहिश्तों के दरवाजे कौन खोलता? दुनियां के आवागमन के चक्कर से छुड़ाकर अखण्ड मुक्ति कौन देता?

जो दीदार न होता दुनी को, तो क्यों करते इमाम इमामत।
क्यों जानते कयामत को, जो जाहेर न होती निसबत।। १४ ।।

यदि दुनियां को श्री राजजी महाराज की पहचान न होती तो फिर इमाम मेंहदी न्यायाधीश बनकर कैसे आते? यह इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज पारब्रह्म के स्वरूप हैं। पहचान न होती तो कैसे दुनियां जानती कि अखण्ड होने का समय आ गया है।

अर्स बका द्वार न खोलते, तो क्यों होती सिफायत महंमद।
हक के कौल सबे मिले, जो काफर करत थे रद।। १५ ।।

रसूल साहब ने कुरान में जो आखिरत के समय खुदा के आने की बात कही थी, जिसे उस समय काफिर लोग व्यर्थ की बात समझते थे, अब वह सब सत्य हो रही हैं। अब श्री राजजी महाराज स्वयं आकर अखण्ड परमधाम के दरवाजे न खोलते तो रसूल साहब की बातें कैसे सत्य होतीं?

कह्या अव्वल महंमद ने, हक अमरद सूरत।
मैं देखी अर्स अजीम में, पोहोंच्या बका बीच खिलवत।। १६ ।।

रसूल साहब ने पहले से ही कुरान में लिखा है कि मैंने परमधाम के अन्दर मूल-मिलावा में जाकर पारब्रह्म (खुदा) की किशोर सूरत को देखा है।

हौज जोए बाग जानवर, जल जिमी अर्स मोहोलात।
और अनेक देखी न्यामतें, गुझ जाहेर करी कई बात।। १७ ।।

मैंने हौज कौसर ताल, जमुनाजी, बाग-बगीचे, जानवर, जमीन, जल और परमधाम की मोहोलातें तथा अनेक न्यामतें देखी हैं और श्री राजजी महाराज से कई बातें की हैं जो कुरान में लिखी हैं।

सो बरनन हुई हक सूरत, जासों महंमदें करी मजकूर।
नब्बे हजार हरफ सुने, नूर पार पोहोंच हजूर।। १८ ।।

रसूल साहब ने अक्षर के पार परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने पहुंचकर नब्बे हजार शब्द सुने। कई बातें हुई और श्री राजजी महाराज के स्वरूप की उन बातों को मैंने जाहिर किया है।

हक हुकमें कछू जाहेर किए, और छिपे रखे हुकम।
सो हुकमें अव्वल आखिर को, अब जाहेर किए खसम।। १९ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने श्री राजजी के हुकम से ही कुछ शब्द जाहिर किए और कुछ छिपाकर रखे। अब श्री राजजी महाराज ने स्वयं ही अपने हुकम से शुरू से आखिरत तक की हकीकत को जाहिर कर दिया है।

सब कोई कहे खुदा एक है, दूजा कहे न कोए।
कलाम अल्ला कहे एक खुदा, दूजा बरहक महंमद सोए।। २० ।।

दुनियां में सब कोई कहते हैं कि खुदा एक है। दो खुदा कोई नहीं कहता। कुरान भी कहता है कि खुदा एक है और मुहम्मद ने जो कहा वह सत्य है।

Nijanand App

सो महंमद कहे मैं उमत से, मुझसे है उमत।
मैं उमत बिना न पी सकों, हक हजूर सरबत।।२१ ।।

मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी कहती हैं कि मैं उम्मत (ब्रह्मसृष्टि) में से हूं। सब रूहें मेरे अंग हैं, इसलिए मैं अपनी रूहों को छोड़कर श्री राजजी महाराज के इश्क का शर्बत नहीं पी सकती।

खुदा एक महंमद साहेद, मसहूद है उमत।
ए तीनों अर्स अजीम में, ए वाहेदत बीच हकीकत।।२२ ।।

खुदा एक है और पूरी रूहों के सामने श्री श्यामाजी ने गवाही दी है, इसलिए श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें तीनों परमधाम में एक दिल एक स्वरूप हैं।

ए उपले माएने तीन कहे, और चौथा नूर मकान।
ए बातें मारफत की, सब मिल एक सुभान।।२३ ।।

यह बाहर दिखाने के लिए ही मैंने तीन कहे हैं और चौथा नूर मकान (अक्षरधाम) में अक्षर ब्रह्म है। यह चारों श्री राजजी महाराज के एक अंग हैं। यही मारफत का ज्ञान है।

रसूलें एता इत जाहेर किया, और हरफ रखे छिपाए।
हक मेला बड़ा होएसी, सो करसी जाहेर खिलवत आए।।२४ ।।

रसूल साहब ने आकर यही बात कुरान में जाहिरं में बताई है और हकीकत के भेद छिपाकर रखे हैं। श्री राजजी महाराज और रूहों का यह बड़ा भारी मेला होगा। तब हम स्वयं खिलवतखाना (मूल-मिलावा) की बातें जाहिर करेंगे।

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
तामें दोए देसी हक साहेदी, हकी खोले सब हकीकत।।२५ ।।

मुहम्मद साहब की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी कही हैं। जिनमें से दो बसरी और मलकी, अर्थात् रसूल साहब और श्यामा महारानी दोनों गवाही देंगे और तीसरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी सब हकीकत के भेद खोलकर बताएंगे।

हकी हक अर्स करे जाहेर, ऊग्या कायम सूर फजर।
होसी सब हैयाती, देख कायम खिलवत नजर।।२६ ।।

हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी, श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे। उनके द्वारा ही जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी का ज्ञान सबके संशय मिटाकर ज्ञान का सवेरा करेगा, जिसे सारी दुनियां देखकर अखण्ड मुक्ति प्राप्त करेगी।

ले हकी सूरत हक इलम, करसी जाहेर हक बिसात।
खिलवत भी छिपी ना रहे, करे जाहेर वाहेदत हक जात।।२७ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज जागृत बुद्धि के अखण्ड ज्ञान से परमधाम की सारी बातें जाहिर करेंगे और हकजात मोमिनों की एकदिली और मूल-मिलावा की सब छिपी बातें जाहिर करेंगे।

Nijanand App

फजर कही जो फुरमाने, सो अर्स बका हक दिन।
जो लों बका तरफ पाई नहीं, तो लों सबों ना रोसन।।२८।।

कुरान में जिस फजर का ज्ञान कहा है, वही हक श्री राजजी महाराज के जाहिर होने का दिन है। जब तक अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान दुनियां को नहीं होती, तब तक दुनियां में अंधेरा है।

अब दिन कायम जाहेर हुआ, सबों रोसनी पोहोंची बका हक।
कायम किए सब हुकमें, बरस्या बका इस्क मुतलक।।२९।।

अब वह अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज के जाहिर होने से दिन उग गया है (दिन निकल आया है) और सबको इसकी पहचान हो गई है। पहचान होने के बाद ही श्री राजजी के अखण्ड इश्क की बरसात हुई और फिर हुकम से सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति मिली (मिलेगी)।

रूह अल्ला चौथे आसमान से, आए खोली सब हकीकत।
ल्याए इलम लदुन्नी, कही सब हक मारफत।।३०।।

श्री श्यामा महारानी ने चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से आकर इस हकीकत को बताया। उन्होंने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान लाकर दिया और श्री राजजी महाराज के छिपे भेद बताए।

जो कही महंमद ने, हक जात सूरत।
सोई कही रूहअल्ला ने, यामें जरा न तफावत।।३१।।

रसूल साहब ने हकजात मोमिनों का जो स्वरूप लिखा है, वही बात श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कही है। इसमें जरा भी फर्क नहीं है।

जो अमरद कह्या महंमदें, सोई कही ईसे किसोर सूरत।
और सब चीजें कही बराबर, दोऊ मकान हादी उमत।।३२।।

रसूल साहब ने पारब्रह्म का स्वरूप अमरद कहा है। श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने उनका किशोर सरूप कहा है। दोनों स्वरूपों ने ही अक्षरधाम, परमधाम, श्यामाजी और रूहों की एक ही हकीकत बताई है।

हौज जोए बाग अर्स के, जो कछू अर्स बिसात।
कहूं केती अर्स साहेदियां, इन जुबां कही न जात।।३३।।

हौज कौसर तालाब, जमुनाजी और परमधाम के बाग-बगीचे और सब सामान दोनों ने एक जैसे बताए हैं। इस तरह से दोनों ने ही परमधाम की कितनी ही गवाहियां दीं जो कहने में नहीं आतीं।

बरकत कुंजी रूहअल्ला, हुआ बेवरा तीन उमत।
पूरी उमेदें सबन की, जाहेर होते हक सूरत।।३४।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान जो श्री श्यामाजी लेकर आए हैं, उससे जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि की पहचान हुई। श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान होते ही सबकी इच्छाएं पूरी हो गईं।

Nijanand App

ले ग्वाही दोऊ हादियों की, किया हक बरनन।
सब कौल किताबों के, हक हुकमें किए पूरन।। ३५ ।।

रसूल साहब और श्री श्यामा महारानी जी की गवाहियां लेकर श्री प्राणनाथजी ने श्री राजजी महाराज के स्वरूप को जाहिर किया। ग्रन्थों में लिखे अनुसार श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर वायदे पूरे कर दिए।

वाहेदत अर्स अखंड, असल नकल नहीं दोए।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, न नया पुराना होए।। ३६ ।।

परमधाम में सब अखण्ड है। वहां असल नकल नहीं होती और न घट-बढ़ ना नया-पुराना होता है।

रंग नंग रेसम मिलाए के, हेम जवेर कुंदन।
इन विध बनावे दुनियां, वस्तर और भूखन।। ३७ ।।

दुनियां अपने वस्त्रों और आभूषणों को नगों से रंगों से, रेशम से और सोने से बनाती है।

अर्स सरूप जो अखंड, ताको होए कैसे बरनन।
एक उतार दूजा पेहेरना, ए होए सुपन के तन।। ३८ ।।

परमधाम के स्वरूप अखण्ड हैं। उनका सपने के तन से कैसे वर्णन करूं, क्योंकि वहां पहनना और उतारना नहीं होता।

ए विध अर्स में है नहीं, जो करत है नकल।
ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अर्स में एकै असल।। ३९ ।।

खेल में जो नकल है वह परमधाम में नहीं होती। परमधाम के अंग, वस्त्र, आभूषण सब एक ही हैं और असल हैं।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अखंड सरूप के एह।
इत नहीं भांत सुपन ज्यों, दुनी पेहेन उतारत जेह।। ४० ।।

परमधाम के स्वरूपों के अंग जैसे अखण्ड हैं, वैसे ही उनके वस्त्र और आभूषण भी अखण्ड हैं। वहां सपने की दुनियां की तरह पहनना और उतारना नहीं होता।

सब चीजें रूह के हुकमें, करत चाह्या पूरन।
रूह कछुए चित्त में चितवे, सो होत सबे माहें खिन।। ४१ ।।

रूहों की चाहना के अनुसार हुकम सब पूरा कर देता है और उसमें क्षण भर की भी देरी नहीं होती।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, तिन सब अंगों सुख दायक।
सोभा भी तैसी धरे, जैसा अंग तैसा तिन लायक।। ४२ ।।

जैसे परमधाम के अंग हैं वैसे ही वहां के वस्त्र और आभूषण सब अंगों को सुख देने वाले हैं। शोभा और सुन्दरता भी वहां के अंग के अनुरूप ही होती है।

हर एक में अनेक रंग, हर एक में सब सलूक।
कई जुगतें हर एक में, सुख उपजत रूप अनूप।। ४३ ।।

हर चीज में अनेक रंग तथा सलूकी (शोभा, सजावट) होती है। इस तरह से प्रत्येक वस्तु में कई तरह की जुगतें हैं, जिनसे बेशुमार सुख उत्पन्न होता है।

Nijanand App

सब नंग में गुन चेतन, मुख थें केहेना पड़े न किन।
दिलमें जैसा उपजे, सो आगूं होत रोसन।।४४ ।।

परमधाम के सभी नग और गुण चेतन हैं, इसलिए किसी को मुख से कहना नहीं पड़ता। दिल में जैसी इच्छा होती है, वह पहले से ही बन जाती है।

अर्स सुख जो बारीक, सो जानत अरवा अर्स के।
ए झूठी जिमी जो दुनियां, सो क्यों कर समझे ए।।४५ ।।

परमधाम की यह खास बातें परमधाम की रूहें ही जानती हैं। इस झूठी दुनियां के लोग कैसे समझेंगे?

जेता वस्तर भूखन, सब रंग रस कई गुन।
रूह कछुए कहे एक जरे को, सो सब आगूं होत पूरन।।४६ ।।

परमधाम के वस्त्रों और आभूषणों में सब तरह के रंग, रस और गुण हैं, इसलिए रूह जरा भी मन में चाहे तो पहले ही पूरा हो जाता है।

अनेक सिनगार एक खिन में, चित्त चाह्या सब होत।
दिलमें पीछे उपजे, ओ आगे धरे अंग जोत।।४७ ।।

रूह के चित्त में चाहे अनुसार एक क्षण में उनके सिनगार बदल जाते हैं। दिल में चाहना बाद में आती है, सिनगार पहले ही बदल जाता है।

कई रंग रस नरमाई, कई सुख बानी जोत खुसबोए।
ए अर्स वस्तर भूखन की, क्यों कहूं सोभा सलूकी सोए।।४८ ।।

परमधाम के वस्त्रों और आभूषणों में कई तरह के रंग, रस, कोमलता और कई तरह के सुख, स्वर और खुशबू हैं, इसलिए उनकी सलूकी (शोभा) कैसे वर्णन हो?

मीठी बानी चित्त चाहती, खुसबोए नरमाई चित्त चाहे।
सोभा सलूकी चित्त चाही, ए अर्स सुख कहे न जाए।।४९ ।।

रूहों की चाहना के अनुसार इन वस्त्रों, आभूषणों में सुन्दर आवाज, खुशबू और नरमाई, शोभा और सलूकी है। ऐसे अखण्ड परमधाम के सुखों को शब्दों से कहा नहीं जा सकता।

अर्स बका की हकीकत, माहें लिखी कतेब वेद।
खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद।।५० ।।

अखण्ड परमधाम की हकीकत वेद और कतेब में लिखी है, परन्तु आखिरी जमाने के मालिक श्री प्राणनाथजी के बिना इन भेदों को कोई खोल नहीं सकता।

लिख्या वेद कतेब में, सोई खोले जिन सिर खिताब।
देसी मुक्त सबन को, करके अदल हिसाब।।५१ ।।

वेद और कतेब (कुरान) में लिखा है कि शास्त्रों के छिपे रहस्य और कुरान के रहस्यों को खोलने की उपाधि खुदा को ही है, जो कुल ग्रन्थों और कुरान के गुझ भेदों के रहस्य खुदा के बिना कोई खोल ही नहीं सकता। जो खोलेगा वही खुदा (पारब्रह्म) होगा, वही अन्त समय में संसार का न्यायाधीश बनकर न्याय करेगा और संसार को अखण्ड मुक्ति देगा।

Nijanand App

सातों सरूप अखंड, मैं बरनन किए सिर ले।
दो रास पांच अर्स अजीम, बोझ दिया न सिर सरूपों के।।५२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने अखण्ड के सात स्वरूपों का वर्णन किया है। दो रास के सिनगार तथा पांच परमधाम के सिनगार। रास में एक श्री राजजी का और एक श्री श्यामाजी का और परमधाम में दो श्री श्यामाजी के और तीन श्री राजजी के, परन्तु इनके वर्णन करने में मैंने श्री राजजी और श्री श्यामाजी का सहारा नहीं लिया।

जो लों इलम को हुकमें, कह्या नहीं समझाए।
तो लों सो रूह आप को, क्यों कर सके जगाए।।५३ ।।

जब तक श्री राजजी महाराज इलम को हुकम नहीं करते, तब तक इलम रूह को जगा नहीं सकता।

जब रूह को जगावे हुकम, तब रूह आपै छिप जाए।
तब रहे सिर हुकम के, यों हुकमें इलम समझाए।।५४ ।।

जब हुकम रूह को जगा देता है, तो रूह छिप जाती है और श्री राजजी का हुकम सामने आ जाता है। तब सब जिम्मेदारी हुकम के सिर पर आ जाती है। ऐसी श्री राजजी महाराज के हुकम से इलम द्वारा हमें समझ आ रही है।

जाहेर किया हक इलमें, रूह सिर आया हुकम।
सोई करे हक बरनन, ले हकै हुकम इलम।।५५ ।।

श्री राजजी के जागृत बुद्धि की वाणी से समझ आ गया कि श्री राजजी महाराज के सिनगार को, श्री राजजी महाराज के हुकम से, श्री राजजी महाराज के जागृत बुद्धि के ज्ञान द्वारा वर्णन करने का अधिकार मुझे मिला है।

हुकमें बेसक इलम, और हुकमें जोस इस्क।
मेहेर निसबत मिलाए के, बरनन करे अर्स हक।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ही जागृत बुद्धि का ज्ञान, जोश, इश्क, मेहर और निसबत मिली है, जिससे मुझे श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम का वर्णन करना है।

एही आसिक करे बरनन, और आसिकै सुने इत।
ए केहेवे लेवें मोमिन, या रसूल तीन सूरत।।५७ ।।

अब इनका (हक का और अर्श का) वर्णन मैं करती हूं। मोमिन सुनेंगे। यह कहने वाले और लेने वाले मोमिन हैं, या मुहम्मद साहब की तीन सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) हैं।

मैं हक अर्स में जुदे जानती, ल्यावती सब्द में बरनन।
जड़ में सिर ले ढूंढ़ती, हक आए दिल बीच चेतन।।५८ ।।

मैं परमधाम में श्री राजजी महाराज को रूहों से अलग जानती थी। यह मेरी भूल थी। अब संसार में दुनियां की तरह सब धर्मग्रन्थों को सिर पर लेकर पारब्रह्म को ढूंढ़ती फिरती तो मैं भी निराकार से आगे न जा पाती, परन्तु श्री राजजी महाराज ने मेहर की। मेरे ढूंढ़ने से पहले ही मेरे इस नश्वर तन में आकर बैठ गए।

Nijanand App

कहूं इनका बेवरा, सिर हुकम लेसी मोमिन।
सो हुकमें समझ जागसी, मिले हुकमें हक वतन।।५९ ।।

अब इनका विवरण बताती हूं। जो मोमिन होंगे वह इसे स्वीकार करेंगे। वह श्री राजजी का हुकम मानकर जागृत बुद्धि के ज्ञान को समझकर जागेंगे और फिर अपने घर परमधाम में मिलेंगे।

हुकमें चले हुकम, हुकमें जाहेर निसबत।
हुकमें खिलवत जाहेर, हुकमें जाहेर वाहेदत।।६० ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ही हुकम चलता है और उनके हुकम से ही मेरी निसबत और मूल-मिलावे में रूहों की एकदिली जाहिर होती है।

हुकमें दिल में रोसनी, सुध हुकमें अर्स नूर।
मुकैयद मुतलक हुकमें, हुकमें अर्स सहूर।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से ही दिल में ज्ञान आता है तथा परमधाम की पहचान होती है। हुकम से वेद कतेब का सीमित ज्ञान और परमधाम का संशय रहित ज्ञान और अर्श की हकीकत जाहिर होती है।

कोई दम न उठे हुकम बिना, कोई हले ना हुकम बिना पात।
तहां मुतलक हुकम क्यों नहीं, जहां बरनन होत हक जात।।६२ ।।

हुकम के बिना एक सांस भी नहीं आती और न पत्ता ही हिलता है। जहां हकजात रूहें (मोमिन), अर्श और हक का वर्णन होता हो तो उनके पास जागृत बुद्धि का बेशक इलम और हुकम क्यों नहीं होगा?

हक बातें रूह हुकमें सुने, हुकमें होए दीदार।
हुकमें इलम आखिरी, खोले हुकमें पार द्वार।।६३ ।।

हुकम से ही रूह श्री राजजी महाराज की बातें सुनती है और हुकम से ही दर्शन करती है। हुकम से ही जागृत बुद्धि का अखण्ड ज्ञान प्राप्त कर पार के दरवाजे खोलती है।

ए बरनन होत सब हुकमें, आया हुकमें बेसक इलम।
हुकमें जोस इस्क सबे, जित हुकम तित खसम।।६४ ।।

यह सब जो वर्णन मैं कर रही हूं, वह सब हुकम से ही हो रहा है और हुकम से ही जागृत बुद्धि, जोश और इश्क सभी मिलता है, अर्थात् जहां हुकम है, वहीं श्री राजजी महाराज हैं।

जब ए द्वार हुकमें खोलिया, हुकमें देख्या हक हाथ।
तब रही ना फरेबी खुदी, वाहेदत हुकम हक साथ।।६५ ।।

जब श्री राजजी महाराज के हुकम से पार के दरवाजे खुल गए तब झूठे संसार का अहंकार मिट गया। फिर श्री राजजी महाराज के साथ ही रूहों को मिलकर बैठे देखा।

पेहेले हुकमें इलम जाहेर, हुआ हुकमें हक बरनन।
मैं हुकम लिया सिर अपने, अब रूह छिप गई हक इजन।।६६ ।।

पहले हुकम ने इलम से पहचान कराई और फिर वर्णन कराया। मैंने अपना आप खोकर (अहंकार मिटाकर) श्री राजजी महाराज के हुकम को अपने सिर लेकर वर्णन किया। अब उनके ही हुकम से मेरी रूह छिप गई।

Nijanand App

हक बैठे दिल अर्स में, कह्या हकें अर्स दिल मोमिन।
रूहें पोहोंचाई हकें अर्स में, हक बैठे अर्स दिल रूहन।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल को अर्श करके बैठे हैं। श्री राजजी महाराज ने मोमिन के दिल को अर्श कहा है। मोमिनों के दिल में बैठकर रूह (मोमिनों) को परमधाम में पहुंचाते हैं।

हक रूहें बीच अर्स के, नहीं जुदागी एक खिन।
हुकमें नैन कान दीजिए, अब देखो नैनों सुनो वचन।। ६८ ।।

श्री राजजी महाराज और रूहों के बीच परमधाम में एक क्षण की भी जुदाई नहीं है। अब हुकम के द्वारा ही श्री राजजी को अपने निज नैनों से देखो और आत्मा के कानों से उनकी बातों को सुनो।

अब हकें हुकम चलाइया, खुदी फरेबी गई गल।
रास खेल रस जागनी, हुआ रूहों सुख असल।। ६९ ।।

अब श्री राजजी महाराज के हुकम से मेरी फरेबी (अहंकार) समाप्त हो गई है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! तू श्री राजजी महाराज के साथ जागनी रास खेलकर उनके इश्क का रस ले। यही रूह का असल सुख है।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हकें पोहोंचाई इन मजल।
कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल।। ७० ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने ही मुझे इस दर्जे तक पहुंचाया है। वेद और शास्त्र कहते हैं कि पारब्रह्म चौदह लोकों में नहीं है। वह पारब्रह्म श्री राजजी महाराज रूहों के दिल में साक्षात् बैठे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २०१ ।।

आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी के हुकम से मेरे दिल में ऐसा लगता है कि इश्क से आत्मा जागृत हो जाएगी, क्योंकि इश्क आने से श्री राजजी महाराज का स्वरूप दिल में आ जाएगा और रूह जाग जाएगी।

हक सूरत वस्तर भूखन, बीच बका अर्स के।
तिनको निरने इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए।। २ ।।

अखण्ड परमधाम के बीच विराजमान श्री राजजी के स्वरूप का वर्णन यहां की जबान से कैसे करें?

जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हुकमें जोस ले।
अर्स चीज कही सो मेहेर से, पर बल इन अंग अकल के।। ३ ।।

जिन्होंने श्री राजजी के हुकम और जोश को लेकर श्री राजजी महाराज और परमधाम का कुछ वर्णन किया, तो यह सब श्री राजजी की मेहर से ही हुआ है, परन्तु संसार की अकल की शक्ति से कहा।

Nijanand App

जो वचन जुबां केहेत है, हिस्सा कोटमा ना पोहोंचत।
पोहोंचे ना जिमी जरे को, तो क्या करे जात सिफत।। ४ ।।

यहां की जबान से परमधाम के एक कण का करोड़वां हिस्सा भी वर्णन नहीं हो सकता, तो फिर हकजात मोमिनों की सिफत का वर्णन कैसे करें?

किया हुकमें बरनन अर्स का, पर दृष्ट मसाला इत का।
एक हरफ लुगा पोहोंचे नहीं, लग अर्स चीज बका।। ५ ।।

श्री राजजी के हुकम से ही परमधाम का वर्णन किया है, पर समझाने के वास्ते चीजें यहां की ली हैं। परमधाम की चीजें जो अखण्ड हैं, उनका वर्णन करने के लिए यहां एक भी शब्द नहीं है।

जिन देखी सूरत हक की, इन वजूद के सनमंध।
जोस हुकम मेहेर देखावहीं, मोमिन जानें एह सनंध।। ६ ।।

जिन्होंने इन तनों के सम्बन्ध से श्री राजजी महाराज के जोश, हुकम और मेहर को लेकर श्री राजजी महाराज का स्वरूप देखा है, वही परमधाम के मोमिन हैं।

सबों सिफत करी जोस अकलें, इन अंग छूटे ना दृष्ट फना।
कोई बल करो हक हुकमें, पर अर्से क्यों पोहोंचे सुपना।। ७ ।।

जिसने भी आज दिन तक धनी के जोश से अपनी अकल से वर्णन किया है, उनकी दृष्टि संसार तक ही रही। श्री राजजी महाराज के हुकम से कोई अपना बल भी करे तो भी अखण्ड परमधाम का वर्णन सपने के अन्दर बैठकर नहीं होता।

नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक।
मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक।। ८ ।।

जागृत होने पर नींद समाप्त हो जाएगी तो स्वप्न कैसे रहेगा? सपने में ही श्री राजजी महाराज को देखना है और वर्णन करना है। जब श्री राजजी की मेहर, इल्म और जोश आ जाए तो उनके हुकम से संसार में बैठे ही देख सकते हैं।

पर जेता हिस्सा नींद का, रूह तेती फरामोस।
जो मेहेर कर हुकम देखावहीं, तब देखे बिना जोस।। ९ ।।

आत्मा में जितनी फरामोशी रहेगी उतनी बेसुधी रहेगी। जब श्री राजजी महाराज की मेहर और हुकम उनके स्वरूप के दर्शन कराएगी तो फिर बिना जोश के ही दर्शन होंगे।

हक जानें सो करें, अनहोनी सो भी होए।
हिसाब किए सुपन में, मुतलक न देखे कोए।। १० ।।

श्री राजजी महाराज जो चाहें कर सकते हैं। अनहोनी को भी सम्भव कर सकते हैं। श्री राजजी ने स्वप्न में बैठाकर परमधाम का वर्णन कराया, जिसे आज दिन तक कोई अपनी बल और बुद्धि से नहीं कर सका।

ए बात तो कारज कारन, हक जानत त्यों करत।
असल रूह तन मिलावा, निसबत है वाहेदत।। ११ ।।

यह बात तो कार्य-कारण से बनी है। जैसा चाहते हैं वैसा करते हैं। रूहों के असल तन मूल-मिलावा में हैं जो एकदिल हैं। मूल-मिलावा में बैठे हैं। वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

ए हक बातन की बारीकियां, सो हक के दिए आवत।
ना सीखे सिखाए ना सोहोबतें, हक मेहेरें पावत।। १२ ।।

यह श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातें हैं, जो उनके देने से ही समझ में आएंगी। श्री राजजी महाराज की वाणी सीखने से, सिखाने से या संगति से नहीं मिलती। धनी की मेहर से मिलती है।

अपनी रूहों वास्ते, कई कोट काम किए।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जिन नाम निसान लिए।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी रूहों के वास्ते करोड़ों काम किए हैं, जिनको परमधाम की रूहें जानती हैं, क्योंकि परमधाम के निशानों को यही समझती हैं।

ए जो अर्स बारीकियां, अर्स सहूरें रूह जानत।
जिन पट खुल्या सो न जानहीं, बिना हक सिफत।। १४ ।।

यह परमधाम की गुझ बातें हैं जो परमधाम की रूहें जागृत बुद्धि से जानती हैं। जिनको परमधाम की सुध भी हो गई है वह श्री देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) भी श्री राजजी महाराज की मेहर के बिना श्री राजजी के दिल की खास बातों को नहीं जान सके।

जिन जो देख्या जागते, सो देखे माहें सुपन।
कानों सुन्या सोभी देखत, याके साथ तो हक इजन।। १५ ।।

जिन्होंने परमधाम को जागृत अवस्था में देखा है, वही अब सपने में बैठकर देख रहे हैं। जो ज्ञान श्री देवचन्द्रजी महाराज से सुना उसको भी अब मैं स्वप्न में बैठकर देख रही हूं, क्योंकि मेरे साथ श्री राजजी महाराज का हुकम है।

रखे वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे।
रूहों खेल देखावने, कई विध जुगत बनाए।। १६ ।।

जागृत होने पर भी श्री राजजी महाराज का हुकम मोमिनों को जितने दिन चाहे संसार में रोके रखता है। इस तरह से रूहों को खेल दिखाने के वास्ते श्री राजजी महाराज ने कई तरह से प्रबन्ध कर रखे हैं।

आतम तो फरामोस में, भई आड़ी नींद हुकम।
सो फेर खड़ी तब होवहीं, रूह दिल याद आवे खसम।। १७ ।।

हमारी आत्माएं तो फरामोशी में हैं, क्योंकि धनी के हुकम से हम स्वप्न के तन में आ गए हैं। जब दिल में श्री राजजी महाराज की याद आएगी तो फरामोशी हट जाएगी और रूहें जागृत हो जाएंगी।

सो साख मोमिन एही देवहीं, यो बूझ में भी आवत।
अनुभव भी कछू केहेत है, और हुकम भी कहावत।। १८ ।।

इस बात की गवाही मोमिन देते हैं। यह बात समझ में भी आती है। अनुभव से भी कुछ वर्णन करती हूं। कुछ वर्णन हुकम कराता है।

मोमिन केहेवें हुकमें, बूझ अनुभव पर हुकम।
हुकम केहेवे सो भी हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।। १९ ।।

मोमिन जो कुछ कहते हैं हुकम से ही कहते हैं। उनकी समझ और अनुभव भी हुकम के अधीन है। हुकम जो कहला रहा है वह भी धनी के हुकम के अधीन है।

Nijanand App

रूह तेती जागी जानियो, जेता दिलमें चुभे हक अंग।
जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग।। २० ।।

रूह के दिल में श्री राजजी महाराज का जितना स्वरूप याद आता है उतना ही रूह जागी समझो। श्री राजजी महाराज के जिस अंग का अनुभव नहीं होता है समझ लो अभी उतनी फरामोशी है।

ताथें जो रूह अर्स अजीम की, सों क्यों ना करे उपाए।
ले हक सरूप हिरदे मिने, और देवे सब उड़ाए।। २१ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखने के उपाय क्यों नहीं करतीं? वह श्री राजजी के स्वरूप को हृदय में लेकर संसार को छोड़ देती हैं।

इस्क बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक।
मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक।। २२ ।।

इश्क के बिना रूह के दिल में श्री राजजी महाराज का स्वरूप नहीं आता। फिर भी श्री राजजी महाराज की मेहर, जोश, निसबत और हुकम से उनके स्वरूप की पहचान हो सकती है।

मोहे दिलमें हुकमें यों कह्या, जो दिलमें आवे हक मुख।
तो खड़ा होए मुख रूह का, हकसों होए सनमुख।। २३ ।।

हुकम से मेरे दिल में यह आया कि यदि श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द मेरे दिल में आ जाए, तो मेरी परआतम का मुख भी श्री राजजी महाराज के सामने आ जाएगा।

अधुर हरवटी नासिका, दंत जुबां और गाल।
जो अंग आया हक का दिल में, उठे रूह अंग उसी मिसाल।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के होंठ, हरवटी, नासिका, जबान, दांत और गाल जो अंग रूह के दिल में आ गया, वह अंग परआतम का जाग गया।

जो तूं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन।
तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन।। २५ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के नेत्र दिल में आ गए तो रूह के नेत्र भी खुल जाएंगे। फिर आशिक माशूक श्री राजजी और मेरी परआतम नजर से बातें करने लगेंगी।

जो हक निलाट आवे दिलमें, और दिलमें आवे श्रवन।
दोऊ अंग खड़े होएं रूह के, जो होवें रूह मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज का मस्तक और कान दिल में आ जाते हैं तो रूह के भी दोनों अंग जागृत हो जाएंगे।

भौं भृकुटी पल नासिका, सुन्दर तिलक हमेस।
गौर सोभा मुख चौक की, क्यों कहूं जोत नूर केस।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज की भौंहे, भृकुटि, पलकें, नासिका हमेशा रहने वाला सुन्दर तिलक, मुखारबिन्द के गोरे रंग की शोभा और उनके सुन्दर घुंघराले नूरी बालों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक।
तेते अंग रूह के, उठ खड़े होंए बेसक।। २८ ।।

जितने अंग मैंने श्री राजजी महाराज के बताए हैं, वह यदि रूह के दिल में आ जाएंगे तो रूह के भी वही अंग जागृत हो जाएंगे।

पाग बनी सिर सारंगी, इन जुबां कही न जाए।
ए जुगत जोत क्यों कहूं, जो हकें बांधी दिल ल्याए।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर सारंगी की तरह पाग बंधी है जो रूहों के अपने दिल की चाहना से बांधी है। उसकी जुगत का वर्णन इस जबान से कैसे करूं?

अतंत सोभा सुन्दर, चढ़ती चढ़ती तरफ चार।
जित देखूं तित अधिक, सोभा न आवे माहें सुमार।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की शोभा और सुन्दरता नित्य नौतन (नई) नजर आती है। चारों तरफ से जैसे भी देखूं अधिक शोभा दिखाई देती है, क्योंकि यह बेशुमार है।

हक हैड़ा हिरदे ग्रहिए, दिल में रहे दायम।
सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ कायम।। ३१ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के दिल को अपने दिल में बसा लें तो परआतम का दिल भी जाग जाएगा।

जो हक अंग दिल में नहीं, सो अंग रूह का फरामोस।
जब हक अंग आया दिल में, सो रूह अंग आया माहें होस।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज का जो भी अंग रूह के दिल में नहीं आया रूह का वही अंग फराफोशी में रहा। जब श्री राजजी महाराज का वह अंग दिल में आ गया तो रूह के उस अंग से फरामोशी हट गई।

कटि पेट पांसे हक के, पीठ खभे कांध केस।
ए दिलमें जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर, पेट, पसलियां, पीठ, बाजू, कंधा, और बाल जब रूह के दिल में आ गए, तो रूह को आवेश आ जाएगा।

बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ।
हक के अंग हिरदे आए, तब रूह खड़ी हुई हक साथ।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के बाजू, भुजा, कोहनी, काड़ा, कलाई और हाथ जब रूह के दिल में आ गए, तो रूह की परआतम उठकर धनी के सामने खड़ी हो गई।

पोहोंचे हथेली अंगुरी नख, लीकें रंग सलूक।
हक अंग मिहीं हिरदे बैठे, अब निमख न होए रूह चूक।। ३५ ।।

हाथ का पोहोंचा, हथेली, उंगली, नख तथा हाथ की रेखाएं और सुन्दर शोभा जब रूह के दिल में आ जाती है तो एक क्षण के लिए भी रूह से भूल नहीं होती और उसके भी यह अंग जागृत हो जाते हैं।

Nijanand App

नख अंगूठे अंगुरियां, नीके ग्रहिए हक कदम।
सोई नख अंगुरियां पांउं रूह के, खड़े होत माहें दम।।३६।।

श्री राजजी महाराज के चरणों के नख, अगूंठे और उंगलियां जब रूह के दिल में आ जाते हैं तो एक पल में रूह के भी यही अंग खड़े हो जाते हैं।

जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक अंग सब हिरदे आए, तब रूह जागे अंग परवान।।३७।।

जब श्री राजजी महाराज के चरण दिल में आ जाते हैं तो रूह खड़ी हो जाती है। जब श्री राजजी महाराज के सभी अंग दिल में आ जाते हैं तो रूह पूरे रूप से जागृत हो जाती है।

मोहोरी चूड़ी इजार की, और नेफा इजार बंध।
हरे रंग बूटी कई नकस, हकें सोभित भली सनंध।।३८।।

श्री राजजी महाराज की इजार की मोहोरी की चूड़ियां, नेफा, इजारबन्ध, हरे रंग की बूटियां और नक्शकारी अच्छी तरह से इजार में शोभा देती है।

क्यों कहूं जुगत जामें की, हरे पर उज्जल दावन।
निपट सोभित मिहीं बेलियां, झांईं उठत अति रोसन।।३९।।

जामे की हकीकत कैसे बताऊं? हरी इजार पर सफेद जामा पहना है जिसमें सुन्दर बारीक बेलियां हैं। इजार की किरणों की झांई जामे में सुन्दर झलकती है।

एक सेत रंग जामा कह्या, माहें जवेर जुगत कई रंग।
इन जुबां रोसनी क्यों कहूं, जो झलकत अर्स के नंग।।४०।।

जामा सफेद रंग का कहा है जिसमें कई रंग के जवेर युक्ति से जड़े हैं। परमधाम के इन नगों की झलकार को यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

बीच पटुका कस्या कमरें, रंग कई बिध छेड़े किनार।
बेली नकस फूल केते कहूं, अवकास भस्यो झलकार।।४१।।

कमर में पटका बंधा है, जिसके पल्लू और किनारों पर कई तरह के रंग और बनावट की बेलियां, नक्शकारी, फूल आकाश तक जगमगाती हैं।

एक झलकार मुख केहेत हों, माहें कई सलूकी सुखदाए।
सो गुन गरभित इन जुबां, रंग रोसन क्यों कहे जाए।।४२।।

यह झलकार जो मैंने कही है, उसमें कई तरह की बनावटें सुख देने वाली हैं। वह कई तरह के रंग, रोशनी, कारीगरी से भरपूर हैं। उसका यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

जामा जुड़ बैठा अंग पर, कोई अचरज खूबी लेत।
सोभा सलूकी सुख क्यों कहूं, अंग गौर पर जामा सेत।।४३।।

श्री राजजी महाराज के अंग पर जामा चिपककर बैठा है (टाइट-फिट है) जिसकी सुन्दरता अति अद्भुत है। श्री राजजी महाराज के गोरे अंग पर सफेद जामे की शोभा (सलूकी) और सुख का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

बगलों नकस केवड़े, कंठ बेली दोऊ गिरवान।
ए जुगत जुबां तो कहे, जो कछू होए इन मान।। ४४ ।।

जामे की बगलों में केवड़े के फूल जैसी नक्शकारी है। गले में तथा दोनों तनियों पर बेलें बनी हैं जिनकी कोई उपमा नहीं है, इसलिए इस जुगत का यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

कटाव कोतकी कांध पीछे, ऊपर फुंदन हारों के।
रूह जो जाग्रत अर्स की, सुख लेसी बका इत ए।। ४५ ।।

जामे में कंधे के पीछे कटाव पर जरी का काम है और उसके ऊपर गले में पहने हारों के फुंदन लटकते हैं। परमधाम की जो रूह जागृत हो जाती है यह अखण्ड सुख वही प्राप्त करती है।

बांहें चूड़ी और मोहोरियां, चूड़ी अचरज जुगत।
निपट मिहीं मोहोरीय से, चढ़ती चढ़ती सोभित।। ४६ ।।

जामे की बांह की मोहरी की चुन्नटें बड़ी अजब ढंग की शोभा देती हैं। पहले बिलकुल बारीक, फिर ऊपरा ऊपर बढ़ती शोभा है।

आए वस्तर हिरदे हक के, रूह अपने पेहेने बनाए।
तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्र जब रूह के दिल में आ गए तो रूह ने भी अपने वस्त्र धारण कर लिए, क्योंकि जितने ही अंग श्री राजजी महाराज के दिल में आते है, उतने ही अंग रूह के खड़े होते हैं।

पांच नंग माहें कलंगी, तामें तीन नंग ऊपर।
एक मध्य एक लगता, पांच रंग जोत बराबर।। ४८ ।।

श्री राजजी महाराज की कलंगी में पांच तरह के नग शोभा देते हैं। इसमें तीन नग ऊपर, एक बीच में और एक पाग से लगता हुआ है। इन पांचों रंगों की किरणें बराबर उठती हैं।

ए जो कलंगी सिर पर, लटक रही सुखदाए।
जो भूखन रूह नजर भरे, तो जानों अरवा देवे उड़ाए।। ४९ ।।

यह कलंगी सिर के ऊपर पाग में लटकती सुख देती है। श्री राजजी महाराज के जिन आभूषणों को रूह नजर भरकर देख लेती है, तो लगता है वह उसमें मग्न होकर अपनी अरवाह उड़ा देगी।

सात नंग माहें दुगदुगी, सो सातों जुदे जुदे रंग।
चढ़ती जोत आकास में, करत माहों माहें जंग।। ५० ।।

पाग की दुगदुगी में सात अलग-अलग नगों के रंग दिखाई देते हैं, जिनकी किरणें आकाश में आपस में टकराती हैं।

जो रस कलंगी दुगदुगी, सोई पाग को रस।
अंग रंग जोत बराबर, ए नंग रस नूर अर्स।। ५१ ।।

कलंगी और दुगदुगी जैसी रस भरी है, पाग भी वैसी ही रस भरी है जो अंग के रंग के बराबर शोभा देती है। यह नग भी रस भरे परमधाम के नूरी अंग हैं।

Nijanand App

ए जो हिरदे आए हक भूखन, जाहेर स्यामाजी के जान।
कलंगी दुगदुगी राखड़ी, होत दोऊ परवान।।५२।।

श्री राजजी महाराज के आभूषण जब दिल में आ गए तो श्री श्यामाजी के आभूषण भी इसी तरह से आ गए समझना। श्री राजजी महाराज की कलंगी और दुगदुगी और श्री श्यामाजी की राखड़ी दोनों एक से एक सुन्दर दिखाई देते हैं।

दोऊ मुक्ताफल कान के, करड़े कंचन बीच लाल।
साड़ी किनार सेंथे पर, श्रवन पानड़ी झाल।।५३।।

दोनों कान के मोतियों के फूल सोने में जड़े हुए हैं। इनके बीच में लाल नग शोभा देता है। कानों में पान की बनावट की झाला (बड़ी बालियां) पहन रखी है। साड़ी की किनारी मांग से लगती हुई इसके ऊपर शोभा देती है।

हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल।
चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल।।५४।।

श्री राजजी महाराज के अंग रूह के अंग में निश्चित रूप से चुभते हैं, परन्तु आभूषणों की शोभा तो भाले के समान रूह के दिल में छेद करती है। ऐसे श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी की युगल जोड़ी का चितवन रूह हमेशा करती है। तभी श्री राजजी महाराज के चरण रूह को मिलते हैं, जो रूह का अर्श है।

मुख बीड़ी आरोगें पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल।
ए रूह दृष्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल।।५५।।

श्री राजजी महाराज पान का बीड़ा आरोगते हैं। तब होठों की लालिमा के साथ पान की लालिमा अच्छी लगती है। यह शोभा रूह की नजर से जब देखें तो आत्मा के सब द्वार खुल जाते हैं।

कहूं केते भूखन कंठ के, तेज तेज में तेज।
आसमान जिमी के बीच में, हो गई रोसन रेजा-रेज।।५६।।

गले के आभूषण का कहां तक बयान करूं? उनके तेज से आसमान और जमीन के कण रेजारेज (जगमगा) हो रहे हैं।

हार कई जवेरन के, कहूं केते तिनके रंग।
कई लेहेरें माहें उठत, ए तो अर्स अजीम के नंग।।५७।।

श्री राजजी महाराज ने जवेरों (जवाहरातों) के कई हार पहने हैं। उनके कितने रंग बताएं? परमधाम के एक नग में कई तरंगें उठती हैं।

एक एक नंगमें कई रंग, रंग रंग में तरंग अपार।
तरंग तरंग किरने कई, हर किरने रंग न सुमार।।५८।।

एक नग में कई रंग और रंग रंग में कई तरंग, एक तरंग में कई किरणें और हर एक किरण में रंग बेशुमार हैं।

जामें चादर जुड़ रही, ढांपत नहीं झलकार।
गिनती जोत क्यों कर होए, नंग तेज ना रंग पार।।५९।।

जामे पर चादर है, जिससे जामे की झलकार दिखाई देती है। इनके नगों का तेज, रंग बेशुमार हैं। इनकी गिनती किस तरह से हो?

Nijanand App

ए रंग जोत किन विध कहूं, जो ले देखो अर्स सहूर।
सोभा रंग सलूकी सुख, देखो रूह की आंखों जहूर।। ६० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से देखो तो इन रंगों की जोत कैसे कहूं? शोभा, सलूकी, रंग और सुख रूह की आंखों से ही देखे जा सकते हैं।

भूखन हक श्रवन के, और हक कण्ठ कई हार।
सोई कण्ठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार।। ६१ ।।

श्री राजजी महाराज के कानों के आभूषण तथा उनके गले के कई हार देखने से रूह के गले और कान के सिनगार सज जाते हैं।

सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर।
जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर।। ६२ ।।

श्री राजश्यामाजी की युगल जोड़ी की शोभा एक सी है। जैसे अन्दर से वैसे ही बाहर। दोनों एक से नजर आते हैं।

बाजूबंध और पोहोंचियां, कड़े जवेर कंचन।
नंग रंग नाम केते कहूं, कही जाए न जरा रोसन।। ६३ ।।

बाजूबन्ध, पोहोंची, कड़ा, जवेर, सोना, कई तरह के नगों और रंगों के नाम कहां तक कहूं? इनकी थोड़ी भी शोभा कहना सम्भव नहीं है।

मुंदरियां दसों अंगुरियों, एक छोटी की न केहेवाए जोत।
अर्स जिमी आकास में, हो जात सबे उद्दोत।। ६४ ।।

दसों उंगलियों में मुंदरियां हैं जिनमें एक छोटी की भी जोत कहने में नहीं आती। इसकी जोत से परमधाम की जमीन और आकाश सब जगमगा रहे हैं।

हक के भूखन की क्यों कहूं, रंग नंग जोत सलूक।
आतम उठ खड़ी तब होवहीं, पेहेले जीव होए भूक भूक।। ६५ ।।

श्री राजजी के आभूषणों के रंग, नग, जोत और सलूकी कैसे कहूं? इनके अंग में आते ही आत्मा जागृत हो जाएगी। उसके पहले ही जीव के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे।

रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार।
ए सोभा जुगल किसोर की, जुबां केहे न सके सुमार।। ६६ ।।

रूह के हाथ के आभूषण भी श्री राजजी के हाथ के आभूषणों के साथ ही सज जाते हैं। युगल किशोर की शोभा बेशुमार है, जिसका वर्णन कैसे करूं?

चारों जोड़े चरन भूखन, रंग चारों में उठें हजार।
ए बरनन जुबां तो करे, जो कछुए होए निरवार।। ६७ ।।

दोनों चरणों के चारों जोड़े आभूषणों (झांझरी, घुंघरी, कांबी, कड़ला) में हजारों नगों की तरंगें उठती हैं। यदि इसकी कोई सीमा हो तो यहां की जबान से वर्णन हो।

Nijanand App

वस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर।
त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर॥ ६८ ॥

श्री राजजी महाराज के आभूषण जैसे ही रूह के दिल में आए, वैसे ही शोभा सहित रूह की परआतम जागृत हो जाती है।

सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान।
तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान॥ ६९ ॥

स्वप्न के तन में श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा रूह के दिल में जब आ गई तो रूह की परआतम उठ कर खड़ी हो जाएगी।

जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा माहें दिल।
तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल॥ ७० ॥

जब श्री राजजी महाराज का पूरा स्वरूप रूह के दिल में आ गया तब परआतम के सभी अंग जागृत होकर खड़े हो जाएंगे।

वस्तर भूखन सब अंगों, कण्ठ श्रवन हाथ पाए।
नख सिख सिनगार साज के, बैठे अर्स दिल में आए॥ ७१ ॥

श्री राजजी महाराज के कण्ठ, हाथ. कान, पांव, नख से सिर तक पूरा सिनगार रूह के दिल में आकर बैठ जाता है।

जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक आए दिल अर्स में, रूह जागे के एही निसान॥ ७२ ॥

तब समझना कि रूह की परआतम जागृत हो गई है। श्री राजजी महाराज का रूह के दिल में आना ही परआतम का जागना होता है।

हक के दिल का इस्क, रूह पैठ देखे दिल माहें।
तो हक इस्क सागर से, रूह निकस न सके क्यांहें॥ ७३ ॥

श्री राजजी महाराज के दिल का इश्क जब रूह के दिल में आ जाता है तो श्री राजजी महाराज का इश्क सागर के समान गहरा और गम्भीर हो जाता है। रूह उसमें से किसी तरह भी निकल नहीं पाती।

जो हक करें मेहेरबानगी, तो इन बिध होए हुकम।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम॥ ७४ ॥

श्री राजजी महाराज की मेहर हो तभी उनके हुकम से रूह की ऐसी हालत होती है। रूह भी जागृत होने की शक्ति तब लगाए जब श्री राजजी महाराज उसे जागृत करना चाहें।

महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।
रूह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए॥ ७५ ॥

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि रूह को जगाने का एक यही उपाय है। इसे श्री राजजी का हुकम समझकर सिर चढ़ाओ।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ २७६ ॥

Nijanand App

चरन को अंग तिनमें नख अंग

सखीरी तेज भरयो आकास लों, नख जोत निकसी चीर।
ज्यों सागर छेद के आवत, नेहेर निरमल का नीर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सखी! श्री राजजी महाराज के नख के जोत की किरणें आकाश तक चीरती हुई चली जाती हैं, लगता है कि गहरे नीले सागर के बीच एक स्वच्छ निर्मल जल की नहर बहती आ रही है।

रंग केते कहूं चरन के, आवें न माहें सुमार।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार।। २ ।।

चरण कमलों के रंग का कहां तक वर्णन करूं? यह गिनती में ही नहीं आते। इसी वास्ते ही खेल दिखाया है कि रूहें संसार में बैठकर उसकी जोत का अनुभव कर सकें।

प्यारे पांउ मेरे पिउ के, देख नख अंगूठे अंगुरियों।
सो बैठे बीच दिल तखत के, तो अर्स कह्या मेरे दिल को।। ३ ।।

मेरे धनी के चरणों की उंगलियां और अंगूठे के नखों को देखो जो मेरे दिल में विराजमान हैं, इसलिए मेरे दिल को अर्श कहा है।

दो अंगूठे आठ अंगुरी, नख सोभित तिन पर।
नख लगते सिर अंगुरी, ए जोत कहूं क्यों कर।। ४ ।।

दो अंगूठों और आठ उंगलियों पर नख शोभा देते हैं। यह नख उंगलियों के सिरे पर शोभा देते हैं। इनकी जोत का कैसे वर्णन हो?

चरन अंगूठे पतले, और पतली अंगुरियां।
लाल रंग माहें सोभित, अतंत उज्जलियां।। ५ ।।

चरण के अंगूठे और उंगलियां पतली हैं। यह उज्ज्वल लाल रंग की शोभा देती हैं।

देखूं एक एक अंगुरी, आठों अंगुरी दोऊ पाए।
कोमल सलूकी मिल रही, ए छब फब कही न जाए।। ६ ।।

एक-एक उंगली को देखती हूं तो दोनों चरण कमलों की आठों उंगलियों की सलूकी और कोमलता की छवि अत्यन्त सुन्दर लगती है। यह कहने में नहीं आती।

दोऊ पांउ बड़ी दो अंगुरी, अंगूठों बराबर।
तिन थें तीन उतरती, लगती कोमल सुन्दर।। ७ ।।

दोनों चरण कमलों की दो उंगलियां बड़ी हैं जो अंगूठों के साथ में हैं। उनसे तीन उतरती हुई कोमल हैं। यह सुन्दर शोभा देती हैं।

झलकत नूर बराबर, ऊपर अंगुरियों नख।
सोभा सलूकी नख जोत की, जुबां केहे न सके इन मुख।। ८ ।।

सभी उंगलियों के नख के नूर बराबर झलक रहे हैं। नख की शोभा और सलूकी की जोत इस जबान से कैसे कहूं?

Nijanand App

अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूं प्रकास।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास।। ९ ।।

नखों की जोत बेशुमार है। इसको किस तरह से बताएं? मेरे मुख से तो इतना ही कहा जाता है कि इसकी किरणें आकाश तक जाती हैं।

जो सुंदरता अंगुरियों, और सुंदरता नख जोत।
ए सोभा न आवे सब्द में, केहे केहे कहूं उद्दोत।। १० ।।

उंगलियों की सुन्दरता और नखों के जोत की सुन्दरता और प्रकाश की शोभा शब्दों में नहीं आती।

तेज जोत कछू और है, सोभा सुन्दरता कछू और।
पर ए अंग नूरजमाल के, याको नहीं निमूना ठौर।। ११ ।।

जब भी देखते हैं तो इन नखों का तेज और जोत का कुछ नया ही रूप होता है। इस तरह शोभा और सुन्दरता भी कुछ और ही हो जाती है। श्री राजजी महाराज के अंगों जैसा कोई नमूना है ही नहीं, तो कैसे बताएं?

जोत में एकै रोसनी, सोभा सुन्दर गुन अनेक।
सोभा रंग रोसन नरमाई, रस मीठे कई विवेक।। १२ ।।

जोत में एक ही रंग दिखाई देता है, परन्तु शोभा और सुन्दरता में अनेक गुण दिखाई देते हैं। शोभा में रंगों की नरमाई की जोत है। कई तरह के मीठे रसों का अनुभव होता है।

सोभा माहें सलूकियां, और खुसबोई सुखदाए।
सुख प्रेम कई खुसालियां, इन जुबां कही न जाए।। १३ ।।

शोभा में बनावट और सुख देने वाली खुशबू है। इस सुख से प्रेम और कई तरह की खुशी मिलती है। यह यहां की जबान से वर्णन में नहीं आ सकती।

अर्स बातें सुख बारीक, सुपन बानी न आवे सोए।
कछुक जाने रूह अर्स की, जो बेसक जागी होए।। १४ ।।

परमधाम के सुख की यह खास बातें हैं जो सपने की वाणी से नहीं कही जा सकती हैं। जो आत्मा जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हो गई हो, उसको ही इसका कुछ अनुभव होता है।

महामत कहे हक हुकमें, ऐसा सुख ना दूजा कोए।
पांउं मासूक के आसिक, पिए रस धोए धोए।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से श्री महामतिजी कहती हैं कि आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को धो-धोकर पीती हैं। पीकर जो रस लेती हैं, उसके समान दूसरा कोई सुख नहीं है।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। २९१ ।।

चरन हक मासूक के उपली सोभा

फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट।। १ ।।

मेरी रूह को बार-बार श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को देखने की चाहना लगी है। जब श्री राजजी महाराज के चरण दिल में आ गए तो आत्मदृष्टि खुल गई।

Nijanand App

गुन केते कहूं इन चरन के, आवें न माहें सुमार।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार।। २ ।।

इन चरणों के गुणों का कहां तक वर्णन करूं? यह बेशुमार हैं। रूहों को इसी वास्ते खेल दिखाया है कि रूहें खेल में इसका अनुभव करें।

बरनन करत हों चरन की, अर्स सूरत हक जात।
ए नेक कहूं हक हुकमें, सोभा सब्द न इत समात।। ३ ।।

मैं श्री राजजी महाराज के चरण कमलों का तथा रूहों के स्वरूप का वर्णन करती हूं। श्री राजजी के हुकम से मैं थोड़ा ही कहती हूं, क्योंकि यह शोभा शब्दों में नहीं आती।

कदम तली अति उज्जल, निपट नरम रंग लाल।
रूहें आसिक इन मासूक की, ए कदम छोड़ें ना नूरजमाल।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली अति उज्ज्वल और नर्म है। लाल रंग है। आशिक रूहें अपने माशूक श्री राजजी महाराज के चरणों को नहीं छोड़ेंगी।

कही सुछम सूरत अमरद की, ए कदम भी तिन माफक।
रस रंग सोभा सलूकी, देख अर्स सहूरें हक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को अमरद कहा है। यह चरण कमल भी उसी के अनुसार हैं। इन चरणों के रंग की सलूकी (छवि) और रस की शोभा को जागृत बुद्धि के ज्ञान से देखो।

लांक सलूकी दोऊ कदम की, लाल एड़ी निपट नरम।
गौर रंग रस भरे, जुबां क्या कहे सिफत कदम।। ६ ।।

दोनों चरण कमलों की तली की गहराई की सलूकी (छवि) और लाल एड़ियां जो अति नर्म हैं और जिनका रंग गोरा है, रस से भरी हैं। ऐसे चरण कमलों की सिफत जबान कैसे करेगी?

सलूकी कदम तलीय की, ऊपर सलूकी और।
छब हक कदम की क्यों कहूं, ए जो जुबां इन ठौर।। ७ ।।

चरणों के नीचे की सलूकी और ऊपर की सलूकी अलग तरह की हैं। ऐसे श्री राजजी के चरण कमलों का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूं?

हक हादी रूहें निसबत, ए अर्स की वाहेदत।
जो रूह होवे अर्स की, सो क्यों छोड़ें ए न्यामत।। ८ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें परमधाम में सब एक तन और एक दिल हैं। जो परमधाम की रुहें हैं वह इस न्यामत को कैसे छोड़ सकती हैं?

ए कदम ताले मोमिन के, लिखी जो निसबत।
तो आठों जाम रूह अटकी, बीच अर्स खिलवत।। ९ ।।

मोमिनों का सम्बन्ध श्री राजजी महाराज के चरण कमलों से है। जहां रात-दिन रूह परमधाम मूल-मिलावा में अटकी रहती हैं, क्योंकि श्री राजजी के चरण मूल-मिलावा में हैं।

Nijanand App

लग रहे हक कदम को, सोई रूह अर्स की।
ए रस अमृत अर्स का, कोई और न सके पी।। १० ।।

जो श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़े रहे, वही परमधाम की रूह है। इन चरणों के रस को और कोई नहीं पी सकता।

जो कोई अरवा अर्स की, हक कदम तिन जीवन।
सो जीव जीवन बिना क्यों रहे, जाके असल अर्स में तन।। ११ ।।

परमधाम की जो रूहें हैं उनका जीवन ही श्री राजजी महाराज के चरण कमल हैं। वह आत्मा अपने जीवन श्री राजजी महाराज के चरण कमलों के बिना कैसे रह सकती हैं, क्योंकि रूह की परआतम भी अखण्ड परमधाम में है।

हकें अर्स कह्या अपना, जो अर्स दिल मोमिन।
सो मोमिन उतरे अर्स से, है असल निसबत तिन।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिन के दिल को अपना अर्श कहा है। वह मोमिन अब परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं, इसलिए मोमिनों की निसबत श्री राजजी महाराज के चरणों से है।

ए जो मोमिन उतरे अर्स से, अर्स कह्या दिल जिन।
हक कदम हमेसा अर्स में, ए कदम छोड़ें ना मोमिन।। १३ ।।

परमधाम से मोमिन खेल में उतरे हैं। उनके दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। श्री राजजी के चरण हमेशा अर्श में रहते हैं, इसलिए मोमिन इन चरण कमलों को नहीं छोड़ते।

हकें तो कह्या अर्स दिल को, जो इनों असल अर्स में तन।
हक कदम छूटे दिल से, ताए क्यों कहिए मोमिन।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है, क्योंकि इनकी परआतम (असली तन) परमधाम में है। अब खेल में जिनसे श्री राजजी के चरण छूट जाएं उनको मोमिन कैसे कहा जाए?

हक कदम मोमिन दिल में, और कदम रूह हिरदे।
ए कदम नैन पुतली मिने, और रूह फिरत सिर पर ले।। १५ ।।

श्री राजजी के चरण मोमिनों के दिल में हैं और धनी के चरण ही रूह के दिल में हैं, जिसे अपने नयनों को पुतलियों में बसाकर रूहें उसी में मग्न रहती हैं।

हकें बैठक कही अपनी, दिल मोमिन का जे।
जिन दिल हक आए नहीं, सो दिल मोमिन कहिए क्यों ए।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल में अपनी बैठक कही है। जिसके दिल में श्री राजजी महाराज नहीं आए उसको मोमिन कैसे कहें?

आसमान जिमी के लोक का, सब्द छोड़े ना सुरिया को।
बिन मोमिन सब दुनियां, खात गोते फना मों।। १७ ।।

संसार में आसमान और जमीन के लोक सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) को छोड़कर आगे का वर्णन नहीं कर सके, इसलिए मोमिन के बिना सारी दुनियां नाशवान संसार में गोते खा रही है।

Nijanand App

सुरिया पर ला मकान है, तिन पर नूर अर्स।
अर्स पर अर्स अजीम, पोहोंचें मोमिन इत सरस।। १८ ।।

ज्योति स्वरूप (आदि नारायण) के ऊपर निराकार है। निराकार के ऊपर अक्षरधाम और अक्षरधाम के ऊपर परमधाम है। यहां पर मोमिन का मूल ठिकाना है।

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, अर्स बका सुध मोमिनों में।
चौदे तबकों गम नहीं, मोमिन आए हक कदमों से।। १९ ।।

अखण्ड परमधाम की सुध मोमिनों को है, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। मोमिन श्री राजजी महाराज के चरणों से आए हैं। जिसकी चौदह लोकों के लोगों को खबर नहीं है, वह पहुंच ही नहीं सकते।

सोई कहिए मोमिन, जिन दिल हक अर्स।
सो ना मोमिन जिन ना पिया, हक सुराही का रस।। २० ।।

उनको मोमिन कहना चाहिए जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं। वह मोमिन नहीं हैं, जिन्होंने श्री राजजी महाराज के दिल के गंजान गंज इश्क की सुराही का रस नहीं पीया है।

हकें दिल को अर्स तो कह्या, करने मोमिन पेहेचान।
कहे मोमिन उतरे अर्स से, तन अर्स एही निसान।। २१ ।।

मोमिनों की पहचान कराने के लिए श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श किया है और यह भी कहा है कि मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं। इनकी परआतम परमधाम में है। यही उनकी पहचान है।

रूहें उतरी अपने तनसे, और कह्या उतरे अर्स से।
तन दिल अर्स एक किए, हकें कदम धरे दिलमें।। २२ ।।

मोमिनों की आतम उनकी परआतम से उतरी है और यह भी कहा है कि यह परमधाम से उतरे हैं। जिस दिल में श्री राजजी महाराज ने अपने चरण कमल रखे हैं, वह दिल और तन एक हो गए, अर्थात् वह तन भी श्री राजजी का ही हो गया।

ए निसबत असल अर्स की, हकें जाहेर तो करी।
दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो रूहें दरगाह से उतरी।। २३ ।।

यह सम्बन्ध मोमिनों का असल परमधाम का है, जिसे श्री राजजी महाराज ने यहां जाहिर किया है। रूहें जो परमधाम से उतरी हैं उनके ही दिल को अर्श करके बैठे हैं।

ख्वाब वजूद दिल मोमिन, हकें कह्या अर्स सोए।
अर्स तन मोमिन दिल से, ए केहेने को हैं दोए।। २४ ।।

मोमिनों के सपने के तन के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, इसलिए श्री राजजी महाराज का अर्श और मोमिनों का दिल कहने के लिए दो हैं और वास्तव में एक हैं।

मोमिन असल तन अर्स में, और दिल ख्वाब देखत।
असल तन इन दिल से, एक जरा न तफावत।। २५ ।।

मोमिनों के असल तन परमधाम में हैं और उस तन के दिल सपना देख रहे हैं, इसलिए असल तन और संसार का दिल में जरा भी फरक नहीं है।

Nijanand App

तो हक सेहेरग से नजीक, ए विध जानें मोमिन।
अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो निसबत अर्स तन।। २६ ।।

तो श्री राजजी महाराज को सेहेरग (प्राण की नली) से नजदीक इस तरह से कहा है कि इस हकीकत को मोमिन जानते हैं। इन मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है कि इनकी परआतम परमधाम में है।

ए बारीक बातें अर्स की, ए मोमिन जानें सहूर।
तो हक कदम दिल अर्समें, हक सहूरसे नाहीं दूर।। २७ ।।

यह परमधाम की खास बातें हैं जिनको जागृत बुद्धि से मोमिन जानते हैं। श्री राजजी महाराज के चरण कमल मोमिनों के दिल में होने से श्री राजजी महाराज मोमिनों से दूर नहीं हैं।

ए ख्वाब देखे सो झूठ है, सत सोई जो माहें वतन।
सांच बैठी कदम पकड़के, झूठमें न आए आपन।। २८ ।।

सपने में जो यह सब देख रहे हैं, झूठा है। सच्चा अखण्ड वही है जो परमधाम में है। असल तन श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़कर बैठे हैं और झूठे संसार में अपनी आत्माएं आई हैं, हम नहीं आए हैं।

ए विचार देखो मोमिनों, हक देखावें अपने सहूर।
इन दिल को अर्स तो कह्या, जो कदम नहीं आपनसे दूर।। २९ ।।

हे मोमिनो! विचार करके देखो श्री राजजी महाराज अपना ज्ञान देकर दिखला रहे हैं, इसलिए तुम्हारे दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, क्योंकि धनी के चरण अपने से दूर नहीं हैं। वह दिल के अन्दर हैं।

जो रूह देखे लांक लीकको, तो रूह तितहीं रहे लाग।
अर्स रूहोंको इन लीक बिना, सुख दुनियां लागे आग।। ३० ।।

यदि रूह श्री राजजी के चरण कमल के तले की गहराई की रेखा को देखती है तो वह अटक जाती है। उसे फिर इन चरणों की रेखा के अतिरिक्त सारी दुनियां के सुख आग के समान लगते हैं।

एक लीक भी रूहथें न छूटहीं, तो क्यों छूटे तली कोमल।
अर्स रूहें इन लीक बिना, तबहीं जाए जल बल।। ३१ ।।

जब रूह एक रेखा में ही अटक जाती है तो तली की लांक को कैसे छोड़े? परमधाम की रूहें इन रेखाओं को देखे बिना मर मिट जाएंगी।

ए कदम तली की जोत से, आसमान जिमी रोसन।
दिल मोमिन कदम बिना, अंग हो जाए सब अगिन।। ३२ ।।

चरण कमलों की तली की जोत आसमान तक जाती है। मोमिनों के दिल श्री राजजी के चरण कमल बिना आग के समान जलने लगते हैं।

चकलाई इन कदम की, कदम तली ऊपर सलूक।
ए फिराक मोमिन ना सहें, सुनते होंए टूक टूक।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली की सुन्दरता तथा ऊपर की सुन्दरता अर्श से अलग होने पर मोमिन सहन नहीं कर सकते। टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।

Nijanand App

सोभा कदम तलीय की, और सोभा सलूकी नखन।
सोभा अंगुरी अंगूठे, क्यों छोड़ें आसिक तन।। ३४ ।।

चरण की तली की शोभा और नाखून की सलूकी और उंगलियों तथा अंगूठे की शोभा आशिक मोमिन कैसे छोड़ सकते हैं?

फना टांकन की सलूकी, और छब घूंटी काड़ों।
अर्स रूहें जुदागी ना सहें, जाके असल तन अर्स मों।। ३५ ।।

चरण कमलों के पंजे की सलूकी, घूंटी और काड़ों की छाँव की जुदाई रूहें सहन नहीं कर सकतीं, जिनके असल तन परमधाम में हैं।

पीड़ी घूंटन पांउं माफक, सोभा अति सुन्दर।
ए कदम सुध तिने परे, जो रूह बेधी होए अन्दर।। ३६ ।।

पिंडली, घुटना चरणों के माफक ही सुन्दर है। इन चरणों की सुध रूहों को ही होती है, जिनके दिल चरणों की जुदाई से बिंधे पड़े हैं।

विचार तो भी याही को, रूह नजर तो भी ए।
जो रूह इन कदम की, रहे तले कदमै के।। ३७ ।।

जो आत्मा सदा श्री राजजी के चरणों में रहती है, वही इनका विचार कर सकती है और वही इन्हें देख सकती है।

हाथों कदम न छोड़हीं, रूह हिरदे माहें लेत।
हक कदम खैंचें रूह को, सब अंगों समेत।। ३८ ।।

रूह के हाथ से श्री राजजी के चरण नहीं छूटते, इसलिए रूह अपने दिल में उन चरणों को बसा लेती है। फिर श्री राजजी के चरण रूह को सब अंगों सहित अपनी तरफ खींचते हैं।

जेते अंग आसिक के, सो सब कदमों लगत।
ए गत सोई जानहीं, जिन अंग रूह खैंचत।। ३९ ।।

आशिक रूहों के तन के सभी अंग श्री राजजी महाराज के चरणों की चाहना करते हैं। इस हकीकत को वही जानते हैं जिन अंगों को चरण अपनी तरफ खींचते हैं।

कई गुन हक कदम में, सब गुन खैंचें रूह को।
मासूक गुझ सोई जानहीं, आए लगी जिनसों।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों में कई गुण हैं। सभी गुण रूह को अपनी तरफ खींचते हैं। जो रूह चरणों की तरफ खिंच जाती है, वही श्री राजजी के दिल के रहस्यों को समझ पाती है।

पांउं पीड़ी घूंटन की, जो चकलाई सोभाए।
जेते अंग आसिक के, तिन सब अंगों देत घाए।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण, पिंडली, घुटने की कोमलता की जो शोभा है, वह आशिक के सभी अंगों में घाव करती है।

Nijanand App

क्यों कहूं पीड़ीय की, सलूकी सुख जोर।
ए सुख सब रगन को, और देत कलेजा तोर।।४२ ।।

श्री राजजी महाराज की पिंडली की सलूकी का बयान कैसे करूं? इसके सुख कलेजे की नस-नस को तोड़ देते हैं।

घाव लगत टूटत रगां, इन विध रेहेत जो याद।
मासूक मारत आसिक को, अर्स अंग चरन स्वाद।।४३ ।।

नसों के टूटने से घाव हो जाते हैं। उससे याद सदा बनी रहती है। माशूक श्री राजजी महाराज अपने चरणों के स्वाद के सुख आशिकों को देते हैं।

ए कदम देखे रूह फेर फेर, तली लांक या ऊपर।
दिल मोमिन अर्स कह्या, सो या कदमों की खातिर।।४४ ।।

रूहें बार-बार चरणों की तली को तथा ऊपर के भाव को देखती हैं। इन चरणों के वास्ते ही मोमिनों के दिल को ही अर्श कहा है।

हक कदम अर्स दिल में, सो दिल मोमिन हुआ जल।
अरवा मोमिन जीव जलके, सो रूह जल बिन रहे न पल।।४५ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में होने से मोमिनों के दिल को जल के समान कहा है। मोमिन की रूह जल के जीव के समान है, इसलिए जैसे जल के जीव जल के बिना नहीं रहते, उसी तरह मोमिनों की रूह श्री राजजी के चरणों से अलग नहीं रह सकती।

ए बेली फूल रूह मोमिन, सो बेल भई हक चरन।
बेल जुदागी फूल क्यों सहे, यों कदम बिना रहें ना मोमिन।।४६ ।।

मोमिनों की रूह फूल की तरह है और श्री राजजी के चरण बेलि की तरह हैं। अब यह फूल बेलि की जुदाई कैसे सहन करें? अर्थात् मोमिन श्री राजजी के चरणों के बिना कैसे रहें?

जब देखूं कदम रंगको, जानों एही सुख सागर।
जब देखूं याकी सलूकी, आड़ी निमख न आवे नजर।।४७ ।।

जब श्री राजजी महाराज के चरणों के रंग को देखती हूं तो लगता है कि सुखों का सागर यही है। जब चरणों की बनावट की तरफ देखती हूं तो रूह वहीं अटक जाती है और कुछ नजर नहीं आता।

जो आड़ी आवे पलक, तो जानों बीच पड्यो ब्रह्मांड।
ए निसबत हक वाहेदत, जो अर्स दिल अखंड।।४८ ।।

कदाचित पलक झपक गई तो लगता है कि कोई ब्रह्माण्ड बीच में आ गया है। श्री राजजी महाराज और रूहों का यही सम्बन्ध है। उसी तरह से अर्श दिल अखण्ड है।

ए कदम ताले मोमिन के, सो मोमिन हक चरन।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो रूहें असल अर्स में तन।।४९ ।।

श्री राजजी के चरण कमलों पर मोमिन का अधिकार है। मोमिन और श्री राजजी के चरण एकाकार हैं। मोमिनों के असल तन परमधाम में होने से ही श्री राजजी महाराज ने इनके दिल को अर्श किया है।

Nijanand App

सुन्दरता इन कदम की, सो चुभ रही रूह के दिल।
अरस-परस ऐसी हुई, एक निमख न सके निकल।।५०।।

इन चरणों की सुन्दरता रूह के दिल में चुभ गई है और ऐसी एकाकार हो गई है कि एक क्षण के लिए भी नहीं निकल सकती।

चकलाई इन कदम की, सुख सलूकी देत।
हिरदे जो रूह के चुभत, रूह सोई जाने जो लेत।।५१।।

चरणों की सुन्दरता और सलूकी सुखदाई है। इसे वह रूहें जानती हैं जिनके दिल में यह सुख चुभ जाते हैं।

अति मीठे रसीले रंग भरे, जाको ए चरन मेहेर करत।
सुख सोई जाने रूह अर्स की, जिन दिल दोऊ पांउं धरत।।५२।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल अति रसीले, अत्यन्त मीठे, सुन्दर हैं। जिनके ऊपर मेहर करके श्री राजजी महाराज दोनों चरण कमल हृदय में रख देते हैं, उस सुख को वही रूहें जानती हैं।

सो पल पल ए रस पीवत, फेर फेर प्याले लेत।
ए अमल क्यों उतरे, जाको हक बका सुख देत।।५३।।

ऐसे रूह मोमिन जिनके दिल में श्री राजजी के चरण कमल होते हैं, इश्क के प्याले बार-बार भरकर पीते हैं। श्री राजजी महाराज जिनको अखण्ड सुख देते हैं, यह मस्ती उनकी कैसे उतरेगी?

ए सुख कायम हक के, जिन दिल एह कदम।
सोई रूह जाने ए जिन लिया, या जानत है खसम।।५४।।

जिनके दिल में श्री राजजी महाराज के चरण होते हैं उनके सुख अखण्ड हैं। उस सुख को या रूहें जानती हैं, जिन्होंने सुख लिया है या फिर श्री राजजी महाराज जानते हैं जो सुख देते हैं।

कई विध के सुख कदम में, मेहेर कर देत मेहेरबान।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, इन पर कहा कहे सुभान।।५५।।

श्री राजजी महाराज के चरणों में कई तरह के सुख हैं, जिन्हें मेहर करके श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं, इसलिए उन्होंने रूहों के दिल को अपना अर्श कहा है। इसके ऊपर श्री राजजी महाराज और क्या कहें?

हकें दिल किया अर्स अपना, इन पर बड़ाई न कोए।
ए सुख लें मोमिन दुनी में, जो अर्स अजीम की होए।।५६।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को जब अपना अर्श बना लिया तो इससे बड़ी बड़ाई और क्या दें? अब मोमिन अर्श अजीम के होकर दुनियां में इन सुखों को लेते हैं।

ए सुख क्या जानें खेल कबूतर, कह्या हक का अर्स दिल।
ए जाहेर हुए सुख जानसी, मोमिन मिलावा मिल।।५७।।

संसार के जीव खेल के कबूतर के समान झूठे हैं तो श्री राजजी महाराज के अर्श दिल की हकीकत को क्या समझेंगे? जब मोमिनों का मिलावा मिलेगा तब सबको इस हकीकत का पता चलेगा।

Nijanand App

कदम मेहेबूब के मोमिन, क्यों सहें जुदागी खिन।
तो हकें कह्या अर्स दिल को, कर बैठे अपना वतन।।५८ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की जुदाई एक क्षण के लिए भी मोमिन कैसे सहन कर सकते हैं? जब श्री राजजी महाराज स्वयं मोमिन के दिल को अपना वतन बनाकर बैठे हैं।

दिया मोमिनों बड़ा मरातबा, जेती हक बिसात।
ले बैठे मोमिन दिल में, सब मता हक जात।।५९ ।।

परमधाम की सभी चीजों में मोमिनों का सबसे ऊंचा दर्जा है, इसलिए मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज सभी न्यामतें लेकर बैठे हैं।

हक सूरत किन पाई नहीं, ना अर्स पाया किन।
तरफ भी किन पाई नहीं, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।।६० ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को तथा परमधाम को आज तक किसी ने नहीं पाया। वह कहां है, इसकी भी जानकारी चौदह लोकों में तथा त्रिदेवों में किसी को भी नहीं है।

कह्या चौदे तबक जरा नहीं, तो बका सुध होसी किन।
हक सूरत अर्स कायम, सब दिल बीच कह्या मोमिन।।६१ ।।

जब चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड नाशवान है तो अखण्ड परमधाम की सुध किसको होगी? श्री राजजी महाराज का स्वरूप और परमधाम दोनों अखण्ड हैं और अब मोमिन के दिल में हैं।

हक अंग नूर हादी कह्या, मोमिन हादी अंग नूर।
ए सब हक वाहेदत, ज्यों हक नूर जहूर।।६२ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर से श्री श्यामाजी महारानी हैं और श्री श्यामाजी महारानी के नूर से मोमिनों के तन हैं। यह सब श्री राजजी महाराज के एक तन और एक दिल हैं। ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान बताता है।

ए गुझ थीं अर्स बारीकियां, कोई न जाने बका बात।
सो रूहें आए दुनी में प्रगटीं, अर्स बका हक जात।।६३ ।।

परमधाम की यही खास बातें गुझ थीं जिन्हें कोई नहीं जानता था। अब अखण्ड परमधाम की रूहों के दुनियां में आने से बातें जाहिर हो गईं।

कहे हुकम नूरजमाल का, मोहे प्यारे अति मोमिन।
महामत कहे दोनों ठौर, हमको किए धंन धंन।।६४ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम कहता है कि श्री राजजी महाराज को मोमिन बहुत प्यारे हैं। महामतिजी कहते हैं कि हमको दोनों ठिकानों में खेल में तथा परमधाम में धन्य-धन्य किया है।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३५५ ।।

Nijanand App

चरन निसबत का प्रकरण अन्दरतांई

ए क्यों छोड़े चरन मोमिन, जो हककी वाहेदत।
आए दुनी में जाहेर करी, जो असल हक निसबत।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल को मोमिन क्यों छोड़ेंगे? मोमिन श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं और उन्होंने दुनियां में आकर अपनी बात को जाहिर किया।

रूहें उतरीं नूर बिलंदसे, कदम नासूतमें भूलत।
तिन पर रसूल होए आइया, जो असल हक निसबत।। २ ।।

रूहें परमधाम से खेल में उतरीं और संसार में आकर श्री राजजी महाराज के चरणों को भूल गईं। उनके वास्ते ही श्री राजजी महाराज रसूल बनकर दुनियां में आए जो असल हक की निसबत हैं।

रूहें अर्स भूलीं नासूत में, ताए हक रमूजें लिखत।
सो सब मोमिन समझहीं, जो असल हक निसबत।। ३ ।।

रूहें संसार में आकर परमधाम को भूल गईं। उन्हें श्री राजजी महाराज सन्देश लिखकर भेज रहे हैं। उन सन्देशों को मोमिन ही समझेंगे जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

रूहें कदम भूली नासूत में, हक ताए भेजे इसारत।
ताको हादी केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को रूहें माया में आकर भूल गई हैं। उन्हें श्री राजजी महाराज इशारतों में चिट्ठियां लिख रहे हैं। जिन इशारतों को हादी श्री प्राणनाथजी महाराज कहकर मोमिनों को समझाते हैं जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं।

रूहें अर्स की कदम भूलियां, तिन पर रूह अपनी भेजत।
अर्स बातें केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत।। ५ ।।

रूहें श्री राजजी के चरण कमलों को भूल गई हैं। उनके वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने अपनी रूह श्री श्यामाजी महारानी को भेजा है, जो परमधाम की बातें कहकर मोमिनों को समझाते हैं।

फरामोस हुइयां लाहूत से, रूहअल्ला संदेसे देवत।
ए मेहेर लेवें मोमिन, जो असल हक निसबत।। ६ ।।

यह मोमिन परमधाम से फरामोशी में आ गए हैं। उनको श्री श्यामा महारानी आकर श्री राजजी महाराज का सन्देश दे रहे हैं। इन सन्देशों को श्री राजजी की अंगना (मोमिन) मेहर से ले रहे हैं।

खिताब हादी सिर तो हुआ, जो फुरमान और न कोई खोलत।
हक कदम हिरदे मोमिनों, जो असल हक निसबत।। ७ ।।

श्री प्राणनाथजी को इमाम मेंहदी का खिताब इसलिए हुआ कि कुरान के छिपे रहस्य खुदा के बिना कोई खोल नहीं सकता था, जो श्री प्राणनाथजी ने आकर खोले। श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में हैं जो परमधाम की अंगना हैं।

Nijanand App

रूहें भूलियां खिलवत खेल में, ताए रूहअल्ला इलम ल्यावत।
सो कायम करे त्रैलोक को, जो असल हक निसबत।। ८ ।।

रूहें खेल में आकर मूल-मिलावा को भूल गई हैं। उनको श्री श्यामाजी महारानी आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान देती हैं। अब मोमिन उस ज्ञान से चौदह तबकों को अखण्ड मुक्ति देंगे जो श्री राजजी की अंगना हैं।

इस्क रब्द हुआ अर्स में, तो रूहें इत देह धरत।
रूहें चरन तो पकड़े, जो असल हक निसबत।। ९ ।।

परमधाम के इश्क रब्द की वार्तालाप के कारण ही रूहों ने संसार में आकर तन धारण किए। अब श्री राजजी की अंगना होने के कारण ही श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को पकड़ा।

आए कदम दिल मोमिन, जाको सब्द न पोहोंचे सिफत।
हकें अर्स दिल तो कह्या, जो असल हक निसबत।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में आए हैं जिनकी महिमा कही नहीं जा सकती। इनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श कहा है, क्योंकि यह परमधाम की अंगना हैं।

ए बरनन हुकमें तो किया, जो जाहेर करनी खिलवत।
ए कदम रूहें तो पकड़ें, जो असल हक निसबत।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने मूल-मिलावा की इस हकीकत को जाहिर करने के लिए यह वर्णन किया है। श्री राजजी महाराज की अंगना मोमिन इसलिए श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़ती हैं।

हकें आए किया अर्स दिलको, बीच ल्याए कदम न्यामत।
सिर हुकमें हुज्जत तो लई, जो असल हक निसबत।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने आकर मोमिनों के दिल में अपने चरण रखे और अपना अर्श बनाया, तो मोमिनों ने श्री राजजी महाराज की अंगना होने का दावा लिया।

अर्स मोहोल दिल को किया, आए बैठी हक सूरत।
ए अर्स मेहेर तो भई, जो असल हक निसबत।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप ने मोमिनों के दिल को अर्श किया और मोमिनों के दिल में आकर साक्षात् बैठ गए। यह मेहर मोमिनों पर इसलिए हुई कि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

इन कदमों मेहेर मुझपर करी, देखाए दई वाहेदत।
तो इलम दिया बेसक, जो असल हक निसबत।। १४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मेहर कर मेरे अन्दर विराजमान होकर मुझे मूल-मिलावा दिखाया और अपनी अंगना जानकर जागृत बुद्धि का बेशक ज्ञान दिया है।

मोमिनों पाई बेसकी, सो इन कदमों की बरकत।
सो क्यों छूटें मोमिन से, जो असल हक निसबत।। १५ ।।

मोमिनों के श्री राजजी महाराज के चरणों से ही संशय मिटे हैं। वह चरण अब मोमिनों से कैसे हट सकते हैं जो श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

इन चरनों किया अर्स दिलको, दिल बोलें सुध परत।
रूहें तो लेवें महंमद सिफायत, जो असल हक निसबत।। १६ ।।

इन चरणों ने मोमिनों के दिल को अर्श किया है और अब मोमिनों के बोलने से पता चलता है कि इनके अन्दर श्री राजजी बैठे हैं। यह मोमिन श्री राजजी की अंगना हैं और यही मोमिन रसूल साहब की गवाही को लेंगे।

रूहें कदम पकड़ें हक के दिलमें, पैठ इस्क ठौर ढूंढ़त।
दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो असल हक निसबत।। १७ ।।

रूहों ने श्री राजजी महाराज के चरणों को अपने दिल में पकड़ रखा है और अब इश्क की खोज कर रही हैं। श्री राजजी महाराज की अंगना होने से ही इनके दिल को अर्श कहा है।

ए कदम ले दिल मोमिन, अर्ससे ना निकसत।
ए रूहें जानें अर्स बारीकियां, जो असल हक निसबत।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण अपने दिल में लेकर दिन-रात परमधाम का चितवन करते हैं। श्री राजजी महाराज की अंगना होने से परमधाम की खास बातों को मोमिन ही समझते हैं।

रूहें सिरपर कदम चढ़ाएके, अर्स मोहोलों में मालत।
सब हक गुझ रूहें जानहीं, जो असल हक निसबत।। १९ ।।

इन चरण कमलों को मोमिन अपने सिर पर लेकर परमधाम के महलों में घूमते हैं। रूहें श्री राजजी महाराज के सब दिल के रहस्यों को अंगना होने के कारण जानती हैं।

ले चरन दिल अर्स में, सब गलियों में फिरत।
सब सुध होवे अर्सकी, जो असल हक निसबत।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों को दिल में लेकर मोमिन परमधाम की गली-गली में घूमते हैं, क्योंकि श्री राजजी की अंगना होने से इनको परमधाम की सब खबर हैं।

रूहें नैन पुतलियों बीच में, हक कदम राखत।
एक हुए दिल अर्स रूहें, जो असल हक निसबत।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को मोमिन अपनी नयन की पुतलियों में बसाकर रखते हैं और श्री राजजी की अंगना होने के कारण से सब रूहें एक दिल हो गए।

दिल अर्स किया इन कदमों, इतहीं बैठे कर भिस्त।
ए न्यारे निमख न होवहीं, जो असल हक निसबत।। २२ ।।

इन चरण कमलों से ही श्री राजजी महाराज मोमिन के दिल को अपना ठिकाना बनाकर बैठे हैं। अब श्री राजजी महाराज अपनी अंगना मोमिनों से एक पल के लिए भी अलग नहीं हो सकते।

गुन केते कहूं इन कदमके, जिन अर्स अखंड किया इत।
ए कदम ताले तिनके, जो असल हक निसबत।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल के गुण कहां तक कहूं? जिन्होंने मोमिनों के दिल को अपना अखण्ड घर बना लिया है। मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए इन चरण कमलों पर उन्हीं का अधिकार है।

Nijanand App

तिन भागकी मैं क्या कहूं, ए जिन दिल कदम बसत।
धंन धंन कदम धंन ए दिल, जो असल हक निसबत।। २४ ।।

जिनके दिल में श्री राजजी महाराज के कदम रहते हैं, उनके इस अधिकार को मैं क्या कहूं? श्री राजजी महाराज के चरण कमल और मोमिनों के दिल धन्य धन्य हैं, क्योंकि यह मोमिन श्री राजजी की ही अंगना हैं।

कई मलकूत वारूं तिन खाक पर, जिन दिल ए कदम आवत।
और दिल अर्स न होवहीं, बिना असल हक निसबत।। २५ ।।

जिन मोमिनों के दिल में यह कदम आ गए हैं, उनकी चरण रज पाकर कई बैकुण्ठ के राज्य कुर्बान कर दूं। इनके अतिरिक्त और किसी का दिल अर्श नहीं हो सकता, क्योंकि यह श्री राजजी की अंगना हैं।

दिल सांच ले सरीयत चले, या पाक होए ले तरीकत।
दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। २६ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं। इनके बिना भले दुनियां वाले सच्चे दिल से शरीयत पर चलें या पाक होकर तरीकत पर चलें, उनके दिल में श्री राजजी महाराज का अर्श नहीं हो सकता।

कोई करो सब जिमिएं सिजदा, पालो अरकान लग कयामत।
पर ए कदम न आवें दिलमें, बिना असल हक निसबत।। २७ ।।

भले दुनियां वाले सारी जमीन पर सिजदा करें और सारी उम्र बावन अरकानों (मुसलमानों के नियम) को पालें, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगना, जो मोमिन हैं, उनके सिवाय श्री राजजी के चरण किसी के दिल में नहीं आ सकते।

तेहेत्तर फिरके महंमदके, तामें एक को हक हिदायत।
और नारी एक नाजी कह्या, जाकी असल हक निसबत।। २८ ।।

मुहम्मद साहब ने अपने तिहत्तर फिरके बताए हैं। उनमें से एक नाजी फिरके को ही हक की हिदायत होगी। लिखा है यही श्री राजजी महाराज की अंगना होगी। बाकी बहत्तर नारी अर्थात् दोजखी कहे हैं।

उत्तम होए खट करम करो, आचार करो विधोगत।
ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। २९ ।।

जाहिरी लोग नहा धोकर षट कर्म वाले और आचार विचार से रहे, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना धनी के चरण और किसी के दिल में नहीं जा सकते।

खटसास्त्र पढ़ो कांड तीनों, करम निहकरम विधोगत।
ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३० ।।

छः शास्त्रों को पढ़ो या कर्म उपासना और ज्ञान के बताए हुए तरीके से कर्म करो या जिनको निषेध बताया है न करो, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना श्री राजजी के चरण किसी को प्राप्त नहीं होंगे।

नव अंगों पालो नवधा, ल्यो बैकुंठ चार मुगत।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३१ ।।

भले कोई नवधा प्रकार की भक्ति करके बैकुण्ठ में चार प्रकार की मुक्ति प्राप्त कर ले, परन्तु मोमिन जो पारब्रह्म की अंगना हैं, उनके बिना पारब्रह्म के चरण किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

Nijanand App

वेद सास्त्र पुरान पढ़ो, सब पैंडे देखो प्रापत।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३२ ।।

भले कोई वेद, पुराण, शास्त्र पढ़ ले और सब धर्म पैंडों को खोज ले पर ब्रह्मसृष्टि जो श्री राजजी की अंगना हैं, पारब्रह्म के चरण उनके सिवाय किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

कोई वेद पांचों मुख पढ़ो, कई त्रैगुन जात पढ़त।
पर ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३३ ।।

भले कोई पांच वेद मुख से पढ़ ले, कई त्रिदेव भी पढ़ते रहें, परन्तु पारब्रह्म के चरण कमल उनकी अंगना जो मोमिन हैं, उनके बिना किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

ब्रह्मसृष्ट कही वेदने, ब्रह्म जैसी तदोगत।
तौल न कोई इनके, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३४ ।।

वेदों ने ब्रह्मसृष्टि को ब्रह्म के समान ही कहा है। इनके समान कोई और हो ही नहीं सकता, क्योंकि यह पारब्रह्म की अंगना हैं, इसलिए इनके बिना उस पारब्रह्म के चरण कमल किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

सुकजी आए इन वास्ते, ले किताब भागवत।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३५ ।।

शुकदेवजी भी भागवत की किताब लेकर आए, परन्तु यह चरण ब्रह्मसृष्टि जो श्री राजजी की अंगना हैं, उनके बिना किसी को प्राप्त नहीं हो सकते।

ब्रह्म ने भेजी परमहंस पर, वेद अस्तुत बंदोबस्त।
ए ब्रह्म चरन क्यों छोड़हीं, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३६ ।।

पारब्रह्म ने परमहंसों (मोमिन) के वास्ते वेद के वचन बड़े इन्तजाम से भेजे हैं, परन्तु जो पारब्रह्म की अंगना हैं वह इन चरणों को कैसे छोड़ेंगे?

कही आई उपनिषद इनपे, पूर्व रिखी कहे जित।
धाम बका पाया इनोंने, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३७ ।।

छः शास्त्रों को रचने वाले सात ऋषियों ने भी कहा कि यह शास्त्र ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते ही हैं, क्योंकि अखण्ड परमधाम की जानकारी इन ब्रह्म मुनियों को है, इसलिए इनके बिना और किसी को चरण नहीं प्राप्त हो सकते। यह पारब्रह्म की अंगना हैं।

ब्रह्मसृष्ट मोमिन कहे, रूहें लेवें वेद कतेब विगत।
ए समझ चरन ग्रहें ब्रह्मके, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३८ ।।

ब्रह्मसृष्टि मोमिन वेदों और कुरान की हकीकत को लेंगे। इन रहस्यों को समझकर रूहें पारब्रह्म के चरण ग्रहण करेंगी, क्योंकि यह पारब्रह्म की अंगना हैं।

ब्रह्मसृष्ट रूहें नाम दोए, अर्स रूहें ए जानत।
दोऊ जान चरन ग्रहें एकै, जाकी ब्रह्मसों निसबत।। ३९ ।।

अर्श की रूहें इस हकीकत को जानती हैं कि ब्रह्मसृष्टि और मोमिन रूहों के दो नाम कहे हैं। इस बात की हकीकत रूहें ही समझकर चरणों को ग्रहण करेंगी, क्योंकि वह पारब्रह्म की अंगना हैं।

Nijanand App

पढ़े वेद कतेब को, जोग कसब ना पोहोंचत।
दिल अर्स किया जिन कदमों, ए न आवें बिना हक निसबत।।४०।।

भले कोई वेद कतेब पढ़ ले और योगाभ्यास कर ले, परन्तु श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना किसी को चरण नहीं मिल सकते, क्योंकि यह श्री राजजी की अंगना हैं।

दिल अर्स कह्या जो मोमिन, सो दिल नाजी पाक उमत।
और इलाज ना इलम कोई, बिना असल हक निसबत।।४१।।

रूहों के दिल को पारब्रह्म का अर्श कहा है और यही पाक नाजी फिरका है। कोई साधना या दुनियां के इलम से पारब्रह्म के चरण प्राप्त नहीं कर सकते। चरण तो जो पारब्रह्म की अंगना हैं, उनको मिलेंगे।

इलम लदुन्नी भेजिया, सो मोमिन ए परखत।
परख चरन ग्रहें हक के, जाकी असल हक निसबत।।४२।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी भेजी। सो मोमिन ही इसको पहचानेंगे। जो श्री राजजी की अंगना हैं। उनके बिना किसी को पारब्रह्म के चरण प्राप्त नहीं हो सकते।

हक हादी की मेहेर से, भिस्त आठ होसी आखिरत।
पर ए चरन न आवें दिलमें, बिना असल हक निसबत।।४३।।

श्री राजश्यामाजी की मेहर से वक्त आखिरत के जीवों को आठ तरह से अखण्ड मुक्ति तो मिलेगी, परन्तु श्री राजजी महाराज के चरण उनकी अंगनाओं के बिना किसी को नहीं मिलेंगे।

महंमद सूरत हकी बिना, द्वार खुले ना हकीकत।
ए कदम पावें दिल औलिया, जाकी असल हक निसबत।।४४।।

मुहम्मद साहब की हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के बिना इन छिपे रहस्य को और कोई खोल नहीं सकेगा। पारब्रह्म के चरण खुदा के औलिया (मोमिन) ही प्राप्त करेंगे। वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए कदम आए जिन दिल में, तित आई हक सूरत।
ए चौदे तबक पावें नहीं, बिना असल हक निसबत।।४५।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल जिसके दिल में आए, वहां श्री राजजी महाराज स्वयं विराजमान हो गए, परन्तु बिना उनकी अंगनाओं के यह चरण चौदह लोकों में कोई प्राप्त नहीं कर सकता।

दिल मोमिन क्यों अर्स कह्या, ए दुनी ना एता विचारत।
ए विचार तो उपजे, जो होए हक निसबत।।४६।।

मोमिनों के दिल को अर्श क्यों कहा है, दुनियां इसका विचार नहीं करती। यह विचार तो उनके दिल में तब आवे जब वह श्री राजजी की अंगना हों।

रूहें अर्स बुधजी बिना, छल का पावे न कोई कित।
ए सहूर भी दिल न आवहीं, बिना असल हक निसबत।।४७।।

श्री प्राणनाथजी के बिना अर्श की रूहें श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को, दुनियां का कोई भी कहीं पर नहीं पा सकता, क्योंकि श्री राजजी महाराज की अंगनाओं के बिना यह विचार किसी को आएगा ही नहीं।

Nijanand App

रूहअल्ला दज्जाल को मारसी, छोड़ावसी उमत।
कर एक दीन चरन देखावहीं, जाकी असल हक निसबत।। ४८ ।।

श्री श्यामा महारानी वक्त आखिरत को जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से दज्जाल को मारकर अपने मोमिनों को इनके बन्धन से छुड़ाएंगे और सारी दुनियां को एक पारब्रह्म का पूजक बनाकर निजानन्द सम्प्रदाय में लाकर श्री राजजी के दर्शन कराएंगे जो श्री राजजी की अंगनाएं हैं।

अर्स सूरत पर सिजदा, करसी मेंहेंदी इमामत।
कदम ग्रहे देखावहीं, जाकी असल हक निसबत।। ४९ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ही दुनियां को कर्मकाण्ड (शरीयत) से छुड़ाकर अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराके सिजदा कराएंगे, क्योंकि प्राणनाथजी श्री राजजी महाराज के ही स्वरूप हैं।

दोऊ आए बीच हिंदुअन के, जैसे कह्या हजरत।
ए बेवरा सोई समझहीं, जाकी असल हक निसबत।। ५० ।।

रसूल साहब के कहे अनुसार मल्की और हकी सूरत ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज दोनों हिन्दुओं में आएंगे। यह विवरण ब्रह्मसृष्टि जो श्री राजजी की अंगना हैं, वही समझेंगे।

अर्स कह्या दिल मोमिन, ले दिल अर्स गलियों खेलत।
सो पावें रूहें लाहूती, जाकी असल हक निसबत।। ५१ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है, क्योंकि वह श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को अपने दिल में लेकर परमधाम की गलियों में खेलते हैं। इन चरणों को लाहूत (परमधाम) में रहने वाली जो श्री राजजी की अंगना हैं, वही प्राप्त करेंगी।

ए कदम पावें रूहें लाहूती, नहीं औरों की किसमत।
ए सोई पावें हक बारिकियां, जाकी असल हक निसबत।। ५२ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों को परमधाम की रूहें जो धाम धनी की अंगना हैं, पाएंगी। यह चरण दुनियां वालों की किस्मत में नहीं हैं। श्री राजजी महाराज की खास बातों को (बारीक बातों को) जो श्री राजजी महाराज की अंगनाएं हैं, वही पाएंगी।

अहेल किताब एही कहे, एही पावें हक मारफत।
एही आसिक होवें मासूक की, जाकी असल हक निसबत।। ५३ ।।

इन मोमिनों को कुरान का वारिस कहा है, क्योंकि श्री राजजी के मारफत ज्ञान से यह उस कुरान के भेद खोलेंगे। यह ही माशूक श्री राजजी महाराज के आशिक हैं, क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

जो रूहें उतरी अर्स से, सो कदम ले अर्स पोहोंचत।
देसी भिस्त सबन को, जाकी असल हक निसबत।। ५४ ।।

जो रूहें अर्श से उतरी हैं, वह श्री राजजी के चरण लेकर वापस परमधाम पहुंचेंगी। सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति वही देंगे जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

Nijanand App

जो रूहें कही लाहूती, इजने इत उतरत।
सो पकड़ें कदम इस्क सों, जाकी असल हक निसबत।।५५ ।।

जो रूहें परमधाम की कही हैं वह श्री राजजी महाराज के हुकम से खेल में उतरी हैं। वह इश्क से श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को पकड़ेंगी, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें अर्स रब्दें इत आइयां, देखो कौन कदम ग्रहे जीतत।
सों क्यों बिछुरें इन कदम सों, जाकी असल हक निसबत।।५६ ।।

रूहें परमधाम से इश्क रब्द का वार्तालाप करके खेल में आई हैं। अब देखो उनमें से कौन श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को ग्रहण करने में जीतता है जो श्री राजजी की अंगना हैं वह इन चरणों से कभी अलग नहीं होंगी।

याही रब्दें इत आइयां, लेने पिउ का विरहा लज्जत।
सो पाए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।५७ ।।

इसी इश्क रब्द के कारण ही रूहें यहां आई हैं, ताकि धनी के वियोग की लज्जत ले सकें। वह रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, अब चरण प्राप्त कर कैसे छोड़ेंगी?

ए रब्द अर्स खिलवत का, रूहें इस्क अंग गलित।
सो क्यों छोड़ें पांउं पकड़ें, जाकी असल हक निसबत।।५८ ।।

यह इस्क रब्द परमधाम का है, जिस इश्क में रूहें सदा गलित रहती थीं। अब वह श्री राजजी के चरण ग्रहण कर कैसे छोड़ेंगी?

रूहें इन कदम के वास्ते, जीवतेही मरत।
सो क्यों छोड़ें प्यारे पांउं को, जाकी असल हक निसबत।।५९ ।।

रूहें इन चरण कमलों के वास्ते जीते ही कुर्बानी देती हैं। जो श्री राजजी की अंगना हैं वह अपने प्यारे प्रीतम के चरण कमलों को कैसे छोड़ें?

याही कदम के वास्ते, रूहें जल बल खाक होवत।
तो दिल आए कदम क्यों छूटहीं, जाकी असल हक निसबत।।६० ।।

रूहें इन चरणों के वास्ते ही अपने आपको फना कर देती हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं वह दिल में आए हुए इन चरणों को कैसे छोड़ेंगी?

रूहें होवें जिन किन खिलके, हक प्रगटे सुनत।
आए पकड़ें कदम पलमें, जाकी असल हक निसबत।।६१ ।।

परमधाम की रूहें इस दुनियां में भले किसी भी जाति में आई होंगी, श्री राजजी महाराज का प्रगट होना सुनकर एक पल के अन्दर दुनियां को छोड़कर उनके चरणों में आ जाएंगी, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

जब आखिर हक जाहेर सुनें, तब खिन में रूहें दौड़त।
सो क्यों रहें कदम पकड़े बिना, जाकी असल हक निसबत।।६२ ।।

जब आखिरत के समय श्री प्राणनाथजी प्रगट हो गए हैं, सुनकर रूहें एक पल में दौड़कर आएंगी। वह श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़े बिना कैसे रह सकती हैं? क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

जब इमाम आए सुने, तब मोमिन रेहे ना सकत।
दौड़ के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत।। ६३ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आ गए हैं। यह सुनकर मोमिन कैसे रह सकते हैं। वह दौड़कर उनके चरण पकड़ लेंगे, क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी पहाड़ से गिरत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६४ ।।

यह दुनियां वाले मलकूत (बैकुण्ठ) के वास्ते पहाड़ों से गिरने की कुर्बानी देते हैं, तो रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह उनके चरणों को कैसे छोड़ेंगी?

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी सिर लेत करवत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६५ ।।

यह दुनियां वाले मलकूत (बैकुण्ठ) के वास्ते काशी में करवत लेकर कुर्बानी देते हैं, तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह उनके चरण कैसे छोड़ सकती हैं।

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनियां आग पीवत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६६ ।।

यह दुनियां वाले बैकुण्ठ के वास्ते अग्निपान करते हैं, तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके चरण कमलों के बिना कैसे रह सकती हैं?

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी भैरव झंपावत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६७ ।।

यह दुनियां वाले बैकुण्ठ के वास्ते वैष्णव देवी के पहाड़ से झांप खाकर गिरते हैं, तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना है वह चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी हेममें गलत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ६८ ।।

दुनियां वाले बैकुण्ठ के वास्ते हिमालय की बर्फ में जाकर गलते हैं (पांडव केदार नाथ गए थे), तो जो श्री राजजी की अंगना हैं वह उनके चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

और इलाज जो कई करो, पर पावे ना बिना किसमत।
सो हक कदम ताले मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। ६९ ।।

और कितने ही उपाय कर लो, पर मूल निसबत के बिना पारब्रह्म के चरण नहीं मिलते। यह चरण मोमिन ही ले सकते हैं, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए बिन मोमिन कदम न पाइए, जो करे कई कोट मेहेनत।
ए मोमिन अर्स अजीम के, जाकी असल हक निसबत।। ७० ।।

मोमिनों के बिना इन चरणों को नहीं पा सकता चाहे कोई करोड़ों उपाय कर ले। यह मोमिन ही परमधाम के चरण पा सकते हैं, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

रूहें अर्स की कहें वेद कतेब, बिन कुंजी क्योंए न पाइयत।
सो रूहअल्ला बेसक करी, जाकी असल हक निसबत।।७१ ।।

रूहें परमधाम की हैं, ऐसा वेद कतेब में लिखा है। यह भेद जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी तारतम के बिना कोई नहीं खोल सकता। रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी ने तारतम ज्ञान से रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, उनके संशय मिटा दिए।

हक कदम दिल मोमिन, देख देख रूह भीजत।
एक पाउपल ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७२ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में हैं। उनको देखकर परमधाम की रूहें गलितगात हैं और एक पल मात्र के वास्ते भी चरण नहीं छोड़तीं, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए कदम रूहें दिल लेयके, देह झूठी उड़ावत।
कोई दिन रखें वास्ते लज्जत, जाकी असल हक निसबत।।७३ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को दिल में लेकर झूठे तन को समाप्त कर देती हैं। कुछ दिन पारब्रह्म ने इनको संसार में रोक रखा है, क्योंकि यह इश्क की लज्जत लेने यहां आई हैं, जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

मोमिन आए अर्स से, दुनी क्या जाने ए गत।
ए कदम ताले ब्रह्मसृष्ट के, जाकी असल हक निसबत।।७४ ।।

मोमिन परमधाम से आए हैं, दुनियां इस बात को कैसे समझे? श्री राजजी के चरण कमल केवल ब्रह्मसृष्टि के वास्ते हैं, क्योंकि वह हक श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें खाना पीना रोजा सिजदा, इन कदमों हज-ज्यारत।
और चौदे तबक उड़ावहीं, जाकी असल हक निसबत।।७५ ।।

रूहों का खाना, पीना, रोजा, रमजान, पांच वक्त की नमाज तथा तीर्थ यात्रा श्री राजजी के चरणों में ही हैं। इनके अतिरिक्त वह चौदह तबकों की बादशाही को रद्द कर देंगे, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

ए चरन पेहेचान होए मोमिनों, वाही को प्यारे लगत।
ना तो बुरा न चाहे कोई आपको, पर क्या करे बिना हक निसबत।।७६ ।।

यह चरण मोमिनों को ही प्यारे लगते हैं जिन्हें इनकी पहचान है। वरना अपने आपका बुरा कोई नहीं चाहता, परन्तु बिना निसबत के क्या करें?

पाए बिछुरे पिउ परदेस में, बीच हक न डारें हरकत।
ए करी इस्क परीछा वास्ते, पर ना छूटे हक निसबत।।७७ ।।

अपने बिछुड़े हुए धनी के चरण विदेश (इस संसार) में मिल गए। अब मोमिनों से यह चरण किसी तरह से नहीं छूटेंगे। चाहे श्री राजजी महाराज इश्क की परीक्षा के वास्ते कितनी भी अड़चनें बीच में डालें।

Nijanand App

जिन परदेस में पांउं पकड़े, ज्यों बिछुरे आए मिलत।
सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम को, जाकी असल हक निसबत।।७८ ।।

परदेश में रूहों ने धनी के चरण पकड़ रखे हैं। उन्होंने यह चरण इतने जोर से (ईमान से) पकड़ रखे हैं जैसे कोई बिछुड़े हुए बाद में मिलते हैं। मोमिन जो श्री राजजी की अंगना हैं वह इन चरणों को कैसे छोड़ेंगे?

जो बिछुड़ के आए मिले, सो पलक ना छोड़ सकत।
सो रूहें पाए चरन पिउ के, जाकी असल हक निसबत।।७९ ।।

मोमिन श्री राजजी के चरणों से बिछुड़कर यहां आए और इस संसार में फिर मिले, इसलिए वह, जो श्री राजजी की अंगना हैं, इन चरणों को पल के लिए भी नहीं छोड़ सकते।

अर्सें सब्द न पोहोंचे त्रैलोकका, सो दिल मोमिन अर्स कहावत।
इन कदमों बड़ाई दिलको दई, जाकी असल हक निसबत।।८० ।।

अर्श शब्द की जानकारी (पहचान) चौदह लोकों को नहीं है। वह अर्श मोमिनों का दिल कहा है। यह साहेबी श्री राजजी के चरण कमलों से ही मिली है, जिनसे मोमिनों का सच्चा सम्बन्ध है, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

दिल मोमिन एही पेहेचान, दिल कदम छोड़ न चलत।
तो पाई अर्स बुजरकी, जो थी असल हक निसबत।।८१ ।।

मोमिनों के दिल की यही पहचान है कि उनके दिल श्री राजजी के चरणों को नहीं छोड़ सकते। इनके दिल को अर्श की बड़ाई इसलिए मिली है, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

ए कदम नूरजमाल के, आई दिल मोमिन लज्जत।
सो मोमिन अरवा अर्स के, जाकी असल हक निसबत।।८२ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की लज्जत मोमिनों के दिल में आई है। वही मोमिन परमधाम की रूहें हैं जो श्री राजजी की अंगना हैं।

ए चरन दिल का जीव है, तिन बिन जीव क्यों जीवत।
तो हकें अर्स कह्या दिलको, जो असल हक निसबत।।८३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल रूहों के तन में जीव के समान हैं। जैसे तन जीव के बिना नहीं रह सकता, वैसे रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं उनके चरण कमलों के बिना कैसे रह सकती हैं, इसलिए श्री राजजी ने इनके दिल को अर्श कहा है।

जो निसबती दिल चरनके, तामें जरा न तफावत।
ए कदम रूहें ल्याई दुनीमें, जाकी असल हक निसबत।।८४ ।।

जिन मोमिनों के दिल में धनी के चरण हैं, उनके तन और श्री राजजी के चरणों में कोई फर्क नहीं है। यह चरण कमल रूहें ही दुनियां में लाई हैं, क्योंकि रूहें श्री राजजी की अंगना हैं।

हक जाहेर बीच दुनीके, रूहें समझके समझावत।
हुआ फुरमाया रसूलका, तो जाहेर हुई हक निसबत।।८५ ।।

परमधाम के मोमिन श्री राजजी महाराज के स्वरूप को समझकर दुनियां को बताते हैं। रसूल साहब ने जैसा कहा था कि खुदा और उसकी उम्मत में कुछ फर्क नहीं होगा। वह हकीकत अब जाहिर हो गई।

Nijanand App

चौदे तबक करसी कायम, ए जो झूठे खाकी बुत।
मोमिन बरकत इन कदमों, जाकी असल हक निसबत।। ८६ ।।

अब मोमिन जो श्री राजजी की अंगना हैं, धनी के चरणों की कृपा से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के झूठे जीवों को अखण्ड मुक्ति देंगे।

सबों भिस्त दे घरों आवसी, रूहें कदम ग्रहें बड़ी मत।
अर्स के तन जो मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। ८७ ।।

यह रूहें जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से श्री राजजी के चरण कमलों को प्राप्त करके सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान कर अपने घर परमधाम वापस आएंगे। मोमिनों की परआतम श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

ए काम किया सब हुकमें, अव्वल बीच आखिरत।
हक बका द्वार खोलिया, महामत ले आए निसबत।। ८८ ।।

यह सब काम श्री राजजी महाराज के हुकम ने तीन सूरतें धारण कर अव्वल रसूल साहब बसरी, दूसरे बीच में श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) मलकी और आखिर हकी सूरत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर अपने मोमिनों को जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं घर वापस ले आए।

|| प्रकरण || ७ || चौपाई || ४४३ ||

कदम परिकरमा निसबत

उमर जात प्यारी सुपने, निस दिन पिउ जपत।
लाल कदम न छोड़ें मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों की रात-दिन संसार में धनी का नाम जपते-जपते ही उम्र बीत रही है। जो रूहें श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरण कमलों की लाल तली को नहीं छोड़ सकते।

मांग लई प्यारी उमर, ए जो रब्द के बखत।
लाल पांउं तली छोड़ें क्यों मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। २ ।।

इस्क रब्द के वार्तालाप के समय मोमिनों ने श्री राजजी महाराज से इस संसार को मांगा था। अब जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह उनके चरणों की लाल तली और एड़ियों को छोड़ नहीं सकते।

पांउं निस दिन छोड़ें ना मोमिन, सुपने या सोवत।
सो क्यों छोड़ें बेसक जागे, जाकी असल हक निसबत।। ३ ।।

रात-दिन सपने में या नींद में श्री राजजी के चरणों को मोमिन नहीं छोड़ते तो अब यह श्री राजजी महाराज की अखण्ड वाणी से निस्सन्देह हो गए हैं, तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह जागकर इन चरणों को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

जब उड़ी नींद असल की, हक देखे होंए जाग्रत।
सुख लेसी खेल का अर्स में, जाकी असल हक निसबत।। ४ ।।

जब परआतम की फरामोशी दूर होगी तब असल तन में जागृत होकर श्री राजजी को देखेंगी और खेल का सुख परमधाम में लेंगी, क्योंकि श्री राजजी महाराज की यह अंगना हैं।

दीजे परिकरमा अर्स की, मोमिन दिल ना सखत।
सूते भी कदम ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ५ ।।

मोमिन के दिल में श्री राजजी महाराज के विराजमान होने से यह रहम दिल हो गए हैं। इसलिए इनको साक्षात् अर्श समझकर इनकी परिकरमा करो। जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह झूठे संसार में भी धनी के चरण नहीं छोड़ते, इनका दिल धनी का अर्श है।

सुख आगूं अर्स द्वार के, कई बिध केलि करत।
सो क्यों छोड़ें चरन हक के, जाकी असल हक निसबत।। ६ ।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक के बेहद सुख हैं। जहां पशु, पक्षी नए-नए खेल करके रिझाते हैं। ऐसे धनी के चरण कमलों को श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

करें सुपने में कुरबानियां, ऐसे मोमिन अलमस्त।
सूते भी कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज के दीवाने मोमिन संसार में भी श्री राजजी महाराज के चरणों को नहीं छोड़ेंगे। वह श्री राजजी की अंगना हैं, इसलिए सपने के संसार को छोड़कर कुर्बानी देंगे।

सुपने कदम पकड़ के, तापर अपना आप वारत।
हक करें सुरखरू इनको, जाकी असल हक निसबत।। ८ ।।

मोमिन सपने के संसार में श्री राजजी महाराज के चरणों पर अपने आपको समर्पित करते हैं। तब श्री राजजी महाराज इनको पाक करेंगे (निस्सन्देह करेंगे), क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

लेवें सुख बाग मोहोलनमें, मलारमें बरखा रूत।
रूहें क्यों छोड़ें चरन सुपने, जाकी असल हक निसबत।। ९ ।।

मोमिन परमधाम के बाग, बगीचों के तथा रंग महल के सुख वर्षा ऋतु में लेते हैं, तो ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में भी उनके चरणों को क्यों छोड़ेंगी?

रूहें खेलें मलार बनमें, हक हादी की सोहोबत।
ए क्यों छोड़ें चरन मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। १० ।।

रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ वर्षा ऋतु में वन में खेलती हैं। यह श्री राजजी की अंगना हैं तो उनके चरण कमलों को कैसे छोड़ें?

मोमिन बसें अर्स बनमें, ऊपर चाह्या मेह बरसत।
सो क्यों रहें इन पांउं बिना, जाकी असल हक निसबत।। ११ ।।

मोमिन अर्श के वनों में खेलते हैं। जहां उनकी चाहना पर ही वर्षा होती है तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इनके चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

Nijanand App

रूहें मलार अर्स बाग में, ऊपर सेरड़ियां गरजत।
रूहें सुपने पांउं न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १२ ।।

रूहें वर्षा ऋतु में बगीचों में आनन्द लेती हैं, जहां ऊपर से बादल गरजते हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में भी श्री राजजी के चरण नहीं छोड़तीं।

रूहें खेलें हक हादी सों बन में, नूर बिजलियां चमकत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १३ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के साथ वन में खेलती हैं, जहां पर नूर की बिजली चमकती है तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

हक खेलोंने कई खेलावहीं, कई मोर कला पूरत।
सो क्यों छोड़ें पांउं हक के, जाकी असल हक निसबत।। १४ ।।

इन वनों में श्री राजजी महाराज पशु-पक्षियों को कई तरह के खेल खिलाते हैं। मोर अपनी सुन्दर कला से नाच दिखाकर धनी को रिझाते हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

रूहें खेलें अर्स के बागमें, कई पसु पंखी खेलावत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १५ ।।

रूहें परमधाम के बगीचों में खेलती हैं। जहां कई तरह के पशु-पक्षियों को भी खेल खिलाती हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में इनके चरणों को कैसे छोड़ें?

रूहें सुपने दुनीको न लागहीं, जाको मुरदार कही हजरत।
ए हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १६ ।।

जिस दुनियां को रसूल साहब ने नाचीज कहा है, मोमिनों की उसमें रुचि नहीं होगी। जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में धनी को नहीं छोड़ सकतीं।

ए रूहें हक हादी संग, विध विध बन विलसत।
ए क्यों छोड़ें कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत।। १७ ।।

रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ वनों में तरह-तरह के विलास करती हैं। वह श्री राजजी की अंगना अब संसार में उनके चरणों को कैसे छोड़ें?

खेलने वाली सातों घाटकी, हक प्रेम सुराही पिलावत।
रूहें सुपने न छोड़ें कदम को, जाकी असल हक निसबत।। १८ ।।

रूहें परमधाम के सातों घाटों में खेलने वाली हैं। जिन्हें श्री राजजी महाराज अपने दिल की सुराही से इश्क पिलाते हैं। ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह सपने के संसार में श्री राजजी के चरणों को क्यों छोड़ेंगी?

रूहें सराब हक सुराही का, पैदरपे पीवत।
बेहोस हुए न छोड़ें कदम, जाकी असल हक निसबत।। १९ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के गंजान गंज इश्क से भरे दिल की सुराही से इश्क की शराब लगातार पीकर बेहोश हो जाती हैं। श्री राजजी की अंगना होने के कारण संसार में उनके चरण नहीं छोड़तीं।

Nijanand App

झूलें पुल मोहोल साम सामी, जल बीच मोहोल झलकत।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत॥ २० ॥

रूहें जमुनाजी के पुलों के महलों में लगे झूलों में आमने-सामने झूला झूलती हैं और जमुनाजी के जल के अन्दर दोनों पुलों की झांई झलकती है तो ऐसी श्री राजजी महाराज की अंगना संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ें?

रूहें रमें किनारे जोए के, हक हादी रूहें झीलत।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत॥ २१ ॥

रूहें जमुनाजी के किनारे पर खेलती हैं और श्री राजश्यामाजी के साथ झीलना (स्नान) करती हैं। ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

हक हादी रूहें पाट पर, मन चाह्या सिनगार साजत।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत॥ २२ ॥

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें पाट घाट पर बैठकर मनचाहे सिनगार सजती हैं तो ऐसी रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ेंगी?

रूहें मिलावा अर्स बाग में, देखो किन विध ए सोभित।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत॥ २३ ॥

रूहों का मिलावा परमधाम के बगीचों में कितना सुन्दर लगता है तो ऐसे मोमिन जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ेंगे?

पसु पंखी बोलें इन समें, कई विध बन गूंजत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत॥ २४ ॥

वनों में इस समय पशु-पक्षियों की कई तरह की आवाज गूंजती है तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह संसार में श्री राजजी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

विध विधके कुन्ज बनमें, हक रूहें केलि करत।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत॥ २५ ॥

रूहें परमधाम के कुंजवन में श्री राजजी के साथ तरह-तरह के खेल करती हैं तो श्री राजजी की अंगना रूहें संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

बट पीपल की चौकियां, हक हादी रूहें हींचत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत॥ २६ ॥

बट-पीपल की चौकी में रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ झूला झूलती हैं तो संसार में श्री राजजी की अंगना उनके चरणों से कैसे जुदा होंगी?

ताल पाल बन गिरदवाए, ऊपर कई मोहोल देखत।
सो क्यों छोड़ें हक कदमको, जाकी असल हक निसबत॥ २७ ॥

हौज कौसर ताल की पाल पर तथा चारों तरफ के वनों की तथा टापू महल की शोभा दिखाई देती है तो जो रूहें श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं?

Nijanand App

सोभा चारों घाट की, जित जोए हौज मिलत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।२८ ।।

हौज कौसर ताल के चार घाट जहां जमुनाजी हौज कौसर में मिलती हैं, उस शोभा को कैसे कहें तो श्री राजजी की अंगना रूहें संसार में धनी के चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

ए जो कहे मेहेराव, घाटों ऊपर सोभित।
हक कदम हिरदे रूह के, जाकी असल हक निसबत।।२९ ।।

हौज कौसर ताल पर घाटों के ऊपर मेहराबें शोभा देती हैं। श्री राजजी के चरण रूह के दिल में हैं तो संसार में वह चरण कैसे छोड़ सकती हैं?

खेलें हौज कौसर के बागमें, रूहें बन डारी झूलत।
हक चरन सुपने न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।३० ।।

हौज कौसर तालाब में रूहें वन की डालियों पर झूलती हैं, इसलिए श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों को नहीं छोड़ेंगी।

रूहे खेलें टापू के गुरज में, जाए झरोखों बैठत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।३१ ।।

यह टापू महल के साथ गुर्जों में खेलती हैं और झरोखों में बैठकर देखती हैं तो ऐसी श्री राजजी की जो अंगना हैं वह संसार में धनी के चरणों के बिना नहीं रह सकतीं।

खेलें अर्स हौज टापू मिने, हक भेले चांदनी चढ़त।
रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।३२ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के साथ हौज कौसर के टापू में खेलती हैं और श्री राजजी के साथ चांदनी पर चढ़ती हैं तो श्री राजजी की अंगना संसार में श्री राजजी के चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

नेहेरें मोहोल ढ़ांपियां, जल चक्राव ज्यों चलत।
मोमिन हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।३३ ।।

जवेरों की नहरों में जल ढका हुआ चक्राव दार (भंवर) चलता है तो संसार में रूहें जो धनी की अंगना हैं, वह इन चरणों को कैसे छोड़ें?

कई मोहोल मानिक पहाड़में, हिसाबमें न आवत।
ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।३४ ।।

माणिक पहाड़ के महल बिना हिसाब के हैं तो श्री राजजी की अंगना ऐसी शोभा को छोड़कर संसार में श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ें? वह धनी की अंगना हैं।

कई ताल नेहेरें मानिक पर, ढ़िग हिंडोलों चादरें गिरत।
ए कदम मोमिन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।३५ ।।

मानिक पहाड़ में कई तरह के तालाब, नहरें, हिंडोले और पानी की चादरें गिरती हैं तो ऐसे कदमों को जो श्री राजजी की अंगना हैं, संसार में क्यों छोड़ेंगी।

Nijanand App

कई भांतों नेहेरें बनमें, सागरों निकस मिलत।
मोमिन खेलें कदम पकड़के, जाकी असल हक निसबत।। ३६ ।।

वन की नहरों में सागरों से नहरें निकलकर सारे वनों में घूमकर सागरों में मिल जाती हैं। यहां रूहें धनी के चरणों में खेलती हैं क्योंकि यह उनकी अंगना हैं।

कई बड़े मोहोल किनारे सागरों, कई मोहोल टापू झलकत।
ए मोमिन कदमों सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।। ३७ ।।

सागरों के किनारे पर बड़ी रांग की हवेलियां हैं तथा सागरों में सुन्दर टापू महल झलकते हैं। यहां मोमिन श्री राजजी महाराज के चरणों का सुख लेते हैं, जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

आगूं बड़ा चौगान बन बिना, दूब कई दुलीचों जुगत।
मोमिन दौड़ के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत।। ३८ ।।

पश्चिम की चौगान में कोई वन नहीं है। उसके आगे दूब दुलीचा की कई प्रकार की शोभा है। यहां मोमिन दौड़कर धनी के चरण पकड़ते हैं। यह श्री राजजी की अंगना हैं।

हक हादी रूहें इन चौगानमें, कई पसु पंखी दौड़ावत।
मोमिन लेवें सुख कदमों, जाकी असल हक निसबत।। ३९ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें चौगान में पशु-पक्षियों पर सवारी कर दौड़ते हैं। मोमिन ऐसे चरणों का सुख लेते हैं। वह श्री राजजी की अंगना हैं।

कहा कहूं बाग अर्स का, जित कई रंगों फूल फूलत।
रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४० ।।

परमधाम के पश्चिम की दीवार से लगा फूलबाग, नूरबाग, जहां कई रंगों के फूल खिलते हैं, की सिफत कैसे करूं? अब रूहें जो धनी की अंगना हैं, वह उनके चरणों के बिना संसार में कैसे रहें?

रूहें खेलें फूल बाग में, कई खुसबोए रस बेहेकत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ४१ ।।

रूहें फूलबाग में खेलती हैं, जहां सुगन्धि ही सुगन्धि है तो संसार में जो श्री राजजी की अंगना हैं, उनके चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

विध विधकी बन छत्रियां, जड़ाव चंद्रवा ज्यों चलकत।
ए कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।। ४२ ।।

परमधाम के वन की छाया, जड़ाऊ चन्द्रवा के समान चमकती है तो संसार में जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह इन चरणों का सुख लेती हैं।

इन बाग तले जो बाग है, ए क्यों कहे जुबां सिफत।
ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ४३ ।।

फूलबाग के नीचे नूरबाग है। उसकी सिफत यहां की जबान से कैसे करें? रूहें, जो धनी की अंगना हैं, संसार में ऐसे सुख को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

मोर चकोर मैना कोयली, कई विध वन टहुंकत।
रूहें कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।४४ ।।

मोर, चकोर, मैना, कोयल वन में कई तरह की आवाज करते हैं। जो धाम धनी की अंगना हैं, वह रूहें, संसार में यह सुख लेती हैं। उनकी निसबत धनी के चरणों से है।

जो खेलें झीलें चेहेबच्चे, जल फुहारे उछलत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।४५ ।।

रूहें चहबच्चों में खेलती हैं। झीलना (स्नान) करती हैं। जहां जल के फव्वारे चलते हैं। वह श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे रहें?

रूहें खेलें लाल चबूतरे, कई रंगों हाथी झूमत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।४६ ।।

रूहें लाल चबूतरे पर खेलती हैं, जहां कई रंग के हाथी झूम रहे हैं। अर्श की रूहें श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के कदमों के बिना कैसे रहें?

कई बाघ चीते दीपे केसरी, बोलें कूदें गरजत।
रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।४७ ।।

कई किस्म के बाघ, चीता, तेंदुआ, केसरी (सिंह) बोलते हैं। कूदते हैं, गरजते हैं। ऐसी श्री राजजी की अंगना रूहें संसार में धनी के चरणों बिना कैसे रहें?

कई विध बाजे बजावहीं, इत बांदर नट नाचत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।४८ ।।

यहां बन्दर कई तरह के बाजे बजाते हैं और नाचते हैं। ऐसे सुखों को छोड़कर श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे रहें?

कई बड़े पसु पंखी अर्स के, कई उड़ें खेलें कूदत।
रूहें क्यों रहें हक चरन बिना, जाकी असल हक निसबत।।४९ ।।

परमधाम में कई तरह के बड़े पशु-पक्षी उड़ते, खेलते और कूदते हैं तो ऐसी शोभा को छोड़कर श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे रहेंगी।

कई विध यों मधुबन में, सुख लेवें चित्त चाहत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।५० ।।

इस तरह से सखियां मधुवन में चितचाहा सुख लेती हैं तो अब वह श्री राजजी की अंगना इन चरणों बिना कैसे रह सकती हैं?

बड़े मोहोल जो पहाड़ से, इत रूहें खेलें कई जुगत।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।५१ ।।

पुखराज के बड़े महलों में कई प्रकार के खेल रूहें खेलती हैं तो संसार में वही श्री राजजी की अंगना धनी के चरणों बिना कैसे रहें?

Nijanand App

चार मोहोल बड़े थंभ ज्यों, सो ऊपर जाए मिलत।
रूहें इत सुख कदमों लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।५२ ।।

पुखराज पहाड़ के चार पेड़ों के महल थंभ (स्तम्भ) के समान हैं जो ऊपर जाकर मिल जाते हैं। रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह इस संसार में इनके चरणों की कृपा से सुख लेती हैं।

हजार हांसें जित गिरदवाए, बीच मोहोल बड़े बिराजत।
इत रूहें सुख लेवें चरनका, जाकी असल हक निसबत।।५३ ।।

पुखराज पहाड़ को घेरकर एक हजार हांस हैं और बीच में महल सुन्दर शोभा देता है। उस सुख को परमधाम की अंगना यहां संसार में लेती हैं।

पहाड़ पुखराजी मोहोलमें, सुख चांदनी लेवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।५४ ।।

पुखराज पहाड़ के महलों की चांदनी में रूहें सुख लेती हैं। अब वह रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह धनी के चरणों बिना संसार में कैसे रहें?

अति बड़े चार द्वार चांदनी, कई हाथी हलकों आवत।
चरन छूटे ना इन खावंद के, जाकी असल हक निसबत।।५५ ।।

पुखराज पहाड़ की चांदनी पर चारों दिशाओं में बहुत बड़े द्वार हैं। जहां कई हाथियों के झुंड के झुंड आते हैं, इसलिए जो रूहें अर्श की अंगना हैं, वह धनी के चरणों को कैसे छोड़ सकते हैं?

बड़े पसु पंखी इन चांदनी, हक हादी मोहोला लेवत।
रूहें ए चरन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।५६ ।।

पुखराज पहाड़ की चांदनी पर बड़े पशु-पक्षी श्री राजजी महाराज का दर्शन करते हैं तो श्री राजजी की जो अंगना हैं, वह संसार में उनके चरणों को कैसे छोड़ें?

हाथी बाघ चीते दीपे केसरी, कोई जातें गिन ना सकत।
हक कदम रूहें क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।५७ ।।

जहां हाथी, बाघ, चीता, तेंदुए, केसरी (सिंह) की इतनी जातियां हैं, जिन्हें कोई गिन नहीं सकता, वह श्री राजजी के चरणों में रहते हैं तो श्री राजजी की जो अंगना हैं, वह इन चरणों को कैसे छोड़ें?

ए निपट बड़े मोहोल चांदनी, इत कई मिलावे मिलत।
रूहें न छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत।।५८ ।।

पुखराज पहाड़ की चांदनी पर बड़ी-बड़ी हवेलियां हैं, जहां पर कई पशु-पक्षी खूब खुशालियों के झुंड मिलते हैं तो जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह संसार में धनी के चरणों को कैसे छोड़ें?

बड़े चार द्वार चबूतरों, क्यों कहूं देहेलानों सिफत।
ए सुख लेवें मोमिन कदमों, जाकी असल हक निसबत।।५९ ।।

हर एक हवेली की चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजों के सामने चबूतरे हैं तो देहलानों की महिमा को कैसे कहूं जो चांदनी पर शोभा देती है। रूहें अपने धनी की अंगना संसार में चरणों से यही सुख लेती हैं।

Nijanand App

ए अति ऊंचे मोहोल बीच के, हक सुख आकासी देवत।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।६०।।

पुखराज पहाड़ के ऊपर आकाशी महल के सुख श्री राजजी महाराज देते हैं जो अत्यन्त ऊंचे हैं तो परमधाम की अंगना इस संसार में इन कदमों को कैसे छोड़ें?

हक हादी रूहें बड़े मोहोलमें, इन गुरजो सुख को गिनत।
ए कदम सुख मोमिन जानहीं, जाकी असल हक निसबत।।६१।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहों के आकाशी महल के गुर्जों के सुख कौन गिन सकता है? जो अर्श की अंगना हैं, वह इन सुखों के देने वाले चरणों को संसार में कैसे छोड़ सकती हैं?

सुख लेत ताल मूल जोएके, कई विध केलि करत।
रूहें क्यों छोड़ें हक चरनको, जाकी असल हक निसबत।।६२।।

रूहें पुखराज ताल जहां से जमुनाजी निकली हैं, वहां कई तरह के खेल करके सुख लेती हैं तो संसार में वही रूहें श्री राजजी की अंगना उनके चरणों बिना कैसे रह सकती हैं?

मोहोल बड़े ताल ऊपर, रूहें सुख लेवें हक सों इत।
ए क्यों छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत।।६३।।

पुखराज ताल के ऊपर जवेरों के महल बने हैं, जहां रूहें श्री राजजी महाराज से सुख लेती हैं तो श्री राजजी की अंगना अब संसार में उनके कदमों बिना कैसे रहें?

दोनों तरफों मोहोल के, आगूं जित दरखत।
सो क्यों छोड़ें कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत।।६४।।

जवेरों के महल के दोनों तरफ बड़े वन के पांच-पांच वृक्ष आए हैं। सपने के संसार में इन चरणों के सुख को कैसे छोड़ें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

दोऊ किनारे गुरज दोए, बीच सोले चादरें उतरत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।६५।।

अधबीच के कुंड में जहां सोलह चादरें गिरती हैं उनके दाएं-बाएं दो गुर्ज बने हैं। इन सुखों को अर्श की रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, संसार में धनी चरणों के बिना कैसे लें?

ऊपर चादरों मोहोल जो, बीच बड़े देहेलान देखत।
दोऊ तरफों कदम सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।६६।।

इन सोलह चादरों के दोनों तरफ खास महल बने हैं और उनके बीच बड़ी-बड़ी देहलानें हैं। इन दोनों तरफ के सुख श्री राजजी के चरणों से लेते हैं। वह श्री राजजी की अंगना हैं। वह संसार में इन चरणों बिना कैसे रहें?

अधबीचमें कुंड जो, जित चादरों जल गिरत।
रूहें छोड़ें न कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत।।६७।।

अधबीच के कुंड में जहां सोलह चादरें गिरती हैं, इनके सुख को संसार में श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

Nijanand App

तले ताल बन बंगले, जल चक्राव ज्यों चलत।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।६८ ।।

ताल के नीचे बंगलों और वन की शोभा है जहां चक्रावदार पानी चलता है। ऐसे सुख देने वाले चरणों को छोड़कर संसार में अर्श की अंगना कैसे रह सकती हैं?

कई फुहारे मुख जानवरों, जल तीर ज्यों छूटत।
क्यों भूलें इत सुख कदम के, जाकी असल हक निसबत।।६९ ।।

बंगलों के चारों तरफ फील पायओं में बने जानवरों के मुख से तीर के समान जल के फव्वारे चलते हैं। इस सुख को श्री राजजी की अंगना संसार में धनी के चरणों के बिना कैसे लें?

ए जंजीरें जलकी, अदभुत सोभा लेवत।
क्यों छोड़ें ए कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत।।७० ।।

जहां जंजीर की तरह नहरों की शोभा है। ऐसे सुखों को देने वाले चरणों को संसार में श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

उलंघ जात कई चेहेबच्चों, जल साम सामी जात आवत।
इत कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।७१ ।।

फव्वारों का जल कई चहबच्चों (हौजों) को लांघकर आमने-सामने पड़ता है, जहां मोमिन श्री राजजी के चरणों का सुख लेते हैं। यह उनकी अंगना हैं।

जल आवे जाए ऊपरसे, तले हक हादी रूहें खेलत।
ए सुख क्यों छूटें कदमके, जाकी असल हक निसबत।।७२ ।।

जल के फव्वारे ऊपर से चलते हैं। नीचे श्री राजश्यामाजी और रूहें खेलती हैं। श्री राजजी के चरणों के यह सुख संसार में कैसे छूटें जो उनकी अंगना हैं।

गिरदवाए बड़े द्वार मेहेराबी, ए मोहोल सोभा लेवत।
इत खेलें रूहें कदम तले, जाकी असल हक निसबत।।७३ ।।

चारों तरफ बड़े-बड़े दरवाजे, मेहराबें, बनी हैं, जिनसे महल की शोभा बढ़ जाती है। यहां रूहें श्री राजजी के चरणों के तले खेलती हैं तो संसार में अर्श की अंगना अब इन चरणों के बिना कैसे रह सकती हैं?

इत ताल तले बन छाया मिने, रूहें बीच बगीचों मलपत।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७४ ।।

पुखराज ताल के नीचे वन की छाया में बगीचों के बीच रूहें मस्ती से घूमती हैं। संसार में ऐसे सुख देने वाले चरणों को श्री राजजी की अंगना कैसे छोड़ें?

केती चक्रावसे बाहेर, जोए तले चबूतरों निकसत।
रूहें खेलें तले कदमके, जाकी असल हक निसबत।।७५ ।।

कितनी नहरें घेरकर बाहर ढपे चबूतरे के नीचे आकर जमुनाजी से मिलती हैं। रूहें श्री राजजी के चरणों के तले यहां खेलती हैं तो जो उनकी अंगना हैं, वह संसार में उनके चरणों को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

जोए चबूतरों कुंड पर, ऊपर बन झूमत।
ए कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत।।७६।।

जमुनाजी के ढपे चबूतरे के और मूल कुण्ड के ऊपर वन की डालियां झूमती हैं। श्री राजजी की अंगना इस संसार में उन सुखों को धनी के चरणों के बिना कहां से लें?

जमुना जल ढांपी चली, ए बैठक सोभा अतंत।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७७।।

मूल कुण्ड के आगे आधी दूर तक जमुनाजी ढकी चलती हैं। वहां की बैठक अत्यन्त सुन्दर है। श्री राजजी की अंगना जिन चरणों से यह सुख लेती थीं, उसे कैसे छोड़ें?

दोऊ किनारे ढांपिल, आगूं जल जोए खुलत।
रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।७८।।

आधी दूर के बाद जमुनाजी का जल खुल जाता है। दोनों किनारे ढके रहते हैं। अब संसार में श्री राजजी की अंगना ऐसे सुख देने वाले चरणों के बिना कैसे रहें?

एक मोहोल एक चबूतरा, जाए जोए पुल तले मिलत।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।७९।।

जमुनाजी के दोनों किनारों पर पुल, महल तक एक महल एक चबूतरे की शोभा आई है। रूहें ऐसा सुख देने वाले चरणों को संसार में क्यों छोड़ें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

जोए इतथें मरोर सीधी चली, अर्स आगूं सोभा सरत।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत।।८०।।

जमुनाजी का बहाव पूरब की तरफ से मुड़कर दक्षिण को सीधा चलता है। रंग महल के आगे इनकी शोभा और बढ़ जाती है। रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं ऐसे सुख देने वाले चरणों को संसार में क्यों छोड़ेंगी?

दोऊ पुल के बीच में, बड़ी सातों घाटों सिफत।
रूहें खेलें इत कदमों तले, जाकी असल हक निसबत।।८१।।

दोनों पुलों के बीच सात घाटों की बड़ी सुन्दर शोभा है। रूहें यहां श्री राजजी के चरणों तले खेलती हैं। ऐसे सुख देने वाले चरणों को श्री राजजी की अंगना संसार में कैसे छोड़ें?

नूर और नूरतजल्ला, अर्स साम सामी झलकत।
ए रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत।।८२।।

जमुनाजी के दोनों तरफ अक्षरधाम और परमधाम आमने-सामने शोभा देते हैं। श्री राजजी की अंगना अपने धनी के चरणों को संसार में नहीं भूलेंगी।

दोऊ दरबारकी रोसनी, अंबर नूर भरत।
रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत।।८३।।

परमधाम और अक्षरधाम दोनों दरबारों की रोशनी आकाश में नहीं समाती है। तो रूहें ऐसे धामों के सुख देने वाले अपने धनी के चरणों को संसार में क्यों छोड़ें?

Nijanand App

अर्स जिमी नूर अपार है, इतके वासी बड़े-बखत।
महामत रूहें हक जात हैं, जाकी हक कदमों निसबत।। ८४ ।।

परमधाम की जमीन का नूर बेशुमार है और वहां के रहने वाले बड़े भाग्यशाली हैं। श्री महामतिजी कहते हैं रूहें श्री राजजी की अंगना हैं, क्योंकि इनका ठिकाना श्री राजजी के चरणों में ही है।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ५२७ ।।

अर्स अंदर निसबत चरन

अर्स अंदर सुख देवहीं, जो रूहों दिल उपजत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। १ ।।

रूहों के दिल में जो इच्छा होती है, रंग महल के अन्दर श्री राजजी महाराज सभी पूरी करके सुख देते हैं, इसलिए जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके चरण क्यों छोड़ेंगी?

अर्स अरवाहें भोम खिलवत, नूर दसों दिस लरत।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत।। २ ।।

मूल-मिलावे में जहां रूहें बैठी हैं, दसों दिशाओं में नूर की तरंगें फैल रही हैं। रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरणों को क्यों छोड़ें?

रूहें बारे हजार बैठाएके, हक हांसी को खेलावत।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ३ ।।

मूल-मिलावा में बारह हजार रूहों को बिठाकर श्री राजजी महाराज हंसने के वास्ते खेल दिखा रहे हैं, तो रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह उनके कदम क्यों छोड़ेंगी?

लें सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मोहोल बारे सहस्त्र जित।
सो क्यों छोड़ें रूहें कदमको, जाकी असल हक निसबत।। ४ ।।

दूसरी भोम में खड़ोकली में स्नान के सुख और बारह हजार मन्दिरों में भुलवनी के खेल के सुख हैं, तो श्री राजजी की अंगना उनके चरणों को क्यों छोड़ें?

रूहें तीसरी भोम चढ़के, बड़े झरोखों आवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। ५ ।।

रूहें तीसरी भोम में चढ़कर बड़े झरोखे में आती हैं तो जो श्री राजजी की अंगना हैं, वह श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें?

कई इंड पलथें पैदा फना, जिन कादर ए कुदरत।
ए आवें मुजरे इन सरूपके, जाकी असल हक निसबत।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म के हुकम से कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। वह श्री राजजी से अपनी निसबत जानकर नित्य दर्शन को आते हैं।

नूर मकानसें आवें दीदार को, इत नूरजमाल बिराजत।
रूहें याद कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।। ७ ।।

जब श्री राजजी महाराज तीसरी भोम की पड़साल पर विराजते हैं तो अक्षरब्रह्म अपने धाम से उनके दर्शन करने के लिए हर रोज आते हैं, तो रूहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वह इन चरणों की याद को कैसे छोड़ें?

Nijanand App

हक बैठें पौढें भोम तीसरी, आगू झरोखों आरोगत।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदमको, जाकी असल हक निसबत।।८ ।।

श्री राजजी महाराज तीसरी भोम में बैठते हैं, आराम करते हैं और झरोखों के आगे आरोगते हैं, तो यह रूहें जो श्री राजजी की अंगना हैं, इन चरणों को कैसे छोड़ें?

रूहें अर्स अजीमकी, भोम चौथी देखें निरत।
सो हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।९ ।।

रूहें परमधाम की चौथी भोम में नृत्य देखती हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज के चरणों को उनकी अंगनाएं क्यों छोड़ें?

रूहें अर्स अजीमकी, पांचमी भोम पौढ़त।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।१० ।।

रूहें परमधाम की पांचवीं भोम में शयन करती हैं। इस सुख को रूहें संसार में भी कैसे छोड़ें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें अर्स अजीमकी, भोम छठी कई जुगत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।११ ।।

रूहें परमधाम की छठी भोम की कई तरह की शोभा को देखती हैं, इसलिए श्री राजजी के चरणों को कैसे छोड़ सकती हैं? जो उनकी अंगना हैं।

रूहें अर्स भोम सातमी, जो छपर-खटों हींचत।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।१२ ।।

रूहें परमधाम की सातवीं भोम में खट छप्पर के हिंडोलों में झूलती हैं, इसलिए संसार में श्री राजजी के चरण को कैसे छोड़ें? वह उनकी अंगना हैं।

ए अर्स भोम आठमी, साम सामी हिंडोलें खटकत।
ए रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।१३ ।।

रूहें परमधाम की आठवीं भोम में आमने-सामने हिंडोलों में झूलती हैं जो आवाज करते हैं, इसलिए रूहें श्री राजजी के चरणों को नहीं छोड़ेंगी, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

अर्स रूहें सुख नौमी भोमें, सुख सिंघासन समस्त।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।१४ ।।

रूहें नवीं भोम में सिंहासन के सुख हर हांस में लेती हैं, तो संसार में उन चरणों को कैसे छोड़ें, क्योंकि वह श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें रेहेवें अर्स में, जो सुख झरोखों भोगवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।१५ ।।

रूहें परमधाम के झरोखों के सुख लेती हैं, तो संसार में श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें? वह श्री राजजी की अंगना हैं।

Nijanand App

हक हादी रूहें सुख अर्स चांदनी, अर्स अंबर जोत होवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १६ ।।

रंग महल की चांदनी के ऊपर श्री राजश्यामाजी, रूहें बैठती हैं, जिनका तेज आकाश में फैलता है। अब वह रूहें श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें जो श्री राजजी की अंगना हैं।

सकल भोम सुख लेवहीं, रूहें हक कदम पकरत।
सो क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १७ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के चरण पकड़कर दसों भोम के सुख लेती हैं। संसार में श्री राजजी के चरण बिना कैसे रहें जो श्री राजजी की अंगना हैं।

आई नजीक जागनी, पीछे तो उठ बैठत।
हांसी होसी भूली पर, जाकी असल हक निसबत।। १८ ।।

अब जागनी का समय नजदीक आ गया है। पीछे तो सभी उठ बैठेंगे। जो भूलेगी उस पर हंसी होगी, क्योंकि श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें हुकम ले दौड़ियो, मूल तन अर्समें उठत।
हक हंससी तुम ऊपर, रूहें क्यों भूली ए निसबत।। १९ ।।

हे रूहो! अब श्री राजजी महाराज के हुकम से जागृत होकर दौड़ो, जिससे तुम्हारी परआतम परमधाम में जागृत हो जाए। ऐसी निसबत को भूलने से श्री राजजी महाराज तुम्हारे पर हंसेंगे, क्योंकि तुम उनकी अंगना हो।

आया नजीक बखत मोमिनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत।
जो सुपने कदम न भूलिए, हंसिए हकसों ले निसबत।। २० ।।

हे मोमिनो! जागने का समय नजदीक आ गया है, इसलिए श्री राजजी की नसीहत को क्यों भूलें? सपने में भी श्री राजजी के चरणों को न भूलें, तब हम श्री राजजी की अंगना हैं। खेल समाप्ति पर श्री राजजी के साथ मिलकर हम हंसेंगे।

लाहा लीजे दोनों ठौरका, सुनो मोमिनों कहे महामत।
क्यों सुपने ए चरन छोड़िए, अपनी असल निसबत।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, अगर हमने अपनी निसबत पहचान कर सपने में श्री राजजी के चरण न छोड़े तो खेल में और परमधाम में दोनों ठिकानों का सुख मिलेगा।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || ५४८ ||

श्री राजजी की इजार

असल इजार एक पाचकी, एकै रस सब ए।
कई बेल पात फूल बूटियां, रंग केते कहूं इनके।। १ ।।

श्री राजजी की इजार हरे रंग की है। पूरी इजार में एक ही शोभा है। जिसमें बेल, पत्ते, फूल, बूटियां कई रंग की बनी हैं।

Nijanand App

बेल मोहोरी इजार की, जानों एही भूखन सुन्दर।
अतंत सोभा सबसे, एही है खूबतर।। २ ।।

इजार की मोहरी पर बेल बनी हैं जैसे सुन्दर आभूषण पहने हैं। यह शोभा सबसे अधिक लगती है।

इजार बंध नंग कई रंग, कई बूटी कई नकस।
निरमान न होए इन जुबां, ए वस्तर अजीम अर्स।। ३ ।।

इजारबंध में कई रंगों के नग हैं और कई बूटियां और कई नक्शकारी हैं। यह बनाए नहीं जाते। यह अखण्ड परमधाम के वस्त्र हैं। इनका यहां की जबान से कैसे वर्णन हो?

अति सोभा अति नरमाई, नंग सोभित नरम पसम।
अर्स चीज न आवे सब्दमें, ए नेक केहेत हुकम।। ४ ।।

परमधाम के नगों में अत्यन्त शोभा है तथा पश्म के समान नरमाई है, इसलिए परमधाम की चीजें शब्दातीत हैं। यह थोड़ा सा वर्णन मैंने श्री राजजी के हुकम से किया है।

बेल पात फूल कई विधके, कई विध कांगरी इत।
जोत न नरमाई सुमार, जुबां क्या कहे सिफत।। ५ ।।

बेल, पात, फूल, कई तरह की कांगरी की ज्योति तथा कोमलता बेशुमार हैं। यहां की जबान से कैसे वर्णन करें?

नेफा रंग कसूंबका, अति खूबी अतलस।
बेल भरी मोती कांगरी, जानों ए भूखन से सरस।। ६ ।।

नेफे का रंग लाल है जो अतलस (सनील) की बनी है। जिसमें बेलें बनी हैं और मोतियों के कंगूरे हैं। लगता है यह आभूषणों से अच्छे हैं।

ताना बाना रंग रेसम, जवेर का सब सोए।
बेल फूल बूटी तो कहूं, जो मिलाए समारे होए।। ७ ।।

ताना, बाना तथा रंग सब रेशमी हैं और जवेरों के हैं। जिनमें बनी बेल, फूल, बूटियों का वर्णन तब करें यदि किसी ने बनाए और संवारे हों।

|| प्रकरण || १० || चौपाई || ५५५ ||

खुले अंग सिनगार छबि छाती

रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तोको हकें कही अर्स की।
अर्स किया तेरे दिलको, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी रूह! तुझे श्री राजजी महाराज ने परमधाम की कहा है, इसलिए तेरे दिल को अर्श बनाया है। श्री राजजी महाराज ने तुझे बड़ाई दी है, तो तुझे इस सुख की लज्जत क्यों नहीं आती?

जो कदी तैं आई नहीं, तोमें हक का है हुकम।
हुज्जत दई तोको अर्सकी, दिया बेसक अपना इलम।। २ ।।

यदि मानो तू परमधाम से खेल में नहीं आई है, फिर भी तेरे अन्दर श्री राजजी का हुकम है और परमधाम के होने की शोभा दी है। अपनी जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी दी है।

Nijanand App

बिन जामें देखों अंगको, आसिक सब सुख चाहे।
बागा पेहेने हमेसा देखिए, कछू ए छबि और देखाए।। ३ ।।

हे मेरी रूह! तू श्री राजजी महाराज से सब सुख चाहती है, इसलिए अब बिना जामा पहने उनके अंगों को देखो। बागा पहने तो हमेशा दर्शन करते हैं, परन्तु यह छबि कुछ विशेष तरह की है।

आसिक इन मासूक की, नए सुख चाहे अनेक।
निरखे नए नए सिनगार, जानें एक से दूजा विसेक।। ४ ।।

आशिक रूह हमेशा माशूक के नए-नए सुखों की चाहना करती है और उनको नए-नए सिनगार में देखती है, जो एक से दूसरे विशेष अच्छे लगते हैं।

जुदे जुदे सुख ले हक के, रूह आसिक क्योंए न अघाए।
ताथें जुदा जुदा बरनन, सुख आसिक ले दिल चाहे।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के जुदा-जुदा सिनगार के सुख लेकर आशिक रूह को किसी प्रकार से तृप्ति नहीं आती, इसलिए श्री राजजी के नए-नए सिनगारों का वर्णन करके अपने मनचाहे सुख लें।

खाना पीना खिन खिन लिया, प्यार अर्स रूहन।
पल पल मासूक देखना, एही आहार आसिकन।। ६ ।।

पल-पल प्यार लेना ही अर्श की रूहों का खाना-पीना है। आशिकों का आहार सदा माशूक को देखना ही होता है।

हक बैठे अपने अर्स में, सो अर्स मोमिनका दिल।
तो अनेक खूबी खुसालियां, हम क्यों न लेवें मिल।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज अपने घर (अर्श) में बैठे हैं और वह घर मोमिनों का दिल है। जहां पर हर प्रकार की खुशियां और सुख हैं, तो हम सब मिलकर उस आनन्द को क्यों न लें?

ए जो हक वस्तरकी खूबियां, सो हक अंग परदा जहूर।
बारीक ए सुख जानें रूहें, जिनपे अर्स सहूर।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्रों की खूबी का जो वर्णन किया है वह श्री राजजी के अंग की ही शोभा है। परमधाम की इन खास (बारीक) बातों को अर्श की रूहें ही जानती हैं, जिनके पास तारतम वाणी है।

वस्तर भूखन सब पूरन, सुख बिन जामें और जिनस।
देख देख देखे जो आसिक, जो देखे सोई सरस।। ९ ।।

वस्त्र, आभूषण अपने आप सब तरह से पूर्ण हैं। जो परमधाम के आशिक हैं, जिसे देखते हैं उनको वही अच्छा लगता है, परन्तु बिना जामा पहने दर्शनों का सुख कुछ और ही है।

कटि कोमल अति पतली, सुन्दर छाती गौर।
देख देख सुख पाइए, जो होवे अर्स सहूर।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की कमर पतली और कोमल है। छाती गोरे रंग की है, जिसे देखकर अति सुख होता है। यदि जागृत बुद्धि से देखें तो और ही स्वाद आता है।

Nijanand App

कटि कोमल कही जो पतली, कछु ए सलूकी और।
ए जुबां सोभा तो कहे, जो कहूं देखी होए और ठौर।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर को कोमल और पतली कहा है। यह तो उपमा दी है। वास्तव में शोभा एक निराली ही है, जो कहीं और किसी ठिकाने देखने से नहीं मिल सकती, इसलिए यह झूठी जबान कैसे वर्णन करे?

और पेट पांसली हककी, ए कौन भांत कहूं रंग।
रूह देखे सहूर अर्स के, और कौन केहेवे हक अंग।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के पेट की पसलियां किस तरह की और किस रंग की हैं, कैसे कहूं? यदि रूह जागृत बुद्धि से देखे तो वही अनुभव कर सकती है। दूसरा और कौन श्री राजजी महाराज के अंग का वर्णन कर सकता है?

पांसे पांखड़ी बगलें, सोभित बंधो बंध।
अंग रंग खूबी खुसालियां, पार ना सुख सनंध।। १३ ।।

पांसे की पसलियां फूल की पंखुड़ी के समान गुंथी हैं, शोभा युक्त हैं। श्री राजजी महाराज के अंग के रंग की खूबियों का बेशुमार सुख है।

ज्यों बरनन सुपन सरूपकी, ए भी होत विध इन।
ए चारों चीज उत हैं नहीं, ना अर्समें ख्वाब चेतन।। १४ ।।

जैसे संसार के स्वरूप का वर्णन किया जाता है, वैसे ही मैंने परमधाम का वर्णन किया है, परन्तु परमधाम में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु यह चारों तत्व नहीं हैं और न वहां मिटने वाली कोई जड़ वस्तु ही है। वहां हर चीज चेतन है।

ए बरनन अर्स अंग होत है, ले मसाला इतका।
ताथें किन बिध रूह कहे, ना जुबां पोहोंचे सब्द बका।। १५ ।।

यह वर्णन परमधाम के अंग का है। वर्णन करती हूं, परन्तु उपमा यहां की दे रही हूं, इसलिए यहां की जबान उस शब्दातीत की शोभा को कैसे कहे?

जो अरवा होए अर्सकी, सो कीजो इलम सहूर।
इलम सहूर जो हकें दिया, लीजो इनसे रूहें जहूर।। १६ ।।

जो परमधाम की रूहें हों, वह जागृत बुद्धि से विचार कर लेना। श्री राजजी महाराज के जागृत बुद्धि के ज्ञान से सारी शोभा को देख लेना।

हकको जेता रूह देखहीं, सुध तेती ना बुध मन।
तो सुपन जुबां क्या केहेसी, अंग हक बका बरनन।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को रूह जितना देखती है, उतनी सुध मन और बुद्धि में नहीं आती तो श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूरी अंग का वर्णन सपने की जबान कैसे करेगी?

नरम नाजुक पेट पांसली, क्यों कहूं खूब रस रंग।
देत आराम आठों जाम, हक बका अर्स अंग।। १८ ।।

पेट की पसलियां नर्म हैं, नाजुक हैं। उनकी खूबी, रंग कैसे बताएं? श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूरी अंग रूहों को रात-दिन बेशुमार सुख देते हैं।

Nijanand App

छाती निरखों हककी, गौर अति उज्जल।
देख हैड़ा खूब खुसाली, तो मोमिन कह्या अर्स दिल।। १९ ।।

श्री राजजी की छाती बहुत गोरी और उज्ज्वल है। ऐसे उनके हृदय की खूबी खुशाली को मोमिन देखते हैं, तभी मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

जिन देख्या हक हैड़ा, क्यों नजर फेरे तरफ और।
वाको उसी सूरत बिना, आग लगे सब ठौर।। २० ।।

जिन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के हृदय को देखा है, वह अपनी नजर दूसरी तरफ नहीं कर सकते। उन्हें श्री राजजी महाराज की छवि के बिना सब संसार आग के समान लगता है।

जो हक अंग देख्या होए, हक जमाल न छोड़े तिन।
जाके अर्स की एक रंचक, त्रैलोकी उड़ावे त्रैगुन।। २१ ।।

जिन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के अंग को देखा हो श्री राजजी महाराज की सुन्दरता के सागर को नहीं छोड़ते। वरना जिसके परमधाम की एक कंकरी त्रैगुन सहित चौदह लोक को उड़ा देती है।

वह देख्या अंग क्यों छूटहीं, हक परीछा एही मोमिन।
ए होए अर्स अरवाहों सों, जिनके अर्स अजीम में तन।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज को देखने पर उनकी नजर वहां से न हटे, यही मोमिनों की परीक्षा है। जिन मोमिनों की परआतम परमधाम में है, वही श्री राजजी को एकटक देखते रहते हैं।

हक जात अर्स उन तनसे, बीच रेहेत मोमिनके दिल।
अर्स मोमिन दिल तो कह्या, यों हिल मिल रहे असल।। २३ ।।

हकजात रूहें परमधाम में श्री राजजी के तन से हैं और श्री राजजी महाराज खेल में मोमिनों के दिल में रहते हैं। मोमिनों के दिल को इसलिए अर्श कहा है कि श्री राजजी और मोमिन एकाकार हैं।

दिल हक का और हादी का, ए दोऊ दिल हैं एक।
एकै मता दोऊ दिलमें, ए अर्स रूहें जानें विवेक।। २४ ।।

श्री राजजी का दिल और श्यामाजी महारानी का दिल एक है। दोनों की विचारधारा एक है। इस बात को परमधाम की रूहें जानती हैं।

जो गंज हक के दिलमें, सो पूरन इस्क सागर।
कोई ए रस और न ले सके, बिना मोमिन कोई न कादर।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में गंजान गंज सागर के समान इश्क भरा है, जिसे मोमिनों के अतिरिक्त लेने की शक्ति और किसी में नहीं है।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो इन दिलमें हक बैठक।
तो इत जुदागी कहां रही, जहां हकै आए मुतलक।। २६ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है कि उसमें श्री राजजी महाराज की बैठक है। जहां श्री राजजी महाराज दिल में आ गए तो जुदाई कहां रही?

Nijanand App

ए क्यों होए बिना निसबतें, इतहीं हुई वाहेदत।
निसबत वाहेदत एकै, तो क्यों जुदी कहिए खिलवत।। २७ ।।

बिना सम्बन्ध के (अंगना से) ऐसा एकाकार होना कैसे सम्भव हो सकता है? श्री राजजी महाराज और रूहें जब एक ही हैं तो उनको खिलवत से अलग कैसे कहा जाए?

इतहीं हक मेहेरबानगी, इतहीं हुकम इलम।
तो इत जोस इस्क क्यों न आवहीं, जो हकें दिल में धरे कदम।। २८ ।।

जहां श्री राजजी महाराज बैठे हैं वही उनका हुकम, मेहर और इलम है। तो फिर जोश और इश्क क्यों नहीं आएगा?

सोई सहूर अर्सका, जो कह्या हक इलम।
सोई मोमिन पे बेसकी, यों अर्स रूहें जुदे ना खसम।। २९ ।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि का ज्ञान ही इलम है। इसी से मोमिनों के संशय मिटे। इस तरह से परमधाम के मोमिन श्री राजजी से अलग नहीं हैं।

जुबां क्या कहे बड़ाई हक की, पर रूहें भूल गई लाड़ लज्जत।
एक दम न जुदे रहे सकें, जो याद आवे हक निसबत।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की साहेबी यहां की जबान से कैसे वर्णन हो? पर अर्श की रूहें खेल में आकर धनी की लाड़ लज्जत को भूल गई हैं, वरना अपनी निसबत याद आने पर कि मैं धनी की अंगना हूं, एक पल के लिए भी अलग नहीं रह सकतीं।

हक हैड़े के अन्दर, मता अनेक अलेखे।
उपली नजरों न आवहीं, जो लों रूह अंदर ना देखे।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में बेशुमार न्यामतें हैं। रूहें जब तक जागृत बुद्धि के ज्ञान से अन्दर की नजर आतम दृष्टि से न देखें, तब तक ऊपर की नजर से दिखाई नहीं देतीं।

क्यों छूटे हक हैयड़ा, मोमिन के दिलसें।
अर्स मता जो मोमिन का, सब हक हैड़े में।। ३२ ।।

मोमिनों के दिल से श्री राजजी महाराज का हृदय कैसे छूट सकता है, क्योंकि मोमिनों की परमधाम की सब न्यामतें श्री राजजी के हृदय में ही हैं।

सब अंग देखत रस भरे, प्रेम के सुख पूरन।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ले हिरदे रस मोमिन।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग प्रेम के रस से भरपूर सुख देने वाले हैं। जिन मोमिनों के दिल में इसका रस आएगा, वही इसको देखेंगे और समझेंगे।

ए जो बातून गुन हक दिलमें, सो क्यों आवे मिने हिसाब।
ए दृष्ट मन जुबां क्या कहे, ए जो मसाला ख्वाब।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो गुणों के रहस्य छिपे पड़े हैं, वह बेशुमार हैं। फिर यहां के मन और जबान से यहां की उपमा लेकर वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

छाती मेरे खसम की, जिन का नाम सुभान।
जो नेक देखूं गुन अन्दर, तो तबहीं निकसे प्रान।। ३५ ।।

मेरे धनी की छाती, जिनको सुभान कहते हैं, यदि जरा सा भी उनके गुणों को विचार करें तो उसी वक्त यह शरीर छूट जाए।

जो निध हक हैड़े मिने, सो कई अलेखे अनेक।
सो सुख लेसी अर्समें, जिन बेवरा लिया इत देख।। ३६ ।।

श्री राजजी के दिल में बेशुमार न्यामतें हैं। मोमिन इन सुखों, जिसका वर्णन यहां समझ लिया है, उनकी लज्जत परमधाम में लेंगे।

हक हैड़े में जो हेत है, रूहों सों प्रेम प्रीत।
जिन मेहेर होसी निसबत, सोई ल्यावसी परतीत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो रूहों से प्रेम, प्रीति है। जिन पर श्री राजजी महाराज की मेहर होगी, वही इसे पहचानेगी।

हक हैड़े में इस्क, सब अंगों सनेह।
रूह देखसी हक मेहेर से, निसबती होसी जेह।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में इश्क और सब अंगों में प्रेम, स्नेह भरा है। अब जो उनकी अंगना हैं, वही उनकी मेहर से देखेंगी।

हक हैड़े में एही बसे, मैं लाड़ पालों रूहों के।
ए हक हुज्जत आवे तिनों, तन असल अर्स में जे।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में रूहों से लाड़ लड़ाने की ही एक चाहना रहती है। इसका अधिकार उन्हीं को है, जिनकी परआतम परमधाम में है।

हक हैड़े में निस दिन, सुख देऊं रूहों अपार।
जिन रूह लगी होए अन्दर, सो जानेगी जाननहार।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में रूहों को सुख देने की ही बात रहती है। जिन रूहों को इस बात की तड़प होती है, वही इसके स्वाद को जानती हैं।

एक नुकता इलम हक दिल से, आया मेरे दिल माहें।
इन नूर नुकते की सिफत, केहे न सके कोई क्यांहें।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के इलम सागर से एक बिन्दु मेरे दिल में आया। इस तारतम ज्ञान, जो बिन्दु के समान है, की सिफत कोई नहीं कह सकता।

ले नूर नुकते की रोसनी, मैं ढूंढ़े चौदे भवन।
इनमें कहूं न पाइया, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।। ४२ ।।

मैंने इस जागृत बुद्धि के तेज से चौदह लोक खोजे पर ऐसा इलम मुझे त्रिलोक त्रैगुन समेत कहीं पर नहीं मिला।

Nijanand App

इन इलम नुकते की रोसनी, नहीं कोट ब्रह्मांडों कित।
सो दिया मोहे सुपने दिलमें, जो नहीं नूर अछर जाग्रत।। ४३ ।।

इस जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान की रोशनी करोड़ों ब्रह्माण्डों में कहीं भी नहीं है और जो ज्ञान अक्षर ब्रह्म को जागृत अवस्था में नहीं है वह मुझे श्री राजजी महाराज ने सपने के तन में दिया है।

खाक पानी आग वाएको, ए चौदे तबक हैं जे।
सो मेरे दिल कायम किए, बरकत नुकते इलम के।। ४४ ।।

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तत्वों से ही यह चौदह तबक बने हैं। इन सबको इस जागृत बुद्धि के बिन्दु समान इलम की बरकत से, श्री राजजी महाराज की मेहर ने, सबको मेरे द्वारा अखण्ड करवाया।

एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर।
इन बूंद की सिफत देखियो, ऐसे हक दिलमें कई सागर।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल से जो ज्ञान की एक बूंद आई, उसने चल-अचल के ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर दिया। जब एक बूंद की ऐसी महिमा है तो श्री राजजी के दिल में तो कई सागर भरे पड़े हैं।

एक बूंद ने बका किए, तो होसी सागरों कैसा बल।
तो काहूं न पाई तरफ किने, कई चौदे तबक गए चल।। ४६ ।।

जब एक ही बूंद ने संसार को अखण्ड कर दिया तो इल्म के सागर में कितनी शक्ति होगी, इसलिए आज दिन तक उस जागृत बुद्धि को कोई प्राप्त नहीं कर सका। कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट गए।

ऐसे कई सुख हक हैड़े मिने, सो ए जुबां कहे क्योंकर।
हैड़े बल तो नेक कह्या, जो इत बूंद आई उतर।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में ऐसे कई सुख हैं। यहां की जबान से कैसे कहें? हृदय के बल का तो मैंने अंश मात्र कहा है। वह भी उस बूंद के बल से जो यहां आ गया है।

कोट ब्रह्मांड का केहेना क्या, जिमी झूठी पानी आग वाए।
ए चौदे तबक जो मुरदे, नुकते इलमें दिए जिवाए।। ४८ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्डों का क्या कहना जो झूठी जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी से बनते-मिटते हैं। इस नुक्ता इलम ने चौदह तबक के मुरदार जीवों को अखण्ड कर दिया।

क्यों कहिए सोभा हककी, ना कछू झूठ में आए हम।
लेहेजे हुकमें झूठे बैराटको, सांचे किए नुकते इलम।। ४९ ।।

हम इस झूठे संसार में आए ही नहीं हैं तो श्री राजजी महाराज की शोभा का वर्णन कैसे करें? इस नुक्ता इलम ने मिटने वाले संसार को श्री राजजी के हुकम से अखण्ड कर दिया।

कही न जाए झूठमें, हक हैड़े की सिफत।
हक सोभा छल में तो होए, जो सांच जरा होए इत।। ५० ।।

इस झूठे संसार में श्री राजजी के हृदय की महिमा कही नहीं जा सकती। इसका बयान संसार में तभी सम्भव हो सकता है, यदि यहां रंचमात्र भी सत्य हो।

Nijanand App

तो कह्या वेद कतेबमें, ए ब्रह्मांड नहीं रंचक।
तो क्यों कहिए आगे इनके, ए जो सिफत दिल हक।।५१।।

इसलिए वेद कतेब में ब्रह्माण्ड को शून्य बताया है। अब इसके आगे श्री राजजी महाराज के दिल की महिमा कैसे कहें?

कहूं सुन्दर सोभा सलूकी, कहूं केते गुन उपले।
ए सुख न आवे हिसाब में, ए जो गिरो देखत है जे।।५२।।

श्री राजजी महाराज की छाती की सलूकी और सुन्दरता के ऊपर के गुण कहां तक कहें? मोमिन जिन सुखों को देखते हैं, वह हिसाब में नहीं आ सकते हैं।

हक छाती सलूकी सुनके, रूह छाती न लगे घाए।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, हाए हाए ओ नहीं अर्स अरवाए।।५३।।

श्री राजजी महाराज की छाती की सलूकी सुनकर रूह की छाती में घाव नहीं लगते। धिक्कार है उनकी अक्ल को, वह परमधाम की रूहें कहलाने लायक नहीं हैं।

हक छाती नरम कोमल, रूह सदा रहे सूर धीर।
पाए बिछुरे पिउ परदेस में, हाए हाए सो रही ना कछू तासीर।।५४।।

श्री राजजी महाराज की छाती बहुत नाजुक और कोमल है। रूहें इसे सदा बड़ी चौकसी से अपने दिल में धारण करती हैं। अब परदेश में आकर उनसे श्री राजजी महाराज के चरण कमल छूट गए हैं। हाय! हाय! मोमिनों में परमधाम का बल ही समाप्त हो गया है।

छाती मेरे खसम की, देखी जोर सलूक।
न्यारे होत निमखमें, हाए हाए जीवरा न होत टूक टूक।।५५।।

मैंने धनी की छाती को नजर भरकर देखा। अब उससे एक पल के लिए भी अलग होने से हाय! हाय! यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होता?

छाती मेरे मासूक की, चुभी मेरी छाती माहें।
जो रूह अर्स अजीम की, तिनसे छूटत नाहें।।५६।।

श्री राजजी महाराज की छाती मेरी छाती में चुभ रही है। तो जो रूह परमधाम की है, उससे यह श्री राजजी की छाती किसी तरह से नहीं छूटती।

बिछुरे पाए परदेसमें, देखी पिउ अंग छाती।
अब पलक पड़े जो बिछोहा, हाए हाए उड़े ना करे आप घाती।।५७।।

देखो, अपने धनी की बिछुड़ी हुई छाती को परदेश में पाया है। अब एक पल का भी वियोग होता है तो आत्मा को तुरन्त शरीर छोड़ देना चाहिए।

मासूक छाती रूह थें ना छूटहीं, अति मीठी रंग भरी रस।
ए क्यों कर छोड़े मोमिन, जो होए अरवा अर्स।।५८।।

श्री राजजी महाराज की छाती रूह से नहीं छूटती। वह अत्यन्त सुन्दर और मस्ती से भरपूर है। जो परमधाम की रूहें हैं, वह अब इसे क्यों छोड़ें?

Nijanand App

ए अंग मेरे मासूक के, मीठे अति मुतलक।
ए लज्जत असल याद कर, ए लें अरवा आसिक।।५९।।

यह मेरे माशूक श्री राजजी महाराज के अंग निःसंदेह अति मीठे हैं। आशिक रूहें अपने मूल स्वरूप को यादकर यह लज्जत लेती हैं।

मुख न फेरें मोमिन, छाती इन सुभान।
ए करते याद अनुभव, क्यों न आवे असल ईमान।।६०।।

मोमिन श्री राजजी महाराज की छाती से नजर को नहीं हटाते। जिन मोमिनों को इसका अनुभव है उन्हें यह याद आते ही असल ईमान क्यों नहीं आता?

मासूक छाती निरखते, क्यों याद न आवे अर्स।
विचार किए आवे अनुभव, जाको दिल कह्यो अरस–परस।।६१।।

मेरे माशूक श्री राजजी महाराज की छाती को देखकर परमधाम की याद क्यों नहीं आती? हम दिल में विचार करें कि हम और श्री राजजी अरस-परस एक हैं तो विचार करने पर ही परमधाम की याद आती है।

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में मता हक सब।
अजूं हक आड़े पट रहे, ए देख्या बड़ा तअजुब।।६२।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और अर्श में सब खजाना है। फिर भी बड़ी हैरानी है कि मेरे और श्री राजजी के बीच में यह झूठे तन का परदा पड़ा है।

पट एही अपने दिलको, हकें सोई दिल अर्स कह्या।
हक पट अर्स सब दिलमें, अब अंतर कहां रह्या।।६३।।

यह परदा अपने दिल के ऊपर है। इसी दिल को ही श्री राजजी ने अपना अर्श कहा है। अब श्री राजजी महाराज, परमधाम और सब न्यामत मेरे दिल में है तो अन्तर कहां रह गया?

जो विचार विचार विचारिए, तो हक छाती न दिल अंतर।
ए पट आड़ा क्यों रहे, जब हुकमें बांधी कमर।।६४।।

यदि जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से विचार करके देखें तो श्री राजजी की छाती और मोमिनों के दिल में कुछ अन्तर नहीं है। जब श्री राजजी महाराज के हुकम से उनसे एकाकार होने के लिए कमर कस ली है तो इस तन का परदा कैसे रहेगा?

ए क्यों रहे पट अर्समें, पूछ देखो हक इलम।
ओ उड़ाए देसी पट बीच का, जब रूह हुकमें आई कदम।।६५।।

श्री राजजी की वाणी से समझकर देखो तो परमधाम में फरामोशी का परदा कैसे रहेगा? जब रूहें श्री राजजी के हुकम से चरणों में आ गई तो बीच में आए माया के पिण्ड और ब्रह्माण्ड का परदा मिट जाएगा।

एही पट फरामोस का, दिलमें रही अंतर।
जब हुकमें बंधाई हिम्मत, तब होस में न आवे क्योंकर।।६६।।

यह फरामोशी का परदा ही मोमिनों के दिल में श्री राजजी से अन्तर डाल रहा है। जब हुकम ने हिम्मत देकर खड़ा किया तो फिर फरामोशी उड़ाकर जागृत क्यों नहीं होते?

Nijanand App

दिल अर्स कह्या याही वास्ते, परदा कह्या जहूर।
दोऊ दिलके बीचमें, जो दिल देखे कर सहूर।।६७।।

मोमिनों के दिल को इस वास्ते अर्श कहा है। यदि यह दिल में विचार करके देखें तो श्री राजजी और मोमिनों के दिलों में यही फरामोशी का परदा है।

हक छाती निपट नजीक है, सेहेरग से नजीक कही।
हक सहूर किए बिना, आड़ी अंतर तो रही।।६८।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप मोमिनों को सेहेरग से नजदीक बताया है, इसलिए जागृत बुद्धि का ज्ञान जब तक नहीं आया तभी तक यह फरामोशी का परदा आड़े है।

हक भी कहे दिलमें, अर्स भी कह्या दिल।
परदा भी कह्या दिलको, आया सहूरें बेवरा निकल।।६९।।

श्री राजजी महाराज दिल में हैं और मोमिनों के दिल को भी अर्श कहा है। दिल के ऊपर परदा भी कहा है। विचार करने से इसका निर्णय हो गया।

जो पीठ दीजे ब्रह्मांड को, हुआ निस दिन हक सहूर।
तब परदा उड़्या फरामोस का, बका अर्स हक हजूर।।७०।।

जब संसार को पीठ दें तो रात-दिन श्री राजजी नजर में रहेंगे और उन्हीं की चर्चा होगी। तब फरामोशी का परदा उड़ जाएगा। फिर अखण्ड परमधाम में श्री राजजी के सामने उठ खड़े होंगे।

मेहेबूब छाती की लज्जत, देत नहीं फरामोस।
फरामोस उड़े आवे लज्जत, सो लज्जत हाथ प्रेम जोस।।७१।।

यह फरामोशी ही श्री राजजी महाराज की छाती (दिल) के सुख नहीं लेने देती। जब फरामोशी समाप्त हो जाए तो हक का आनन्द आ जाए। आनन्द आते ही प्रेम और धनी का जोश आ जाएगा।

इस्क जोस और इलम, ए हक हुकम के हाथ।
तब हक हैड़ा ना छूटहीं, ए सब सुख हैड़े साथ।।७२।।

इश्क, जोश और इलम यह तीनों श्री राजजी के हुकम के हाथ में हैं। यह सभी सुख हृदय के अन्दर हैं। अब श्री राजजी महाराज की छाती मोमिनों से नहीं छूटेगी।

ए मेहेर करें जो मासूक, तो रूह हुकमें बांधें कमर।
तब फरामोसी दूर दिलसे, हक हैड़े चुभी नजर।।७३।।

जब श्री राजजी महाराज की मेहर हो तो धनी के हुकम से रूह फरामोशी को हटाने के लिए कमर कसकर खड़ी हो जाए। तब श्री राजजी महाराज के हृदय में रूह की नजर टिक जाएगी।

ए होए हक निसबतें, रूहों हुकम देवे हिंमत।
तब फरामोसी रेहे ना सके, दे हक छाती लाड़ लज्जत।।७४।।

श्री राजजी महाराज का हुकम धनी की अंगनाओं को बल देवें तो यह काम उनकी अंगनाएं ही कर सकती हैं। तब फरामोशी हट जाने से श्री राजजी महाराज की छाती की लाड़ लज्जत मिलने लगेगी।

Nijanand App

इन विध छाती न छूटहीं, रूहों सों निस दिन।
असल सुख हक हैड़े के, ए लज्जत लगे अर्स तन।।७५।।

इस तरह से रूहों से रात-दिन श्री राजजी का हृदय कभी नहीं छूटेगा। श्री राजजी महाराज के हृदय के असली सुखों के आनन्द मोमिनों की परआतम के तन ही ले सकते हैं।

जोस इस्क सुख अर्स के, ए लगें रूह मोमिन।
जब ए सबे मदत हुए, तब क्यों रहे पट रूहन।।७६।।

श्री राजजी महाराज का जोश, इश्क और परमधाम के सभी सुखों को मोमिन लेने लगें तो फिर रूहों के बीच फरामोशी का परदा, यह संसार के तन कैसे रह सकते हैं?

असल नींद सो फरामोसी, फरामोसी सोई अंतर।
जो अर्स लज्जत आवहीं, तो इलमें तबहीं जुड़े नजर।।७७।।

असल में नींद को फरामोशी कहा है। फरामोशी ही परदा है। यदि परमधाम के आनन्द आ जाएं तो श्री राजजी की नजर से रूह की नजर इलम द्वारा मिल जाए।

इलम सहूर मेहेर हुकम, ए चारों चीजें होएं एक ठौर।
तिन खैंच लिया मता अर्स का, पट नहीं कोई और।।७८।।

इलम, सहूर, मेहर, हुकम यह चारों चीजें एक साथ इकट्ठी रहती हैं। यही परमधाम की न्यामतें हैं जो श्री राजजी महाराज ने अपने पास खींच रखी हैं। यही परदा है।

अर्स तन दिलमें ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहें।
सुख लज्जत अर्स तन खैंचहीं, तब क्यों रहे अन्तर माहें।।७९।।

हमारी परआतम के दिल में ही इस संसार के तनों का दिल है और दोनों दिलों के बीच कोई परदा नहीं है। जब हमारी परआतम इन चारों के सुख को खींच लेगी तो दोनों के अन्दर परदा हट जाएगा।

सुपन होत दिल भीतर, रूह कहूं ना निकसत।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ए तो दिल में बड़ा देखत।।८०।।

सपना दिल के अन्दर होता है। आत्मा कहीं निकलकर जाती नहीं है। इसी तरह यह चौदह लोक सपने की तरह कुछ भी नहीं हैं, परन्तु हमने दिल में बड़ा समझ रखा है।

हक छाती रूहथें न छूटहीं, नजर न सके फेर।
जो कोई रूह अर्स की, ताए हक बिना सब अन्धेर।।८१।।

श्री राजजी महाराज की छाती रूह से नहीं छूटती और न रूह अपनी नजर को वहां से हटा ही सकती है। परमधाम की रूहों के लिए श्री राजजी महाराज के बिना सब अंधेरा है।

हक छाती में लाड़ लज्जत, और छाती में असल आराम।
ए सब सुख को रस पूरन, तो रूह लग रही आठों जाम।।८२।।

श्री राजजी महाराज की छाती में ही सब लज्जत और आराम हैं। यह सब रूहों के सुखों से भरपूर है, इसलिए रूहें रात-दिन यहां से सुखों को लेती हैं।

Nijanand App

रूहों हक छाती चुभ रही, सो देवे लज्जत अरवाहों को।
असल सुख सागर भयो, देखें अर्स आराम सबमों।। ८३ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज की छाती (दिल) याद आती है तो रूहों को आनन्द आता है। तब रूह के दिल में सुख ही सुख का अनुभव होता है। तो वह सभी रूहों को अर्श के आराम में देखती हैं।

ए जो हक हैड़े की खूबियां, सो क्या केहेसी बुध माफक।
पर ए कहे हक हुकम, और हक इलम बेसक।। ८४ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की खूबियों को यहां की बुद्धि कैसे कहेगी? पर यह जो कुछ कहा है श्री राजजी के हुकम और तारतम वाणी से कहा है।

रूह खड़ी करे हुकम, और बेसक लदुन्नी इलम।
ना तो रूह कहे क्यों नींद में, हक हैड़ा बका खसम।। ८५ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी रूह को खड़ा करती है। वरना रूह सपने में रहकर श्री राजजी के अखण्ड दिल की बातों को कैसे बयान कर सकती है?

महामत कहे बोलूं हुकमें, अर्स मसाला ले।
दरगाही रूहन को, सुख असल देने के।। ८६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं जो कुछ कह रही हूं श्री राजजी महाराज के हुकम से परमधाम का मसाला लेकर बोलती हूं, ताकि परमधाम की रूहों को अखण्ड सुख दे सकूं।

|| प्रकरण || ११ || चौपाई || ६४१ ||

खभे कण्ठ मुखारविंद सोभा समूह

मंगला चरन

मुख मेरे मेहेबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल।
क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूरजमाल।। १ ।।

मेरे महबूब श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द उज्ज्वल और लालिमा लिए है। इनके स्वरूप के तेज, पुंज, कोमलता एवं शोभा कैसे वर्णन करूं?

बांहें मेरे मासूक की, प्यारी लगें मेरी रूह।
हक हुकम यों कहावत, सो वाही जाने हकहू।। २ ।।

मेरे माशूक श्री राजजी महाराज की बांहें मेरी रूह को बहुत प्यारी लगती हैं। यह श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है। हुकम ही इनकी हकीकत को जानता है।

अंग रंग सलूकी सुभानकी, चकलाई उज्जल गौर।
नाम सुनत इन अंग के, जीवरा न होत चूर चूर।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के रंग की सलूकी (शोभा), चकलाई (सुन्दरता) उज्ज्वल और गौर (गोरी) है। इन अंगों के नाम सुनकर यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

ए छबि अंग अर्स के, जोत अंग हक मूरत।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत।। ४ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज के स्वरूप की छवि जो अमरद कही है, उसके अंग के तेज का वर्णन कैसे किया जाए?

Nijanand App

खभे देत दोऊ खूबियां, रूह देख देख होए खुसाल।
जो नेक आवे अर्स की लज्जत, तो रोम रोम लगे रूह भाल।।५।।

श्री राजजी महाराज के दोनों बाजू अति सुन्दर हैं, जिन्हें देखकर रूह खुश होती है। यदि जरा भी परमधाम की लज्जत मिल जाए तो रूह के रोम-रोम में भाले के समान चुभते हैं।

खभे मच्छे कोनिया, और कलाइयां काड़न।
पोहोंचे हथेली अंगुरी, नूर क्यों कर कहूं नखन।।६।।

बाजुओं के कन्धे, मच्छे (डौले), कोहनियां, कलाइयां, कड़े, पोहोंचे, हथेलियां, उंगलियां तथा उंगलियों के नख के नूर का वर्णन कैसे करूं?

जोत नखन की क्यों कहूं, अवकास रह्यो भराए।
तामें जोत नखन की, नेहेरें चलियां जाए।।७।।

नखों की जोत का कैसे वर्णन करें, जिससे आकाश तेज से भरा है। उसमें नखों का तेज नहरों के समान चलता दिखाई देता है।

ज्यों ज्यों हाथ की अंगुरी, होत है चलवन।
त्यों त्यों नख जोत आकास में, नेहेरें चीर चली रोसन।।८।।

जैसे-जैसे श्री राजजी महाराज हाथ की उंगलियां चलाते हैं, वैसे-वैसे आकाश में नखों की जोत दूसरे तेज के अन्दर चलती दिखाई देती है।

एक अंग जो निरखिए, तो निकस जाए उमर।
एक अंग बरनन ना होवहीं, तो होए सरूप बरनन क्यों कर।।९।।

श्री राजजी महाराज के एक अंग को देखें तो यहां की सारी उम्र निकल जाए पर एक अंग का वर्णन करना भी सम्भव नहीं होगा, तो पूरे स्वरूप का वर्णन कैसे करें?

अति गौर हस्त कमल, अति नरम अति सलूक।
ए हस्त चकलाई देखके, जीवरा होत नहीं टूक टूक।।१०।।

श्री राजजी महाराज के हस्त कमल गोरे, नरम और अति सुन्दर हैं। इन हाथों की शोभा को देखकर जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

काड़े कलाई कोनियां, इन अंग रंग सलूक।
फेर मच्छे खभे लग देखिए, रूह क्यों न होए भूक भूक।।११।।

हस्त कमल के कड़े, कलाई और कोहनी के रंग की सलूकी, ऊपर भुजा और कंधे को देखकर रूह के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाते?

ए अंग सारे रस भरे, सब संधों संध इस्क।
सहूर किए जीवरा उड़े, अर्स अंग वाहेदत हक।।१२।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग मस्ती से भरपूर हैं और नस-नस में इश्क भरा है। जिसका जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर विचार करने से यह जीव समाप्त हो जाए और परआतम जग जाए।

Nijanand App

जीवरा न समझे अर्स को, ना सहूर करे वाहेदत।
रूहें भूल गई लाड़ लज्जत, ना सुध रही निसबत।। १३ ।।

मेरे जीव को परमधाम और परआतम की सुध नहीं है। रूहें खेल में आकर धनी के लाड़ लज्जत को भूल गई हैं। उन्हें श्री राजजी की अंगना होने की भी सुध नहीं रह गई है।

।। मंगला चरन तमाम ।।

अब कहूं कण्ठ सोभा मुखकी, और इस्क सबों अंग।
आसिक दिल छबि चुभ रही, मासूक रूप रस रंग।। १४ ।।

अब श्री राजजी महाराज के कंठ, मुख और सब अंगों के इश्क की शोभा का वर्णन करती हूं। आशिक रूहों के दिल में माशूक श्री राजजी महाराज के स्वरूप की छवि के रंग रस की सलूकी चुभ गई है।

ए जो कोमलता कण्ठ की, क्यों कहूं चकलाई गौर।
नेक कह्या जात ख्वाब में, जो हकें दिया सहूर।। १५ ।।

गले की नरमाई, चिकनाहट, गोरा रंग और सुन्दरता कैसे कहूं? इस सपने के संसार में श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी से ही वर्णन किया है।

गौर केहेतीहों मुखसे, सो देख के अंग इतका।
ए जुबां दृष्ट इत फनाकी, सोभा क्यों कहे कण्ठ बका।। १६ ।।

मैं मुख से गौर रंग कहती हूं तो यहां का गोरा रंग देखकर। मेरी जबान और नजर झूठे संसार की है, इसलिए अखण्ड कण्ठ की शोभा का वर्णन कैसे करे?

कण्ठ गौर कई सुख देवहीं, जो कछू खोले रूह नजर।
सो होत हक के हुकमें, जिनने करी नजीक फजर।। १७ ।।

यदि रूह की नजर खोलकर देखें तो श्री राजजी महाराज का कण्ठ गोरा और कई तरह के सुख देने वाला है। यह श्री राजजी महाराज के हुकम से ही कहती हूं, जिन्होंने फजर का ज्ञान दिया है।

ए जो लज्जत लाड़ की, सोभी हुई हाथ इजन।
जिन निसबतें बेसक करी, ताए क्यों न आवे लज्जत तन।। १८ ।।

श्री राजजी के लाड़ और लज्जत हुकम के हाथ में हैं। जिस निसबत के कारण श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर निस्संदेह कर दिया है तो उस निसबत वाली अंगना को धनी की लज्जत इस तन में क्यों नहीं आती?

ना तो बेसक जब निसबत, तब रूह क्यों करे फरामोस।
ए देह जो सुपन की, खिन में उड़ावे हक जोस।। १९ ।।

जब रूह को अंगना होने का संशय नहीं रहा तो उसे फरामोशी क्यों रहे? तो फिर श्री राजजी के जोश से इस सपने के तन को उड़ा देना चाहिए।

Nijanand App

ए जो देखो सहूर करके, भई आड़ी हक आमर।
ना तो बल करते धनी बेसक, ए देह ख्वाब रहे क्यों कर।। २० ।।

यदि जागृत बुद्धि से विचार करके देखें तो श्री राजजी का हुकम ही आड़े आता है। वरना धनी का बल आते ही संसार का तन उड़ जाना चाहिए।

प्रीत रीत इस्क की, इस्कै सहज सनेह।
निस दिन बरसत इस्क, नख सिख भीगे सब देह।। २१ ।।

तब रात-दिन रूह अपने धनी के प्रेम, इश्क, प्रीति, स्नेह में नख से शिख तक इश्क की वर्षा में भीगी रहेगी।

भौं भृकुटी पल पापण, मुसकत लवने निलवट।
इन विध जब मुख निरखिए, तब खुलें हिरदे के पट।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की भौंहें, भृकुटि, पल्कें, गाल, माथा सब मुस्कराते हुए दिखते हैं। जब इस प्रकार श्री राजजी कें मुखारबिन्द को देखें तो हृदय के पट खुल जाएंगे।

छब फब नई एक भांत की, श्रवन गाल मुसकत।
लाल अधुर मुख नासिका, जानों गौर हरवटी हंसत।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज की यह छवि नए तरीके की है, जिसमें कान, गाल, लाल होंठ, मुख, नासिका तथा गोरे रंग की हरवटी सभी हंसते दिखाई देते हैं।

हाथ पांउं पेट हैयड़ा, कण्ठ हार भूखन वस्तर।
ए सब अंग हक के मुसकत, और नाचत हैं मिलकर।। २४ ।।

हाथ, पांव, पेट, हृदय, कण्ठ, हार, आभूषण, वस्त्र सभी अंग मिलकर मुस्कराते हैं और मिलकर नाचते दिखते हैं।

बल बल जांउं मुख हकके, सोभा अति सुन्दर।
ए छबि हिरदे तो आवहीं, जो रूह हुकमें जागे अंदर।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे मुखारबिन्द पर बलिहारी जाती हूं जो अत्यन्त सुन्दर है, परन्तु यह श्री राजजी महाराज की छवि हृदय में तब आए, जब हुकम से रूह अन्दर जाग गई हो।

हक मुख छब हिरदे मिने, जो आवे अंतस्करन।
तिन भेली लज्जत लाड़ की, आवे अर्स के अंग वतन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुख की छवि जब हृदय में आ जाती है तो उसके साथ ही अखण्ड परमधाम के तनों में श्री राजजी महाराज की लाड़ लज्जत मिलने लगती है।

गौर मुख लाल अधुर, ए जो सलूकी सोभित।
एह जुबां तो केहे सके, जो कोई होए निमूना इत।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज के गौर (गोरे) मुखारबिन्द के लाल होंठों की सलूकी की शोभा यहां की जबान तब वर्णन करे जब यहां कोई दूसरा नमूना हो।

Nijanand App

कहे जांए न गौर गलस्थल, और अधुर लालक।
मुख चकलाई हक की, सब रस भरे नूर इस्क॥ २८ ॥

यहां की जबान से गोरे गाल, होंठों की लालिमा, मुखारबिन्द की सुन्दरता, सभी अंग इश्क के रस और नूर के भरे हैं, इनका वर्णन कैसे करें?

लाल जुबां दंत अधुर, हरवटी गौर हंसत।
जब बातून नजरों देखिए, तब रूह सुख पावत॥ २९ ॥

लाल जबान, दांत, होंठ, हरवटी हंसती दिखाई देती है। इस शोभा को जब बातूनी नजर से देखो तो रूह को सुख मिलता है।

अधुर हरवटी बीच में, क्यों कहूं लांक सलूक।
एही अचरज मोहे होत है, दिल देख न होत भूक भूक॥ ३० ॥

होंठ और हरवटी के बीच गहराई की सलूकी कैसे बताऊं? यही बड़ी हैरानी है कि इन सबको देखकर दिल के टुकड़े क्यों नहीं हो जाते?

दोऊ छेद्र चकलाई नासिका, गौर रंग उज्जल।
तिलक निलाट कई रंगों, नए नए देखत माहें पल॥ ३१ ॥

नासिका की सुन्दरता तथा दोनों छेद उज्ज्वल और गोरे रंग के हैं। माथे पर तिलक पल-पल में कई रंगों में बदलता दिखाई देता है।

नैन रस भरे रंगीले, चंचल चपल भरे सरम।
ए अरवाहें जानें अर्स की, जो मेहेरम बका हरम॥ ३२ ॥

श्री राजजी महाराज के नैन इश्क के रस से भरे हैं। चंचल, चपल तथा लाज से भरे हैं। यह परमधाम की रूहें जानती हैं जो अर्श की बेगमें हैं।

नेत्र अनियां अति तीखियां, रस इस्क भरे पूरन।
ए खैंचें जिन रूह ऊपर, ताए सालत हैं निस दिन॥ ३३ ॥

श्री राजजी महाराज के नैनों की तिरछी चितवन इश्क से भरी है। जिसकी तरफ नजर भरकर देख लेते हैं, वह रात-दिन तड़पती रहती है।

स्याम सेत भौंह लवने, नेत्र गौर गिरदवाए।
स्याह पुतली बीच सुपेतमें, जंग जोर करत सदाए॥ ३४ ॥

नैनों की सफेदी और काली पुतलियों के ऊपर भौंहें काली हैं। नैनों के चारों तरफ गोरा रंग है। आंखों की सफेदी के बीच काली पुतली की तरंगें आपस में टकराती हैं।

सोभा धरत अति श्रवनों, मोती उज्जल बीच लाल।
ए मुख रूह जब देखहीं, बल बल जाऊं तिन हाल॥ ३५ ॥

कान बड़ी सुन्दर शोभा वाले हैं, जिनमें उज्ज्वल मोती और लाल लटकते हैं। ऐसे मुखारबिन्द को जब रूह देखती है तो उस पर वारी-वारी जाती है।

Nijanand App

प्यारी बातें करे जब आसिक, हेतें सुनत हक कान।
क्यों कहूं सुख तिन रूहके, जो प्यार कर सुनें सुभान।। ३६ ।।

आशिक रूहें जब प्यारी-प्यारी बातें करती हैं तो श्री राजजी बड़े प्यार से सुनते हैं। उन रूहों के सुख का कैसे वर्णन करें, जिनकी प्यार भरी बातें श्री राजजी सुनते हैं।

रूह बात करे एक हक सों, हक देत पड़उत्तर चार।
कुरबान जाऊं हक हादीकी, जासों हक करें यों प्यार।। ३७ ।।

श्री राजजी से रूह एक बात करती है, श्री राजजी उसके चार उत्तर देते हैं। ऐसे श्री राज श्यामाजी की रूहों पर कुर्बान जाती हूं, जिनसे श्री राजजी महाराज इतना प्यार करते हैं।

ए छबि अंग अर्स के, जो अंग हक मूरत।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत।। ३८ ।।

यह श्री राजजी महाराज के स्वरूप की छवि है। जिनके स्वरूप को रसूल साहब ने अमरद कहा है। इसकी शोभा कैसे कही जाए?

कांध केस पेच पगरी, पीठ लीक रूप रंग।
हाए हाए जीवरा ना उडे, केहेते अर्स रेहेमानी अंग।। ३९ ।।

कंधे पर घुंघराले बाल, पगड़ी के पेंच, पीठ की गहराई, रूप और रंग कहते हुए हाय! हाय! यह जीव क्यों नहीं उड़ जाता?

पाग सोभित सिर हक के, बनी हक दिल चाहेल।
सो इन जुबां क्यों केहे सके, जाकी दृष्ट अंग इन खेल।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर उनके दिल चाहे अनुसार पाग की शोभा है तो इस संसार की झूठी नजर से और जबान से कैसे वर्णन करें?

दुगदुगी सोभा तो कहूं, जो पगड़ी सोभा होए और।
जोत करे हक दिल चाही, कोई तरफ बनी इन ठौर।। ४१ ।।

दुगदुगी की शोभा का वर्णन तो तब करूं जब पगड़ी से अलग हो। यह दुगदुगी श्री राजजी के चाहे अनुसार ही पगड़ी में शोभा देती है। ऐसी विचित्र शोभा पाग की है।

ए क्यों आवे जुगत जुबां मिने, क्यों कहूं एह सलूक।
जो ए तरह आवे रूह दिल में, तो तबहीं होवे टूक टूक।। ४२ ।।

इस पाग की जुगत तथा सलूकी यहां की जबान में कैसे आए? यह शोभा यदि रूह के दिल में आ जाए तो जीव के तभी टुकड़े-टुकड़े हो जाएं।

इन पागै में है दुगदुगी, बनी पागै में कलंगी।
ए जंग करे जोत जोत सों, ए बनायल हक दिल की।। ४३ ।।

दुगदुगी और कलंगी पाग में वैसे ही बनी है, जैसे श्री राजजी ने इनको चाहा। इनकी तरंगें आपस में टकराती हैं।

Nijanand App

कई जिनसें कई जुगतें, कई तरह भांत सलूकी ए।
कई रंग नंग तेज रोसनी, नूर छायो अंबर जिमी जे।।४४ ।।

इस पाग में कई तरह की जिनसें, कई तरह के जड़ाव तथा कई तरह की सलूकी (शोभा देती) है। जिनसे कई नगों के रंगों की रोशनी आकाश और जमीन पर छाई है।

जित चाहिए ठौर दुगदुगी, सब बनी पाग पर तित।
ठौर कलंगी के कलंगी, सिफत न जुबां पोहोंचत।।४५ ।।

पाग में जहां दुगदुगी चाहिए वहां दुगदुगी है। जहां कलंगी चाहिए वहां कलंगी है। जिसकी सिफत यहां की जबान से नहीं होती।

कई सुख सलूकी इन पाग में, मैं तो कहूं बिध एक।
दिल चाही रूह देखत, एक खिन में रूप अनेक।।४६ ।।

मैंने तो पाग की एक शोभा बताई है, जबकि पाग में कई तरह की बनावट की शोभा है। दिल की इच्छानुसार एक क्षण में अनेक रूप दिखाई देते हैं।

ना कछू खोली ना फेर बांधी, इन पागै में कई गुन।
पल पल में सुख दिल चाहे, नए नए देत रूहन।।४७ ।।

पाग को न खोलना पड़ता है न फिर बांधना पड़ता है। पाग में ही कई गुण हैं जो दिलचाहे सुख रूहों को नए-नए पल-पल देते हैं।

या विध के सुख देत हैं, वस्तर या भूखन।
सुख हक सरूप सिनगार के, किन विध कहूं मुख इन।।४८ ।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्र और आभूषण तथा सभी सिनगार इस तरह के सुख देते हैं, जिनका यहां के मुख से कैसे वर्णन करें?

तिलक नासिका नेत्र की, केस लवने कांन गाल।
मुख चौक देख नैन रूह के, रोम रोम छेदे ज्यों भाल।।४९ ।।

श्री राजजी महाराज का तिलक, नेत्र, नासिका, बाल, गाल, कान तथा पूरा मुखारबिन्द रूह के नैनों से देखने से रोम-रोम में तड़प पैदा होती है।

मुख सुन्दरता क्यों कहूं, नूरजमाल सूरत।
ए बयान दुनीमें क्यों करूं, ए जो आई अर्स न्यामत।।५० ।।

श्री राजजी महाराज के मुख की तथा स्वरूप की सुन्दरता कैसे कहूं? यह अखण्ड परमधाम की न्यामत आई है, इसलिए इसका वर्णन मैं दुनियां में कैसे करूं?

ए मुख देख सुख पाइए, उपजत है अति प्यार।
देख देख जो देखिए, तो रूह पावे करार।।५१ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिंद को देखकर बहुत प्यार और सुख मिलता है। देख-देखकर फिर देखें तो रूह को बड़ा आराम मिलता है।

Nijanand App

जो देखूं मुख सलूकी, तो चुभ रहे रूह माहें।
ए सुख मुख अर्सका, केहे ना सके जुबांए।।५२ ।।

मुख की सलूकी को जो देखूं तो रूह में चुभ जाती है। तो फिर परमधाम के श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के सुख को यहां की जबान नहीं कह सकती है।

गौर निलवट रंग उज्जल, जाऊं बल बल मुखारबिंद।
ए रस रंग छबि देखिए, काढ़त विरहा निकन्द।।५३ ।।

श्री राजजी महाराज के माथे का रंग उज्ज्वल है। ऐसे मुखारबिन्द की छवि देखकर मैं बलिहारी जाती हूं। श्री राजजी महाराज की यह मस्ती भरी छवि देखने से जुदाई समाप्त हो जाती है।

जो मुख सोभा देखिए, तो उपजत रूह आराम।
आठों पोहोर आसिक, एही मांगत है ताम।।५४ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा को देखें तो रूह को बड़ा आराम मिलता है। आशिक रूहों का आठों पहर ऐसी शोभा को देखना ही उनकी खुराक है।

जो गौर रंग देखिए, जुबां कहा कहे हक मान।
और कछू न देवे देखाई, आगूं अर्स सुभान।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरे रंग को देखें तो उनके गोरेपन को यहां की जबान से कैसे कहें। श्री राजजी महाराज के गोरेपन के आगे और कुछ दिखाई नहीं देता।

हंसत सोभित मुख हरवटी, अति सुन्दर सुखदाए।
हाए हाए रूह नजर यासों बांधके, क्यों टूक टूक होए न जाए।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुख की हरवटी हंसती हुई अति सुन्दर सुख देती है। हाय! हाय! मेरी नजर ऐसी शोभा को देखकर टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गई?

अति गौर सुन्दर हरवटी, और अतंत सोभा सलूक।
बड़ा अचरज ए देखिया, जीवरा सुनत न होए टूक टूक।।५७ ।।

हरवटी की सलूकी गोरी और सुन्दर है। यह बड़े अचम्भे की बात है कि जीव यह सुनकर टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

हरवटी अधुर बीच लांक जो, मुख अधुर दोऊ लाल।
ए लाली मुख देखे पीछे, हाए हाए लगत न हैड़े भाल।।५८ ।।

होंठ और हरवटी के बीच की गहराई तथा मुख और होंठों की लालिमा देखने के बाद हाय! हाय! दिल में भाले क्यों नहीं लगते?

सोभित हंसत हरवटी, बड़ी अचरज सलूकी मुख।
रूह देखे अन्तर आंखां खोलके, तो उपजे अर्स सुख।।५९ ।।

हरवटी के हंसने से मुखारबिन्द की सलूकी (की शोभा) बड़े आश्चर्य वाली हो जाती है। जब रूह अन्दर की नजर से देखे तो उसे अखण्ड परमधाम के सुख मिलते हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं गौर गालन की, सोभित अति सुन्दर।
जो देखूं नैना भरके, तो सुख उपजे रूह अन्दर।। ६० ।।

गालों का गोरापन और सुन्दरता कैसे कहूं? जो रूह नैन भरकर देखे तो उसके हृदय में अपार सुख हो।

क्यों कहूं गाल की सलूकी, क्यों कहूं गाल का रंग।
अनेक गुन गालन में, ज्यों जोत किरन रंग तरंग।। ६१ ।।

गाल की बनावट, गाल के रंग की सलूकी कैसे कहूं? गालों में अनेक गुण हैं जैसे किरणों के रंगों में अनेक तरंगें होती हैं।

बारीक सुख सरूप के, कोई जाने रूह मोमिन।
इस्क इलम जोस याही को, जाके होसी अर्स में तन।। ६२ ।।

परमधाम के श्री राजजी महाराज के स्वरूप के सुख बड़े खास हैं, बारीकी के हैं। इन्हें कोई रूह मोमिन ही जान पाता है, जिनके परमधाम में तन हैं और जिनको इश्क, इलम और जोश मिल गया है।

ए मुख अचरज अदभुत, गुन केते कहूं गालन।
ए रूहें जाने सुख बारीक, हर गुन अनेक रोसन।। ६३ ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द बड़ी विचित्र शोभा वाला है। इनके गालों के गुण कैसे कहूं? हर एक गुण में अनेक तरह की तरंगें हैं। इन खास बातों को रूहें ही जानती हैं।

रूह के नैना खोल के, देखूं दोऊ गाल।
आसिक को मासूक का, कोई भेद गया रंग लाल।। ६४ ।।

रूह की नजर खोलकर श्री राजजी महाराज के दोनों गालों को देखती हूं तो (आशिक रूहों को) माशूक श्री राजजी के गाल का लाल रंग चुभ जाता है (खा जाता है), गजब ढहा जाता है।

गाल रंग अति उज्जल, गेहेरा अति कसूंबाए।
मेहेबूब मुख देखे पीछे, रूह खिन न सहे अंतराए।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज के गालों का रंग उज्ज्वल और लाल है। उनके मुखारबिन्द को देखने के बाद रूहें एक क्षण की जुदाई सहन नहीं करतीं।

ए अंग अर्स सरूप के, क्यों होए बरनन जिमी इन।
ए अचरज अदभुत हकें किया, वास्ते अरवा अर्स के तन।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज के परमधाम के स्वरूप का यह वर्णन संसार में कैसे करें? यह तो परमधाम की रूहों के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने बड़ा अद्‌भुत आश्चर्य करा दिया जो मेरे तन से सिनगार का वर्णन करा दिया है।

महामत हुकमें केहेत हैं, हक बरनन किया नेक।
और भी कहूं हक हुकमें, अब होसी सब विवेक।। ६७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने श्री राजजी के हुकम से यह थोड़ा सा वर्णन किया है, और भी आगे हक के हुकम से वर्णन करती हूं।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ७०८ ।।

Nijanand App

हक मासूक के श्रवण अंग

श्रवन की किन विध कहूं, लेत आसिक इत आराम।
देख सुन सुख पावहीं, आसिक रूह इन ठाम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज़ के श्रवण अंग (कानों) की हकीकत कैसे कहूं, जहां आशिक रूहों को आराम मिलता है। कानों को देखकर अपनी बात सुनाकर आशिक रूहें सुख प्राप्त करती हैं।

कानन के गुन अनेक हैं, सुख आसिक बिना हिसाब।
आठों जाम इत पीवहीं, अर्स अरवाहें ए सराब।। २ ।।

श्री राजजी महाराज के कानों में अपार गुण हैं, जिससे आशिक रूहों को बेहिसाब सुख मिलता है। रूहें रात-दिन इन कानों के द्वारा ही परमधाम की इश्क की मस्ती प्राप्त करती हैं।

देख कोमलता कान की, नैनों सीतलता होए।
आसिक इन सरूप के, ए सुख जानें सोए।। ३ ।।

कानों की कोमलता देखकर नेत्र भी तृप्त हो जाते हैं। श्री राजजी महाराज के स्वरूप की आशिक जो रूहें हैं, वही इस सुख को जानती हैं।

मासूक का मुख सोभित, देख लवने केस कान।
पेहेचान वाले सुख पावहीं, देख अर्स अजीम सुभान।। ४ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के मुखारविन्द, गाल, बाल और कानों की शोभा देखने योग्य है। इस स्वरूप को पहचानने वाले ही श्री राजजी महाराज और परमधाम का सुख प्राप्त करते हैं।

कानों सुनें आसिक की, दिल दे गुझ मासूक।
कहे आधा सुकन इस्क का, आसिक होए जाए भूक भूक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ध्यान देकर अपने आशिकों की गुप्त बातें अपने कानों से सुनते हैं। श्री राजजी महाराज इश्क का आधा वचन भी कह देते हैं तो आशिक उन शब्दों पर फना हो जाते हैं।

मुख जुबां मासूक की, सो भी कानों के ताबीन।
रूह देखे गुन कानन के, जासों हक जुबां होत आधीन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की जबान भी कानों के अधीन है। रूहों ने श्री राजजी महाराज के कानों के गुण को देखकर ही यह अनुभव किया कि श्री राजजी महाराज की जबान कानों के अधीन है, अर्थात् जैसे सुनते हैं उसी अनुसार बोलते हैं।

हकें आसिक नाम धराइया, वाको भी अर्थ ए।
मासूक उलट आसिक हुआ, सो भी बल कानन के।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने आपको जो आशिक कहा है, उसका भाव कान की शक्ति के अनुसार है, जो माशूक की बजाय आशिक कहलाए।

Nijanand App

हक कहे मेरा नाम आसिक, सो भी सुनके गुझ मोमिन।
ए जानें अरवा अर्स की, कहूं केते कानों गुन।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मेरा नाम आशिक है। यह बात भी मोमिनों के अन्दर की बात सुनकर कहते हैं, इसलिए परमधाम की जो रूहें हैं, वह कानों के गुण को जानती हैं।

खावंद अर्स अजीम का, गुझ सुनत रात दिन।
ए जो अरवाहें अर्स की, कई सुख लेवें कानन।। ९ ।।

परमधाम के धनी रूहों के दिल की छिपी बातें रात-दिन सुनते हैं, इसलिए परमधाम की रूहें कानों से कई तरह के सुख लेती हैं।

हक आसिक हुआ याही वास्ते, सो रूहें क्यों न सुनें हक बात।
ए कौन जाने अर्स रूहों बिना, कान गुन अंग अख्यात।। १० ।।

इसी कारण श्री राजजी महाराज आशिक बने, तो फिर रूहें श्री राजजी की बात को क्यों नहीं सुनती हैं? कानों के इन छिपे गुणों को रूह के अतिरिक्त और कौन जानता है?

बोहोत बड़े गुन कानके, बिना आसिक न जाने कोए।
कई गुझ गुन श्रवनके, और कोई जाने जो दूसरा होए।। ११ ।।

कानों के गुण बहुत अधिक हैं। इन्हें आशिक रूहों के बिना और कोई नहीं जानता। इस तरह से कानों के कई छिपे गुण भी हैं, जिसे रूहों के अतिरिक्त कोई दूसरा हो तो जाने?

और देखो गुन कानन के, जब हक देत रूहों कान।
वाको ले अपने नजरमें, देखें सनकूल दृष्ट सुभान।। १२ ।।

कानों के और गुणों को देखो। जब श्री राजजी महाराज रूहों की बात को कानों से सुनते हैं तो उसे प्रसन्न स्वभाव से अपनी नजर में रख लेते हैं, जिसे देखकर रूहें भी प्रसन्न होती हैं।

सब सुख पावे रूह तिनसों, हुए नेत्र भी कानों तालूक।
सीतल दृष्टें देखत, ए जो मासूक मलूक।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र भी कानों से सम्बन्ध रखते हैं। रूहों को हर तरह के सुख इनसे मिलते हैं। ऊपर से माशूक श्री राजजी महाराज जब शीतल नजर से देखते हैं तो और सुख मिलता है।

ए सब बरकत कानों की, सो सुन सुन रूहकी बान।
दिल भी हक तहां देत हैं, मेहेर करत मेहेरबान।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के वचनों को सुनकर मेहर कर उनको अपना दिल देते हैं। यह सब बरकत कानों की है।

ए गुन सब कानन के, कई गुझ सुख रूह परवान।
रूहें कई सुख कानों लेत हैं, रेहेमत इन रेहेमान।। १५ ।।

कानों के गुणों से रूहें कई छिपे सुख भी प्राप्त करती हैं और मेहरबान श्री राजजी की मेहर से रूहें कानों के कई सुख लेती हैं।

Nijanand App

हक इस्क जो करत है, सो सब कानों की बरकत।
अनेक सुख हैं इनमें, सो जानें हक निसबत।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज इश्क करते हैं सब कानों की कृपा से, इसमें बेशुमार सुख हैं। वह परमधाम की अंगना ही जानती हैं।

आसिक जाए कहूं ना सके, छोड़ सुख हक श्रवन।
हिसाब नहीं गुन कानोंके, कोई सके न ए गुन गिन।। १७ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के कानों के सुख को छोड़कर कहीं और नहीं जा सकतीं। इस तरह से कानों में बेशुमार गुण हैं, जिन्हें कोई गिन नहीं सकता।

खोल देखो एक इस्क को, तो कई सुख अर्स अपार।
सो सुख लेसी कर बेवरा, जो होसी निसबती हुसियार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के एक इश्क के ही सुख को विचार कर देखो। तो परमधाम में इस तरह के बेशुमार सुख मिलेंगे। जो श्री राजजी महाराज की हुशियार अंगना होगी, वह इन सुखों का विवरण करके लेगी (वह श्री राजजी महाराज के किसी सुख को छोड़ेगी नहीं)।

दिल के सुख केते कहूं, जो हक दिल दरिया पूरन।
सब अंग ताबे दिल के, होसी अर्स में हिसाब इन।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज का दिल सागर के समान सुख से भरपूर है। उनके सुखों को कैसे कहूं? क्योंकि सभी अंग दिल के अधीन होते हैं। इन सुखों का हिसाब परमधाम में ही हो सकता है।

तो इन जुबां क्यों होवहीं, हक हादी सागर सुख।
ए बारीक सुख बीच अर्सके, होसी मूल मेलेके मुख।। २० ।।

श्री राजश्यामाजी के सुख सागर के समान हैं। यह खास अर्श के सुख हैं, जिनका इस जबान से वर्णन कैसे करें? इन खास सुखों की चर्चा जब परमधाम में मिलेंगे तो वहीं होगी।

जो अर्थ ऊपरका लेवहीं, सो सुख जानें एक हक श्रवन।
एक एक के कई अनेक, सो कई गुन मगज लेवें मोमिन।। २१ ।।

यदि ऊपर के अर्थ से देखें तो एक श्री राजजी महाराज के श्रवण ही इस सुख को जानते हैं। जिस एक-एक सुख में कई तरह के अनेक सुख हैं। उन सभी सुखों को मोमिन लेते हैं।

कई अंग ताबे कानके, कान अंग सिरदार।
कोई होसी रूह अर्सकी, सो जानेगी जाननहार।। २२ ।।

कान अंग-सिरदार (प्रमुख) है। इसके अधीन कई अंग हैं। जो परमधाम की रूह होगी वही इसको जान सकेगी।

इलम भी ताबे कानों के, जो इलम कह्या बेसक।
ए झूठी जिमिएं सेहेरग से नजीक, इन इलमे पाइए इत हक।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज का इलम भी कानों के अधीन है, जिसे संशय मिटाने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान कहा है। इस झूठी जमीन में सेहेरग से भी नजदीक श्री राजजी महाराज को इलम के द्वारा ही खेल में प्राप्त करते हैं।

Nijanand App

कई गुन हैं कानन के, जाके ताबे दिल खसम।
क्यों सिफत कहूं इन दिलकी, जिन दिल ताबे हुकम।। २४ ।।

कानों के बहुत गुण हैं। इनके अधीन श्री राजजी महाराज का दिल है। इस दिल की सिफत का कैसे बयान करूं, जिसके अधीन हुकम रहता है।

हुकम इलम ताबे कान के, मेहेर दिल ताबे इस्क के।
क्यों कहूं इनसे आगे वचन, कानों ताबे भए सागर ए।। २५ ।।

हुकम और इलम इस तरह दोनों कानों के अधीन हैं। इसी तरह से मेहर और दिल इश्क के अधीन हैं। इनसे आगे अब क्या कहूं? कानों के अधीन इलम और इश्क का सागर हो गया है।

निकस न सके आसिक, हक के एक अंग से।
तिन अंग ताबे कई सागर, अर्स रूहें पड़ी इनमें।। २६ ।।

आशिक रूह श्री राजजी महाराज के एक ही अंग से बाहर नहीं निकल सकती, फिर उस अंग के अधीन कई सागर होते हैं। परमधाम में रूहें इन सागरों में डूबी रहती हैं।

जो सागर कहे ताबे कान के, तिन सागरों ताबे कई सागर।
जो गुन देखूं हक एक अंग, याथें रूह निकसे क्यों कर।। २७ ।।

कानों के अधीन जिन सागरों का वर्णन किया है, उन सागरों के अधीन कई सागर हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के एक अंग के गुण को ही देख लें तो उससे रूह बाहर नहीं निकल सकती।

जो गुन मैं केहेती हों, हक अंग गुन अपार।
अर्स रूहें गिनें गुन अंग के, सो गुन आवे न कोई सुमार।। २८ ।।

यहां जो गुण की बात कही है, श्री राजजी महाराज के अंग में ऐसे बेशुमार गुण हैं। अर्श की रूहें श्री राजजी महाराज के अंग के गुणों को यदि गिनती हैं, तो गुण बेशुमार हैं।

सुनो मोमिनों एक ए गुन, एक अंग ऊपर के कान।
अंग अपार कहे कई बातून, अजूं जुदे भूखन सुभान।। २९ ।।

हे मोमिनो! अंग के ऊपर कान के एक गुण को सुनो। मैंने बातूनी में कई अंगों का वर्णन किया है और अलग-अलग आभूषणों का वर्णन किया है।

जैसी सोभा देखों साहेब की, तैसे कानों पेहेने भूखन।
आसमान जिमी के बीचमें, हो रही सबे रोसन।। ३० ।।

मैंने जैसी श्री राजजी की साहेबी देखी। तैसे ही कानों के आभूषण देखे। उन आभूषणों की रोशनी जमीन और आसमान में सब जगह फैल रही है।

एक अंगमें कई खूबियां, सो एक खूबी कही न जाए।
तिन खूबी में कई खूबियां, गिनती होए न ताए।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के एक ही अंग में कई खूबियां हैं। उनमें से एक ही खूबी का वर्णन कहने में नहीं आता, क्योंकि खूबी में भी कई खूबियां हैं, जिनकी गिनती नहीं होती।

Nijanand App

सो खूबियां भी अर्स की, जाके कायम सुख अखंड।
सो कायम सुख इत क्यों कहूं, ए जो जुबां इन पिंड।।३२।।

वह खूबियां भी परमधाम की हैं जिनके सुख अखण्ड हैं। वहां के अखण्ड सुख का इस शरीर की जबान से कैसे वर्णन करें?

क्यों बरनों अर्स अंगको, एक अंग में अनेक रंग।
जो देखों ताके एक रंग को, तिन रंग रंग कई तरंग।।३३।।

श्री राजजी महाराज के एक अंग का वर्णन कैसे करें, क्योंकि उस एक अंग में अनेक रंग है, फिर उनमें से एक रंग को देखती हूं तो एक रंग में कई तरंगें हैं।

सो एक तरंग ना केहे सकों, एक तरंगे कई किरन।
जो देखूं एक किरनको, तो पार ना पाऊं गुन गिन।।३४।।

जब एक तरंग का वर्णन नहीं कर सकती तो एक ही तरंग में कई किरणें हैं। जो एक किरण को देखती हूं तो गुण गिनना सम्भव नहीं रह जाता।

एह निमूना देत हों, सो रूहें जानें जो सिफत करत।
जथार्थ सब्द न पोहोंचहीं, तो जुबां पोहोंचे क्यों हक सिफत।।३५।।

मैंने यह नमूना रूहों के वास्ते बताया है। परमधाम की रूहें इनके गुणों को जानती हैं। वही सिफत करती हैं। यहां के शब्द सत का वर्णन करने के लिए नहीं मिलते, तो जबान से श्री राजजी महाराज की सिफत कैसे गाई जाए?

जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुन जीव गोते खाए।
दम ख्वाबी बानी वाहेदत की, सुनते ही उड़ जाए।।३६।।

जीवों ने जिस वाणी को कानों से नहीं सुना था तो उसे सुनकर जीव अब गोते लगा रहा है। वैसे अखण्ड परमधाम की वाणी को सुनते ही संसार का जीव तन छोड़ देता।

श्रवन गुन गंज क्यों कहूं, जाके ताबे हुए कई गंज।
इन गंजों गुन सुख सो जानहीं, जिन बका हक समझ।।३७।।

कानों के बेशुमार गुणों का कैसे वर्णन करूं जिनके अधीन कई गंजान गंज सुख हैं। जिन्हें अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान है, वही गंजान गंज सुखों को जानती हैं।

गुन एक अंग कह्यो न जावहीं, जो देखों दिल धर।
तो गंज अलेखे अपार के, सुख कहूं क्यों कर।।३८।।

दिल से विचार करके देखो तो अंग के गुणों का वर्णन नहीं कहा जाता, फिर बेशुमार गंजान गंज सुख भरे हों तो उनको किस तरह से कहें?

जब देखों गुन श्रवना, जानों कोई न इन सरभर।
सहूर करों एक गुन सुख, तो जाए निकस उमर।।३९।।

जब कानों के गुणों को देखती हूं तो लगता है इनके समान दूसरा कोई नहीं है। एक गुण के सुखों का विचार करती हूं तो उसी में संसार वाली सारी उम्र निकल जाती है।

Nijanand App

ताथें सुख और अंगोंके, सो भी लिए दिल चाहे।
ना तो श्रवन ताबे कई गंज हुए, ताको एक गुन दिल न समाए।। ४० ।।

इसलिए दूसरे अंगों के सुख भी मैंने अपने दिल की चाहना के अनुसार लिए, वरना कानों में ही गंजान गंज गुण और सुख भरे थे, जिसके एक गुण का सुख भी दिल में नहीं समाता।

ए सुख बिना हिसाब के, ए जानें मोमिन दिल अर्स।
ए रस जिन रूहों पिया, सोई जानें दिल अरस-परस।। ४१ ।।

जिन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं, वही इन बेशुमार सुखों को जानते हैं। इस रस को जिन्होंने पीया है, वही श्री राजजी महाराज के तथा अपने दिल के अरस-परस सुखों को जानती हैं।

जो देखी सारी कुदरत, सो भी इन श्रवनकी बरकत।
जो विचार करों इन तरफको, तो देखों सबमें एही सिफत।। ४२ ।।

इन कानों की कृपा से ही कुदरत का सारा माया का खेल देखा जब परमधाम की तरफ विचार करती हूं तो वहां के अंगों में यही सिफत दिखाई देती है।

जो सहूर कीजे हक सिफतें, तो ए तो हक बका श्रवन।
ए सुख क्यों आवें सुमार में, कछू लिया अर्स दिल मोमिन।। ४३ ।।

जो श्री राजजी महाराज की कृपा से विचार करके देखें तो यह श्री राजजी महाराज के अखण्ड श्रवण के सुख हैं। इन बेशुमार सुखों में से कुछ हिस्सा मोमिनों ने अपने अर्श दिल में लिया है।

जेता सहूर जो कीजिए, सब सिफतें सिफत बढ़त।
जो कदी आई बोए इस्क, तो मुख ना हरफ कढ़त।। ४४ ।।

जितना विचार करके देखें, सिफतें बढ़ती ही जाती हैं। यदि इश्क की खुशबू मिल गई तो फिर जबान से एक हरफ भी नहीं निकलता।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, क्यों कहे जाए गुन कानन।
जाके ताबे कई गंज सागर, ए सुख सेहे सकें अर्सके तन।। ४५ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी महाराज के हुकम से मोमिनों से कहती हैं कि श्री राजजी महाराज के कानों के गुणों को कैसे कहें? क्योंकि इन कानों के अधीन कई गंजान गंज सुखों के सागर भरे पड़े हैं, जिनको परमधाम के तन ही सहन कर सकते हैं।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५३ ॥

हक मासूक के नेत्र अंग

देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल।
अरवा होए जो अर्स की, सो जिन जाओ खिन भूल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे अर्श की रूहों! नूरजमाल श्री राजजी महाराज जो अपनी रूहों पर फिदा हैं, उनके नैनों को देखो। तुम इनको एक क्षण के लिए भी मत भूलो।

Nijanand App

दिल अर्स नाम धराए के, नैना बरनों नूरजमाल।
हाए हाए छेद न पड़े छाती मिने, रोम रोम लगे ना रूह भाल।। २ ।।

अपने दिल में श्री राजजी महाराज को बैठाकर उनके नैनों का वर्णन करती हूं। इस शोभा को वर्णन करते समय मेरी छाती में तथा रोम-रोम में भाले के समान चुभ कर टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाते।

जो अरवा कहावे अर्सकी, सुने बेसक हक बयान।
हाए हाए ए झूठी देहको छोड़के, पोहोंचत ना तित प्रान।। ३ ।।

जो अर्श की रूहें कहलाती हैं, वह श्री राजजी महाराज के अंगों का वर्णन सुनकर झूठी देह को छोड़कर श्री राजजी के चरणों में क्यों नहीं पहुंच जाती?

सिफत पाई हक नैन की, हक नैनों में गुन अपार।
सो गुन अखंड अर्स के, ए रंग हमेसा करार।। ४ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के नैनों की महिमा को देखा, उन नैनों में अपार गुण भरे हैं। गुण भी अखण्ड परमधाम के हैं जो हमेशा सुख देते हैं।

गुन नैनों के क्यों कहूं, रस भरे रंगीले।
मीठे लगें मरोरते, अति सुन्दर अलबेले।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों के गुण को कैसे बयान करूं? वह अत्यन्त रस भरे, रंगीले, सुन्दर तथा अलबेले हैं। जब तिरछी नजर से देखते हैं तो अति मीठे लगते हैं।

सोभावंत कई सुख लिए, तेजवंत तारे।
बंके नैन मरोरत मासूक, सब अंग भेदत अनियारे।। ६ ।।

नैनों के तारे अति तेज युक्त, सुखकारी, शोभा युक्त हैं। जब श्री राजजी महाराज तिरछी नजर से रूहों की तरफ देख लेते हैं तो रूहों के अंगों को तड़पा देते हैं।

मेहेर भरे मासूक के, सोहें नैन सुन्दर।
भृकुटी स्याम सोभा लिए, चुभ रेहेत रूह अंदर।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र मेहर से भरपूर अति सुन्दर हैं। उनकी भौंहें काली तथा अति सुन्दर हैं जो रूहों के दिल में चुभ रही हैं।

जोत धरत कई जुगतें, निहायत मान भरे।
लज्या लिए पल पांपण, आनंद सुख अगरे।। ८ ।।

नैनों में कई तरह की तरंगें उठती हैं, जो स्वाभिमान से भरपूर होती हैं। नैन अति शर्मीले हैं। उन पर सुन्दर पलकें हैं जो अति सुखदायी हैं।

नैनों की गति क्यों कहूं, गुनवंते गंभीर।
चंचल चपल ऐसे लगें, सालत सकल सरीर।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन जब चलते हैं तो गुणों से भरे अति गम्भीर दिखाई देते हैं। उनके अन्दर की चंचलता और चपलता रूहों के सारे शरीर को तड़पा देती है।

Nijanand App

नूर भरे नैना निरमल, प्रेम भरे प्यारे।
रस उपजावत रंगसों, मानों अति कामन-गारे।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के नूरी नैन अति निर्मल हैं जो प्रेम से भरे अति प्यारे हैं। वह तरह-तरह से आनन्द देते हैं। लगता है बहुत ही मनमोहक हैं तथा इश्क को जागृत कर देते हैं।

जब खैंचत भर कसीस, तब मुतलक डारत मार।
इन विध भेदत सब अंगों, मूल तन मिटत विकार।। ११ ।।

जब श्री राजजी महाराज कशिश (आकर्षण) वाली दृष्टि से देखते हैं, तो रूहें बिल्कुल तड़प उठती हैं। इस तरह उनके अंग-अंग के विकार मिट जाते हैं।

निपट बंकी छबि नैन की, नूरै के तारे कारे।
सोभें सेत लालक लिए, नूर जोत उजियारे।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों की छबि बड़ी बांकी है। अन्दर की काली पुतली का नूर बड़ा सुन्दर है। इन आंखों की सफेदी की लालिमा अति सुन्दर है। आंखों के नूर से सब जगह उजाला ही उजाला दिखता है।

बड़े लम्बे टेढ़क लिए, अति अनियां सोभे ऊपर।
सीतल करुना अमी झरे, मद रंग भरे सुन्दर।। १३ ।।

नैन लम्बे और तिरछाई की बनावट में हैं, जिनकी नोकें बड़ी सुन्दर शोभा देती हैं। नैनों में शीतलता, दयालुता का अमृत झरता है। मस्ती से भरे सुन्दर दिखाई देते हैं।

सोहत छैल छबीले, कहा कहूं सलूक।
एह नैन निरखे पीछे, हाए हाए जीव न होत भूक भूक।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज नैनों से छैल-छबीले लगते हैं, उनकी शोभा का क्या वर्णन करूं? इन नैनों को देखने के बाद हाय! हाय! यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

दयासिंध सुख सागर, इस्क गंज अपार।
सराब पिलावत नैन सों, साकी ए सिरदार।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज दया और सुखों के तो सागर ही हैं जो इश्क से भरपूर हैं। नैनों से श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को इश्क की शराब मस्त नजर से पिलाते हैं।

छब फब इन नैनों की, जो रूह देखे खोल नैन।
आठों पोहोर न निकसे, पावे आसिक अंग सुख चैन।। १६ ।।

यदि अर्श की रूह इन नैनों को अन्दर की नजर खोलकर देखे तो इनकी छवि रात-दिन उसके दिल से नहीं निकलेगी। आशिक रूहों को सुख और चैन इन्हीं नैनों से मिलता है।

प्रेम पुंज गंज गंभीर, नेत्र सदा सुखदाए।
जो रूह मिलावे नैन नैनसों, तो चोट फूट निकसे अंग ताए।। १७ ।।

नैन प्रेम से भरपूर गंभीरता लिए हुए सदा सुख के दाता हैं, जब रूह के नैन श्री राजजी के नैनों से मिल जाते हैं तो नजर की चोट रूह के अंग में लग जाती है।

Nijanand App

सीतल दृष्ट मासूक की, जासों होइए सनकूल।
होए आसिक इन सरूप की, पाव पल न सके भूल।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज की शीतल दृष्टि से रूहों को बहुत आनन्द मिलता है। जो रूह इस स्वरूप की आशिक हो वह कभी चौथाई पल के लिए भी श्री राजजी को भूल नहीं सकती।

नैन देखें नैन रूहके, तिनसों लेवे रंग रस।
तब आवें दिलमें मासूक, सो दिल मोमिन अरस-परस।। १९ ।।

रूह के नैन जब श्री राजजी महाराज के नैनों को देखते हैं तो उससे बहुत आनन्द मिलता है तब रूहों के माशूक श्री राजजी महाराज रूहों के दिल में समा जाते हैं। इस तरह से श्री राजजी के दिल में आने से रूह और श्री राजजी महाराज एक दिल में अरस-परस (परस्पर) एकाकार हो जाते हैं।

रूह देखे हक नैन को, नेत्र में गुन अनेक।
सो गुन गिनती में न आवहीं, और केहेने को नैन एक।। २० ।।

रूहें जब श्री राजजी महाराज के नैनों को देखती हैं तो नैनों में अनेक गुण दिखाई देते हैं। वह गुण गिने नहीं जाते। बेशुमार हैं। नैन कहने को तो एक ही हैं।

कई गुन देखे छब फबमें, कई गुन मांहें सलूक।
गुन गिनते इन नैनोके, हाए हाए अजूं न होए दिल भूक।। २१ ।।

नैनों के कारण श्री राजजी महाराज की छवि में कई गुण दिखाई देते हैं और इस तरह से कई गुण नैनों की सलूकी में हैं। नैनों के गुण गिनने में यह दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

मेरी रूह नैनकी पुतली, तिन नैन पुतली के नैन।
मासूक राखूं तिन बीचमें, तो पाऊं अर्स सुख चैन।। २२ ।।

मेरी रूह श्री राजजी महाराज रूपी आंख की पुतली है। इस पुतली के नैन श्री राजजी हैं इनको पुतलियों के अन्दर जहां नूर होता है वहां छुपाकर रखूं तो परमधाम के सब सुख मिल जाएंगे।

प्रेम प्रीत रस इस्क, सब नैनों में देखाई देत।
ए रस जानें रूहें अर्सकी, जो भर भर प्याले लेत।। २३ ।।

प्रेम, प्रीति, रस, इश्क सब नैनों में दिखाई देते हैं। इस रस को अर्श की रूहें ही जानती हैं, जो श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले भर-भरकर लेती हैं।

देख देख जो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक।
नैन देखे सुख पाइए, जानों सब अंगों इस्क।। २४ ।।

देख-देखकर फिर देखें तो शोभा अधिक से अधिक दिखाई देती है। फिर नैनों को देखने से और सुख मिलता है, लगता है कि श्री राजजी महाराज के सब अंगों में इश्क ही इश्क है।

ए नैन देख मासूक के, आसिक के सब अंग।
सुख सीतल यों चुभत, सब अंग बढ़त रस रंग।। २५ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के नैनों को देखकर आशिक रूहों के सभी अंगों में सुख और शीतलता चुभ जाती है और सब अंगों में आनन्द भर जाता है।

Nijanand App

कई गुन बड़े नैनके, और कई गुन नैन टेढ़ाए।
कई गुन तेज तारन में, कई गुन हैं चंचलाए।। २६ ।।

नैनों के बड़े होने में कई गुण हैं और तिरछे होने में कई गुण हैं। इस तरह से कई गुण नैनों की पुतलियों में हैं और कई गुण चंचलता में हैं।

कई गुन हैं तिरछाई में, कई गुन पांपण पल।
कई गुन सीतल कई मेहेरमें, कई तीखे गुन नेहेचल।। २७ ।।

नैनों की तिरछाई में कई गुण हैं और पल्कों के झपकने में कई गुण हैं। नैनों में शीतलता और मेहर के कई गुण हैं। कई अखण्ड गुण उनकी तिरछी चितवन में हैं।

कई गुन सोभा सुन्दर, कई गुन प्रेम इस्क।
कई गुन नैन रंग में, कई गुन नैन रस हक।। २८ ।।

नैनों की शोभा, सुन्दरता, प्रेम और इश्क तथा कई तरह के गुण हैं। उस तरह से नैनों के रंग में कई गुण हैं और रस में कई तरह के गुण हैं।

कई गुन नैनों के नूरमें, कई गुन नैनों के हेत।
कई गुन तीखे कई सीलमें, गुन मीठे कई सुख देत।। २९ ।।

कई गुण नैनों के नूर में हैं, कई गुण नैनों के प्यार में हैं। कई गुण तिरछेपन में हैं, कई गुण शीतलता में हैं। इस तरह से कई मीठे-मीठे गुणों से श्री राजजी महाराज रूहों को सुख देते हैं।

कई गुन केते कहूं, गुन को न आवे पार।
ए भूल देखो अपनी, ए सोभा गुन गिनूं माहें सुमार।। ३० ।।

नैनों के गुण कहां तक कहूं? गुण बेशुमार हैं। यह अपनी भूल है जो इस शोभा के गुणों को गिन रहे हैं।

कई गुन नेत्र सुभान के, सो क्यों कहूं चतुराई इन।
इत जुबां बल न पोहोंचहीं, हिस्सा कोटमा एक गुन।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों में कई गुण हैं। उनकी चतुराई कैसे कहूं? गुणों के करोड़वें हिस्से का वर्णन करने के लिए भी यहां की जबान में ताकत नहीं है।

प्यारे मेरे प्राण के, नैना सुख सागर सलोने।
रेहे ना सकों बिना रंगीले, जो कसूंबड़ी उजलक में।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं, जो सुख के सागर और सलोने हैं। ऐसे नैनों के बिना मैं नहीं रह सकती। नैनों की उज्ज्वलता में लालिमा की भी बड़ी शोभा है।

जब देखों सीतल नजरों, सब ठरत आसिक के अंग।
सब सुख उपजे अर्स में, हक मासूक के संग।। ३३ ।।

जब मैं अपनी शीतल नजर से श्री राजजी महाराज को देखती हूं तो मेरे एक-एक अंग को शान्ति प्राप्त होती है। फिर माशूक श्री राजजी महाराज के साथ परमधाम के सभी सुख मिलते हैं।

Nijanand App

मैं नैनों देखूं नैन हक के, हुई चारों पुतली तेज पुन्ज।
जब नैन मिलें नैन नैन में, नूरै नूर हुआ एक गन्ज।। ३४ ।।

जब मैं अपने दोनों नैनों से श्री राजजी महाराज के दोनों नैनों को देखती हूं तो हम दोनों की चार पुतलियों का तेज और बढ़ जाता है। जब श्री राजजी महाराज के नैनों से मेरे नैन मिलते हैं तो एक गंजान गंज (ढेर) नूर ही नूर दिखाई देता है।

हक देखें पुतली अपनी, मैं देखूं अपनी पुतलियां।
मैं हक देखूं हक देखें मुझे, यों दोऊ अरस-परस भैयां।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी पुतली से मुझे देखते हैं। मैं अपनी पुतलियों से श्री राजजी को देखती हूं। इस तरह से हम अरस-परस (परस्पर) देखकर एकाकार हो जाते हैं।

हक देखें मेरे नैन में, पुतली जो अपनी।
मैं अपनी देखूं हक नैन में, यों दोऊ जुगलें जुगल बनी।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज मेरे नैनों में अपने स्वरूप को देखते हैं और मैं अपने स्वरूप को श्री राजजी के नैनों में देखती हूं। इस तरह से दोनों मिलकर मेरे दो स्वरूप श्री राजजी की दो आंखों में और श्री राजजी के दो स्वरूप मेरी दो आंखों में बने हैं।

अति गौर पांपण नैन की, पल वालत देखत सरम।
गुन गरभित मेहेरें पाइए, रूह हुकमें देखे ए मरम।। ३७ ।।

नैनों की पलकें बड़ी गोरी हैं। उनके झपकने में लाज और शर्म दिखाई देती है। श्री राजजी महाराज की मेहर से सागर के समान गहरे गुणों के सुख मिलते हैं। यह सब भेद श्री राजजी महाराज के हुकम से ही समझ में आते हैं।

स्याम बंके भौंह नैनों पर, रंग गौर जुड़े दोऊ आए।
निपट तीखी अनियां नेत्र की, मारे आसिकों बान फिराए।। ३८ ।।

काले रंग की भौंहें गोरे रंग के नैनों पर आकर मिलती हैं। इनकी नोंकें बड़ी तीखी हैं, जिससे श्री राजजी महाराज अपने आशिक रूहों को नजर के बाण घुमाकर मारते हैं।

जब खैंचत नैना जोड़ के, तब दोऊ बान छाती छेदत।
अंग आसिक के फूट के, वार पार निकसत।। ३९ ।।

जब दोनों नैनों से दो नैन-बाण खींचकर मारते हैं, तो दोनों बाण रूहों की छाती को छेद देते हैं, तड़पा देते हैं और यही नैन बाण आशिक रूहों को घायल कर देते हैं।

दमानक ज्यों कहूं कहूं, यों पीछली देत गिराए।
ए चोट आसिक जानहीं, जो होए अर्स अरवाए।। ४० ।।

जैसे बन्दूक चलने पर पीछे धक्का मारकर गिरा देती है, इसी तरह से इन नैनों के बाण की चोट को अर्श की रूहें जानती हैं।

भौंह बंके नैन कमान ज्यों, भाल बंकी सामी तीन बल।
बान टेढ़े मारत खैंच मरोर के, छाती छेद न गया निकल।। ४१ ।।

भौंहे कमान की तरह टेढ़ी हैं। माथे में तीन तरह की टेढ़ाई सुन्दर दिखाई देती है। ऊपर से श्री राजजी महाराज नैन बाण खींचकर मारते हैं, तो रूहें एकदम तड़प उठती हैं।

Nijanand App

तीर कह्या तीन अंकुड़ा, छाती छेद न गया चल।
रह्या सीने बीच आसिक के, हुआ काढ़ना रूहों मुस्किल।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज का नैन बाण तीन कोने वाला रूहों को छेद देता है। वह आशिक रूहों की छाती में अटका रह जाता है, जिसे रूहों को छाती से निकालना बड़ा कठिन होता है।

केहेर कह्या तीर त्रगुड़ा, रही सीने बीच भाल।
रोई रात दिन आसिक, रोवते ही बदल्या हाल।। ४३ ।।

श्री राजजी की मेहर का नैन बाण आशिक के सीने में भाले के समान चुभकर कहर ढा गया। उस दर्द में रात-दिन रोते-रोते आशिक रूहों की हालत ही बदल गई, तो कहर से मेहर हो गई।

अर्स बका तीर त्रगुड़ा, रह्या अर्स रूहों हिरदे साल।
ना पांच तत्व तीर त्रिगुन, ए नैन बान नूरजमाल।। ४४ ।।

यह श्री राजजी का नैन बाण अखण्ड परमधाम का तीन कोना तीर रूहों के हृदय में दु:ख देता है। यह तीर न पांच तत्व का है, न तीन गुण का। यह नैन बाण नूरजमाल श्री राजजी महाराज के हैं।

ए बलवान सेहेज के, जो कदी मारें दिलमें ले।
न जानों तिन आसिक का, कौन हाल होवे ए।। ४५ ।।

यह उस बलवान श्री राजजी महाराज के सरल स्वभाव के नैन बाण की हकीकत है। यदि दिल में इश्क को लेकर नैन बाण चला दें तो न जाने आशिक रूहों का क्या हाल हो जाए?

ए बान टेढ़े अव्वल के, और टेढ़े लिए चढ़ाए।
खैंच टेढ़े मारें मरोर के, सो क्यों न आसिक टेढ़ाए।। ४६ ।।

यह श्री राजजी महाराज के तिरछे नैन बाण शुरू से ही हैं। जब तिरछे चितवन से नैन बाण मार देते हैं तो आशिक रूह की हालत खराब हो जाती है, बिगड़ जाती है, टेढ़ी हो जाती है।

कहे गुन महामत मोमिनों, नैना रस भरे मासूक के।
अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने श्री राजजी महाराज के रस भरे नैनों का वर्णन किया है। नैनों के अन्दर बेशुमार गुण भरे हैं। उनकी गिनती कैसे करूं?

|| प्रकरण || १४ || चौपाई || ८०० ||

हक मेहेबूब की नासिका

गौर निरमल नासिका, सोभा न आवे माहें सुमार।
आसिक जाने मासूक की, जो खुले होंए पट द्वार।। १ ।।

श्री राजजी महाराज की गोरी और निर्मल नासिका की शोभा कहने में नहीं आती। आशिक रूहें ही श्री राजजी महाराज की नासिका के सुख जानती हैं। यदि उन्हें जागृत बुद्धि से श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई हो।

Nijanand App

निपट सोभा है नासिका, सोहे तैसा ही तिलक।
और नहीं इनका निमूना, ए सरूप अर्स हक।।२ ।।

नासिका की शोभा जैसे बेशुमार है वैसे ही तिलक अति सुन्दर बना है, जिसका कोई नमूना नहीं है। यह श्री राजजी महाराज का स्वरूप परमधाम का है।

कई खसबोए अर्स की, लेवत है नासिका।
दोऊ नैनो के बीच में, सोभा क्यों कहूं सुन्दरता।।३ ।।

यह नासिका परमधाम की कई प्रकार की खुशबू लेती है। दोनों नैनों के बीच इसकी सुन्दरता का वर्णन कैसे करें?

रंग उजलाई अर्स की, झांई झलके कसूंब बका।
देत सलूकी कई सुख, रूह नैन को नासिका।।४ ।।

नासिका का रंग उज्ज्वल है। इसमें अखण्ड लाल रंग झलकता है। नासिका की बनावट रूहों के नैनों को कई प्रकार के सुख देती है।

ए छब फब कोई भांत की, निलाट तिलक बीच नैन।
ए आसिक नासिका देख के, पावत हैं सुख चैन।।५ ।।

यह छवि कोई खास ढंग की है, जिससे नैनों के बीच नासिका के ऊपर तिलक माथे (मस्तक) तक गया है। आशिक रूहें श्री राजजी महाराज की नासिका को देखकर बड़े सुख का अनुभव करती हैं।

भौंह भासत भली भांतसों, पांपण पलकों पर।
ए नैन सोभा नूर जहूर, ए जाने मोमिन अन्तर।।६ ।।

श्री राजजी महाराज की भौंहें अच्छी लगती हैं तथा पलकें बड़ी सुन्दर शोभायमान हैं, जो श्री राजजी महाराज के नैनों के नूर की शोभा है। नैन और नासिका के अन्तर को रूहें ही जानती हैं।

अर्स फूल सुगन्ध अनगिनती, हिसाब नहीं कहूं कोए।
रसांग चीज सब अर्स की, कोई जरा न बिना खुसबोए।।७ ।।

परमधाम के फूलों की सुगन्धि बेशुमार है। परमधाम की और सब चीजें भी सुगन्धित हैं। बिना खुशबू वहां कुछ भी नहीं है।

सो खुसबोए सब लेत है, रस प्रेमल सुगन्ध सार।
सब भोग विवेकें लेत है, हक नासिका भोगतार।।८ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका ऐसी सब तरह की खुशबू, रस का भोग करती है।

ए को जानें रस सबन के, को जाने भोग सबन।
ए सब भोगी हक नासिका, हक सुख लेत देत रूहन।।९ ।।

इन सब सुगन्धियों के रस और भोग को नासिका के बिना और कौन जानता है? इन सब सुगन्धियों का आनन्द श्री राजजी महाराज की नासिका ही लेती है और रूहों को देती है।

Nijanand App

चित्त चाह्या नासिका भूखन, खुसबोए लेत चित्त चाहे।
चित्त चाही जोत सोभा धरे, सुख आसिक अंग न समाए।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मन की चाहना अनुसार ही नासिका में आभूषण पहने हैं। नासिका से चित्त चाही सुगन्धि लेते हैं। नासिका का नूर भी श्री राजजी का चित्त चाहा है। इसका सुख आशिक रूहों के मन में नहीं समाता।

हक सुख खुसबोए के, कई नए नए भोग लेत।
ले ले हक विवेक सों, नए नए रूहों सुख देत।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज खुशबू के नए-नए सुख इच्छा अनुसार लेते हैं और ले-लेकर अपने विवेक से रूहों को देते हैं।

कई कई लाड़ रूहन के, लेत देत अरस-परस।
नित नए सुख देत सनेह सों, जानों नया दूजा लिया सरस।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज कई तरह से रूहों से अरस-परस (परस्पर) लाड़ करते हैं और नित्य ही नए-नए सुख बड़े प्यार से रूहों को देते हैं। हर सुख पहले सुख से अधिक रसीला लगता है।

नित लेत प्रेम सुख अर्स में, जानों आज लिया नया भोग।
यों हक देत जो हम को, नित नए प्रेम संजोग।। १३ ।।

हम रूहें नित्य ही ऐसे सुख परमधाम में लेती हैं। हर रोज ऐसा लगता है कि आज का सुख नया है। इस तरह से श्री राजजी महाराज हम रूहों को रोज ही नए प्रेम के सुख संजोकर देते हैं।

जिमी जल तेज वाए बन, जो कछू बीच आसमान।
सब खुसबोए नूर में, सुख देत रूहों सुभान।। १४ ।।

जमीन, जल, अग्नि, वायु, वन जो कुछ भी आसमान के नीचे हैं, सब परमधाम में खुशबू और नूर से भरपूर हैं, जिनके सुख श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं।

महामत कहे हक नासिका, याकी सोभा न आवे सुमार।
कछू बड़ी रूह मोमिन जानहीं, जाको निस दिन एही विचार।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की नासिका की शोभा बेशुमार है। इस शोभा को श्री श्यामाजी और रूहें ही जानती हैं, जो रात-दिन वहीं परमधाम में ही रहती हैं और इसके सुख लेती हैं।

|| प्रकरण || १५ || चौपाई || ८१५ ||

हक मासूक की जुबान की सिफत

जाको नामै रसना, होसी कैसी मीठी हक।
जिनकी जैसी बुजरकी, जुबां होत है तिन माफक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की रसना जिसका नाम ही रसना है, वह कितनी मीठी होगी? जैसी श्री राजजी की साहेबी है, वैसी ही उनकी रसना भी है।

Nijanand App

केहेनी में न आवहीं, विचार देखें मोमिन।
होए जाग्रत अरवा अर्स की, कछू सो देखे रसना रोसन।। २ ।।

हे मोमिनो! विचार करके देखो। श्री राजजी महाराज की रसना के गुण कहे नहीं जाते। यदि कोई अर्श की रूह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जागृत हो गई, तो वही इस रसना के रस को ले सकती है।

अति मीठी जुबां मासूक की, देत आसिक को सुख।
कछू अर्स सहूरें सुख लीजिए, पर कह्यो न जाए या मुख।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की जबान बहुत मीठी है जो आशिकों को बहुत सुख देती है, यदि जागृत बुद्धि के विचार से रसना के सुख लें तो भी इस जबान से वर्णन नहीं हो सकता।

ए याद किए हक रसना, आवत है इस्क।
जिन इस्कें अर्स देखिए, सुख पाइए हक मुतलक।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज की मीठी रसना के याद आते ही इश्क आ जाता है, जिस इश्क से परमधाम नजर में आता है और श्री राजजी महाराज के सुख निश्चित ही मिलते हैं।

और सुख हक दिल में, जाहेर होत रसनाए।
एह सिफत किन बिध कहूं, जो रेहेत हक मुख माहें।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के सुख, मीठी रसना से ही पता चलते हैं। ऐसी रसना के सुख कैसे कहूं जो श्री राजजी महाराज के मुख में रहती है।

बोहोत सुख हक तन में, जाहेर करें हक नैन।
सब पूरा सुख तब पाइए, जब कहे रसना मुख बैन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के तन में अखण्ड सुख भरपूर हैं जो उनके नैनों से पता चलता है, परन्तु पूरे सुखों का पता तो तब लगता है जब श्री राजजी अपनी रसना से बोलते हैं।

हर अंग सुख दें हक के, ऊपर जाहेर सुख जुबान।
बड़ा सुख रूहों होत है, जब हक मुख करें बयान।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज का हर एक अंग सुख देता है, परन्तु उस पर रसना के सुख सबसे बड़े हैं। जब श्री राजजी महाराज अपनी रसना से बोलते हैं तो रूहों को बहुत बड़ा सुख प्राप्त होता है।

ए बेवरा पाइए बीच खेल के, कम ज्यादा अर्स में नाहें।
समान अंग सब हक के, ए विचार नहीं अर्स माहें।। ८ ।।

परमधाम में कम ज्यादा होता नहीं है। किस अंग का सुख कम है किसका ज्यादा, यह तो खेल में ही पता चलता है। श्री राजजी महाराज के सभी अंग समान सुख देने वाले हैं। वहां कम ज्यादा का विचार ही नहीं है।

बोहोत बातें सुख अर्स के, सो पाइयत हैं इत।
सुख उमत को अर्स में, ए जानती न थीं निसबत।। ९ ।।

अर्श के सुखों की बहुत बातें हैं जिनकी लज्जत यहां खेल में मिलती है। परमधाम में रूहों को, जो श्री राजजी की अंगना हैं, इन सुखों की जानकारी नहीं थी।

Nijanand App

सुख जानें न हक पातसाही, सुख जानें न हक इस्क।
सुख जानें ना रूहें लाड़ के, तो इत इलम दिया बेसक।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की साहेबी और दूसरा वाहेदत के इश्क के सुख को रूहें नहीं जानती थीं और न श्री राजजी महाराज के लाड़ को ही रूहें जानती थीं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का बेशक ज्ञान दिया।

तो हक अंग सुख खेल में, बेवरा करत हुकम।
अजूं न आवे नजरों सरूप, ना तो क्यों वरनवाए खसम।। ११ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज के अंगों के सुख का इस खेल में उनके हुकम से विवरण दिया जा रहा है। अभी भी श्री राजजी महाराज के स्वरूप के दर्शन नहीं होते नहीं तो उनके अंगों के सुख वर्णन क्यों किए जाते?

हकें हम रूहों वास्ते, अनेक वचन कहे मुख।
सो रूहें जागे हक इस्क का, आपन लेसी अर्स में सुख।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मुखारबिन्द से हम रूहों के वास्ते अनेक वचन कहे हैं, इसलिए हम रूहें अब जागकर श्री राजजी महाराज के इश्क का सुख परमधाम में लेंगी।

सुख अनेक दिए हक रसनाएं, और सुख अलेखे अनेक।
सो जागे रूहें सब पावहीं, ताथें रसना सुख विसेक।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने बहुत सुख दिए हैं, फिर भी अनेक सुख बाकी हैं। परमधाम की रूहें उन सुखों को जागृत होने पर प्राप्त कर सकेंगी, इसलिए रसना के सुख सबसे विशेष बताए हैं।

हकें खेल देखाया याही वास्ते, सुख देखावने अपने अंग।
सुख लेसी बड़ा इस्क का, रूहें ले विरहा मिलसी संग।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज ने सुख के वास्ते ही अपनी अंगनाओं को यह खेल दिखाया है। रूहें श्री राजजी महाराज के विरह के बल पर धनी से मिलेंगी और इश्क का सुख लेंगी।

दायम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान।
याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान।। १५ ।।

रूहें अपनी जबान से सदा ही अपने इश्क को बड़ा कहती थीं। रूहों की रसना के बल को देखने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने रूहों को खेल दिखाया है।

एक हुकम जुबां के सब हुआ, तिन हुकमें चले कई हुकम।
सो जेता सब्द दुनीय में, ए सब हम वास्ते किया खसम।। १६ ।।

श्री राजजी की जबान के हुकम से ही यह सब कुछ हो गया। अब उनके हुकम के अधीन और कई हुकम काम कर रहे हैं। दुनियां में जो कुछ भी धर्मग्रंथ हैं, सब हम रूहों के वास्ते ही बनाये हैं।

हक जुबान की बुजरकी, किया खेल में बड़ा विस्तार।
सो सुख लेसी हम अर्स में, जिनको नहीं सुमार।। १७ ।।

श्री राजजी की रसना की साहेबी का ही खेल में बड़ा विस्तार है। अब इस खेल के सुख हम परमधाम में लेंगे, जो बेशुमार हैं।

Nijanand App

जेती चीज जरा कोई खेल में, सो हक हुकमें हलत चलत।
सो सुख दिए हक रसनाएं, हम केती करें सिफत।। १८ ।।

संसार में जो कुछ भी है वह श्री राजजी महाराज के हुकम से ही चल रहा है। यह सब खेल के सुख श्री राजजी की रसना से ही हमें मिले हैं। इनके सुखों की महिमा हम कहां तक बताएं?

कलाम अल्ला या हदीसें, सास्त्र पुरान या वेद।
ए सब सुख लेवे मोमिन, हक रसना के भेद।। १९ ।।

कुरान हो या हदीसें, शास्त्र-पुराण हो या वेद, इन सब ग्रन्थों से श्री राजजी महाराज की साहेबी के भेद के सुख मोमिन लेते हैं।

खेल किया याही वास्ते, हकें सुख दिए जुबान।
सो मेरी इन जुबान सों, क्यों कर होए बयान।। २० ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के वास्ते ही खेल बनाया और अपनी रसना के एक हुकम से उन्हें यह सुख दिए। अब मेरी जबान उन सुखों को कैसे वर्णन करे?

ए बयान होसी बीच अर्स के, हम रूहें मिल जासी जब।
हक जुबान का बेवरा, हम लेसी अर्स में तब।। २१ ।।

जब हम रूहें परमधाम में इकट्ठी होंगी तब इन सब बातों का पता चलेगा। तब हम श्री राजजी महाराज की रसना के विवरण की हकीकत को जान सकेंगी।

बड़े बयान बातें कई, जो हक जुबांएं दिए इत।
इत बेवरा कर जाए अर्स में, लेसी लज्जत बीच खिलवत।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने जो खेल में सुख दिए हैं, इनकी बड़ी-बड़ी बातों की लज्जत परमधाम में जागकर पीछे लेंगी।

ए बारीक सुख अर्स के, हक जुबांएं दई न्यामत।
और न कोई पावहीं, बिना हक निसबत।। २३ ।।

इन खास बातों के सुखों को, जो श्री राजजी महाराज की रसना ने ही हमें दिए हैं, बिना हम रूहों के इसे और कोई नहीं पा सकता।

हक रूहों को बुलाए के, नजीक बैठाई ले।
ए जाहेर करत है रसना, ए जो अन्तर का सनेह।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने हम रूहों को बुलाकर अपने पास बिठा लिया। यह श्री राजजी महाराज के अन्दर के इश्क को उनकी रसना बताती है।

मीठी जुबां बोलत मासूक, रूहें प्यारी आसिक सों।
ऐसा मीठा अर्स खावंद, जाके बोल चुभें हिरदे मों।। २५ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज अपनी मीठी रसना से अपने आशिक प्यारी रूहों से बोलते हैं। ऐसे रसीले श्री राजजी महाराज हमारे हैं, जिनके मीठे बोल हमारे दिल में चुभते हैं।

Nijanand App

प्यारी रसना सों अनेक, प्यारी बातें करें बनाए।
प्यारे प्यारी रूह बीच में, ए गुन जुबां किने न गिनाए।। २६ ।।

अपनी प्यारी रसना से श्री राजजी महाराज अपने प्यारे आशिक रूहों से प्यारी-प्यारी बातें करते हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज और रूहों की प्यारी बातों के गुण जबान से कहे नहीं जाते।

मीठी जुबां मीठे वचन, मीठा हक मीठा रूहों प्यार।
मीठी रूह पावे मीठे अर्स की, जो मीठा करे विचार।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के मीठे वचन अपनी रसीली मीठी जबान से रूहों को प्यार से देते हैं। परमधाम की रस भरी मीठी रूहें ही इस रस भरे परमधाम की मीठी बातों पर रसीला विचार करती हैं।

प्यारी खिलवत में प्यारी रसना, होत वचन कदीम।
सो इन जुबां प्यार क्यों कहूं, जो हक हादी रूहें हलीम।। २८ ।।

प्यारे मूल-मिलावे में रस भरी रसना से हमेशा से बातचीत होती है। इस जबान से उस मीठे प्यार का कैसे वर्णन करें जो श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के बीच गुझ मीठी बातों का है।

सब अंग जिनके इस्क के, तिनकी कैसी होसी जुबान।
अर्स रूहें जानें जाग्रत, जो रहें सदा कदमों सुभान।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग इश्क से भरे हैं तो फिर उनकी रसना कैसी प्यार भरी रसीली होगी? इसे परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जो सदा श्री राजजी के साथ रहती हैं।

मेरी रूह देखे सहूर कर, जाके नख सिख लग इस्क।
जुबां कैसी तिन होएसी, और बानी बका अर्स हक।। ३० ।।

हे मेरी रूह! तू विचार करके देख। जिन श्री राजजी महाराज का नख से शिख तक इश्क का ही तन है, उनकी जबान कैसी रसभरी होगी? अखण्ड परमधाम में उनकी वाणी कैसी होगी?

हक रसना बोले जो अर्स में, जिन किन को वचन।
सो सब कारन जानियो, वास्ते सुख रूहन।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम में जिस किसी से भी बातें करते हैं, वह सब रूहों को सुख देने के वास्ते ही बोलते हैं।

खेलावत हक बोलाए के, या पंखी या पसुअन।
सो सब रूहों वास्ते, सब को एह कारन।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के वास्ते ही पशु या पक्षियों को बुलाकर खेल खिलाते हैं। सब कुछ रूहों के वास्ते ही है।

खेलते बोलते नाचते, या देखें खेल लराए।
सो सब वास्ते रूहन के, कई विध खेल कराए।। ३३ ।।

पशु-पक्षी खेलकर, बोलकर, नाचकर या लड़कर कई खेल दिखाते हैं। यह सब रूहों के वास्ते होता है, जो तरह-तरह के खेल कराए जाते हैं।

Nijanand App

कहूं केती बातें हक रसना, निपट बड़ो विस्तार।
क्यों कहूं जो किए रूहोंसों, हक जुबां के प्यार।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के गुण कितने बताऊं? इसका बहुत बड़ा विस्तार है। श्री राजजी महाराज ने अपनी रसना से रूहों से कितना प्यार किया है, उसे कैसे बताऊं?

हक रसना गुन खेलमें, पाव हरफ को होए न सुमार।
तो जो गुन रसना अर्स में, ताको क्यों कर पाइए पार।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के गुण खेल में एक रंच मात्र भी नहीं बताए जा सकते, तो परमधाम में रसना के गुणों का कैसा पारावार होगा?

ए बेवरा जानें रूहें अर्सकी, जाको हुआ हक दीदार।
जाए सिफायत हुई महंमद की, याको जाने सोई विचार।। ३६ ।।

परमधाम की रूहें ही इस रसना के विवरण को जान सकती हैं, जिनको उनके दर्शन हुए हों। जिनकी सिफत रसूल साहब ने की है, वही मोमिन इसका विचार करेंगे।

हक रसना गुन जानें रूहें, जाको निस दिन एही ध्यान।
ए खेल कबूतर क्या जानहीं, हक रसना के बयान।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के गुण को रूहें ही जानती हैं, जो रात-दिन इसमें मग्न रहती हैं। यह संसार के क्षुद्र जीव श्री राजजी महाराज की रसना के गुणों को कैसे जान सकते हैं?

जो कछू बोले हक रसना, सो सब वास्ते रूहन।
और जरा हक दिलमें नहीं, ए जानें दिल अर्स मोमिन।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना जो कुछ बोलती है, वह सब रूहों के वास्ते है। रूहों के सिवाय श्री राजजी के दिल में कुछ नहीं है। यह रूहें ही जानती हैं, जिनके दिल को श्री राजजी ने अर्श किया है।

जो कछू बोलें हक जुबांन, सो सब रूहों के हेत।
अर्स बोल खेल या चलन, या जो कछू लेत देत।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज रसना से जो कुछ कहते हैं, वह सब रूहों के प्यार, स्नेह के वास्ते है। परमधाम में बोलना, चलना, खेलना, लेना और देना सब रूहों के वास्ते होता है।

हुकम कहावे मेरी रूह पे, जो हुई मुझमें बीतक।
सो कहूं अर्स रूहों को, जो दिए सुख रसना हक।। ४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज का हुकम ही मेरी बीतक मुझ से कहलवा रहा है। अब परमधाम की रूहों को श्री राजजी की रसना के सुख को बताती हूं।

हक रसना के सुख जो, आवे ना गिनती माहें।
कई सुख अलेखे अपार, क्यों कहे जांए जुबांए।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के सुख गिनती में नहीं आते। कई सुख अलेखे, बेशुमार हैं जो इस जबान से कहे नहीं जाते।

Nijanand App

मीठी मीठी माहें मीठी मीठी, रस रसीली रसना बान।
सुख सुखके माहें कई सुख, सुख क्यों कहूं रसना सुभान।।४२।।

श्री राजजी महाराज की मीठी रसना की मीठी-मीठी बातें अति रसीली हैं। इस तरह से श्री राजजी के सुख के अन्दर कई सुख हैं, श्री राजजी की रसना के सुख तो कहे ही नहीं जा सकते।

मोहे इलम दिया आए अपना, तासों प्यार दिया मुझको।
चौदे तबक कायम किए, केहेलाए मेरी रसना सों।।४३।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया। उससे अपना प्यार दिया (अपनी साहेबी मुझे दी)। मेरी जबान से कहलाकर चौदह लोकों को अखण्ड मुक्ति दिलवाई।

एक नुकते इलम अपने, दुनी बका कराई मुझसे।
तो गंज अंबार जो सागर, कैसे होसी हक दिलमें।।४४।।

केवल अपने तारतम ज्ञान के बिन्दु से दुनियां को मुझसे अखण्ड करवाया है तो श्री राजजी के दिल में कितने गंजान गंज सागर सुख के भरपूर होंगे।

जो कोई सब्द बीच दुनियां, सो उठे हुकम के जोर।
ए गुझ सुख हक रसना, कछू मोमिन जानें मरोर।।४५।।

दुनियां के अन्दर जितने भी धर्मग्रन्थ हैं, वह श्री राजजी की हुकम की शक्ति से बने हैं। श्री राजजी महाराज की रसना के छिपे सुख को मोमिन ही जानते हैं।

बका करी जो दुनियां, दिया सब को हक इलम।
सो इलम सिफत करे हमारी, हुकमें किया वास्ते हम।।४६।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के इलम को देकर सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान की। वही श्री राजजी का इलम हमारी सिफत कर रहा है। यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम से हमारे वास्ते ही हुआ है।

ए जो बका किए हम वास्ते, जाने कायम होए सिफत।
सिफत फना की ना रहे, ए हुकमें हम को दई न्यामत।।४७।।

यह दुनियां को जो अखण्ड किया वह भी हमारे ही वास्ते है, ताकि यह अखण्ड होकर मोमिनों के गुण गाती रहे। संसार के अन्दर तो महिमा नष्ट हो जाती है, पर हमारी महिमा हमेशा अखण्ड रहेगी। यह न्यामत हमको श्री राजजी ने दी है।

मेहेर करी हक रसनाएं, सो किन विध कहूं विस्तार।
बका सब्द जो उचरे, सो देने रूहों सुख अपार।।४८।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने जो रूहों पर मेहर की है, उसकी हकीकत कैसे बताऊं? श्री राजजी महाराज की रसना ने यह कुलजम सरूप की अखण्ड वाणी हमें दी। वह रूहों को अखण्ड सुख देने के वास्ते दी है।

Nijanand App

सब के हक हमको किए, हक रसनाएं बीच बका।
ए सुख इन मुख क्यों कहूं, जो दिया हादी रूहोंको भिस्तका।। ४९ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे जीवों को पहली बहिश्त में बिठाकर सारे दुनियां के जीवों का खुदा बना दिया। ऐसे श्री राजजी महाराज की रसना के इलम ने सबको अखण्ड मुक्ति दी। इस सुख का वर्णन अब यहां कैसे करें?

अर्स के सुख तो हमेसा, घट बढ़ इत नाहें।
पर ए नया सुख नई साहेबी, कायम कर दिया भिस्त माहें।। ५० ।।

परमधाम के सुख सदा अखण्ड हैं। वहां घट-बढ़ नहीं होती, पर यह नया सुख और नई साहेबी हम रूहों के वास्ते पहली बहिश्त में अखण्ड कर दी है।

अर्स सुख और भिस्तका सुख, ए खेल में दिए सुख दोए।
इन दोऊ में दिए सुख खेलके, ए हक रसना बिना क्यों होए।। ५१ ।।

परमधाम का सुख और पहली बहिश्त के सुख दोनों हमको श्री राजजी महाराज ने खेल में दिए। परमधाम में और पहली बहिश्त में, इन दोनों में खेल के सुख दिए। यह सब श्री राजजी महाराज की रसना के बिना कैसे हो सकता है?

दई भिस्त चौदे तबक को, सबों पूरा इस्क इलम।
सो सब सेवें हम को, सबों बल रसना खसम।। ५२ ।।

चौदह तबकों के लोगों को इश्क और इलम देकर बहिश्तों में कायमी दी। अब वह सब जीव हमारे जीवों को खुदा मानकर पूजा करेंगे। यह सब श्री राजजी महाराज की रसना का बल है।

पेहेले प्यार दिया मुझे इलम सों, सो मुझपे इलम दिवाए।
सब दुनियां को आरिफ कर, मुझ आगे सबपे कथाए।। ५३ ।।

पहले श्री राजजी महाराज ने प्यार करके मुझे अपना इल्म दिया, फिर दुनियां को मुझसे ज्ञान दिलवाया, सारी दुनियां को विद्वान बनाकर मुझे उनका उपदेशक बनाया।

ए सब हक रसनाएं किया, इलम प्यारा लग्या सबन।
सो इलमें आरिफ पूजें मोहे, असल अर्स में हमारे तन।। ५४ ।।

यह सब श्री राजजी महाराज की रसना के कारण ही सबको जागृत बुद्धि का इलम प्यारा लगा। अब वह पढ़े-लिखे ज्ञानी अगुए मेरी पूजा करेंगे जबकि असल तन तो परमधाम में हैं।

प्यार लग्या मोहे जिनसों, हकें बड़ा किया सोए।
सो सबपे केहेलाए हुकमें, सब विध सुख दिया मोहे।। ५५ ।।

जो मोमिन मुझे बड़े प्यारे थे, उनको श्री राजजी महाराज ने बड़ी शोभा दी। फिर श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से उन मोमिनों से मेरी महिमा गवाई और सब तरह से बड़ाई का सुख मुझे दिया।

ए सुध नहीं अजूं मोमिनों, जो सुख दिए हक रसनाएं।
हकें सुख दिए आप माफक, सो कह्या जाए न इन जुबांएं।। ५६ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी रसना से जो सुख दिए हैं, उनकी खबर मोमिनों को अभी तक नहीं है। श्री राजजी महाराज ने अपने समान ही सब मोमिनों को सुख दिया है, जो यहां की जबान से कहा नहीं जा सकता।

Nijanand App

कर कायम हक रसना रस, सचराचर दिए पोहोंचाए।
यों रसना के रस हम को, सुख कई विध दिए बनाए।।५७ ।।

श्री राजजी की रसना के रस, तारतम वाणी से चर-अचर जीवों को अखण्ड कर दिया। इस तरह से श्री राजजी महाराज की रसना ने हमें कई तरह के सुख दिए।

सबों इलम पढ़ाए आलम किए, जिनसों था मेरा प्यार।
सो सुख हक रसनाएं दिया, करके बका विस्तार।।५८ ।।

मैंने सब मोमिनों को जिनसे मुझे बहुत प्यार था, को जागृत बुद्धि के ज्ञान से विद्वान बनाया। श्री राजजी की रसना की वाणी से सब परमधाम का वर्णन हुआ।

ए कायम सुख हक तरफके, हक इलम इस्क हुकम।
सुख लाड़ लज्जत हुज्जत के, दिए कायम मेरे खसम।।५९ ।।

यह सब अखण्ड सुख श्री राजजी की रसना के इलम, इश्क और हुकम से मिले। अपनी निसबत होने से ही मेरे धनी ने रूहों को लाड़ लज्जत के अखण्ड सुख दिए।

सुध न हुती हक साहेबी, ना सुध इलम वाहेदत।
सुध ना हुज्जत निसबत, सो सुध दई जुबां खिलवत।।६० ।।

मुझे श्री राजजी महाराज की साहेबी की, इलम की, वाहेदत की और अंगना होने की सुध नहीं थी। वह सब खिलवतखाने की सुध श्री राजजी महाराज की रसना ने दी।

हक बका सुख कई विध, अर्स में नहीं सुमार।
बिन बूझे सुख हम लेते, हुते न खबरदार।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज के अखण्ड सुख परमधाम में कई तरह के (बेशुमार) हैं। हम बिना समझे ही इन सुखों को लेते रहे, क्योंकि हमें धनी के इश्क और साहेबी की जानकारी नहीं थी।

सो आठों भिस्त कायम कर, दिए अर्स पट खोल मारफत।
तिनमें पुजाए सुख दिए, कर जाहेर हक निसबत।।६२ ।।

अब श्री राजजी महाराज ने आठ बहिश्तें कायम कर दीं और परमधाम की पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान से करा दी। तब हमें अपनी अंगना बताकर दुनियां से हमारी पूजा कराकर सुख दिए।

हक रसना सुख दिए देत हैं, और सुख देंगे आगूं जे।
सो इतथें सब हम देखत, सुख केते कहूं रसना के।।६३ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना ने हमको अनेक प्रकार के सुख दिए हैं, दे रहे हैं और आगे देंगे। इन सुखों को हम खेल में बैठकर देख रहे हैं। ऐसे लाड़ले श्री राजजी महाराज की रसना के सुखों को कैसे कहूं?

हक रसनाएं ऐसी सुध दई, हुआ है होसी बका माहें।
यों खोली अंतर रूह नजर, ऐसी हुई ना रूहोंसों क्यांहें।।६४ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना से ऐसी जानकारी हो गई है कि परमधाम में जो कुछ हुआ है या आगे जो कुछ होगा, वह हमारी आतम की दृष्टि खोलकर जानकारी दी है। ऐसा सुख (जानकारी का) रूहों को कभी भी मिला नहीं था।

Nijanand App

कहूं केते सुख हक रसना, जैसे आप अलेखे अपार।
सो सब सुख बकामें रूहों, जाको होए न काहूं सुमार।। ६५ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज के सुख बेशुमार हैं वैसे ही उनकी रसना के सुख बेशुमार हैं। कैसे कहे जाएं? यह सभी अखण्ड सुख रूहों को श्री राजजी महाराज परमधाम में देते हैं, जो बेशुमार हैं।

ए नेक कह्या बीच खेल के, हक रसना के गुन।
ए सब बातें मिल करसी, आगूं हक बका वतन।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना के थोड़े से गुण हमने खेल में बताए हैं। यह सब सुखों की बातें, अखण्ड परमधाम में जब सब मिलेंगे, श्री राजजी के सामने होंगी।

सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमिन।
जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन।। ६७ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम मुझे प्यार से रसना के गुण बतलाता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की रसना के उन गुणों को सुनो और मोमिनों को सुनाओ।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ८८२ ॥

हक मासूकके वस्तर

देत निमूना बीच नासूत, जानों क्योंए आवे माहें दिल।
आगूं मेला बड़ा होएसी, लेसी मोमिन ए विध मिल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के वस्त्रों का नमूना मृत्युलोक में बैठकर बतला रही हूं, ताकि किसी तरह से रूहों के दिल में आ जाए। आगे जब सब सुन्दरसाथ इकट्ठे होंगे, तब इन सुखों को सब मोमिन मिलकर लेंगे।

एक देऊं निमूना दुनीका, जो पैदा दुनी में होत।
धागा होत है रूई का, और जवेरों जोत।। २ ।।

मैं दुनियां में जैसी चीजें पैदा होती हैं, वैसा नमूना बताती हूं। जैसे रुई का धागा और जवेरों से कपड़े बनाए जाते हैं।

धागा असल रूई तांतसा, जवेर जैसी जोत नंग।
हुकमें बनें ताके वस्तर, होए कैसा पेहेनावा अंग।। ३ ।।

रुई के पतले धागे से और नगों से जड़े जवेर की तरह परमधाम में श्री राजजी के वस्त्र आभूषण हुकम मात्र से बन जाते हैं। अब हुकम से बने वस्त्रों की शोभा कैसी होगी?

पैदा निमूना दुनी का, अर्स जिमिएं नहीं पोहोंचत।
दुनी निमूना हक को, ए कैसी निसबत।। ४ ।।

दुनियां में पैदा चीजों की उपमा परमधाम की चीजों को नहीं लगती। दुनियां की मिटने वाली चीजों की उपमा श्री राजजी महाराज के अखण्ड वस्त्रों को भला कहां दी जा सकती है?

Nijanand App

जामा कहूं मैं सूत का, के कहूं कपड़ा रेसम।
के कहूं हेम नंग जवेर का, के कहूं अव्वल पसम।।५।।

श्री राजजी महाराज का जामा सूत का बताऊं या रेशमी कपड़े का, या फिर सोने के नगों का या जवेरों का या कोमल पश्म का।

ए पांचों उत पोहोंचे नहीं, जो कर देखो सहूर।
क्यों पोहोंचे फना जड़ निमूना, ए हक बका चेतन नूर।।६।।

विचार करके देखो यह पांचों (सूत, रेशम, सोना, नग, जवाहरात) चीजें परमधाम को नहीं पहुंचती, क्योंकि यह सभी मिटने वाली और जड़ हैं। श्री राजजी महाराज के अखण्ड वस्त्र, आभूषण सब चेतन हैं और एक नूर तत्व के हैं।

जो कहूं बका जिमीय के, जवेर या वस्तर।
सो भी रूह के अंग को, सोभा कहिए क्यों कर।।७।।

अगर परमधाम की अखण्ड जमीन के जवेर या वस्त्रों की शोभा बताऊं तो यहां खेल में रूह के अंग को कैसे समझाएं?

जो चीज पैदा जिमी की, सो दूसरी कही जात।
चीज दूसरी वाहेदत में, कैसे कर समात।।८।।

दुनियां में जो चीजें पैदा होती हैं वह दूसरी कही जाती हैं, परन्तु परमधाम में जहां एकदिली है, दूसरी चीज की कैसी उपमा दें?

हक इलमें चुप कर न सकों, और सब्द में न आवे सिफत।
ताथें हुकम केहेत है, सुनो जामें की जुगत।।९।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के इलम से चुप भी नहीं रह सकती और शोभा को वर्णन करने के वास्ते यहां शब्द नहीं है, इसलिए अब जामे की शोभा हुकम से कहती हूं।

पर कछुक निमूने बिना, नजरों न आवे तफावत।
तो चुप से तो कछू कह्या भला, रूह कछू पावे लज्जत।।१०।।

क्योंकि नमूना बताए बिना दोनों के फर्क का पता नहीं चलेगा, इसलिए चुप रहने से कुछ कहना अच्छा है, क्योंकि कहने से परमधाम की रूहों को कुछ तो लाभ मिलेगा।

ए दिल में ले देखिए, अर्स धागा और नंग।
जोत न माए आकास में, जो सोभें पेहेने हक अंग।।११।।

परमधाम के धागा और नग को दिल से विचार करके देखो। जो वस्त्र श्री राजजी महाराज ने अपने अंग पर पहन रखे हैं, उनके धागे और नगों की जोत आकाश में नहीं समाती है।

वस्तर नहीं जो पेहेर उतारिए, ए हक अंग नूर रोसन।
दिल चाह्या रंग जोत पोत, अर्स अंग वस्तर भूखन।।१२।।

परमधाम के वस्त्र ऐसे नहीं हैं कि इन्हें पहना जाए और उतारा जाए। यह श्री राजजी महाराज के नूरी अंग की शोभा हैं। श्री राजजी महाराज की जैसी चाहना होती है वैसे ही वस्त्र और आभूषण की शोभा बदल जाती है।

Nijanand App

ए जो कही जुगत जामे की, हक अंग का रोसन।
और भांत सुख आसिकों, पेहेने तन वस्तर भूखन।। १३ ।।

यह जो जामे की हकीकत बताई है वह श्री राजजी महाराज के अंग की ही शोभा है। आशिक रूहों को इस तन पर पहने वस्त्र आभूषण कई प्रकार के सुख देते हैं।

नीला रंग इजार का, मिहीं चूड़ी घूंटी ऊपर।
तिन पर झलके दावन, हरी झांई आवत नजर।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की इजार का रंग नीला (हरा) है जिसमें घूंटी के ऊपर बारीक चुन्नटें शोभा देती हैं। इजार के ऊपर सफेद जामे का घेरा झलकता है। उसमें से इजार का रंग हरा दिखाई देता है।

रंग नंग बूटी कछुए, लगत नहीं हाथ को।
ए सुख बारीक अर्स के, इन अंग का नूर अर्स मों।। १५ ।।

इस इजार और जामे के नग और बूटियां हाथ के छूने से पता नहीं चलतीं। परमधाम के यह खास सुख हैं। इन अंगों का ही नूर परमधाम में फैला है।

जोत करे दिल चाहती, जैसी नरमाई अंग चाहे।
सोभा धरे दिल चाहती, जुबां खुसबोए कही न जाए।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज जैसा अपने अंगों में चाहते हैं, दिल के चाहे अनुसार अंग की शोभा बन जाती है। वैसी ही चाहना अनुसार उसकी किरणें फैलने लगती हैं। उनकी खुशबू तक का वर्णन यहां की जबान से करना सम्भव नहीं है।

चोली अंग को लग रही, सेत जामा अंग गौर।
चीन से कुसादी दावन, ताको क्योंकर कहूं जहूर।। १७ ।।

जामे की चोली अंग को चिपक कर लगी है (टाइट फिट है)। श्री राजजी महाराज का रंग गोरा है और सफेद जामे में से झलकता है। चोली से नीचे घेरे में खुली चुन्नटें हैं। उनकी शोभा का कैसे वर्णन करूं?

पेहेनावा अर्स अजीम का, क्यों कहिए माहें सुपन।
कंकरी एक अर्स की, उड़ावे चौदे भवन।। १८ ।।

परमधाम के पहनावे का वर्णन संसार में कैसे कहें। परमधाम की एक कंकरी के सामने चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड उड़ जाता है।

वस्तरों में कई रंग हैं, सो हाथ को लगत नाहें।
और भी हाथ लगें नहीं, जो जवेर वस्तरों माहें।। १९ ।।

परमधाम के वस्त्रों में कई नग और रंग हैं जो हाथ को नहीं लगते। वस्त्रों में जो जवेर जड़े हैं वह भी हाथ के छूने पर लगते नहीं है। वह वस्त्रों के ही रूप हैं।

रंग रेसम जवेर जो देखत, सो सब मसाला नंग।
वस्तर भूखन सब नंगों के, माहें अनेक देखावें रंग।। २० ।।

रंग, रेशम, जवेर और नग जो वस्त्र आभूषण में दिखाई देते हैं, उनमें अनेक तरह के रंगों की तरंगें दिखाई देती हैं।

Nijanand App

कई बेली किनार में, और कई विध बेली चींन।
बीच बूटी छापे कई नकस, इन जल की जाने जल मीन।। २१ ।।

जामे के किनारे पर कई तरह की बेलियां बनी हैं और कई तरह की बेलें चुन्नटों पर बनी हैं, जिनमें कई तरह की बूटियां, छापे और नक्शकारी है। इस सुख को परमधाम की रूहें ही जानती हैं।

रंग कंचन कमर कस्या, पटुका जो पूरन।
केते रंग इनमें कहूं, जानों एही सबे भूखन।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर में जो पटका बंधा है, उसका रंग सोने जैसा है। उसमें कितने रंगों का वर्णन करूं? लगता है यह सभी आभूषण पहने है।

सो रंग सारे जवेरन के, कई रंग छेड़े किनार।
हर धागे रंग कई विध, नहीं रंग जोत सुमार।। २३ ।।

पटके के किनारे पर जवेरों के रंग हैं। हर धागे में कई तरह के रंग हैं और उन रंगों का तेज बेशुमार है।

दोऊ बगलों केवड़े, किन विध कहूं रोसन।
कई रंग नंग माहें झलकत, जामा क्यों कहूं अर्स तन।। २४ ।।

जामे की दोनों बगलों में केवड़े जैसे फूल बने हैं। उनकी शोभा का कैसे वर्णन करूं? उन केवड़े के फूलों में कई तरह के रंग और नगों की झाईं झलकती है। ऐसे परमधाम के तन के ऊपर पहने जामे की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

ए सोभा देख सुख उपजे, हक वस्तर या भूखन।
और इनकी मैं क्यों कहूं, जो रेहेत ऊपर इन तन।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्रों या आभूषणों को देखकर बेहद सुख पल-पल होता है और जो श्री राजजी महाराज के तन के ऊपर दिखाई देते हैं उनकी शोभा का वर्णन कैसे करूं?

गिरवान दोऊ देखत, अति सुन्दर अनूपम।
मुख आगे मासूक के, निरखत अंग आतम।। २६ ।।

जामे के दोनों बंध बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं। जो बंध श्री राजजी महाराज के मुख के आगे छाती पर हैं उन्हें देखकर आत्मा तृप्त होती है।

बातें करें सलोनियां, मासूक सलोंने मुख।
नैन सलोंने रस भरे, कई देत आसिकों सुख।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज बड़े सलोने मुख से बड़ी रस भरी बातें करते हैं। उनके नैन बड़े सुन्दर मस्ती से भरे आशिक रूहों को सुख देते हैं।

दोऊ बेल दोऊ बगलों पर, जानों कुन्दन नंग जड़तर।
नीले पीले लाल जवेर, सुख पाऊं देत नजर।। २८ ।।

दोनों बगलों के ऊपर दो सुन्दर बेलें ऐसे दिखाई देती हैं जैसे सोने में नग जड़े हों। नीले, पीले और लाल जवेरों को देखकर मैं बहुत प्रसन्न होती हूं।

Nijanand App

दोऊ बांहें चूड़ी अति सुन्दर, मिहीं मिहीं से लग मोहोरी।
कई रंग नंग चूड़ियों, जवेर जवेर बीच जरी।। २९ ।।

जामे की दोनों बाहों में बारीक से बारीक अति सुन्दर चुन्नटें किनारे तक दिखाई देती हैं। इन चुन्नटों के बीच-बीच में कई तरह के नगों और रंगों की जरी जड़ी है।

मोहोरी जड़ाव फूल बने, जानों के एही नंग भूखन।
बेल जामें जो जुगतें, सबथें सोभा अति घन।। ३० ।।

मोहरी के ऊपर जवेरों के सुन्दर फूल बने हैं, लगता है वही नग आभूषणों के हैं। जामे की बेल की जुगत सबसे अधिक शोभायमान है।

किन विध जामा लग रह्या, ए जो अंग का जहूर।
कई नकस बूटी मिहीं बेलियां, रूह कर देखे अर्स सहूर।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज का जामा इस तरह तन पर फिट बैठा है कि वह श्री राजजी महाराज के तन की शोभा है। जिसमें कई तरह की नक्शकारी, बूटियां और बारीक बेलें हैं, जिन्हें परमधाम की रूहें विचार करके देखती हैं।

पार न जामें सलूकी, ना कछू नरमाई पार।
इन मुख गुन केते कहूं, खूबी तेज न सुगंध सुमार।। ३२ ।।

जामे की सुन्दर बनावट और नरमाई बेशुमार है। उसकी खूबी, सुगंधि और तेज बेशुमार है। यहां के मुख से उस जामे के गुणों का कैसे बयान करूं?

इन ऊपर जो भूखन, नेक इनकी कहूं विगत।
क्यों नूर कहूं अर्स अंग का, पर तो भी कहूं नेक मत।। ३३ ।।

इस जामे के ऊपर जो आभूषण हैं, उनकी थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। श्री राजजी महाराज के अंग के नूर की शोभा कैसे कहूं, परन्तु फिर भी अपनी बुद्धि से थोड़ा-सा वर्णन करती हूं।

धागे बराबर नकस, झीने बारीक अतंत।
ए फूल बेल तो आवें नजरों, जो अंग अंग खुलें वाहेदत।। ३४ ।।

धागे के बराबर पतली बारीक नक्शकारी है। यह फूल और बेल तब दिखाई पड़ें जब श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा अलग दिखाई पड़े।

ए नकस सो जानहीं, नैनों देखें जो होए निसबत।
ए देखें याद आवहीं, पेहेले बातें हुई खिलवत।। ३५ ।।

इन नक्शकारियों को वही जानते हैं, जिन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज को नैनों से देखा है। यह देखने के बाद ही मूल-मिलावे की बातें याद आती हैं।

हक पाग जो निरखते, होए अचरज माहें सहूर।
ए याद किए क्यों जीव ना उड़े, देख नूरजमाल मुख नूर।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज की पाग हम जब देखते हैं तो विचार करने से बड़ी हैरानी होती है। ऐसे श्री राजजी महाराज के मुख के नूर को देखकर तथा खिलवत की बातें यादकर यह जीव क्यों नहीं उड़ जाता?

Nijanand App

हुकमें पाव पल में, पाग कई कोट होत।
रंग नंग फूल कई नकस, दिल चाही धरे जोत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के एक चौथाई पलक में करोड़ों तरह की पाग बन जाती हैं। इस तरह से कई तरह के नग, रंग, फूल और नक्शकारी दिल की चाहना अनुसार शोभा देने लगती है।

हक पाग बनावें हाथ अपने, अर्स खावंद दिल दे।
ए देखें रूह सुख पावत, जब हाथ गौर पेच ले।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज अपने हाथ से दिल की चाहना के अनुसार पाग बांधते हैं। जब अपने गोरे हाथों से पाग के लपेट लगाते हैं, तो उसे देखकर रूह को बहुत सुख होता है।

आसिक चाहे मैं देखों, हक यों पेच लेत हाथ माहें।
कई विध फेरें पेच को, कोई इन सुख निमूना नाहें।। ३९ ।।

आशिक रूह चाहती है कि श्री राजजी महाराज कैसे अपने हाथ से पाग की लपेट लगाते हैं, उसे मैं देखूं। यह कई तरह से पाग के लपेटों को फेरते हैं, जिस सुख का बयान करने के लिए कोई नमूना नहीं है।

जो रंग चाहिए जिन मिसलें, सो नंग धरत तित जोत।
फूल नकस कटाव कई, ए कछू अचरज पाग उद्दोत।। ४० ।।

जो रंग जिस तरह का जहां चाहिए, उसी तरह के नग की जोत वहां दिखाई देने लगती है। कई तरह के फूल, नक्शकारी और कटाव से पाग में बड़ी विचित्र शोभा लगती है।

मध्य चौक जित चाहिए, ऊपर चाहिए चौकड़ी जित।
बेल पात सब रंग नंग, सोई बनी पाग जुगत।। ४१ ।।

पाग के अन्दर जहां चौक और चौकड़ी चाहिए, वहां वैसी ही शोभा दिखाई देती है। उनमें बेल, पत्ते सब तरह के नगों के रंगों की शोभा बड़ी युक्ति से पाग में बनी दिखाई देती है।

ताथें हक लेत पेच हाथ में, कोमल अंगुरियों।
गौर अंगुरियां पतली, मीठा सोभें मुंदरियों।। ४२ ।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज अपनी कोमल उंगलियों से जब पाग के लपेट देते हैं, तो उन गोरी पतली उंगलियों में सुन्दर मुंदरी (वीटी) झलकती है।

पोहोंचे देखूं के अंगुरी, नरमाई देखूं के गौर।
मुंदरी देखूं के हथेलियां, लीकें देखूं के नख नूर।। ४३ ।।

पाग बांधते समय मैं पोहोंचे को देखूं या उंगली की नरमाई या गोरे रंग को देखूं? मुंदरी देखूं या हाथ की हथेलियों की बारीक रेखाओं को देखूं या नख के नूर को देखूं?

चलवन करते हाथ की, नैनों देखत सब सलूक।
यों देखत मासूक को, अजूं होत न आसिक टूक।। ४४ ।।

जब श्री राजजी महाराज हाथ चलाते हैं तो नैनों से सब सलूकी नजर आती है। इस तरह से श्री राजजी महाराज की शोभा को देखकर आशिक रूहों के अंग क्यों टुकड़े-टुकड़े नहीं होते?

Nijanand App

महामत निमूना ख्वाब का, क्यों दीजे हक वस्तर।
हक नूर न आवे सब्द में, पर रह्या न जाए क्योंए कर।। ४५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के वस्त्रों की उपमा संसार में कैसे दी जाए? श्री राजजी महाराज के नूर का वर्णन शब्दातीत है, पर बिना वर्णन किए भी कैसे रहें।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ९२७ ।।

हक मेहेबूब के भूखन

भूखन सब्दातीत के, क्यों इत बरनन होए।
सोभा अर्स सरूप की, इत कबहूं न बोल्या कोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के आभूषणों का वर्णन शब्दातीत है। उनकी शोभा का वर्णन यहां कैसे करूं? परमधाम के पारब्रह्म के स्वरूप की शोभा का वर्णन यहां आज दिन तक किसी ने नहीं किया।

तो क्यों माने बीच दुनियां, ए जो हक जात भूखन।
रैन अंधेरी क्यों रहे, जब जाहेर हुआ बका दिन।। २ ।।

दुनियां वाले श्री राजजी महाराज के आभूषणों की हकीकत को क्यों मानते? अब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अज्ञान की अंधेरी रात मिटकर अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है।

अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब।
जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगूं से सब।। ३ ।।

परमधाम के नगों में अनेक तरह के गुण हैं। जिस समय जिसके दिल में जैसी इच्छा होती है, यह पहले से ही रूप बदले नजर आते हैं।

जेती अरवाहें अर्स में, ताए मन चाह्या सब होए।
दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए।। ४ ।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं, उनकी सब इच्छाएं मन के चाहे अनुसार पूरी हो जाती हैं। दिल में इच्छा पीछे होती है, काम पहले हो जाता है।

जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत।
गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाह्या लगत।। ५ ।।

मन को जैसा अच्छा लगता है, आभूषण वैसे ही स्वरों से बोलते हैं। अंग को गर्म और ठंडा चित्त के चाहे अनुसार लगते हैं।

हक बरनन करत हों, कहूं नया किया सिनगार।
ए सब्द पोहोंचे नहीं, आवत न माहें सुमार।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन करती हूं तो कहना पड़ता है, सिनगार नया है। उस नए सिनगार को वर्णन करने के लिए यहां के शब्द नहीं पहुंचते, क्योंकि उसकी भी शोभा बेशुमार है।

Nijanand App

वस्तर और भूखन, ए हक अंग का नूर।
सो निमख न जुदा होवहीं, ज्यों सूरज संग जहूर।। ७ ।।

वस्त्र और आभूषण यह सब श्री राजजी के अंग के नूर की ही शोभा हैं। जैसे सूर्य और सूर्य की किरणें अलग नहीं होतीं, उसी प्रकार वस्त्र और आभूषण एक क्षण भी अंगों से अलग नहीं होते।

इन जिमी आसिक क्यों रहे, बिना किए अपनों आहार।
खाना पीना एही आसिकों, अर्स रूहों एही आधार।। ८ ।।

संसार में आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के दीदार जो उनका आहार है, के बिना कैसे रह सकती हैं? अर्श की आशिक रूहों का खाना-पीना दीदार ही है।

सोई कलंगी सोई दुगदुगी, सोभे पाग ऊपर।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत भरी जिमी अंबर।। ९ ।।

पाग के ऊपर वही कलंगी, वही दुगदुगी शोभा देती है, जिसकी किरणें जमीन से आकाश तक फैली हैं। यहां की जबान से तो इतना ही कहा जा सकता है।

कई विध के सुख जोत में, और कई सुख सुन्दरता।
कई सुख तरह सलूकियां, सिफत पोहोंचे न हक बका।। १० ।।

पाग के ऊपर दुगदुगी और कलंगी की जोत में कई तरह के सुख, सुन्दरता और सलूकी है। उस अखण्ड की शोभा का वर्णन करना यहां सम्भव नहीं है।

मोतिन की जोत क्यों कहूं, इन जुबां के बल।
सोभा लेत दोऊ श्रवनों, अति सुन्दर निरमल।। ११ ।।

यहां की जबान के बल से परमधाम के मोतियों के तेज का वर्णन कैसे करूं? जो सबसे अधिक सुन्दर और निर्मल हैं और दोनों कानों में शोभा देते हैं।

मोती जोत अचरज, और अति उत्तम दोऊ लाल।
जो रूह देखे नैन भर, तो अलबत बदले हाल।। १२ ।।

ऐसी हैरान करने वाली जोत से भी उत्तम दो लाल हैं, जिनको आत्मा देख-देखकर अपनी हालत बदल डालती है और मगन हो जाती है।

कहे जुबां जोत आकास लों, जोतें सोभा कई करोर।
सो बोल न सके जुबां बेवरा, इन अकल के जोर।। १३ ।।

यहां की जबान से तो कहते हैं कि जोत आकाश तक फैली है, परन्तु जोत में करोड़ों प्रकार की शोभा है, जो यहां की अक्ल और जबान से कही नहीं जा सकती।

ए तो मोती लाल कुन्दन, वाहेदत खावंद श्रवन।
आकास जिमी भरे जोत सों, तो कहा अचरज है इन।। १४ ।।

रूहों के धनी श्री राजजी महाराज के कानों में लाल और मोती के नग सोने में जड़े दिखाई देते हैं। जिनकी किरणों की जोत आकाश और जमीन में भरी है, तो इसमें हैरानी की क्या बात है?

Nijanand App

चोली अंग सों लग रही, ज्यों अंग नूर जहूर।
ए लज्जत दिल तो आवहीं, जो होवे अर्स सहूर।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज के जामे की चोली अंग पर टाइट फिट है और ऐसी लगती है जैसे वह अंग की ही शोभा है। यदि परमधाम की जागृत बुद्धि हो तो इसका स्वाद दिल को आ सकता है।

एक देख्या हार हीरन का, कई कोट सूरज उजास।
इन उजास तेज बड़ा फरक, ए सुख सीतल जोत मिठास।। १६ ।।

मैंने एक हीरे का हार श्री राजजी के गले में पहने देखा, जिसका करोड़ों सूर्यों के समान उजाला है, परन्तु उजाले में भी बड़ा फर्क हैं। हीरों का उजाला शीतल और सुखदायी है।

हार दूजा मानिक का, जानों उनथें अति सोभाए।
जब लालक इनकी देखिए, जानों और सबे ढंपाए।। १७ ।।

दूसरा हार मानिक का है जो उससे अधिक शोभायमान है। जब इसकी ललिमा को देखते हैं तो सब रंग ढक जाते हैं।

तीसरा हार अंग देखिया, अति उज्जल जोत मोतिन।
जानों सबथें ऊपर, एही है रोसन।। १८ ।।

गले में तीसरा हार उज्ज्वल मोतियों के नग का शोभा देता है, लगता है सबसे अधिक रोशनी इसी की है।

जब हार चौथा देखिए, जानों नीलक अति उजास।
जानों के सरस सबन थें, ए देत खुसाली खास।। १९ ।।

जब चौथा हार नीलम का देखती हूं तो उसकी नीलिमा और भी अधिक है, लगता है यही सबसे प्यारा और सुखदायी है।

हार लसनियां पांचमा, कछू ए सुख सोभा और।
जानों जोत जिमी आकास में, भराए रही सब ठौर।। २० ।।

पांचवां हार लसनियां का है। इसकी शोभा कुछ और ही है, लगता है आसमान और जमीन में सब जगह इसी का तेज फैला है।

जब नंग देखूं नीलवी, जानों एही सुख सागर।
जोत मीठी रंग सुन्दर, जानों के सब ऊपर।। २१ ।।

जब नीलवी के नग की तरफ देखती हूं तो लगता है सबसे बड़ा सुख का सागर यही है। जिसके तेज की किरणों का रंग बड़ा सुन्दर और मीठा लगता है और शोभा अधिक दिखाई देती है।

हारों बीच जो दुगदुगी, माहें नव रतन।
नव जोत नव रंग की, जानों सब ऊपर ए भूखन।। २२ ।।

हारों के बीच में जो दुगदुगी हैं, उनमें नौ-नौ रत्न जुड़े हैं। नौ रंगों की किरणें उठती हैं, जिससे लगता है कि दुगदुगी सबसे अधिक शोभादायक हैं।

Nijanand App

ए जोत सब जुदी जुदी, देखिए माहें आसमान।
सब जोत जोत सों लड़त हैं, कोई सके न काहू भान।। २३ ।।

रंगों के तेज को जब आसमान में देखें तो अलग-अलग दिखती हैं। जहां उनकी किरणें आपस में टकराती हैं पर किसी का तेज कम नहीं होता।

भूखन सामी न देखिए, जो देख्या चाहे जंग।
पेहेले देखिए आकास को, तो जुध करें नंग सों नंग।। २४ ।।

यदि किरणों की टकराहट देखनी हो तो आभूषणों की तरफ मत देखो। पहले आकाश में देखो, जहां हर नग की किरणें आपस में टकराती हैं।

जो कदी पेहेले हार देखिए, तो वाही नजर भरे जोत।
या बिन कछू न देखिए, सबमें एही उद्दोत।। २५ ।।

यदि पहले हार को देख लें तो नजर में वही रंग समा जाता है, फिर उसके बिना और कुछ नहीं दिखाई देता। उसी का ही तेज सबमें झलकता है।

नेक कहूं बाजू बन्ध की, जोत न जामें सुमार।
तो जो नंग बाजू बन्ध के, सो क्यों आवें माहें विचार।। २६ ।।

बाजूबन्ध की हकीकत अब थोड़ी सी बताती हूं, जिनकी जोत बेशुमार है। बाजूबन्ध के जो नग हैं उनका वर्णन कैसे करूं?

नंग पटली दस रंग की, माहें कई विध के नकस।
ए सलूकी बेल बूटियां, एक दूजे पे सरस।। २७ ।।

बाजूबन्ध के पटलियों में दस-दस नग हैं और कई तरह की नक्शकारी है, जिनकी बेल बूटियों की बनावट एक दूसरे से अच्छी लगती है।

लटके बाजू बन्ध फुन्दन, झलकत झाबे अपार।
कई नंग रंग एक झाबे में, सो एक एक बाजू चार चार।। २८ ।।

बाजूबन्ध के फुन्दन लटकते हैं, जिनके झाबे बेशुमार शोभा दे रहे हैं। झाबों के एक-एक नग के कई-कई रंग दिखाई देते हैं। इस तरह से एक-एक बाजू में चार-चार झाबे लटकते हैं।

तामें नंग कहूं केते जरी, तिन फुन्दन में कई रंग।
रंग रंग में कई किरने, किरन किरन कई तरंग।। २९ ।।

उन झाबों के नग जड़े कहूं या जरी, उनके फुन्दन में कई रंग हैं। रंग-रंग में कई किरणें हैं और किरण-किरण में कई तरंगें हैं।

बांहें हलते फुन्दन लटके, हींचे फुन्दन जोत प्रकास।
बांहें हलते ऐसा देखिए, मानों हींचत नूर आकास।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की बांहें जब हिलती हैं तो फुन्दन हिलते हैं। उनकी जोत चारों तरफ फैलती है। ऐसा लगता है मानो आकाश में उनका नूर झूल रहा है।

Nijanand App

जो पटलियां पोहोंची मिने, सात पटली सात नंग।
सो सातों नंग इन भांत के, मानों चढ़ता आकासे रंग।। ३१ ।।

पोहोंची में सात पटलियां सात रंग की हैं। इन सातों के नगों की किरणें आकाश में चढ़ती दिखाई देती हैं।

स्याम सेत नीली पीली, जांबू आसमानी लाल।
हाए हाए करते पोहोंची बरनन, अजूं होस लिए खड़ा हाल।। ३२ ।।

काला, सफेद, नीला, पीला, जांबू, आसमानी और लाल रंगों की सात पटलियां पोहोंची में शोभा देती हैं। हाय! हाय! ऐसी पोहोंची का वर्णन करते हुए भी यह तन खड़ा है।

जो एक नंग नीके निरखिए, तो रोम रोम छेदत भाल।
जो लों देखों उपली नजरों, तो लों बदलत नाहीं हाल।। ३३ ।।

यदि एक नग को अच्छी तरह से देखें तो रोम-रोम में उसकी किरणें भाले के समान चुभ जाती हैं। जब तक ऊपर की नजर से देखते हैं, तब तक हालत नहीं बदलती।

कड़ियां कांड़ों सोभित, तिनकी और जुगत।
बल ल्याए कई दोरी नंग, रूह निरखें पाइए विगत।। ३४ ।।

कांड़ों में बलदार कड़े पहने हैं, जिसकी डोरियों में कई नग हैं। इनको रूह से देखने में लज्जत आती है।

ए नजरों नंग तो आवहीं, जो आवे निसबत प्यार।
ना तो भूखन हाथ हक के, दिल करसी कहा विचार।। ३५ ।।

रूहों को अंगना होने का प्यार मिले तो उन्हें यह नग सब नजर आएं, नहीं तो श्री राजजी महाराज के हाथों के आभूषण को रूह कैसे दिल से विचार करे?

जुदे जुदे जवेरन की, दस विध की मुंदरी।
दोऊ अंगूठों अंगूठिएं, और मुंदरी आठ अंगुरी।। ३६ ।।

अलग-अलग तरह के नगों की दस मुंदरियां हैं। दो अंगूठों में अंगूठियां और आठ उंगलियों में आठ मुंदरियां हैं।

मानिक मोती नीलवी, पाच पांने पुखराज।
लसनिएं और मनी, रहे कुंदन माहें बिराज।। ३७ ।।

मानिक, मोती, नीलवी, पाच, पन्ना, पुखराज, लसनियां और मणि के नगों की अंगूठियां सोने में सुन्दर शोभा देती हैं।

ए दसे अंगुरियों मुंदरी, नूर नख अंगुरी पतलियां।
पोहोंचे हथेली उज्जल लीकें, प्रेम पूरन रस भरियां।। ३८ ।।

दस उंगलियों में मुंदरियां और उन पतली उंगलियों के नखों का तेज पोहोंचा, हथेली और उज्ज्वल रेखाएं सब प्रेम रस से भरपूर हैं।

Nijanand App

अब चरनो चारों भूखन, चारों में जुदे जुदे रंग।
जानो के रस जवेर के, जैसे जोत अर्स के नंग।। ३९ ।।

अब चरणों के चार आभूषण! चारों के अलग-अलग रंग लगते हैं। अलग-अलग जवेर के हैं जैसे परमधाम के नगों की जोत होती है।

दस रंग नंग माहें झांझरी, ए बानी जुदी झनकार।
ए सोभा अति अनूपम, अर्स के अंग सिनगार।। ४० ।।

झांझरी में दस रंग के नग शोभा देते हैं। इनकी झनकार (आवाज) बड़ी अच्छी लगती है। श्री राजजी महाराज के परमधाम के सिनगार की शोभा अनुपम है।

यामें बेल पात नकस कई, कई करकरी फूल कांगरी।
बानी सोभा सुख देत है, घाट अचरज ए झांझरी।। ४१ ।।

इनमें बेल, पत्ते और नक्शकारी कई तरह की हैं। कई तरह के फूल, दाने, कांगरी में शोभा देते हैं और झांझरी की बनावट बड़ी सुखदाई लगती है।

और बेली कई नकस, मिहीं मिहीं जुगत जिनस।
जब नीके कर देखिए, जानों सब थें एह सरस।। ४२ ।।

कई तरह की बेलें, नक्शकारी बारीक से बारीक युक्ति से बनी हैं। जब उन्हें अच्छी तरह से देखें, तो लगता है यही सबसे अच्छी हैं।

जो सोभावत चरन को, सो केते कहूं गुन इन।
कोई घायल अरवा जानहीं, जो होसी अर्स के तन।। ४३ ।।

यह झांझरी जो चरणों को शोभा देती हैं, उसके गुणों का कहां तक बयान करूं। जिनका तन परमधाम में है, वही घायल रूहें इसका अनुभव कर सकती हैं।

भूखन अंग अर्स के, जानसी कोई आसिक।
अनेक सुख गुन गरभित, ए अर्स सूरत अंग हक।। ४४ ।।

परमधाम के अंगों के आभूषण आशिक रूहें ही जान सकती हैं। श्री राजजी के स्वरूप और अंगों में अनेक प्रकार के सुख और गुण भरपूर हैं।

दोऊ मिल मधुरे बोलत, लेऊं खुसबोए के सुनों बान।
सोभा कहूं के नरमाई, ए भूखन चरन सुभान।। ४५ ।।

दोनों चरणों के आभूषण बड़ी सुन्दर आवाज से बोलते हैं, जिनमें आनन्ददायक खुशबू, मीठी स्वर सुनने को मिलती हैं। इसकी शोभा का वर्णन करूं या नरमाई का, ऐसे धनी के चरणों के आभूषण हैं।

बान मधुरी घूंघरी, ए जुदे रूप रंग रस।
पांच रंग नंग इनमें, जानो उनपे एह सरस।। ४६ ।।

घुंघरी की बहुत मधुर आवाज तथा अलग रूप और रंग हैं। उनमें पांच तरह के नगों के रंग हैं, लगता है उस झांझरी से यह घुंघरी अच्छी है।

Nijanand App

कई करड़े कई बूटियां, नकस नाके रंग और।
ए सोभा कहूं मैं किन मुख, जाको इन चरनो है ठौर।। ४७ ।।

कई तरह की बूटियां और करड़े घूंघरियों में हैं, जिनके नाक के ऊपर कई तरह की नक्शकारी है, जिनका अर्श ही श्री राजजी के चरण हैं। उस शोभा का वर्णन मैं कैसे करूं?

मानो लाल कड़ी मानिक की, माहें कई रंग बेल अनेक।
सिर पतलियों लग रहीं, ए सोभा अति विसेक।। ४८ ।।

लगता है घूंघरियों के कुण्डे मानिक के हैं, जिसमें कई तरह की बेलें और रंग हैं, जो उनके सिरों तक पतली-पतली शोभा देती हैं। यह शोभा खास है।

इन कड़ी के रूप रंग, मिहीं बेली गिनी न जाए।
मानों पुतली वाही की कांगरी, ए जुगत अति सोभाए।। ४९ ।।

इस घुंघरी के कुण्डे के रूप और रंग तथा बारीक बेलें गिनी नहीं जातीं, लगता है यह किसी पुतली की कांगरी जैसे हैं।

अब कहूं रंग कांबीय के, पेहेरी जंजीर ज्यों जुगत।
जुदे जुदे रंग हर कड़ी, नैना देख न होंए तृपित।। ५० ।।

अब कांबी का रंग कहती हूं जो जंजीर की तरह पहनी हुई शोभा देती है, जिसकी हर कड़ी में अलग-अलग रंग हैं, जिन्हें देख-देख नैन तृप्त नहीं होते।

अनेक कड़ियां जंजीर में, गिनती होए न ताए।
कई रंग नंग एक कड़ीय में, बेल जंजीर गिनी न जाए।। ५१ ।।

एक जंजीर में अनेक कड़ियां हैं (मनके हैं) जिनकी गिनती नहीं होती है। एक-एक कड़ी (मनके) में कई रंग के नग हैं। इस तरह से एक जंजीर की बेलों की गिनती नहीं हो सकती।

ए विचार कीजे जब दिल से, रूह की खोल नजर।
कड़ी कड़ी के रंग देखिए, गिनते होए जाए फजर।। ५२ ।।

आत्मदृष्टि से जब दिल में विचारें तो एक-एक कड़ी के रंग देखते-देखते और गिनते-गिनते सवेरा हो जाएगा।

ऊपर खजूरा कड़ियन का, और कई बेल कड़ियों माहें।
तिन बेलों रंग वेली कड़ियों, ए खूबी क्यों कर कहे जुबांए।। ५३ ।।

कड़ों के ऊपर कई तरह के खजूरे बने हैं और कई तरह की बेलें बनी हैं, उन बेलों के रंग और कड़ियों में बेलियों की सुन्दरता यहां की जबान से कैसे कहें?

तेज जोत सोभा सलूकी, रूह केताक देखे ए।
खुसबोए नरम स्वर माधुरी, और कई सुख गुझ इनके।। ५४ ।।

इनके तेज को, जोत को और बनावट को रूह कहां तक देखे? इनमें सुगन्धि है, नरमाई है, मधुर स्वर हैं और कई तरह के छिपे सुख हैं।

Nijanand App

पांच रंग नंग हर कड़ी, कई बेल फूल पात।
कई कटाव कई बूटियां, इन जुबां गिने न जात।।५५।।

हर एक कड़ी में पांच तरह के नगों के रंग शोभा देते हैं और कई तरह के बेल, फूल, पत्ते, कटाव, और बूटियां शोभा देती हैं जो यहां की जबान से गिनी नहीं जातीं।

हर कड़ी कई करकरी, सो देखत ज्यों जड़ाव।
नंग जोत नजरों आवहीं, कई नकस कई कटाव।।५६।।

हर कड़ी में कई तरह के दाने हैं, जो जड़ाव जैसे लगते हैं। कई तरह की नक्शकारी और कटाव तथा नगों की जोत दिखाई देती है।

सखती न देवें चरन को, ना बोझ देवें पाए।
गुन सुख एक भूखन, इन मुख गिने न जाए।।५७।।

यह कांबी चरण को चुभती नहीं है और न ही चरण पर बोझा लगती है। ऐसे अनेक गुण और सुखों से भरे आभूषण हैं जो इस मुख से गिने नहीं जाते।

ए देखत अचरज भूखन, बैठे अंग को लाग।
ए सोभा कही न जावहीं, कोई देखे जिन सिर भाग।।५८।।

बड़ी हैरानी की बात यह देखो कि आभूषण अंग को चिपटे हैं, अर्थात् अंग की ही शोभा हैं, जो कही नहीं जा सकती। यह जिनके भाग्य में हैं वही देख सकते हैं, अर्थात् रूहें ही देख सकती हैं।

सरूप पुतलियों मोतियों, हैं ऊपर हर जंजीर।
सोभित सनमुख चेतन, क्यों कहूं इन मुख नीर।।५९।।

कांबी की हर एक जंजीर के मनकों में पुतलियां बनी हैं, जो सामने से सब चेतन दिखाई देती हैं। यहां के मुख से उनकी झलक कैसे बताऊं?

हक चाही बानी बोलत, हक चाही जोत धरत।
खुसबोए नरमाई हक चाही, हक चाह्या सब करत।।६०।।

यह कांबी श्री राजजी के चाहे अनुसार आवाज बोलती है और रंग बदलती है। इसकी खुशबू और नरमाई श्री राजजी के चाहे अनुसार होती है। जैसा धनी चाहते हैं वैसा यह करती है।

जैसे सरूप रूहन के, चरनों लगे गिरदवाए।
त्यों पुतलियां मोतिन की, कदमों रही लपटाए।।६१।।

जैसे श्री राजजी के चरणों को रूहें घेरकर बैठी हैं। इस तरह से मोतियों की पुतलियां चरणों की कांबी में लिपटी हैं।

सब समूह भूखन जब देखिए, अदभुत सोभा लेत।
जुबां खूबी क्यों केहे सके, हक दिल चाही सोभा देत।।६२।।

जब पूरे आभूषणों की शोभा देखो तो यह शोभा अत्यधिक विचित्र है जो श्री राजजी महाराज के दिल के चाहे अनुसार सुन्दर दिखाई देती है। यहां की जबान से वहां की खूबी का वर्णन कैसे हो?

Nijanand App

हाथ दीजे भूखन पर, सो हाथों लगत नाहें।
पेहेने हमेसा देखिए, ऐसे कई गुन हैं इन माहें।।६३ ।।

आभूषण पर हाथ फेरे तो हाथ को नहीं लगते और हमेशा दिखाई देते हैं कि श्री राजजी महाराज ने पहन रखे हैं। इस तरह से कई गुण आभूषणों में हैं।

अर्स तन हाथ अर्स तने, एक दूजे परस होए।
हाथ वस्तर या भूखन, दूजा अर्स तने लगे न कोए।।६४ ।।

परमधाम के तन के एक हाथ से दूसरे हाथ को छुआ जा सकता है, परन्तु हाथ के वस्त्र या आभूषण एक दूसरे के तन को नहीं चुभते।

और हाथ कोई है नहीं, कह्या वास्ते भूखन के।
और वस्तर ना कछू भूखन, जो इत निमूना लगे।।६५ ।।

और कोई दूसरा हाथ नहीं है। यह तो आभूषणों की महिमा बताई है। यहां वस्त्र और आभूषण कुछ नहीं हैं जिनका नमूना बता सकूं।

है एक हमेसा वाहेदत, दूजा जरा न काहूं कित।
ए देखत सो भी कछुए नहीं, और कछू नजरों भी न आवत।।६६ ।।

परमधाम में सब एक तन, एक दिल हैं। दूसरा कुछ है ही नहीं। जो दिखाई देता है वह भी कुछ नहीं है। दूसरा कुछ वाहेदत के बिना दिखाई नहीं देता।

वाहेदत का वाहेदत में, वस्तर भूखन पेहेनत।
ए नूर है इन अंग का, ए सुन्य ज्यों ना नासत।।६७ ।।

वाहेदत के वस्त्र, आभूषण वाहेदत के तन पहनते हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग का नूर हैं। यह संसार की तरह नाशवान नहीं हैं।

ए मिहीं बातें अर्स सुखकी, सो जानें अर्स अरवाए।
इन जिमी सो जानहीं, जिन मोमिन कलेजे घाए।।६८ ।।

यह खास (बारीक) बातें परमधाम के सुख की हैं और इन्हें रूहें ही जानती हैं। संसार में वही मोमिन जानेंगे जिनके कलेजे में पिया की चाह के घाव लगे हैं।

इन जिमी आसिक क्यों रहे, वह खिन में डारत मार।
तो लों रहे सहूर में, जो लों रखे रखनहार।।६९ ।।

आशिक रूहें इस संसार में चोट खाकर कैसे रह सकती हैं? इन वस्त्रों और आभूषणों की शोभा एक क्षण में घायल कर देती है, परन्तु जब तक श्री राजजी रख रहे हैं तब तक रह रहे हैं।

एही काम आसिकन के, फेर फेर करे बरनन।
विध विध सुख सरूप के, सुख लेवें सिनगार भिन भिन।।७० ।।

आशिक रूहों का यही काम है कि वह बार-बार सिनगार को देखें और वर्णन करें तथा श्री राजजी महाराज के अलग-अलग सिनगार के सुख लेवें।

Nijanand App

एही आहार आसिकन का, एही सोभा सिनगार।
झीलें सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार।।७१ ।।

आशिक रूहों का यही आहार है कि वह श्री राजजी की शोभा और सिनगार के सागर में गर्क रहें। श्री राजजी के एकदिली के सागर में धनी की मेहर से झीलें और आनन्द लें।

महामत देखे विवेकसों, हक वस्तर और भूखन।
सब अंग सोभा अंगों की, ज्यों दिल रूह होए रोसन।।७२ ।।

श्री महामतिजी बड़े ध्यान से श्री राजजी महाराज के वस्त्रों और आभूषणों को देखती हैं, तो यह सब श्री राजजी के अंग के नूर की शोभा ही है, ऐसा दिल को पता लगता है।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ९९९ ॥

जोबन जोस मुख बीड़ी छबि

फेर फेर पट खोलें हुकम, निसबत जान रूहन।
हक मुख अंग इस्क के, ले देखिए अर्स अंग तन।।१ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने रूहों को श्री राजजी की अंगना जानकर बार-बार अज्ञानता के परदे हटाए हैं। अब अर्श के अंगों से ही श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द और अंग दिल में इश्क लेकर देखो।

हक बरनन जिमी सुपने, हुकमें कह्या नेक सोए।
हक इस्क एक तरंग से, रूह निकस न सके कोए।।२ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन हुकम ने थोड़ा सा संसार में बताया है। इश्क की एक तरंग से ही रूह निकल नहीं सकती।

सुन्दर मुख मासूक का, और अंग सबे सुन्दर।
सो क्यों छूटे आसिक से, जब चुभे हैड़े अन्दर।।३ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द और सभी अंग सुन्दर हैं, जो श्री राजजी महाराज की आशिक रूहों के दिल में चुभे रहते हैं, वह कैसे छूटेंगे।

क्यों कहूं मुख की सलूकी, और क्यों कहूं सुन्दरता।
ए आसिक जाने मासूक की, जिन घट लगे ए घा।।४ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की बनावट और सुन्दरता कैसे कहूं? जिन रूहों को दिल में चोट लगी हो वही श्री राजजी महाराज के स्वरूप को जानती हैं।

मुख चौक सलूकी क्यों कहूं, कछू जानें रूह के नैन।
ए सुख सोई जानहीं, जासों हक करें सामी सैन।।५ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की सम्पूर्ण शोभा का कैसे वर्णन करूं? यह रूहें ही अन्तर्दृष्टि से जानती हैं, क्योंकि इसकी लज्जत उन्हीं को मिलती है, जिनसे श्री राजजी महाराज इशारों से बातें करते हैं।

Nijanand App

सुख पाइए देखें हरवटी, मुख लांक लाल अधुर।
दन्त जुबां बीच तंबोल, मुख बोलत मीठा मधुर।।६ ।।

श्री राजजी की हरवटी, मुखारबिन्द, लाल होंठ और हरवटी के बीच की गहराई, दांत, जबान तथा सुन्दर पान बीड़ा और मुखारबिन्द की मीठी वाणी सुखदायी हैं।

मुख मूंदे अधुर बोलत, बानी प्रेम रसाल।
आसिक को छबि चुभ रही, जानों हैड़े निस दिन भाल।।७ ।।

श्री राजजी महाराज रस भरी प्रेम वाणी मुंदे होठों से बोलते हैं। यह छबि रूहों के हृदय में चुभ जाती है, लगता है आशिक रूह के हृदय में यह भाले के समान रात-दिन चुभी रहती है।

सहूर कीजे हक अंग रंग, कई तरंग लाल उज्जल।
देत गौर सुख सलूकी, सोभा क्यों कहूं बिना मिसल।।८ ।।

श्री राजजी के अंग के रंग का यदि आत्मदृष्टि से विचार करें तो उज्ज्वल लाल रंग की तरंगें दिखाई देंगी। अंग के गोरेपन और बनावट के सुख को बिना उपमा के कैसे वर्णन करूं?

हक मुखथें बोलें वचन, स्वर मीठा निकसत।
सो सुनत अर्स रूहों को, दिल उपजे हक लज्जत।।९ ।।

श्री राजजी महाराज जब मुख से एक वचन बोलते हैं तो बहुत रसीली वाणी होती है। जिसे सुनकर परमधाम की रूहों को दिल में श्री राजजी महाराज की लज्जत मिलती है।

हक स्वर कैसा होएसी, और कैसी होसी मुख बान।
सुख बातें क्यों कहूं रसना, चाहे दिल सुनने सुभान।।१० ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द कैसा होगा? बोली कैसी होगी? बातें करते समय उनकी रसना के बेहद सुख कैसे कहे जाएं? यह रूहें उनको सुनने की चाहना रखती हैं।

हक नेक नैन मरोरत, होत रूहों सुख अपार।
तो बात कहें सुख हक के, सो क्यों कहूं सुख सुमार।।११ ।।

श्री राजजी महाराज जरा सी बांकी नजर से देख लेते हैं तो रूहों को बहुत सुख होता है। फिर श्री राजजी के सुख की ही बातें रूहें करती हैं, जो बेशुमार हैं। उसका वर्णन संसार में कैसे करूं?

एक रोम रोम हक अंग के, सब सुखै के अम्बार।
तो सुख सरूप नख सिखलों, रूहें कहा करें दिल विचार।।१२ ।।

श्री राजजी के अंग के रोम-रोम सुखों से भरपूर हैं, तो फिर नख से शिख तक पूरे स्वरूप के सुखों का रूहें कैसे अनुभव करें?

ज्यों रोम सुपन के अंग को, त्यों रोम न अर्स अंग पर।
सब अंग इस्क वास्ते, रोम रोम कहे यों कर।।१३ ।।

सपने के अंगों में जैसे रोम होते हैं, परमधाम के अंगों पर नहीं होते। परमधाम के सभी अंग श्री राजजी के इश्क के वास्ते ही हैं, इसलिए उन अंगों को रोम-रोम कहकर वर्णन किया है।

Nijanand App

अर्स पसु या जानवर, रोम होत तिन अंग।
रोम न रूहों अंग पर, रूहें अंग जानें अर्स नंग।। १४ ।।

परमधाम के पशु या जानवरों के अंग पर रोम (बाल) होते हैं, जो रूहों के अंग पर नहीं होते। रूहों के अंग परमधाम के नगों की तरह दिखाई देते हैं।

जवेर पैदा जिमीय से, यों अर्स में पैदा न होत।
ए खूबी हक जहूर की, सो लिए खड़ी सदा जोत।। १५ ।।

संसार में नग जमीन से पैदा होते हैं। परमधाम में ऐसी कोई चीज पैदा नहीं होती। यह सब खूबियां श्री राजजी महाराज के अंग के नूर की ही हैं जो सदा जगमगाती हैं।

याको नंग निमूना न दीजिए, अर्स रूहें वाहेदत।
इने मिसाल न कोई लागहीं, जाकी हक हादी जात निसबत।। १६ ।।

परमधाम की रूहों के तनों को नगों का नमूना न दें। यह रूहें परमधाम की एकदिली के स्वरूप हैं और श्री राजश्यामाजी के निसबती हैं। उनकी शोभा बताने के लिए कोई मिसाल नहीं है।

जो देऊं निमूना अर्स का, तो रूहों लगत न कोई बात।
रूहें अंग हादीय को, हादी अंग हक जात।। १७ ।।

अगर परमधाम का नमूना बताऊं तो रूहों को कोई उपमा नहीं लगती, क्योंकि रूहें श्री श्यामाजी के अंग हैं और श्यामाजी श्री राजजी के अंग हैं।

तिरछा नेक जो मुसकत, तो मार डारत मुतलक।
जो कदी सनमुख होए यों रूह सों, तो क्यों जीवे रूह आसिक।। १८ ।।

श्री राजंजी महाराज तिरछी मुस्कान से जरा भी देखते हैं तो निश्चित ही रूहें घायल हो जाती हैं। यदि श्री राजजी महाराज रूह के सामने ही मुस्करा दें तो फिर आशिक रूहें संसार में कैसे जिन्दा रह सकती हैं?

आसिक अटके सब अंगों, देख देख रूप सलूक।
एक नेक अंग के सुख में, रूह हो जात टूक टूक।। १९ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के अंगों की सलूकी और रूप को देखकर अटक जाती हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के अंग के जरा से सुख में रूहें गर्क हो जाती हैं।

सब अंग देखे रस भरे, प्रेम के सुख पूरन।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ए पीवत रस मोमिन।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग मस्ती और प्रेम से भरे हुए हैं, जिनके सुख बेशुमार हैं। इसको वही रूहें समझ सकेंगी जो रात-दिन श्री राजजी का दीदार करती हैं और प्रेम रस का पान करती हैं।

गौर गाल मुख उज्जल, माहें गेहेरी लालक ले।
ए जुबां सुख सोभा क्यों कहे, अर्स अंग हक के।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरे गाल हैं। मुख उज्ज्वल है। गहरी लालिमा लिए है। इस शोभा को यहां की जबान कैसे कहे? यह श्री राजजी के परमधाम के अंग हैं।

Nijanand App

रूह आसिक जिन अंग अटकी, छूटत नहीं क्यों ए सोए।
ए किसी बातों आसिक सों, अंग मासूक जुदे न होए।। २२ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी के जिस अंग को देखती हैं, वहीं अटक जाती हैं। फिर उनसे वह अंग किसी तरह से नहीं छूटता। आशिक रूहें ऐसी किसी बातों से श्री राजजी के अंग से जुदा नहीं हो सकतीं।

जेते अंग मासूक के, रूह आसिक रहे तिन माहें।
रूह आसिक और कहूं ना टिके, अपने अंग में भी नाहें।। २३ ।।

माशूक श्री राजजी के जितने भी अंग हैं, आशिक रूहें उसी में अटकी रह जाती हैं। ऐसी रूहों का ध्यान और कहीं नहीं टिकता। उन्हें अपनी भी सुध नहीं रहती।

करते बातें प्यारी मासूक, हाथ करें चलवन।
नेत्र भी वाही तरह, चूभ रेहेत रूह के तन।। २४ ।।

जब श्री राजजी महाराज प्यारी-प्यारी बातें, हाथों को चलाकर और उसी तरह से नेत्रों को घुमाकर, करते हैं, तो उनकी वह अदाएं रूह के तन में चुभी रहती हैं।

सब अंग हक के इस्क भरे, क्यों कर जाने जांए।
होए रूह जाग्रत अर्स की, ताए हुकम देवे बताए।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग इश्क से भरपूर हैं, उनको कैसे बताएं? परमधाम की रूह जब जागृत हो जाए तो श्री राजजी के हुकम से उसे यह सब बातें पता चल जाएंगी।

जब बात करें हक रूह सों, तब अंग सबे उलसत।
करते बातें छिपे नहीं, हक अंगों इस्क सिफत।। २६ ।।

जब श्री राजजी महाराज किसी रूह से बात करते हैं तो उसके सभी अंग उमंग से भर जाते हैं। तब श्री राजजी महाराज के अंगों के इश्क की सिफत की बातें रूह से किसी तरह छिपी नहीं रह जातीं।

नेत्र कहे और नासिका, हाथ कहे और मुख।
और अंग सबे याही विध, केहेते बातें दे सब सुख।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज के आंख, नाक, हाथ और मुख का वर्णन किया है। बाकी सभी अंग भी इसी तरह बातें करने में सुख देते हैं।

सब अंग करत इसारतें, हक अंग रूह सों लगन।
ए बारीक बातें अर्स की, कोई जाने जाग्रत मोमिन।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग रूहों से बड़े प्यार के साथ इशारे करते हैं। यह परमधाम की खास (बारीक) बातें हैं, जिन्हें वही मोमिन जानते हैं जो जागृत हो गए हैं।

हक अंग जोत की क्यों कहूं, जो नूर नूर का नूर।
अंग मीठे प्यारे सुख सलूकी, दे हक हुकम सहूर।। २९ ।।

श्री राजजी के अंग की जोत का कैसे वर्णन करूं जो उनके नूरी मुखारबिन्द के नूर की शोभा है। उनके अंग अत्यन्त प्यारे मीठे सुहाने और सुखदायी हैं। यह वही जान सकते हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज के हुकम से तारतम वाणी जागृत बुद्धि मिल गई है।

Nijanand App

कैसी मीठी बानी हक की, कहे प्रेम वचन श्री मुख।
निसबत जान रमूज के, देत रूहों को सुख।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की बोली कितनी मीठी है। श्री राजजी महाराज रूहों को अपनी अंगना जानकर दिल के छुपे इश्क के सुख देते हैं।

हक प्रेम वचन मुख बोलते, जोर आवत है जोस।
ए बानी रूह को विचारते, हाए हाए अजूं उड़े ना फरामोस।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज जब प्रेम के वचन बोलते हैं तो श्री राजजी को बड़ा जोश आ जाता है। इन वचनों का विचार करके भी हाय! हाय! रूह की अभी भी यह फरामोशी उड़ती नहीं है।

जब जोस आवे हक बोलते, प्रेम सों गलित गात।
तिन समें मुख मासूक का, मार डारत निघात।। ३२ ।।

जब श्री राजजी महाराज प्रेम में गलित गात होकर जोश से बोलते हैं तो उस समय वह इश्क के स्वरूप रूहों को चुभने वाली चोट मारता है।

हक अंग सब नाचत, जोस आवत है जब।
करें बातें रूह सों उमंगें, मुख छबि देखी चाहिए तब।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग जब इश्क के जोश में नाचते हैं और रूहों से बड़ी उमंग से बातें करते हैं, उस समय मुख की छबि देखने लायक होती है।

जोस हमेसा हक को, रेहेत सदा पूरन।
पर आसिक देखे इन विध, रंग चढ़ता रस जोबन।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग में इश्क का जोश सदा भरा रहता है, परन्तु आशिक रूहों को वह जोश हर पल अधिक दिखाई देता है।

सरूप मुख नख सिखलों, जोबन जिनस जुगत।
ए आसिक अंग अर्सके, चढ़ती जोत देखत।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की नख से शिख तक की शोभा और जोबन के जलवों के चढ़ते तेज को, परमधाम की आशिक रूहें ही अर्श के इन अंगों की शोभा देखती हैं।

जोत तेज धात रंग रस, रूह बढ़ता देखे दायम।
अंग अर्स इसी रवेस, यों देखे सूरत कायम।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज की जोत, तेज, धातु, रंग और रस इन सबको भी रूहें चढ़ती शोभा में देखती हैं और श्री राजजी महाराज के अंग भी सदा नित्य नई चढ़ती शोभा के हैं, जिन्हें रूहों की परआतम सदा देखती है।

चढ़ता रंग रस तो कहूं, जो होए नहीं पूरन।
पर आसिक जाने मासूक की, नित चढ़ती देखे रोसन।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग में कोई कमी हो तो चढ़ती-चढ़ती शोभा बताऊं। यह तो आशिक रूहों के देखने की नजाकत है जो अपने माशूक को इस रूप में देखती हैं।

Nijanand App

एही लछन आसिक के, सब चढ़ते देखे रंग।
तेज जोत रस धात गुन, और सब पख इंद्री अंग।। ३८ ।।

रूहों के भी यह लक्षण हैं कि वह अपने माशूक श्री राजजी महाराज के अंगों के तेज, जोश, रस, धातु, गुण और सब पक्ष, गुण, अंग इन्द्रियों में सदा चढ़ती शोभा देखती हैं।

हक रस रंग जोस जोबन, चढ़ता सदा देखत।
अर्स अरवा रूहन को, हक प्रेमें देत लज्जत।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज के चढ़ते जोबन वाले अंगों के रस, रंग और जोश को सदा रूहें चढ़ती देखती हैं। श्री राजजी महाराज अपने परमधाम की रूहों को प्रेम से सुख देते हैं।

घट बढ़ अर्स में है नहीं, हक पूरन हमेसा।
हम इस्कें लें यों अर्स में, सब सुख पूरनता।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम में सदा पूर्ण हैं। वहां घट-बढ़ कुछ नहीं होता। हम रूहें परमधाम में इश्क का इस तरह से श्री राजजी से पूर्ण सुख लेती हैं।

बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी।
तिन बीच जोत नंगन की, अति झलकत हैं मुंदरी।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने जिस हाथ से पान बीड़ा को लिया है, उसकी पतली उंगलियां शोभा देती हैं। उंगलियों के बीच जो मुंदरी पहन रखी है, उनके नगों की जोत जगमगाती है।

बीड़ी मुख में मोरत, सुन्दर हरवटी हंसत।
सोभा इन मुख क्यों कहूं, जो बीच में बात करत।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज पान बीड़ा को जब मुख में चबाते हैं तो उनकी सुन्दर हरवटी हंसती दिखाई देती है। इसी बीच में श्री राजजी महाराज बात करते हैं तो उस समय की मुखारबिन्द की शोभा वर्णन करने से बाहर है।

एक लालक तंबोल की, क्यों कहूं अधुर दोऊ लाल।
दंत सोभित मुख मोरत, खूबी ना इन मिसाल।। ४३ ।।

एक पान की लाली दूसरी होंठों की लाली, उनका कैसे बयान करूं? श्री राजजी महाराज जब पान चबाते हैं तो दांतों की शोभा बेमिसाल हो जाती है।

लाल उज्जल दोऊ रंग लिए, बीड़ी लेत मुख अंगुरी नरम।
नेक मुख मूंदे बोलत, अति सुन्दर मुख सरम।। ४४ ।।

दांत उज्ज्वल हैं; होंठ लाल हैं। इन दोनों के बीच अपनी पतली उंगलियों से मुख में बीड़ी लेकर आरोगते हैं। थोड़ा मुख बन्द करके जब बोलते हैं तो मुख की सुन्दरता और शर्म बढ़ जाती है।

नेक खोलें अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार।
सो सुख देत आसिकों, जिनको नहीं सुमार।। ४५ ।।

बोलते समय जब होंठों को थोड़ा खोलते हैं तो प्यारी-प्यारी लुभावनी बातें कर आशिकों को बेशुमार सुख देते हैं।

Nijanand App

सुख देत सब अंग मिल, नैन नासिका श्रवन अधुर।
हंसत हरवटी भौं भृकुटी, सब दें सुख बोल मधुर।। ४६ ।।

उस समय श्री राजजी के सभी अंग, नैन, नासिका, कान, होंठ, हंसती हरवटी, भौंहें, भृकुटी सभी मधुर बोली से सुख देते हैं।

अदभुत सलूकी इन समें, आसिक पावत आराम।
आठों जाम हिरदे रूह के, जानों नकस चुभ्या चित्राम।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज की इस समय की अद्भुत शोभा देखकर आशिक रूहों को बड़ा आराम मिलता है और लगता है कि उनके दिल में रात-दिन ऐसी शोभा चुभ गई है।

फेर फेर ए मुख निरखिए, फेर फेर जाऊं बलिहार।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, इन सुख नाहीं सुमार।। ४८ ।।

ऐसे शोभायुक्त मुख को बार-बार देखने की चाहना होती है और बार-बार मैं उस मुखारबिन्द पर वारी-वारी जाती हूं। इस मुखारबिन्द की खूबी और खुशाली के सुख बेशुमार हैं। कैसे कहूं?

अधबीच आरोगते, मेवा काढ़ देत मुख थें।
सरस मेवा केहे देत हैं, आप हाथ मेरे मुख में।। ४९ ।।

आरोगते समय बीच में अपने मुख से मेवा निकालकर स्वयं श्री राजजी महाराज अपने हाथ से मेरे मुख में दे देते हैं, यह कहते हुए कि यह सबसे मीठा मेवा है।

रंग रस यों केहेत हों, ए जो मेहेर करत मेहेरबान।
ए भूल गैयां हम लाड़ सबे, ना तो क्यों रहे खिन बिन प्रान।। ५० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेहरबान सुभान जिस तरह से लाड़ लड़ाते हैं, मैं उस रस का वर्णन करती हूं। जिस लाड़ को हम सब खेल में आकर भूल गए हैं। वरना बिना प्राण (प्रीतम) के एक क्षण भी संसार में रहा न जाए।

और काम हक को कोई नहीं, देत रूहों सुख बनाए।
वाहेदत बिना हक दिल में, और न कछुए आए।। ५१ ।।

श्री राजजी महाराज को रूहों को सुख देने के सिवाय दूसरा कोई काम नहीं है। श्री राजजी महाराज के दिल में रूहों के सिवाय कुछ और सुहाता नहीं है।

सुख देना लेना रूहों सों, और रूहों सों वेहेवार।
ए अर्स बातें इन जिमिएं, कोई बिना रूह न लेवनहार।। ५२ ।।

रूहों को सुख देना, रूहों से सुख लेना और रूहों से इश्क का व्यवहार करना यही परमधाम की बातें हैं, जो इस संसार में कोई रूहों के सिवाय लेने वाला नहीं है।

कोई काम न और रूहों को, एक जानें हक इस्क।
आठों जाम चौसठ घड़ी, बिना प्रेम नहीं रंचक।। ५३ ।।

रूहों को भी श्री राजजी महाराज के इश्क के बिना और कुछ काम नहीं है। वह आठों जाम (प्रहर) चौसठ घड़ी प्रेम में ही गर्क रहती हैं।

Nijanand App

हक जात वाहेदत जो, छोड़ें ना एक दम।
प्यार करें माहों-माहें, वास्ते प्यार खसम।।५४।।

रूहें (मोमिन) जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं, वह श्री राजजी से आपस में अरस-परस प्यार करती हैं और उस प्यार के वास्ते श्री राजजी को एक पल के लिए भी नहीं छोड़तीं।

हक अंग चलत मुख बोलते, तब जान्या जात गुझ प्यार।
ए अरवा अर्स की जानहीं, जाको निसदिन एह विचार।।५५।।

श्री राजजी महाराज जब मुख से बोलते हैं तो उनके सभी अंग चलते दिखाई देते हैं। उस समय ही उनके छिपे प्यार की पहचान होती है, जिसे परमधाम की रूहें जानती हैं, जो रात-दिन इसमें गर्क हैं।

हक नरम पांउं उठाए के, और धरत जिमी पर।
ए अर्स बीच मोमिन जानहीं, जिनको खुसबोए आई फजर।।५६।।

श्री राजजी महाराज अपने कोमल चरण कमलों को जमीन पर रखते हैं तो परमधाम के रहने वाले मोमिन जिनको जागृत बुद्धि से इसकी पहचान हुई है, वह इस सुख को जानते हैं।

हक धरत पांउं उठावत, तब जानी जात चतुराए।
सो समझें हक इसारतें, जो होएं अर्स अरवाए।।५७।।

श्री राजजी महाराज जब चलते हैं, तब उनकी नजाकत भरी चतुराई का पता चलता है। वही इन नजाकतों को जानती हैं, जो परमधाम की रूहें होती हैं।

कैसे लगें पांउं चलते, वह कैसी होसी भोम।
चलते देखे हक चातुरी, हाए हाए घाए न लगे रोम रोम।।५८।।

श्री राजजी महाराज जब चलते हैं तो उनके चरण कमल और भूमि देखने योग्य होती है। श्री राजजी महाराज की इस चतुर चाल को देखकर हाय! हाय! अर्श के मोमिनों के दिल में अभी भी चोट नहीं लगी।

इजार देखत पांउं में, लेत झांई जामें पर।
हाए हाए खूबी इन चाल की, ए जुबां कहे क्यों कर।।५९।।

श्री राजजी महाराज के पांव की इजार की शोभा जामे में झलकती है। हाय! हाय! ऐसी चतुर चाल की खूबी यहां की जबान कैसे कहे?

स्वर भूखन मधुरे सोहे, ए तरह चलत जो हक।
ए जो देखे रूह नजर भर, तो चाल मार डारत मुतलक।।६०।।

श्री राजजी महाराज जब चलते हैं तो आभूषणों के मधुर स्वर निकलते हैं। रूह जब इस चाल को नजर भरकर देख लेती है, तो उसके अन्दर तड़प पैदा हो जाती है।

नख अंगूठे अंगुरियां, चलते अति सोभित।
चाल विचारते अर्स की, हाए हाए अरवा क्यों न उड़त।।६१।।

श्री राजजी महाराज के चलते समय अंगूठे और उंगलियों के नख बहुत शोभा देते हैं। परमधाम की ऐसी चलने की कला को देखकर अरवाहें (रूहें) क्यों नहीं उड़तीं?

Nijanand App

अर्स दिल मोमिन कह्या, ठौर बड़ी कुसाद।
हक हादी रूहें माहें बसें, असल अर्स जो आद।। ६२ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है। यह अर्श दिल बहुत विशाल है। इसमें हक हादी रूहें सब रहते हैं।

जेता मता हक का, सो सब अर्स में देख।
सो सब मोमिन दिल में, पाइए सब विवेक।। ६३ ।।

परमधाम में जितनी न्यामतें हैं, उनको सब मोमिनों के दिल में देखो। परमधाम में देखो तब इसका ब्यौरा पता लगेगा।

हक हादी रूहें खेलैं, उठें बैठें दौड़ें करें चाल।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रेहेत हमेसा नाल।। ६४ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें अर्श में खेलते, उठते, बैठते और चलते हैं। परमधाम की जो रूहें हैं, वह सदा श्री राजश्यामाजी के साथ रहती हैं।

जो तोहे कहे हक हुकम, सो तूं देख महामत।
और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत।। ६५ ।।

श्री महामतिजी अपनी रूह से कहते हैं, जो तुझे श्री राजजी का हुकम कहे उस पर तू स्वयं चल। फिर जो रूहें अर्श की हैं उनको चलने को कहो। रहनी में आने को बताओ। वह तुम्हारे ही तन हैं।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। १०६४ ।।

हक मासूक का मुख सागर–मंगला चरण

हक इलम के जो आरिफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें।
चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें।। १ ।।

जिन रूहों को जागृत बुद्धि का ज्ञान हो गया है, वह सदा श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा बार-बार देखना चाहते हैं और उसे देख-देखकर अपने तन को छोड़ देना चाहते हैं।

एही काम आसिकन का, हक इलम एही काम।
नूरजमाल का जमाल, छोड़ें न आठों जाम।। २ ।।

श्री राजजी महाराज के आशिक रूहों का और उनके इलम का एक यही काम है कि नूरजमाल श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द से रात-दिन कभी जुदा न हों।

खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत।
दम न छोड़ें मासूक को, जाको होए हक निसबत।। ३ ।।

जो मोमिन श्री राजजी की अंगना हैं वह खाते-पीते-उठते-बैठते, सोते, स्वप्न में और जागृत अवस्था में श्री राजजी महाराज के स्वरूप को एक पल भी नहीं छोड़ते।

हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात।
एही अर्स रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात।। ४ ।।

यह मोमिन बार-बार श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ही बातें करते हैं। परमधाम की रूहों का यही खाना-पीना और कुल खजाना है।

Nijanand App

जेती रूहें आसिक, रेहेत हक खूबी के माहें।
रूह को छोड़ के वजूद, कोई जाए न सके क्यांहे।।५।।

परमधाम की आशिक रूहें श्री राजजी महाराज की छबि में मग्न रहती हैं। रूहें मुखारबिन्द की छबि को छोड़कर और अंग को नहीं देखती हैं।

एही हक इलम को लछन, आसिकों एही लछन।
एही इलम इस्क के आरिफ, सोई अर्स रूह मोमिन।।६।।

श्री राजजी महाराज के इलम का भी यही लक्षण है जो आशिक का लक्षण है। जो इस इलम और इश्क के जानने वाले हैं वही अर्श के मोमिन हैं।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

बरनन करो रे रूहजी, मासूक मुख सुन्दर।
कोमल सोभा अलेखे, खोल रूह के नैन अंदर।।७।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी रूह! तू अपने माशूक श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का वर्णन कर, जिसकी कोमल और बेशुमार शोभा है। इसको रूह की अन्दर की नजर से देखो।

ललित लाल मुख सागर, कहूं अचरज के अदभूत।
क्यों कर आवे बानीय में, ए बका सूरत लाहूत।।८।।

श्री राजजी महाराज का मुख सुन्दर लाल सागर के समान दिखाई देता है। इसे संसार के शब्दों में बेमिसाल कहूं कि लाजवाब कहूं? यह अखण्ड परमधाम के स्वरूप की शोभा है जो कही नहीं जा सकती।

मुख गौर झरे कसूंबा, सोभा क्यों कहूं बड़ो विस्तार।
रंग कहूं के सलूकी, ए न आवे माहें सुमार।।९।।

गोरे मुख से लाल किरणें झलक रही हैं। इसकी शोभा कैसे कहूं? इसका बड़ा विस्तार है। मुखारबिन्द का रंग कहूं या सलूकी (सुघड़ता)। यह शोभा बेशुमार है।

कहूं सागर मुख जोत का, के कहूं मेहेर सागर।
के कहूं सागर कलाओं का, जुबां केहे न सके क्योंए कर।।१०।।

श्री राजजी महाराज के मुख को नूर का सागर कहा जाए या मेहर का सागर कहा जाए? या फिर इलम का सागर कहूं? यहां की जबान वर्णन नहीं कर सकती।

मुख चौक कहूं के चकलाई, के सीतल सागर सुख।
के कहूं सागर रस का, जो नूरजमाल का मुख।।११।।

मुखारबिन्द के चौक (चेहरा-मोहरा) का वर्णन करूं या सुन्दरता का जो सागर के समान शीतल सुख देने वाला है या इसे रस के सागर की उपमा दूं।

के कहूं सागर तेज का, के कहूं सागर सरम।
के नूर सागर कहूं बिलंद, के चंचल गुन नरम।।१२।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को इश्क का सागर कहूं जो तेज और शर्म से भरपूर है, या इसे नूरसागर की उपमा दूं, जिसमें बेशुमार चंचलाई के गुण भरे हैं।

Nijanand App

कहूं सज्जनता के सनकूली, दोस्ती कहूं के प्यार।
जो जो देखूं नजर भर, सों सब सागर अपार।। १३ ।।

यदि मैं अपनी नजर भरकर देखती हूं तो श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की सज्जनता, सनकूली, दोस्ती और प्यार के गुण सागर के समान दिखाई देते हैं।

सागर कहूं पाक साफ का, के कहूं आबदार।
हक मुख सागर क्यों कहूं, सब विध पूरन अपार।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को निर्मल उज्ज्वलता का सागर कहूं या चमकीला सागर कहूं? श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द सब गुणों से भरपूर है। ऐसे शोभा युक्त सागर (मुखारबिन्द) का कैसे वर्णन करूं?

मोमिन दिल कोमल कह्या, तो अर्स पाया खिताब।
तो दिल मोमिन रूह का, तिन कैसा होसी मुख आब।। १५ ।।

मोमिनों के दिल को नरम कहा है, इसलिए इनके दिल को श्री राजजी ने अपने अर्श का खिताब दिया तो जिस मोमिन के दिल में श्री राजजी महाराज की बैठक है, उस मोमिन के मुख का तेज कैसा होगा?

तिन रूह के नैन को, किन विध कहूं नूर तेज।
जो हक नैनों हिल मिल रहे, जाके अंग इस्क रेजा रेज।। १६ ।।

ऐसी रूह के नैनों के तेज का कैसे बयान करूं? जिसके नैन श्री राजजी के नैनों से मिल गए हैं और जिनके अंग-अंग में इश्क भरा है।

और हक कदम अति कोमल, पांउं तली जोत अतंत।
सो रहें रूह नैनों बीच में, सो क्या करे जुबां सिफत।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली अति कोमल है और तेजोमयी है जो रूहों की नजर में बसी है, उसकी सिफत यहां की जबान से कैसे कहें?

केहेवत हुकम इन जुबां, पर ए खूबी कही न जाए।
ए कहे बिना भी ना बने, बिन कहें रूह बिलखाए।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम ही यहां की जबान से कहला रहा है। नहीं तो यह खूबी कही नहीं जा सकती। बिना कहे भी रहा नहीं जाता, क्योंकि रूहों को कष्ट होता है।

इन नैनों सुख बका न देख्या, सुन्या हादियों के मुख।
सुनी बानी जुबां केहे ना सके, जुबां कहे देख्या सुख।। १९ ।।

इन नैनों से अखण्ड सुख को देखा नहीं है। यह श्री राजश्यामाजी के मुखारबिन्द की कही बातें हैं और सुनी हुई बातों को जबान कह नहीं सकती। जबान तो जिस सुख को देखा होगा, उसे ही कहेगी।

कहूं नूर तेज रोसनी, याकी जोत गई अंबर लों चल।
माहें गुन गरभित कई सागर, क्यों कहे बिना अंतर बल।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के मुख के नूर के तेज का वर्णन करूं, जिसकी जोत आकाश तक फैली है। जिसमें सागर के समान कई गुण भरे पड़े हैं, उनका वर्णन अन्दर की शक्ति के बिना कैसे कहें?

Nijanand App

किन विध कहूं मुख मांडनी, कहूं सनकूली के सुख पुंज।
के कहूं आनंद सागर पूरन, गरुआ गंभीर नूर गंज।।२१ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का वर्णन कैसे करूं और मुखारबिन्द की सलूकी (सुघड़ता) की क्या कहूं जो सुख का सागर है। श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द आनन्द का गहरा, गम्भीर सागर जैसा दिखाई देता है।

ए सागर सरूपी मुख मासूक, कई खूबी खुसाली अनेक।
कई रंग तरंग किरने उठें, ए वेही जानें गिनती विवेक।।२२ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा सागर के समान है, जिनमें कई तरह की खूबियां और खुशालियां हैं। कई तरह के रंगों की तरंगें उठती हैं, जिसका ब्यौरा श्री राजजी ही जान सकते हैं।

इन मुख सागर में कई सागर, सुख आनंद अपार।
कई सागर सुख सलूकियां, माहें कई गंज अपार अंबार।।२३ ।।

श्री राजजी महाराज के सागर समान मुखारबिन्द में सुख और आनन्द के बेशुमार सागर भरे पड़े हैं और कई तरह की सागर के समान सुख देने वाली गंजान गंज सलूकियां भरी हैं।

कोई मोमिन केहेसी ए क्यों कह्या, हक मुख सोभा सागर।
सुच्छम सरूप अति कोमल, ललित किसोर सुन्दर।।२४ ।।

कोई मोमिन यह पूछे कि श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को सागर की उपमा क्यों दी है? उनका स्वरूप सूक्ष्म, अति कोमल, लुभावना, किशोर अवस्था का सुन्दर है।

जो अरवा होए अर्स की, सो लीजो दिल धर।
सुच्छम सूरत सोभा बड़ी, सो सुनियो पड़उत्तर।।२५ ।।

जो परमधाम की रूहें हों वह इसको दिल में विचार कर लेना। श्री राजजी महाराज के सूक्ष्म स्वरूप की शोभा बहुत भारी है, इसीलिए अपने प्रश्न का उत्तर सुनो।

कह्या निमूना एक भांत का, अंग खूबी इस्क सागर।
खुसबोए नरम चकलाइयां, सब सागर कहे यों कर।।२६ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग की खूबी और इश्क सागर के समान है। यह एक नमूने के लिए बताया है। इसके अन्दर खुशबू, नरमाई, चकलाइयां (लम्बाई-चौड़ाई) इतनी अधिक हैं कि उनको सभी सागर के समान बेशुमार कहते हैं।

जो रंग कहूं गौर का, तो सागर मेर तरंग।
जो कहूं लाल मुख अधुर, हुए सागर लाल सुरंग।।२७ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के गोरेपन के रंग का वर्णन करती हूं तो उसकी तरंगें पहाड़ के समान दिखती हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की तथा होंठों की लालिमा बताती हूं, तो चारों तरफ लाल रंग ही दिखाई देता है, इसलिए सागर की उपमा दी है।

Nijanand App

हक के मुख का नूर जो, सो नूरै सागर जान।
तेज जोत या सलूकियां, सोभा सागर भरया आसमान।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द का नूर इतना बेशुमार है कि इसे नूर का ही सागर समझो। मुख के तेज, जोत, सलूकियों की शोभा से आसमान भरा पड़ा है जो सागर के समान दिखाई देता है।

सोभा हक सूरत की, सागर भी कहे न जांए।
ए सोभा अति बड़ी है, पर सो आवे नहीं जुबांए।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज की शोभा सागर के समान भी नहीं कही जाती। यह तो सागर से भी बहुत बड़ी है जो जबान से वर्णन करने में नहीं आती।

सागर कहे यों जान के, कहे दुनियां में बड़े ए।
पड़या सागर से ना निकसे, कही अंग सोभा इन वास्ते।। ३० ।।

मैंने जानकर यह उपमा दी है, क्योंकि सागर ही दुनियां में सबसे बड़ा है। जैसे सागर में से कोई निकल नहीं पाता, वैसे ही श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा से कोई निकल नहीं सकता। जहां देखते हैं वहीं अटक जाते हैं।

यों लग्या आसिक एक अंग को, सो तहां हीं हुआ गलतान।
इनसें कबूं ना निकसे, तो कहे सागर अंग सुभान।। ३१ ।।

आशिक रूहें जिस किसी एक अंग को देख लेती हैं, वहीं गलितगात हो जाती हैं। फिर कभी वहां से निकल नहीं सकती, इसलिए श्री राजजी महाराज के अंग को सागर कहा है।

ए रस रंग उपले केते कहूं, कई विध जिनस जुगत।
फेर फेर देख देख देखहीं, रूह क्योंए न होए तृपित।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के ऊपर कई तरह के रस, रंग और सब खूबियां दिखाई देती हैं, जिसे रूहें बार-बार देखती हैं फिर भी तृप्त नहीं होतीं।

सेहेज अन्दर के पाइए, मुख देखे हक सूरत।
रस बस एक हो रहीं, जो रूहें माहें खिलवत।। ३३ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को देखें तो उनके अन्दर के सहज स्वभाव की पहचान होती है। मूल-मिलावा में बैठी रूहें श्री राजजी महाराज के आनन्द में एक रस होकर बैठी हैं।

जो गुन हक के दिल में, सो मुख में देखाई देत।
सो देखें अरवाहें अर्स की, जो इत हुई होए सावचेत।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो गुण हैं, वह सब उनके मुखारबिन्द पर दिखाई देते हैं। परमधाम की रूहें जिन्हें यहां जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया है, वह इन गुणों को देख सकती हैं।

मुख बोले पीछे पाइए, जो दिल अन्दर के गुन।
पर मुख देखे पाया चाहे, जो अन्दर गुझ रोसन।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के अन्दर कितने गुण भरे पड़े हैं जो मुख से बोलने के बाद ही पता चलते हैं, परन्तु मेरी रूह श्री राजजी के बिना बोले श्री राजजी के दिल के अन्दर की बातें जानना चाहती है।

Nijanand App

जो गुन हिरदे अन्दर, सो मुख देखे जाने जांए।
ऊपर सागरता पूरन, ताथें दिल की सब देखाए।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल के अन्दर जितने गुण हैं वह मुखारबिन्द से ही देखे जा सकते हैं, क्योंकि मुखारबिन्द के ऊपर सभी दिल के गुण सागर के समान दिखाई देते हैं।

मुख मीठा सागर पूरन, मुख मीठा सागर बोल।
मेहेर सागर दृष्ट पूरन, लई इस्क सागर माहें खोल।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज का मीठा मुखारबिन्द और उनकी मीठी बोली सागर के समान भरपूर हैं। उनकी मेहर की नजर भी सागर के समान भरपूर है। इन सभी गुणों को इश्क के तन, ब्रह्मसृष्टि ने अपने दिल में ले लिया है।

यों गुन सागर केते कहूं जो देखत सुख के रंग।
कई सुख नेहेरें किरना चलें, कई सागर सुख तरंग।। ३८ ।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज के अन्दर गुण, जो सागर के समान हैं, कैसे कहूं? इनके सुख वही जानते हैं जो देखते हैं। श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द से इस तरह कई तरह की सुख की नहरें और तरंगें चलती हैं।

कई रस रंग एक गौर में, एक रंग माहें कई रस।
क्यों बरनों आगे मोमिनों, ए मुख मासूक अजीम अर्स।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरेपन में कई तरह के रंग और आनन्द भरे पड़े हैं। एक रंग में कई-कई तरह के रसों का आनन्द मिलता है। परमधाम में विराजमान माशूक श्री राजजी महाराज के मुख की शोभा का वर्णन मोमिनों के आगे कैसे करूं?

एक सलूकी में कई चकलाइयां, एक चकलाइएं कई सलूक।
ए सरूप केहेते आगे मोमिन, दिल होत नहीं टूक टूक।। ४० ।।

मुखारबिन्द की बनावट में कई चकलाइयां हैं और एक चकलाई में कई सलूकियां हैं। ऐसे स्वरूप का वर्णन मोमिनों के आगे करने से दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

दोऊ तरफ सोभा कान भूखन, बीच नासिका सोभे दोऊ नैन।
तिलक निलाट अति उज्जल, दोऊ अधुर मधुर मुख बैन।। ४१ ।।

मुखारबिन्द के दोनों तरफ कानों में आभूषणों की शोभा है और उनके बीच नासिका तथा नासिका के दोनों तरफ नैनों की शोभा है। श्री राजजी के माथे पर तिलक बहुत सुन्दर दिखाई देता है तथा मुखारबिन्द के दोनों होंठों की बोली बड़ी मधुर लगती है।

सिर मुकट एक भांत का, क्यों कहूं जुबां रंग नंग।
ना देख सकों नूर नजरों, कई किरने उठें तरंग।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर एक विशेष तरह का मुकुट है। जिसके नगों के रंगों का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूं? उसमें कई तरह की किरणें तथा तरंगें उठती हैं जिसके नूर को मैं अपनी नजर से नहीं देख सकती।

Nijanand App

केहे केहे जुबां एता कहे, जो जोत भर्‌या अवकास।
आसमान जिमी भर पूरन, अब किन विध कहूं प्रकास।।४३।।

बार-बार कहने पर जबान से इतना ही कहा जा सकता है कि नगों की जोत आकाश में भरी है। आसमान, जमीन भी उनकी किरणों और तरंगों से भरपूर है। अब उनके प्रकाश की शोभा को कैसे कहें?

इन विध सोभा मुकट की, ए जुबां क्यों करे बरनन।
सिर सोभे नूरजमाल के, नीके देखें रूह मोमिन।।४४।।

मुकुट की ऐसी शोभा का वर्णन यहां की जबान कैसे करे, जो श्री राजजी के सिर पर शोभायमान है, इसको रूहें अच्छी तरह से देखती हैं।

ए नंग जवेर केहेत हों, सो सब्द सुपन जिमी ले।
ए अर्स जवेर भी क्यों कहिए, जो सिनगार हक बका के।।४५।।

मुकुट के एक नग या जवेर का वर्णन करती हूं। सब संसार की उपमा देकर परमधाम के जवेर का वर्णन कैसे कहा जाए जो श्री राजजी महाराज के अखण्ड सिनगार का ही रूप है।

होत जवेर पैदा जिमी से, नंग अर्स में इन विध नाहें।
जोत पूरन अंग ले खड़ी, रूह जैसी चाहे दिल माहें।।४६।।

एक जवेर जो जमीन से पैदा होता है। परमधाम में नगों में पैदा होने की हकीकत ही नहीं है। रूह जैसा चाहती है अंग की शोभा वैसी ही बन जाती है।

असल तन जिनों अर्स में, सो कर लीजो दिल विचार।
हक के सिर का मुकट, सो सोभा क्यों आवे माहें सुमार।।४७।।

जिनके नूरी तन परमधाम में हैं, वह इसको दिल से विचार कर लेना। श्री राजजी महाराज के मुकुट की शोभा बेशुमार होने से मैं कैसे कहूं?

यों ही है बीच अर्स के, जिनों जो सोभा प्यारी लगत।
हर रूह अर्स अजीम की, दिल माफक देखत।।४८।।

परमधाम की यही हकीकत है। जिसको जो शोभा अच्छी लगती है उस रूह के दिल की चाहना के अनुसार ही श्री राजजी महाराज का सिनगार दिखाई देने लगता है।

तुम इत भी माफक इस्क के, देखियो कर सहूर।
हिसाब न सोभा मुकट की, ए जुबां क्या करे मजकूर।।४९।।

हे मोमिनो! तुम इस संसार में भी अपने इश्क के अनुसार ही विचार करके देखना। वैसे श्री राजजी महाराज के मुकुट की शोभा बेहिसाब है। यहां की जबान उसे कैसे वर्णन करे?

हक सूरत सलूकी क्यों कहूं, महंमदें कही अमरद।
किसोर कही मसीय ने, सोभा कही न जाए माहें हद।।५०।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की सलूकी कैसे कहूं? रसूल साहब ने भी इसे अमरद कहा है। श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने इसे किशोर कह दिया है। ऐसे सुन्दर स्वरूप की शोभा इस हद के संसार में कही नहीं जा सकती।

Nijanand App

अति सुन्दर सूरत अर्स की, ताके क्यों कहूं वस्तर भूखन।
जामा पटुका इजार, माहें सिफत न आवे सुकन॥५१॥

श्री राजजी महाराज का परमधाम का स्वरूप अति सुन्दर है तो फिर उनके वस्त्र और आभूषणों का कैसे बयान करूं? जामा, पटुका, इजार में कई तरह की सिफत भरी पड़ी है, जिनको शब्दों में कहना सम्भव नहीं है।

केहे केहे मुख एता कहे, नूरै के वस्तर।
मैं केहेती हों बुध माफक, ज्यादा जुबां चले क्यों कर॥५२॥

मैं बार-बार अपनी बुद्धि से इतना ही कहती हूं कि वस्त्र नूर के हैं। इससे ज्यादा वर्णन मेरी जबान से नहीं हो सकता।

सोभा सलूकी मुख की, और सलूकी भूखन।
और सलूकी वस्तर की, ए जानें अरवा अर्स के तन॥५३॥

मुख की, वस्त्रों की तथा आभूषण की सलूकी की शोभा रूहें ही जानती हैं जिनके तन परमधाम में हैं।

रंग वस्तरों तो कहूं, जो दस बीस रंग होए।
इन सुपन जिमी जो वस्तर, तामें कई रंग देखत सोए॥५४॥

वस्त्रों के रंगों का वर्णन करना तभी सम्भव है यदि दस बीस रंग हों। सपने के संसार के वस्त्रों के भी कई रंग दिखाई देते हैं।

तो अर्स वस्तर क्यों रंग गिनों, और करके दिल अटकल।
बेसुमार ल्याऊं सुमार में, यों मने करत अकल॥५५॥

परमधाम के वस्त्रों के रंग दिल में अनुमान लगाकर कितने गिनें? मेरी बुद्धि मना भी करती है। फिर भी बेशुमार रंगों को शुमार में लाकर वर्णन करती हूं।

है बड़ी लड़ाई इन बात में, जब सहूर करत अर्स दिल।
रूह तो मेरी इत है नहीं, हुकम केहेवत ऊपर मजल॥५६॥

जब अपने अर्श दिल से विचार करती हूं तो सबसे बड़ा झगड़ा दिल में इस बात का होता है कि संसार में मेरी परआतम तो है नहीं। यह सब श्री राजजी का हुकम कहलवा रहा है।

जामा अंग को लग रह्या, हार दुगदुगी हैड़े पर।
ऊपर अति झीनी झलकत, जुड़ बैठी चादर॥५७॥

श्री राजजी महाराज का जामा अंग पर टाइट फिट है। उसी तरह से हार और दुगदुगी श्री राजजी महाराज के गले में छाती पर शोभा देते हैं। जिनके ऊपर बहुत बारीक चादर है जिसकी झलक शोभा देती है, जो गले में चिपकी है।

जामें ऊपर जो भूखन, जो कण्ठ पेहेरे हैं हार।
सो कई नंग जंग करत हैं, अवकास न माए झलकार॥५८॥

जामे के ऊपर जो आभूषण पहने हैं, गले में हार पहने हैं, उनके कई नगों की जोत आकाश में जगमग करती जंग कर रही है।

Nijanand App

याही जिनस बाजू बंध, और फुंदन लटकत।
ए सबे हैं एक रस, पर रंग कई विध जंग करत।।५९ ।।

यही हकीकत बाजूबन्ध और उनके लटकते फुंदनों की है। यह सब एक रस हैं, पर इनके रंगों की किरणें कई तरह से टकराती हैं।

हस्त कमल काड़ों कड़े, माहें कई रंग कई बल।
सो रूह लेवे विचार के, आगूं चले न जुबां अकल।।६० ।।

हस्त कमल के कड़ों में कई तरह के घुमाव, रंग हैं जिनका वर्णन करने में यहां की अक्ल और जबान असमर्थ है। रूहों को स्वयं विचार करके अनुभव करना होगा।

याही विध हैं पोहोंचियां, तिनमें कई रंग नंग कंचन।
रंग गिनती केहेते सकुचों, जानों क्यों कहूं सुमार सुकन।।६१ ।।

इसी तरह से पोहोंची की शोभा है जिसमें कई तरह के रंगों के नग कंचन में जड़े हैं। रंगों की गिनती गिनने में संकोच लगता है, क्योंकि यह बेशुमार हैं। यहां के शब्दों से कहना सम्भव नहीं है।

किन विध कहूं हथेलियां, अति उज्जल रंग लाल।
केहेते लीकां दिल लरजत, ए अंग नूरजमाल।।६२ ।।

श्री राजजी महाराज की हथेलियों की हकीकत कैसे कहूं? उनका रंग उज्ज्वल और लाल है। उनकी रेखाएं वर्णन करने में दिल कांपता है, क्योंकि यह अंग श्री राजजी महाराज के हैं।

अंगुरियां हस्त कमल की, याको दिया न निमूना जाए।
वचन कहूं विचार के, तो भी रूह पीछे जाए पछताए।।६३ ।।

श्री राजजी महाराज की हाथ की उंगलियों का नमूना है ही नहीं। संसार में बैठकर विचारती हूं और झूठी उपमा देती हूं। यह लगती नहीं तो रूह पछताती है।

हर एक अंगुरी मुंदरी, हर मुंदरिएं कई रंग।
सो जोत भरत आकास को, कहूं किन विध कई तरंग।।६४ ।।

श्री राजजी महाराज की हर एक उंगली में मुंदरी है और हर मुंदरी में कई रंग हैं, जिनकी किरणें आकाश में भर गई हैं। अब उनकी तरंगों का वर्णन कैसे करें?

जो जोत नख अंगुरी, जुबां आगे चल न सकत।
फेर फेर वचन एही कहूं, अंबर जोत भरत।।६५ ।।

उंगली के नख की जोत का वर्णन के लिए यहां की जबान चलती नहीं। बार-बार यही बात कहनी पड़ती है कि जोत आकाश में भर रही है।

याही विध नख चरनों के, नख जोत एही सब्द।
एही खूबी फेर फेर कहूं, क्या करों छूटे न जुबां हद।।६६ ।।

इसी तरह से चरण कमलों के नाखून की हकीकत है, जिनकी जोत का वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। इस शोभा के लिए बार-बार यही कहना पड़ता है कि संसार की जबान से इसका वर्णन सम्भव नहीं है।

Nijanand App

कोमलता चरन अंगुरी, और चरन तली कोमल।
ए दिल रोसन देख के, हाए हाए खाक न होत जल बल।।६७ ।।

चरण कमलों की उंगली तथा चरणों की तली की कोमलता और तेज देखकर हाय! हाय! यह दिल जल बलकर खाक क्यों नहीं हो जाता?

चारों भूखन चरन के, माहें रंग जोत अपार।
दिल न लगे बिना गिनती, जानों क्यों ल्याऊं माहें सुमार।।६८ ।।

चरण कमलों के चारों आभूषण झांझरी, घुंघरी, काम्बी, कड़ला में रंगों की जोत बेशुमार है। उनका वर्णन करने में बिना गिनती दिल नहीं लगता है। कैसे इनको शुमार में लाकर रंगों का वर्णन कर दूं?

सुमार कहे भी ना बने, दिल में न आवे बिना सुमार।
तार्थे मुस्किल दोऊ पड़ी, पड़या दिल माहें विचार।।६९ ।।

शुमार में भी लाने से कहा नहीं जाता, क्योंकि बिना शुमार के दिल में ही नहीं आते, इसलिए यह दोनों बातें दिल में विचार करने के लिए मुश्किल हो गई है।

चरन हक सूरत के, तिन अंगों के भूखन।
रूह लेसी सोभा विचार के, जाके होसी अर्स में तन।।७० ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल और उनके अंगों के आभूषणों की शोभा को रूहें विचारकर ग्रहण कर लेंगी, क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में हैं।

याही वास्ते कहे सागर, सोभा न आवे माहें सुमार।
सागर सोभा भी ना लगे, सब्द में न आवे सोभा अपार।।७१ ।।

शोभा शुमार में न आने के कारण ही सागर की उपमा दी है। वैसे शोभा तो इतनी बेशुमार है कि सागर की उपमा भी नहीं लगती।

जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान।
हकें मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या माहें फुरमान।।७२ ।।

जो शोभा श्री राजजी की बताई है ऐसी ही श्री श्यामाजी की समझ लो, जिनको कुरान में श्री राजजी महाराज ने अपना माशूक कहा है।

और सोभा जुगल किसोर की, रूह अल्ला ने कही इत।
उसी इलम से मैं केहेत हों, जो कहावत हुकम सिफत।।७३ ।।

श्री राजश्यामाजी की शोभा का वर्णन रूह अल्लाह (श्री देवचन्द्रजी) ने यहां किया है। इसी जागृत बुद्धि के ज्ञान से मैं वर्णन करती हूं, जिसे धनी का हुकम कहलवा रहा है।

गौर गाल सुन्दर हरवटी, फेर फेर देखों मुख लाल।
अर्स कर दिल मोमिन, माहें बैठे नूरजमाल।।७४ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरे गाल, सुन्दर हरवटी (ठोड़ी) तथा लाल मुखारबिन्द को बार-बार देखती हूं। मेरे धनी श्री राजजी महाराज ऐसी सुन्दर शोभा से मेरे दिल में बैठे हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं सागर चातुरी, कई सुख अलेखे उतपंन।
कई पैदा होत एक सागरें, नए नए सुख नौतन।।७५ ।।

श्री राजजी महाराज की चतुराई रूपी सागर की शोभा का कैसे वर्णन करूं? जिसमें कई तरह के सुख बेशुमार मिलते हैं। मुखारबिन्द की शोभा के सागर से कई बेशुमार सुख पैदा होते हैं। एक ही सागर से नित्य ही नए नए सुख मिलते हैं।

हक मुख सब विध सागर, सुख अलेखे अपार।
ए सुख जानें निसबती, जिन निस दिन एही विचार।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द में सब तरह के सागर और सब तरह के सुख अनगिनत बेशुमार हैं। इस सुख को श्री राजजी महाराज की अंगना जानती है, जो रात-दिन उसी में मग्न रहती है।

सब सागर सुख मई, सब सुख पूरन परमान।
अति सोभित मुख सुन्दर, ए जो वाहेदत का सुभान।।७७ ।।

वाहेदत के सुभान श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा में सभी सागर सुख से भरपूर हैं, सभी सुख देने वाले हैं।

अंग देखे जेते सूरत के, सो तो सारे इस्क सागर।
गुन हक बाहेर देखावत, इन बातों मोमिन कादर।।७८ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप के जितने अंगों को मैंने देखा है, वह सब इश्क से भरे सागर के समान भरपूर दिखाई देते हैं। मोमिन ऐसे समर्थ हैं कि जिन्हें श्री राजजी महाराज अपने बाहिरी सब गुण दिखला देते हैं।

इस्क देखावें चढ़ता, सब कलाओं सुखदाए।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, पर इस्कें देत देखाए।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज की सब कलाएं सुख देने वाली हैं तथा सभी में नया से नया इश्क दिखाई देता है। परमधाम में घट-बढ़ नहीं होती। यह तो इश्क से ही चढ़ती हुई शोभा बताई है।

केहेना सुनना देखना, अर्स चीज न इस्क बिन।
जो कछू सुख अखंड, सो सब इस्क पूरन।।८० ।।

परमधाम में कहना, सुनना, देखना सभी चीजें इश्क के बिना नहीं हैं। परमधाम में जो कुछ भी है, सुखदायी है, अखण्ड है और इश्क से भरपूर है।

जो कोई अर्स जिमीय में, पसु या जानवर।
सो सरूप सारे इस्क के, एक जरा ना इस्क बिगर।।८१ ।।

परमधाम की जमीन में पशु या जानवर सभी स्वरूप, श्री राजजी महाराज के इश्क से हैं। इश्क के बिना दूसरा और कुछ नहीं है।

दुनी पंखी बिछोहा न सहे, वह आगेही उड़े अरवा।
गिरत है आकास से, होत है पुरजा पुरजा।।८२ ।।

दुनियां का एक पक्षी भी इश्क का वियोग नहीं सहन करता। वह पहले ही आकाश से गिरकर टुकड़े-टुकड़े होकर कुरबानी दे देता है।

Nijanand App

ए पंखी प्रीत दुनीय की, होसी अर्स के कैसे जानवर।
ए निमूना इत ना बने, और बताइए क्यों कर।।८३।।

इस दुनियां के पक्षी की प्रीति ऐसी है तो परमधाम के जानवर कैसे होंगे? यह नमूना भी यहां पर फिट (उपयुक्त) नहीं बैठता तो फिर और कैसे बताएं?

पूर असल जिमी बराबर, और उज्जल जोत प्रकास।
कहूं कम ज्यादा न देखिए, और जोत भरयो अवकास।।८४।।

परमधाम की जमीन में इश्क, जोश, जोत, प्रकाश और उज्ज्वलता सब जगह एक समान भरपूर है। सब जगह आकाश में इनकी किरणें फैली हैं। कहीं भी कम ज्यादा नहीं हैं।

पसु पंखी सब में पूरन, दिल चाह्या पूरन बन।
इन जिमी पसु पंखियों, जिकर करे रोसन।।८५।।

पशु-पक्षियों में, वनों में, सबमें इश्क भरपूर है। वह सर्वदा श्री राजजी का ही जिक्र करते हैं।

और आसिक वाहेदत के, इन हूं बड़ी पेहेचान।
एही खूब खेलौनें हक के, मुख मीठी सुनावें बान।।८६।।

यह पशु-पक्षी रूहों के भी आशिक हैं। इनको रूहों की बड़ी पहचान है। यह श्री राजजी महाराज की खूबी के खिलौने हैं जो अपनी सुन्दर मीठी बोली सुनाते हैं।

खूबी खुसाली पूरन, सुन्दर सोभा चित्रामन।
नैन श्रवन या चोंच मुख, गान करें निस दिन।।८७।।

इन खूब खुशालियों के सुन्दर चित्रकारी के नैन, कान, चोंच या मुख सब इश्क से भरपूर हैं और रात-दिन श्री राजजी का जिक्र करते हैं।

इस्क इनों के क्यों कहूं, जो हक के पिलायल।
कोई केहे न सके इनों बड़ाई, ए अर्स जिमी असल।।८८।।

पशु-पक्षियों के इश्क का कैसे वर्णन करें जो श्री राजजी के इश्क के पीने वाले हैं। इन परमधाम के पशु-पक्षियों की बड़ाई कोई नहीं कह सकता।

सब गुन इनों में पूरन, नरम खूबी खुसबोए।
मुख बानी जोत चित्रामन, ए हकें रिझावें सोए।।८९।।

इन पशु-पक्षियों में सभी गुण, सुगन्धि, खूबी, नरमाई भरी है। इनके चिन्हों की जोत तथा मुख की रसीली वाणी श्री राजजी महाराज को रिझाती है।

हाल चाल सब इस्क की, खान पान सब साज।
सोभा सिनगार सब इस्क के, अर्स इस्क को राज।।९०।।

इन पशु-पक्षियों की करनी, रहनी, खान-पान, साज, शोभा, सिनगार सब इश्क के हैं। परमधाम में इस तरह से सारा इश्क का ही राज्य है।

Nijanand App

सोभा क्यों कहूं हक सूरत की, जाको नामै नूरजमाल।
ए दिल आए इस्क आवत, याको सहूरें बदलें हाल।। ९१ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का कैसे वर्णन करूं? वह तो शोभा के सागर हैं और उनका नाम ही नूरजमाल है। इनके दिल में विचार आते ही इश्क आ जाता है। विचार करने मात्र से ही रूहों की हालत बदल जाती है।

हक सूरत अति सोहनी, अति सुन्दर सोभा कमाल।
बैठे हक इस्क छाया मिने, दूजे इस्क लगे दिल झाल।। ९२ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप अति मन मोहक है। सुन्दरता तो कमाल की है। सदा इश्क में ही गर्क रहते हैं। दूसरों को तो इश्क की ज्वाला जलाती है।

और कछुए दिल है नहीं, बिना हक वाहेदत।
और जरा कित कहूं नहीं, वाहेदत इस्क निसबत।। ९३ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में अपनी रूहों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। केवल अपनी अंगनाओं के लिए ही इश्क भरा पड़ा है।

जित रहे आग इस्क की, तित देह सुपन रहे क्यों कर।
बिना मोमिन दुनी न छूटहीं, दुनी ज्यों बिन जलचर।। ९४ ।।

जहां इश्क की आग जल रही हो, वहां सपने का तन कैसे रह सकता है? रूहों के बिना दुनियां कोई छोड़ नहीं सकता। जैसे जल के जीव जल के बिना नहीं रहते, वैसे मोमिन इश्क के बिना नहीं रहते।

ब्रह्मसृष्ट घर इस्क में, और दुनियां घर कुफर।
मोमिन जलें न आग इस्कें, दुनी जाए जल बर।। ९५ ।।

मोमिनों का घर इश्क में ही है और दुनियां का घर झूठ में है। मोमिन इश्क की आग में नहीं जलते, जबकि दुनियां खाक हो जाती है।

आग इस्कें जलें ना मोमिन, आसिकों इस्क घर।
इनों लगे जुदागी आग ज्यों, रूहें भागें देख कुफर।। ९६ ।।

मोमिन इश्क की आग में नहीं जलते। इनका इश्क ही घर है। जिसकी जुदाई इन्हें आग की तरह तड़पाती है। संसार को तो देखकर ही छोड़ देते हैं।

रूहें आइयां अर्स अजीम से, दई नुकते इलमें जगाए।
और उमेदां सब छोड़ाए के, हकें आप में लैयां लगाए।। ९७ ।।

रूहें परमधाम से आईं। श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से इनको जगा दिया है। इनकी सब चाहनाओं को छुड़ाकर श्री राजजी महाराज ने अपने आप में लगा लिया है।

वस्तर भूखन सब इस्क के, इस्क सेज्या सिनगार।
इस्क हक खिलवत, रूहें हादी हक भरतार।। ९८ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी वस्त्र, आभूषण, सेज्या, सिनगार सब इश्क के हैं। उनकी खिलवत में रूहें, श्री श्यामाजी, श्री राजजी महाराज इश्क के ही तन हैं।

Nijanand App

जुगल सरूप जब बैठत, इस्क जानें दिल की सब।
इस्क बोल काढ़ें जिन हेत को, उत्तर पावे दूजा दिल तब।। ९९ ।।

श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी युगल स्वरूप जब सिंहासन पर बैठते हैं तो इश्क उनके दिल की सभी बातों को जानता है। प्यार करके आपस में जब इश्क के वचन बोल देते हैं तो दूसरे को खुशी होती है, उत्तर मिल जाता है।

जुगल सरूप इत बैठत, दोऊ दिल की पावें मोमिन।
एक वचन मुख बोलते, पावें पड़उत्तर आधे सुकन।। १०० ।।

युगल स्वरूप जब मिलकर बैठते हैं तो मोमिन के दिल की बातों को समझ जाते हैं। उनके एक वचन का आधा शब्द बोलने से पहले ही उत्तर मिल जाता है।

इस्क बोले सुनें इस्क, सब इस्कै की बिसात।
जो गुझ दिल मासूक की, सो आसिक से जानी जात।। १०१ ।।

वहां इश्क ही बोलता है, इश्क ही सुनता है और इश्क का ही सब साजो सामान है। श्री राजजी महाराज के दिल में जो गुझ (गुप्त) बातें हैं, वह आशिक रूहें इश्क से ही जान जाती हैं।

मोमिन आसिक हक के, सो हक की जानें दें खबर।
हकें तो किया अर्स अपना, जो थे मोमिन दिल इन पर।। १०२ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज के आशिक हैं। वही श्री राजजी महाराज की हकीकत की पहचान कराते हैं। ऐसे मोमिन श्री राजजी महाराज के दिल के भेद को अर्श में जानते थे, इसलिए इनके दिल को अपना अर्श करके बैठे हैं।

आसिक मासूक दो अंग, दोऊ इस्कें होत एक।
तो आसिक मासूक के दिल को, क्यों ना कहे गुझ विवेक।। १०३ ।।

आशिक रूहें, माशूक श्री राजजी महाराज यह दो अंग हैं, परन्तु इश्क से दोनों एक हैं, इसलिए आशिक रूहें अपने माशूक श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें क्यों नहीं बताएं?

तो मोमिनों दिल अपना, जीवते अर्स केहेलाया।
जो इस्क मासूक के दिल का, ऊपर सरूपै देखें पाया।। १०४ ।।

इसलिए मोमिनों का दिल संसार में भी श्री राजजी महाराज का अर्श कहलाया, क्योंकि इन्होंने माशूक श्री राजजी महाराज के दिल के इश्क को ऊपर के सिनगार देखने से ही जान लिया।

जो कछुए चीज अर्स में, सो सूरत सब इस्क।
सो लाड़ लज्जत सुख लेत हैं, सब रूहें हादी हक।। १०५ ।।

परमधाम में जो कुछ भी चीजें हैं सब श्री राजजी महाराज के स्वरूप का इश्क हैं, इसलिए श्री राजश्यामाजी और रूहें बड़े लाड़-प्यार से इश्क की लज्जत लेते हैं।

इस्क सुख अर्स बिना, कहूं पैदा दुनी में नाहें।
तो हकें नाम धराया आसिक, जो इस्क आपके माहें।। १०६ ।।

इश्क के सुख परमधाम के बिना दुनियां में कहीं नहीं हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने अपना नाम आशिक कहा है, क्योंकि वे इश्क के ही स्वरूप हैं। उनके सिवाय किसी के पास इश्क नहीं है।

Nijanand App

या तो इस्क हादी मिने, जाको हकें कह्या मासूक।
हक का सुकन सुन आसिक, हाए हाए होत नहीं टूक टूक।। १०७ ।।

या फिर इश्क श्री श्यामाजी के अन्दर है, जिनको श्री राजजी ने अपना माशूक कहा है। हाय! हाय! श्री राजजी महाराज के ऐसे वचनों को सुनकर भी यह तन टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होता?

सुकजीएं भी यों कह्या, प्रेम चौदे भवन में नाहें।
ब्रह्मसृष्ट ब्रह्म निसबती, प्रेम जो है तिन माहें।। १०८ ।।

शुकदेवजी ने भी कहा है कि चौदह लोकों में प्रेम कहीं नहीं है। प्रेम पारब्रह्म की अंगना ब्रह्मसृष्टियों में ही है।

और इस्क माहें रूहन, हकें अर्स कह्यो जाको दिल।
हकें दिल दे रूहों दिल लिया, यों एक हुए हिल मिल।। १०९ ।।

इश्क, रूहों में ही है जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श कहा है। श्री राजजी महाराज ने अपना दिल रूहों को देकर उनका दिल ले लिया है, इस प्रकार दोनों एकाकार हो गए हैं।

ना तो हक आदमी के दिल को, अर्स कहें क्यों कर।
पर ए आसिक मासूक की वाहेदत, बिना आसिक न कोई कादर।। ११० ।।

वरना श्री राजजी महाराज संसार के आदमी के दिल को अपना अर्श कैसे कह सकते हैं, परन्तु यह तो आशिक माशूक की एकदिली है। बिना श्री राजजी महाराज के दूसरा कोई आशिक कहलाने के योग्य भी नहीं है।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, रूहें उतरी लाहूत से।
अहेल अल्ला तो कहे, जो इस्क है इनों में।। १११ ।।

कुरान में लिखा है रूहें परमधाम से खेल में उतरी हैं। इनके तनों में ही इश्क है, इसलिए इनको खुदा के वारिस कहा है।

इस्क है वाहेदत में, कहूं पाइए न दूजे ठौर।
दूजे ठौर तो पाइए, जो होवे कोई और।। ११२ ।।

इश्क वाहेदत के मोमिनों में ही है। परमधाम के बिना इश्क कहीं नहीं है। संसार तो सारा नाशवान है।

इस्क निसानी हक की, सो पाइए सांच के माहें।
सांच अर्स आगूं वाहेदत के, ए झूठ जरा भी नाहें।। ११३ ।।

श्री राजजी महाराज इश्क के स्वरूप हैं जिनकी पहचान परमधाम में ही मिलती है। परमधाम सदा अखण्ड है। उसके आगे यह झूठा संसार कुछ भी नहीं है।

ए झूठा फरेब कछुए नहीं, जामें आए अहमद मोमिन।
एह निसानी इस्क की, जाके असल अर्स में तन।। ११४ ।।

इस झूठे संसार में, जो कुछ भी नहीं है, श्यामा महारानी और मोमिन खेल देखने आए हैं। श्यामा महारानी और रूहों को ही केवल इश्क के स्वरूप क्यों कहा है? क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में है।

Nijanand App

इस्क नाम अर्स से, खेल में ल्याए महंमद।
ए क्या जानें नसल आदम, जो खाकीबुत सब रद।। ११५ ।।

इश्क शब्द को रसूल साहब ही दुनियां में लेकर आए। यह जो आदम की औलाद हैं, सब मिट्टी के पुतले और नष्ट होने वाले हैं, इसलिए यह खुदाई इश्क को क्या जानें?

ए जाने अरवाहें अर्स की, जिनकी इस्क बिलात।
ए क्या जाने पैदा कुंन की, हक आसिक मासूक की बात।। ११६ ।।

इस बात के भेद को परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जिनका इश्क सबसे ज्यादा है। दुनियां के पामर (तुच्छ) जीव जो कुंन से पैदा हुए हैं, वे आशिक श्री राजजी महाराज और माशूक श्यामा महारानी और रूहों की बात क्या समझें?

अर्स इस्क हक हादी रूहें, याकी दुनी न जाने कोए।
इस्क अर्स सो जानहीं, जो कायम वतनी होए।। ११७ ।।

परमधाम के इश्क को श्री राजश्यामाजी और रूहें ही जानती हैं। दुनियां नहीं जानती। परमधाम के इश्क के जानने वाले अखण्ड परमधाम के रहने वाले ही हैं।

दुनियां चौदे तबकों, किन निरने करी न सूरत हक।
तिन हक के दिल में पैठ के, करूं जाहेर हक इस्क।। ११८ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में श्री राजजी महाराज के स्वरूप का किसी ने भी आज तक निर्णय नहीं किया। अब श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज के दिल में बैठकर उनके इश्क को जाहिर करती हूं।

तो अर्स हुआ दिल मोमिन, जो जाहेर किया गुझ ए।
हक हादी गुझ मोमिन, कोई और न कादर इनके।। ११९ ।।

श्री राजजी के दिल की छिपी बातों के रहस्य जाहिर करने के कारण ही मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। श्री राजश्यामाजी के गुझ रहस्यों के भेद मोमिनों के अतिरिक्त और कोई नहीं कह सकता।

तो पाया खिताब अर्स का, ना तो दिल आदमी अर्स क्यों होए।
ए हक हादी मोमिन बातून, और बूझे जो होवे कोए।। १२० ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श का खिताब मिला। वरना आदमी का दिल अर्श कैसे हो सकता है? श्री राजश्यामाजी और रूहों की खास बातें हैं जिन्हें और कोई नहीं कह सकता।

मुखारबिंद मेहेबूब का, सुख देत हक सूरत।
जुगल किसोर सोभा लिए, दोऊ बैठे एक तखत।। १२१ ।।

श्री राजजी महाराज हमारे लाड़ले सुभान हैं। उनके मुखारबिन्द की शोभा बहुत सुख देती है। खासकर उस समय जब श्री राजश्यामाजी दोनों एक सिंहासन पर विराजमान होते हैं, उनके मुखारबिन्द बहुत सुखदाई होते हैं।

दोऊ सरूप अति उज्जल, कई जोत खूबियों में खूब।
इस्क कला सब पूरन, रस इस्क भरे मेहेबूब।। १२२ ।।

श्री राजश्यामाजी के दोनों स्वरूपों का रंग उज्ज्वल है तथा खूबियों से भरपूर है। इन दोनों के अन्दर इश्क सब कलाओं सहित भरपूर है। ऐसे हमारे मेहबूब के दोनों स्वरूपों का तन इश्क का ही है।

Nijanand App

नैन श्रवन मुख नासिका, चारों अंग गेहेरे गंभीर।
अर्स आकास सिंध तेज का, ताए चारों नेहेरें चलियां चीर।। १२३ ।।

उनके नैन, कान, मुख और नासिका चारों अंग बहुत गंभीरता लिए हैं। इन चारों की चार नहरों के तेज आकाश में जैसे सागर को चीरते हुए जाते हैं।

एक मुख के सुख में कई सुख, और कई सुख माहें नैन।
सुख केते कहूं नैन अंग के, मुख गिनती न आवे बैन।। १२४ ।।

एक मुखारबिन्द की शोभा में ही कई तरह के सुख हैं। इसी तरह से कई तरह के सुख नैनों में हैं। अब नैनों के सुख कैसे वर्णन करूं? इनकी गिनती संसार के मुख के शब्दों में नहीं आती।

श्रवन अन्दर सुख क्यों कहूं, जो सुख सागर आराम।
क्यों निकसे रूह इन से, ए अंग सुख स्यामा स्याम।। १२५ ।।

कान के अन्दर के सुख का कैसे वर्णन करूं जो आराम देने के वास्ते सुख के सागर हैं। यह श्री राजश्यामाजी के सुख देने वाले अंग हैं, जिनको देखकर रूह अलग नहीं हो सकती।

अंग रूह अर्स की नासिका, ए बल जानत रूह को कोए।
चौदे तबक सुन्य फोड़ के, इत लेत अर्स खुसबोए।। १२६ ।।

श्री राजजी महाराज के नासिका के अंग की शक्ति को परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जो चौदह तबक शून्य मण्डल को फोड़कर परमधाम की सुगन्धि लेती हैं।

ऐसा बल रूह अर्स के, तो बल हक होसी किन विध।
ए बेवरा जानें पाक मोमिन, जिन हक अर्स दिल सुध।। १२७ ।।

परमधाम की रूहों की जब इतनी शक्ति है, तो परमधाम के श्री राजजी महाराज की शक्ति क्या होगी? इसका विवरण पाक-साफ मोमिन ही जानते हैं, जिनके दिल को हक अर्श कर बैठे हैं तथा जिनकी उन्हें पहचान है।

सुख कहूं मीठी जुबान के, के सुख कहूं लाल अधुर।
के सुख कहूं रस भरे वचन, जो बोलत माहें मधुर।। १२८ ।।

श्री राजजी महाराज की मीठी जबान के, लाल होंठों के सुखों का वर्णन करूं या फिर उनके रस भरे वचनों का जो मीठी आवाज से बोलते हैं, वर्णन करूं।

दोऊ माहों माहें जब बोलहीं, तब मीठे कैसे लगत।
कोई रूह जानें अर्स की, जित हक हुकम जाग्रत।। १२९ ।।

श्री राजश्यामाजी जब आपस में बोलते हैं तो कितने प्यारे लगते हैं। इस सुख को परमधाम की वही रूहें जानती हैं जो श्री राजजी के हुकम से जागृत हो गई हों'

जानों के जोबन चढ़ता, ऐसे नित देखत नौतन।
गुन पख अंग इंद्रियां, बढ़ता नूर रोसन।। १३० ।।

श्री राजजी महाराज के गुण, पक्ष, अंग, इंद्रियां तथा जोबन नित्य नई ही नई शोभा में दिखाई देते हैं तथा उनका नूर भी सब जगह बढ़ता हुआ फैलता है।

Nijanand App

जानों के पल पल चढ़ता, तेज जोत रस रंग।
पूरन सरूप एही देखहीं, इस्क सूरत के संग।। १३१ ।।

श्री राजजी के तेज, जोत, रस और रंग पल-पल चढ़ते हुए दिखाई देते हैं। जो उनके ही इश्क के तन मोमिन हैं, उनके पूर्ण स्वरूप को वह ही देख पाते हैं।

बन्ध बन्ध सब इस्क के, और इस्कै अंगों अंग।
गुन पख सब इस्क के, सोई इस्क बोलें रस रंग।। १३२ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के सभी जोड़ इश्क से भरपूर हैं। उनके गुण, अंग, इंद्रियां और पक्ष सभी इश्क के हैं। बोली की रसना का आनन्द भी इश्क का ही है।

सब इंद्रियां इस्क की, इस्क तत्व रस धात।
पिंड प्रकृत सब इस्क के, इस्क भीगे अंग गात।। १३३ ।।

श्री राजजी महाराज की सभी इंद्रियां, तत्व, रस, धातु, तन तथा स्वभाव इश्क के हैं, अर्थात् उनका पूरा तन इश्क से सराबोर है।

बात विचार सब इस्क के, इस्कै गान इलम।
अंग क्यों कहूं इन जिमिएं, एता भी केहेत हुकम।। १३४ ।।

श्री राजजी महाराज की बातें, विचारधारा, इलम सब इश्क के हैं, इसलिए उन अंगों की शोभा इस संसार में कैसे बताएं? जितना भी बताया है, वह श्री राजजी के हुकम से ही बताया है।

सब चीजें इत इस्क की, इस्कै अर्स बिसात।
रूहें हादी अंग इस्क के, इस्क सूरत हक जात।। १३५ ।।

परमधाम की सब चीजें और सामान इश्क के हैं। यहां तक कि रूहें श्री श्यामाजी के अंग भी इश्क के हैं। परमधाम के सभी पशु, पक्षी, चल और अचल, थिरचर श्री राजजी महाराज के इश्क के ही स्वरूप हैं।

सेहेज सुभाव सब इस्क के, इस्कै की वाहेदत।
हक सरूप सब इस्क के, इस्कै की खिलवत।। १३६ ।।

परमधाम में सभी के स्वभाव, एकदिली इश्क की है। श्री राजजी महाराज के स्वरूप तथा मूल मिलावा सभी इश्क के ही हैं।

मोहोल मन्दिर सब इस्क के, ऊपर तले इस्क।
दसों दिस सब इस्क, इस्क उठक या बैठक।। १३७ ।।

महल, मन्दिर, ऊपर, नीचे, दसों दिशाओं में, परमधाम में उठने-बैठने तक में इश्क ही इश्क दिखाई देता है।

यों अर्स सारा इस्क का, और इस्क रूहों निसबत।
इस्क बिना जरा नहीं, सब हक इस्क न्यामत।। १३८ ।।

इस तरह से पूरा परमधाम इश्क का है। श्री राजजी महाराज की जो रूहें हैं सब इश्क की हैं। श्री राजजी महाराज के इश्क बिना कुछ भी नहीं है। परमधाम में सब कुछ श्री राजजी महाराज के इश्क की ही न्यामत है (स्वरूप है)।

Nijanand App

नेक कही हक इस्क की, पर इस्क बड़ा विस्तार।
इनको बरनन न होवहीं, न आवे माहें सुमार।। १३९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हमने श्री राजजी महाराज के इश्क की थोड़ी सी बात कही है, परन्तु इश्क का विस्तार बहुत भारी है और बेशुमार है। जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं है।

सुनो मोमिनों इस्क की, नेक और भी देऊं खबर।
अर्स आसिक मासूक की, ज्यों औरों भी आवे नजर।। १४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, तुमको थोड़ी सी और इश्क की हकीकत बताऊं जिससे परमधाम के श्री राजश्यामाजी का इश्क दूसरों को भी दिखाई पड़े।

रब्द हुआ इस्क का, हक हादी की खिलवत माहें।
इत कम ज्यादा है नहीं, अर्स इस्क बेवरा नाहें।। १४१ ।।

परमधाम के मूल-मिलावा में श्री राजश्यामाजी और रूहों के बीच इश्क का रब्द (वार्तालाप) हुआ जहां कम ज्यादा होता नहीं है, वहां इश्क का फैसला होता कैसे?

ए बेवरा तित होवहीं, जित बिछोहा होए।
सो तो वाहेदत में है नहीं, होए बिछोहा माहें दोए।। १४२ ।।

इश्क का फैसला वहीं सम्भव है, जहां वियोग हो। वह वियोग परमधाम में नहीं है। वियोग संसार में होता है।

हकें चाह्या करों बेवरा, देखाऊं रूहों को।
इस्क न पाइए बिना जुदागी, सो क्यों होवे वाहेदत मों।। १४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने दिल में रूहों को दिखाने के वास्ते इश्क का ब्यौरा करना चाहा, परन्तु इश्क का विवरण बिना जुदाई होता नहीं, इसलिए उसका फैसला परमधाम में कैसे हो?

ताथें दई नेक फरामोसी, रूहों को माहें अर्स।
हांसी करने इस्क की, देखें कौन कम कौन सरस।। १४४ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज ने परमधाम में रूहों को थोड़ी सी फरामोशी दी। ताकि वह देख सकें कि किसका इश्क कम और किसका इश्क ज्यादा है। ताकि रूहों पर इश्क की हंसी कर सकें।

ए झूठा खेल देखाइया, ए जो चौदे तबक।
हम जानें आए खेल बीच में, जित तरफ न पाइए हक।। १४५ ।।

श्री राजजी महाराज ने चौदह लोकों के इस झूठे खेल को इसलिए दिखाया। अब हम जानते हैं कि हम खेल में हैं। यहां पर श्री राजजी महाराज की पहचान तक कराने वाला कोई नहीं है।

इत इस्क कहां पाइए, आग पानी पत्थर पूजत।
ए खेल देख्या एक निमख का, जानों हो गई कई मुद्दत।। १४६ ।।

जहां आग, पानी, पत्थर की पूजा हो वहां श्री राजजी का इश्क कहां मिलेगा? यह तो श्री राजजी महाराज ने एक क्षण में खेल दिखाया, परन्तु लगता है कई मुद्दतें बीत गईं।

Nijanand App

झूठ हम देख्या नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर।
पट आड़े खेल देखाइया, सो देने इस्क खबर।।१४७।।

हमारी नजर के सामने झूठ टिक नहीं सकता। इससे स्पष्ट है कि हमने झूठा खेल देखा नहीं है। श्री राजजी महाराज ने इश्क की पहचान कराने के वास्ते ही फरामोशी के परदे में खेल दिखाया है।

ऐसा खेल देखाइया, जानें हम आए माहें इन।
इस्क हम में जरा नहीं, सुध हक न आप वतन।।१४८।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा खेल दिखाया है कि लगता है हम खेल में आ गए हैं और हमारे अन्दर जरा भी इश्क नहीं है। हमें श्री राजजी महाराज की, अपनी तथा घर की सुध ही नहीं है।

इन इस्कें हमारे ऐसा किया, ए जो झूठे चौदे तबक।
तिन सबों कायम किए, ऐसे हमारे इस्क।।१४९।।

हमारे इश्क ने ही चौदह तबक के झूठे जीवों को जन्म-मरण के चक्कर से छुड़ाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान कर दी।

जलाए दिए सब इस्कें, हो गई सब अगिन।
एक जरा कोई ना बच्या, बीच आसमान धरन।।१५०।।

संसार के आसमान, जमीन में जो कुछ भी है, इश्क ने सबको खाक कर दिया और सब संसार अग्नि का रूप हो गया जिससे आसमान जमीन के बीच कुछ नहीं रहा।

हम जानें इस्क न हमपे, हम पर हंससी नूरजमाल।
हमारे इस्कें ब्रह्मांड का, किया जो ऐसा हाल।।१५१।।

हम जानते थे कि हमारे पास इश्क नहीं है, इसलिए श्री राजजी महाराज हम पर हंसेंगे, परन्तु हमारे इश्क ने तो ब्रह्माण्ड का स्वरूप ही बदल दिया।

इस वास्ते खेल देखाइया, वास्ते बेवरे इस्क के।
कोई आया न गया हममें, बैठे अर्स में देखें ए।।१५२।।

श्री राजजी महाराज ने इश्क के विवरण के वास्ते ही खेल दिखाया, जो हम परमधाम में ही बैठकर देख रहे हैं। वैसे हममें से कोई यहां न आया है, न गया है।

कहे महामत हुकमें देखाइया, ऐसी कर हिकमत।
हम देख्या इस्क बेवरा, बैठे बीच खिलवत।।१५३।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के हुकम ने बड़ी हिकमत करके खेल दिखाया। जिसमें हमने मूल-मिलावा में बैठकर ही खेल देखकर इश्क का नतीजा पा लिया।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। १२१७ ।।

Nijanand App

मुखकमल मुकट छबि
मंगला चरण

याद करो हक मोमिनों, खेल में अपना खसम।
हकें कौल किया उतरते, अलस्तो-बे-रब-कुंम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! इस संसार में अपने खसम श्री राजजी महाराज को याद करो। जिन्होंने खेल में आते समय कहा कि मैं ही तुम्हारा खावंद हूं।

तब रूहों वले कह्या, बीच हक खिलवत।
मजकूर किया हकें तुमसों, वह जिन भूलो न्यामत।। २ ।।

तब हम रूहों ने मूल-मिलावा में कहा था कि बेशक, आप ही हमारे खावंद हैं। श्री राजजी महाराज ने तुमसे कई बातें की थीं। उन्हें तुम अब मत भूलो।

हुकमें ए कुंजी ल्याया इलम, हुकमें ले आया फुरमान।
दई बड़ाई रूहों हुकमें, हुकमें दई भिस्त जहान।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम ही कुरान को लाया है। हुकम ही जागृत बुद्धि का तारतम लाया है। हुकम ने ही सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर रूहों को मान दिया है।

हुकमें हादी आइया, और हुकमें आए मोमिन।
और फुरमान भेज्या इनपे, हकें कुंजी भेजी बैठ वतन।। ४ ।।

हुकम से श्री श्यामाजी आए। हुकम से मोमिन आए। जिनके वास्ते कुरान और जागृत बुद्धि का ज्ञान परमधाम से श्री राजजी ने भेजा।

और भी हुकमें ए किया, लिया रूह अल्ला का भेस।
पेहेचान दई सब असों की, माहें बैठे दे आवेस।। ५ ।।

हुकम ने ही श्री श्यामाजी का खेल में देवचन्द्रजी का भेष धारण किया तथा क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की पहचान अपने आवेश से कराई।

इलम दिया सब असों का, कहूं जरा न रही सक।
हम हादी मोमिन सब मिल, करें जारी वास्ते इस्क।। ६ ।।

क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के अर्शों के सब संशय मिटा दिए। अब हम श्री श्यामाजी महारानी और सब मोमिन मिलकर इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज से दोस्ती करें।

और जेती किताबें दुनी में, तिन सबों पोहोंची सरत।
सो सब खोली किताबें हुकमें, केहे दई सबों कयामत।। ७ ।।

दुनियां में जितने भी धर्मग्रन्थ हैं, उन सबमें बताया हुआ कयामत का समय आ गया है, इसलिए अब हुकम ने इन सब ग्रन्थों के रहस्य खोल दिए हैं। कयामत की पहचान करा दी है।

Nijanand App

फिराए दिए सब फिरके, सब आए बीच हक दीन।
भिस्त दई हम सबन को, ल्याए सब हक पर आकीन।। ८ ।।

अब सब धर्म, पंथ, पैंडों वालों को झूठ की पूजा से छुड़ाकर एक अक्षरातीत पारब्रह्म की पूजक बनाकर एक निजानन्द सम्प्रदाय में ले आए और सब पारब्रह्म के ऊपर यकीन लाए, जिससे हमने सबको बहिश्तों में अखण्ड किया।

बका तरफ कोई न जानत, ए जो चौदे तबक।
सो रात मेटके दिन किया, पट खोल अर्स हक।। ९ ।।

चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में कोई नहीं जानता था कि अखण्ड परमधाम कहां है? इसलिए इस अज्ञान को मिटाकर श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान करा दी।

ऐसा खेल इन भांतका, यामें गई ना कबूं किन सक।
ताको साफ किए हम हुकमें, सब जले बीच इस्क।। १० ।।

यह संसार का खेल ऐसा था कि आज दिन तक किसी के संशय नहीं मिटे थे। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से हमने सबके दिलों के संशय मिटा दिए। अब सभी श्री राजजी महाराज के इश्क से पश्चाताप से निर्मल होकर सुख लेंगे।

हम मांगें इस्क वतनी, आई हमपे हक न्यामत।
हमें ऐसा खेल देखाइया, इत बैठे देखें खिलवत।। ११ ।।

हमारे पास परमधाम की न्यामत जागृत बुद्धि की अखण्ड तारतम वाणी है, इसलिए हम अपने वतन का इश्क मांगते हैं। श्री राजजी महाराज ने हमें ऐसा खेल दिखाया कि हम खेल में बैठकर ही मूल-मिलावा को देख रहे हैं।

ऐसे किए हमें इलमें, कोई छिपी न रही हकीकत।
जाहेर गुझ सब अर्सों की, ऐसी पाई हक मारफत।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान ने हमारी ऐसी हालत कर दी कि हमसे कोई भी परमधाम की हकीकत छिपी नहीं रही। इस ज्ञान से सभी अर्शों के क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के गुझ भेद भी जाहिर हो गए।

हम झूठी जिमी बीच बैठ के, करें जाहेर हक सूरत।
एही ख्वाब के बीच में, बताए दई वाहेदत।। १३ ।।

अब हम झूठे संसार में बैठकर श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन करते हैं, क्योंकि इस संसार के बीच इलम ने हमें हमारी एकदिली की पहचान करा दी है।

तो ए झूठी जिमी कायम हुई, ऐसी हक बरकत।
जानें आगूं कह्या रसूलने, देसी हम सबों भिस्त।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की कृपा से ही इस झूठे ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति मिली। रसूल साहब ने पहले से आकर कहा था कि वक्त आखिरत को आकर हम मोमिन सबको अखण्ड बहिश्तों में कायम करेंगे।

Nijanand App

इलमें ऐसे बेसक किए, इत बैठे पाइए सुध।
हम इत आए बिना, देखी खेल की सब विध।। १५ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान ने इस तरह से संशय मिटा दिए कि अब हमें यहां बैठे-बैठे ही सब पहचान करा दी। हमारे खेल में आए बिना ही हमने खेल की सारी हकीकत को जान लिया।

हम तेहेकीक रूहें अर्स की, इन इलमें किए बेसक।
ए देख्या खेल झूठा जान के, क्यों छोड़ें बरनन हक।। १६ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने हमें बता दिया कि हम निश्चित ही परमधाम की रूहें हैं और इस झूठे खेल को हमने जान बूझकर देखा है तो फिर श्री राजजी महाराज का वर्णन क्यों नहीं करें?

कह्या रसूलें फुरमान में, अर्स दिल मोमिन।
हम और क्यों केहेलाइए, बिना अर्स हक वतन।। १७ ।।

रसूल साहब ने कुरान में कहा है कि मोमिनों का दिल खुदा का अर्श है। श्री राजजी महाराज के वतन के बिना हम दूसरे कैसे कहलाते?

ताथें फेर फेर बरनन, करें हक बका सूरत।
हुकम इलम यों केहेवहीं, कोई और न या बिन कित।। १८ ।।

इसलिए बार-बार श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप का वर्णन करती हूं, क्योंकि श्री राजजी महाराज का हुकम और इलम इस तरह से कहता है कि श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त कहीं भी कोई और नहीं है।

खिनमें सिनगार बदलें, करें नए नए रूप अनेक।
होत उतारे पेहेने बिना, ए क्यों कह्यो जाए विवेक।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप के एक क्षण में अनेक स्वरूप बदल जाते हैं। सिनगार को उतारे और पहने बिना ही बदले हुए रूप दिखाई देते हैं, इसलिए इसका विवरण कैसे हो?

हक सिनगार कीजे तो बरनन, जो घड़ी पल ठेहेराए।
एक पाव पलमें, कई रूप रंग देखाए।। २० ।।

श्री राजजी महाराज का सिनगार एक पल ठहरे तो उसका वर्णन करें, परन्तु एक पल के चौथाई भाग में ही जहां कई तरह के रूप और रंग दिखाई देने लगें, तो उनका वर्णन कैसे करें?

और भी हक सरूप की, इन विध है बरनन।
रूह देखें नए नए सिनगार, जिन जैसी चितवन।। २१ ।।

और भी एक बात यह है कि श्री राजजी महाराज के स्वरूप के सिनगार का रूहें जैसी-जैसी इच्छा करती हैं वैसे-वैसे उन्हें नए-नए सिनगार देखने को मिलते हैं। यह वर्णन इस तरह का है।

ताथें बरनन क्यों करूं, किन विध कहूं सिनगार।
ए सोभा हक सूरत की, काहूं वार न पार सुमार।। २२ ।।

जब रूहों की चाहना के अनुसार क्षण-क्षण में सिनगार बदलता है तो उसका वर्णन कैसे करूं? यह श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ही शोभा है, जो बेशुमार है।

Nijanand App

झूठी जुबां के सब्दसों, और माएने लेना बका।
जो सहूर कीजे हक इलमें, तो कछू पाइए गुझ छिपा।। २३ ।।

झूठी जबान के शब्दों से अखण्ड परमधाम का वर्णन करना तभी सम्भव है, जब श्री राजजी के जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुछ छिपे रहस्य मिलें।

इलम होवे हक का, और हुकम देवे सहूर।
होए जाग्रत रूह वाहेदत, कछू तब पाइए नूर जहूर।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज का ज्ञान हो और हुकम विचार करने की शक्ति दे, तब परमधाम की रूह जागृत होकर के श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देख सकती है।

ए सुपन देह पांच तत्व की, वस्तर भूखन उपले ऐसे हैं।
अर्स रूह सूरत को, मुहकक पेहेनावा क्या कहे।। २५ ।।

मेरी देह सपने की पांच तत्व की है। वस्त्र, आभूषण भी यहां पांच तत्व के हैं। यह जानकर भी मेरी रूह श्री राजजी महाराज के सिनगार का कैसे वर्णन करे?

रूह सूरत नहीं तत्व की, जो वस्तर पेहेन उतारे।
नूर को नूर जो नूर है, कौन तिनको सिनगारे।। २६ ।।

परमधाम के स्वरूप पांच तत्व के नहीं हैं जो वस्त्र पहनें और उतारें। श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का जो नूर है उसे भला कौन सिनगार करा सका है?

पेहेले दृढ़ कर हक सूरत, ए अंग किन नूर के।
हक जातके निसबती, बका मोमिन समझें ए।। २७ ।।

श्री महामतिजी अपनी रूह को कहती हैं कि श्री राजजी महाराज का तन (अंग) किस नूर का है, उसका पहले दृढ़ता से विचार कर लो। श्री राजजी महाराज के मोमिन ही इस अखण्ड की बात को समझेंगे।

नूर सोभा नूर जहूर, और न सोभा इत।
देखो अर्स तन अकलें, ए सरूप वाहेदत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप, शोभा और साहेबी सब नूर की है। इसे यदि परमधाम के तन और बुद्धि से देखो, तो यह सब शोभा केवल अंग की ही है।

नाजुकी इन सरूप की, और अति कोमलता।
सो इन अंग जुबां क्या कहे, नूरजमाल सूरत बका।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड स्वरूप बड़ा नाजुक और कोमल है। यहां के अंग और जबान से वर्णन कैसे करें?

जैसी सरूप की नाजुकी, तैसी सोभा सलूक।
चकलाई चारों तरफों, दिल देख न होए टूक टूक।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की जैसी नाजुकी (कोमलता) है, वैसे ही सलूकी की शोभा है। मुखारबिन्द की सुन्दरता चारों तरफ फैल रही है, जिसे देखकर दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

Nijanand App

आसिक अपने सौक को, विध विध सुख चहे।
सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज्जत लहे।। ३१ ।।

आशिक रूहें अपने शौक के वास्ते श्री राजजी से तरह-तरह के सुख चाहती हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज के स्वरूप के नए-नए रूप बदलकर नई-नई लज्जत लेती हैं।

दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम।
दें चाह्या सरूप सबन को, इन विध कादर खसम।। ३२ ।।

बारह हजार रूहों को श्री राजजी महाराज क्षण-क्षण में अपने नए-नए स्वरूप का सुख रूहों के चाहे अनुसार देते हैं। श्री राजजी महाराज हमारे धनी इतने समर्थ हैं।

रूहें दिल सब एकै, नए नए इस्क तरंग।
पिएं प्याले फेर फेर, माहों माहें करें प्रेम जंग।। ३३ ।।

रूहों के दिल सब एक ही हैं, जो नए-नए इश्क की तरंगों के प्याले बार-बार पीती हैं, इसलिए इनके प्रेम की तरंगें आपस में टकराती हैं।

ए बारीक बातें अर्स की, बिन मोमिन न जाने कोए।
मोमिन भी सो जानहीं, जाको आई फजर खुसबोए।। ३४ ।।

यह परमधाम की खास (बारीक) बातें हैं, जो मोमिन ही जान सकते हैं। मोमिन भी वही जानते हैं, जिनके पास जागृत बुद्धि आ गई है।

जो कछू बीच अर्स के, पसु पंखी नंग बन।
सोभा बानी कोमल, खुसबोए रंग रोसन।। ३५ ।।

परमधाम के अन्दर जो कुछ पशु, पक्षी, नग, वन, शोभा, बोली, नरमाई, खुशबू, रंग और तेज है, सब रूहें ही जानती हैं।

मैं नरमाई एक फूल की, जोड़ देखी रूह देह संग।
क्यों जुड़े जिमी सोहोबती, सोहोबत जात हक अंग।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने एक फूल की कोमलता को रूह के संसार की देह के साथ जोड़कर देखा, तो पाया वह हक जात अखण्ड फूल श्री राजजी का अंग है। उसकी तुलना संसार के अंग के साथ कैसे की जाए?

क्यों कर आवे बराबरी, खावंद और खेलौने।
ए मुहकक क्या विचारहीं, जाहेर तफावत इनमें।। ३७ ।।

खावंद और खिलौने आपस में कैसे बराबर हो सकते हैं? यह झूठे ज्ञानी लोग इस पर कैसे विचार कर सकते हैं? क्योंकि खावंद और खिलौने में जाहिरी में ही बहुत फर्क है।

ए चीजें कही सब अर्स की, लीजे माहें सहूर कर।
ए खेलोने रूहन के, नहीं खावंद बराबर।। ३८ ।।

यदि विचार करके देखें तो परमधाम की चीजें रूहों के खिलौने हैं जो खावंद श्री राजजी महाराज की बराबरी नहीं कर सकते।

Nijanand App

अर्स चीज भी लीजे सहूर में, जिन अर्स खावंद हक।
इन अर्स की एक कंकरी, उड़ावे चौदे तबक।। ३९ ।।

फिर अर्श की एक चीज का विचार करें। उसके मालिक श्री राजजी महाराज हैं, जिनके अर्श की एक कंकड़ी के सामने चौदह लोक का ब्रह्माण्ड उड़ जाता है।

इत बैठ झूठी जिमी में, झूठी अकल झूठी जुबान।
अर्स चीज मुकरर क्यों होवहीं, जो कायम अर्स सुभान।। ४० ।।

इस संसार की झूठी जमीन में बैठकर यहां की झूठी अक्ल और झूठी जबान से श्री राजजी महाराज के अखण्ड परमधाम का वर्णन कैसे हो सकता है?

अर्स चीज न आवे इन अकलें, तो क्यों आवे रूह मूरत।
जो ए भी न आवे सहूर में, तो क्यों आवे हक सूरत।। ४१ ।।

परमधाम की कोई भी चीज संसार की अक्ल में नहीं आती तो फिर रूहों के असली परआतम का स्वरूप कैसे यहां की अक्ल में आएगा? जब यह भी यहां की अक्ल में नहीं आता, तो श्री राजजी महाराज का स्वरूप कैसे अक्ल में आएगा?

एक रूहें और खेलौने, देख इत भी तफावत।
सूरत हक हादी रूहें, देख जो कहावें वाहेदत।। ४२ ।।

पहले रूहों और खिलौने के फर्क को देखो और फिर श्री राजश्यामाजी और रूहों के स्वरूप को देखो जो एक दिल कहलाते हैं।

बका चीज जो कायम, तिन जरा न कबूं नुकसान।
जेती चीज इन दुनी की, सो सब फना निदान।। ४३ ।।

परमधाम में जो भी चीज है वह सदा कायम है। उसे कभी नुकसान नहीं होता। दुनियां में जितनी चीजें हैं, वह सब नष्ट होने वाली हैं।

जेती चीज अर्स में, न होए पुरानी कब।
नुकसान जरा न होवहीं, ए लीजे सहूर में सब।। ४४ ।।

परमधाम की कोई भी चीज कभी पुरानी नहीं होती। यह अच्छी तरह से विचार करके देख लो कि वहां जरा भी नुकसान नहीं होता।

तो हक अर्स है कह्या, ए चौदे तबक जरा नाहें।
जो नाहीं सो है को क्या कहे, तार्थे आवत न सब्द माहें।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज के अर्श को सदा अखण्ड कहा है। चौदह तबकों को नाशवान कहा है। जो स्वयं नाशवान है वह अखण्ड का वर्णन कैसे करे?

जेती चीजें अर्स की, जोत इस्क मीठी बान।
खूबी खुसबोए हक चाहेल, तहां नजीक ना नुकसान।। ४६ ।।

परमधाम में जितनी भी चीजें हैं उनमें जोत, इश्क, मीठी बोली, खूबी, खुशबू श्री राजजी की चाहना अनुसार ही होती है। वहां जरा भी नुकसान नहीं होता।

Nijanand App

नूर और नूरतजल्ला, कहे महंमद दो मकान।
दोए सूरतें जुदी कही, ताकी रूहअल्ला दई पेहेचान।। ४७ ।।

रसूल साहब ने अक्षरधाम और परमधाम दो मकानों का वर्णन किया है। दोनों की दो सूरतें (अक्षर ब्रह्म और अक्षरातीत) अलग-अलग बताई हैं, जिनकी जानकारी श्यामा महारानी ने भी दी।

नाजुक नरम तेज जोत में, सलूकी सोभा मीठी जुबान।
सुन्दर सरूप खुसबोए सों, पूरन प्रेम सुभान।। ४८ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप अति नाजुक, नरम, तेज, जोत, सलूकी, शोभा, मीठी बोली, सुन्दरता तथा सुगन्धि वाले हैं और प्रेम से भरपूर हैं।

सोई सरूप है नूर का, सोई सूरत हादी जान।
रुहें सूरत वाहेदत में, ए पूरन इस्क परवान।। ४९ ।।

जो स्वरूप श्री राजजी महाराज का है, वही स्वरूप श्यामा महारानी का और वैसे ही रूहों की एक दिली का है। यह सब इश्क से भरपूर हैं।

हक सूरत अति सोहनी, दोऊ जुगल किसोर।
गौर मुख अति सुन्दर, ललित कोमल अति जोर।। ५० ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप बड़ा मनमोहक है। श्री राजश्यामाजी दोनों ही बड़े गोरे रंग के हैं। मुख बड़े सुन्दर हैं तथा कोमल और लुभावने हैं।

और रूहों की सूरतें, जो असल अर्स में तन।
सो सहूर कीजे हक इलमें, देखो अपना तन मोमिन।। ५१ ।।

हे रूहो! जागृत बुद्धि की वाणी से अपने स्वरूप, जो परमधाम में तुम्हारी परआतम है, को विचार कर देखो।

खूबी खुसाली न आवे सब्द में, ना रंग रस बुध बान।
कोई न आवे सोभा सब्द में, मुख अर्स खावंद मेहेरबान।। ५२ ।।

तुम्हारे इन स्वरूपों की खूबी, खुशाली, रंग, रस, बुद्धि, वाणी का बयान शब्दों में नहीं होता तो फिर श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा यहां के शब्दों में कैसे कहें?

जैसी है हक सूरत, और तिन वस्तर भूखन।
जो सोभा देत इन सूरतें, सो क्यों कहे जांए जुबां इन।। ५३ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज का स्वरूप है, वैसे ही उनके वस्त्र, आभूषण हैं। जो रूहों को अच्छे लगते हैं। उसकी शोभा यहां की जबान से कैसे कही जाए?

दिल में जानों दे निमूना, समझाऊं रूहों को।
खूबी दुनी की देख के, लगाए देखों अर्स सों।। ५४ ।।

दिल में चाहना होती है कि रूहों को समझाने के वास्ते यहां का नमूना देकर बयान करूं। फिर दुनियां की सुन्दरता को देखकर परमधाम की सुन्दरता से मिलाऊं।

Nijanand App

हक अंग कैसे बरनवूं, इन झूठी जुबां के बल।
बका अंग क्यों कर कहूं, यों फेर फेर कहे अकल।।५५।।

लेकिन इस झूठी जबान की शक्ति से श्री राजजी महाराज के अंग का कैसे वर्णन करूं? श्री राजजी महाराज के अखण्ड अंग का वर्णन कैसे करूं? यह मेरी बुद्धि बार-बार कहती है।

रूप रंग इत क्यों कहिए, ले मसाला इत का।
ए सुकन सारे फना मिने, हक अंग अर्स बका।।५६।।

परमधाम के रूप और रंग का वर्णन संसार की उपमा से कैसे कहें? क्योंकि यहां की सारी चीजें नाशवान हैं और श्री राजजी महाराज के अंग अखण्ड परमधाम के हैं।

रूप रंग गौर लालक, कहूं नूर जोत रोसन।
ए सब्द सारे ब्रह्मांड के, अर्स जरा उड़ावे सबन।।५७।।

संसार के रूप, रंग, गोरापन, ललिमा, नूर, जोत, रोशनी, आदि शब्द झूठे ब्रह्माण्ड के हैं, जो परमधाम के एक कण के सामने उड़ जाते हैं।

गौर हक अंग केहेत हों, ए गौर रंग लाहूत।
और कहूं सोभा सलूकी, ए छबि है अदभूत।।५८।।

श्री राजजी महाराज का गोरा अंग, जो मैं कहती हूं, तो वह गोरा रंग परमधाम का समझना। इनके अंगों की शोभा और सलूकी जो बताती हूं, उसकी छबि तो बड़ी ही अद्‌भुत है।

चकलाई हक अंगों की, रूप जाने अरवा अर्स।
रूह जागी जाने खेल में, जो हुई होए अरस परस।।५९।।

श्री राजजी महाराज के मुख की सुन्दरता को परमधाम की रूहें ही जानती हैं। जो रूहें जागृत बुद्धि के ज्ञान से खेल में जाग जाती हैं, वही श्री राजजी महाराज के साथ एक रस हो जाती हैं।

जो रूह जगाए देखिए, तो ठौर नहीं बोलन।
जो चुप कर रहिए, तो क्या लें आहार मोमिन।।६०।।

जो रूह जाग जाती है, तो फिर उसके बोलने का कोई ठिकाना ही नहीं। यदि चुप होकर बैठ जाए तो मोमिनों को आहार कैसे मिलेगा?

मैं देख्या दिल विचार के, सुनियो तुम मोमिन।
देऊं निमूना दुनी अर्स का, तुम देखियो दिल रोसन।।६१।।

हे मोमिनो! मैंने दिल में विचार करके देखा। तुम भी समझकर देखना। दुनियां का नमूना परमधाम को क्यों दिया? जागृत बुद्धि से विचार करके देखो।

कही कोमलता कमलन की, और जोत जवेरन।
रंग सुरंग जानवरों, कई स्वर मीठी जुबां इन।।६२।।

मैंने चरण कमल की कोमलता, जानवरों के लाल रंग, जवेरों की जोत और जानवरों के मीठे स्वर यहां की जबान से बताए हैं।

Nijanand App

कई खुसबोई माहें पंखियों, कई खुसबोए माहें फूलन।
कई सोभा पसु पंखियों, कई नरमाई परन।। ६३ ।।

इस तरह से पक्षियों में तथा फूलों में कई तरह की सुगन्धि बताई है। पशु-पक्षियों की कई तरह की शोभा बताई है और उनके परों की नरमाई का बयान किया है।

फूल कमल कई पसम, कैसी कोमल दुनी इन।
फूल अत्तर चोवा मुस्क, और जोत हीरा जवेरन।। ६४ ।।

संसार में कमल का फूल, पशम और कई चीजें कोमल कही जाती हैं। इस तरह से फूलों में इत्र, सुगन्धित तेल खुशबूदार कहे जाते हैं तथा हीरा जवेरों की जोत की उपमा दी जाती है।

देखो प्रीत पसुअन की, और देखो प्रीत पंखियन।
एक चलें दूजा ना रहे, जीव जात माहें खिन।। ६५ ।।

संसार के पशुओं तथा पक्षियों की प्रीत को देखो। एक के मर जाने पर दूसरा एक क्षण में ही मर जाता है।

छोटे बड़े जीव कई रंग के, जानों के देह कुंदन।
कई नकस कई बूटियां, कई कांगरी चित्रामन।। ६६ ।।

परमधाम के छोटे बड़े जानवरों में कई तरह के रंग हैं। कई के तन सोने के समान दिखते हैं। कई के तन में नक्शकारी बूटियां हैं और कई के तन में कांगरी और चित्र बने हैं।

इन भांत केती कहूं, कई खूबी बिना हिसाब।
ले खुलासा इन का, छोड़ दीजे झूठा ख्वाब।। ६७ ।।

इस तरह की खूबी परमधाम में बिना हिसाब है। अब इनको समझकर सपने के संसार को छोड़ दो।

देख दुनी देखो अर्स को, कई रंगों सोभें जानवर।
सुख सनेह खूबी खुसाली, कई मुख बोलत मीठे स्वर।। ६८ ।।

अब दुनियां को देखो और परमधाम को देखो। परमधाम के जानवरों में कई तरह के रंग शोभा देते हैं। उनमें कई तरह के सुख, प्यार, खूबियां, खुशालियां हैं। यह मीठे स्वर में बोलते हैं।

जीव जल थल या जानवरों, कई केसों परन।
रंग खूबी देख विचार के, ले अर्स मसाला इन।। ६९ ।।

जीव जल के हों या थल के, या जानवरों के कई तरह के बाल, परों के रंगों की खूबी देखो। विचार करके देखो और बताओ कि परमधाम के और दुनियां के पशु-पक्षियों में कितना अन्तर है?

इन विध मैं केती कहूं, रंग खूबी खुसबोए।
परों फूलों चित्रामन, कही प्रीत इनों की सोए।। ७० ।।

इस तरह मैं कहां तक कहूं? परमधाम के रंग, खूबी, खुशबू, परों पर फूलों के चित्र और जानवरों की परस्पर प्रीत बेशुमार है।

Nijanand App

इन विध देखो निमूना, ए झूठी जिमी का विचार।
तो कौन विध होसी अर्स में, जो सोभा वार न पार सुमार।।७१।।

इस तरह से झूठी जमीन के नमूने को समझकर परमधाम की हकीकत को समझो, तो पता लगता है कि परमधाम की शोभा बेशुमार है।

एक देखी विध संसार की, और विध कही अर्स।
सांच आगे झूठ कछू नहीं, कर देखो दिल दुरुस्त।।७२।।

एक संसार की विधि देखी और परमधाम की विधि कही है। इन दोनों को दिल में विचार करके देखो तो पता लगेगा कि सत के आगे झूठ कुछ नहीं है।

सांच भोम की कंकरी, उड़ावे जिमी आसमान।
कैसी होसी अर्स खूबियां, जो खेलौने अर्स सुभान।।७३।।

परमधाम की अखण्ड भूमि की एक कंकरी संसार के जमीन आसमान को उड़ा देती है। फिर पशु, पक्षी और जानवर जो श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं, इनकी खूबी परमधाम में कैसी होगी?

सो खूब खेलौने देखिए, इनों निमूना कोई नाहें।
सिफत इनों ना केहे सकों, मेरी इन जुबाएं।।७४।।

अब इन खूब खुशाली और पशु, पक्षी खिलौनों को देखो, जिनका संसार में कोई नमूना नहीं है। मैं अपनी इस संसार की जबान से इनकी सिफत नहीं कह सकती हूं।

कई जुगतें खूबियां, कई जुगतें सनकूल।
कई जुगतें सलूकियां, कई जुगतें रस फूल।।७५।।

इनमें कई तरह की युक्तियां, खूबियां, सलूकियां, खुशियां और कई तरह के फूलों के रस की शोभा दिखाई देती है।

कई जुगतें चित्रामन, ऊपर पर केसन।
कई मुख मीठी बानियां, स्वर जिकर करें रोसन।।७६।।

पशु-पक्षियों के परों पर और बालों पर कई तरह के चित्र हैं। वह अपनी सुन्दर बोली और स्वर से श्री राजजी महाराज का ही जिक्र करते हैं।

जेती खूबियां अर्स की, सब देखिए जमाकर।
लीजे सब पेहेचान के, अंदर दिल में धर।।७७।।

परमधाम की सभी खूबियों का जोड़ लगाकर पहचान लो और दिल में धारण कर लो।

रंग रस नूर रोसनी, सोभा सुन्दर खूबी खुसबोए।
तेज जोत कोमल, देख नरम नाजुकी सोए।।७८।।

पशु-पक्षियों के रंग, रस, नूर, रोशनी, शोभा, सुन्दरता, खूबी, सुगन्धि, तेज, जोत, नरमाई, कोमलता और नजाकत को देखो।

Nijanand App

दिल अर्स खुलासा लेय के, और देख अर्स रूह अंग।
रूहों सरभर कोई आवे नहीं, खूबी रूप सलूकी रंग।।७९ ।।

परमधाम की इन सब चीजों को देखो और फिर रूहों के तनों (परआतम) को देखो, तो ऊपर कही सब खूबियां, रूप, रंग रूहों जैसे किसी के नहीं हैं।

खेल खावंद कैसी सरभर, जो रूहें अंग हादी नूर।
हादी नूर हक जातका, मोमिन देखें अर्स सहूर।।८० ।।

फिर खेल के दिखाने वाले श्री राजजी महाराज की बराबरी कैसे करें? रूहें श्यामा महारानी के नूरी तन हैं। श्यामा महारानी श्री राजजी के नूरी तन हैं। जिन्हें मोमिन जागृत बुद्धि के ज्ञान से देख सकते हैं।

सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाके अक्स का दिल अर्स।
हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस-परस।।८१ ।।

मोमिनों की इतनी बड़ी महिमा बताई कि इनके प्रतिबिम्ब जो खेल में हैं, उनके दिलों को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया है। इस तरह से श्री राजजी महाराज सपने में भी मोमिनों के साथ हैं। इस तरह से मोमिन और श्री राजजी महाराज एक ही स्वरूप हैं।

ए जो मोमिन अक्स कहे, जानों आए दुनियां माहें।
हक अर्स कर बैठे दिल को, जुदे इत भी छोड़े नाहें।।८२ ।।

यह जो मोमिनों के प्रतिबिम्ब संसार में कहे गए हैं, इससे लगता है मोमिन दुनियां में आए हैं और इनके दिलों में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं और यहां भी उनका साथ नहीं छोड़ रहे हैं।

अक्स के जो असल, ताए खेलावत सूरत।
सो हिंमत अपनी क्यों छोड़हीं, जामे अर्स की बरकत।।८३ ।।

इनकी प्रतिबिम्ब की जो परआतम है उसको श्री राजजी महाराज का स्वरूप आनन्दित करता है, इसलिए जिनमें परमधाम की शक्ति है वह संसार में कैसे हिम्मत छोड़ें?

दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनोंपे तो असल नाम।
दिल भी हकें अर्स कह्या, याकी साहेदी अल्ला कलाम।।८४ ।।

दुनियां तो पारब्रह्म के लौकिक नाम 'श्री कृष्ण अनादि अक्षरातीत' सुनने से आवागमन के चक्कर से छूटकर अखण्ड हो जाएगी, पर रूहों के पास परमधाम में जो असल नाम "श्यामा श्याम" है, वह है। इन्हीं मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है जिसकी गवाही कुरान देता है।

इलम भी हकें दिया, इनमें जरा न सक।
सो क्यों न करें फैल वतनी, करें कायम चौदे तबक।।८५ ।।

इन्हीं मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया, जिसमें जरा भी संशय नहीं है तो फिर अब यह मोमिन परमधाम की रहनी से चौदह लोक के जीवों को अखण्ड क्यों नहीं करते?

Nijanand App

प्रतिबिंब के जो असल, तिनों हक बैठे खेलावत।
तहां क्यों न होए हक नजर, जो खेल रूहों देखावत।। ८६ ।।

मोमिनों के प्रतिबिम्बों के जो असल तन परमधाम में हैं, उन्हें श्री राजजी महाराज अपने पास बिठाकर खेल दिखा रहे हैं। जहां श्री राजजी महाराज रूहों को खेल दिखा रहे हैं, वहां इन मोमिनों के ऊपर श्री राजजी महाराज की नजर क्यों नहीं होगी?

आड़ा पट भी हकें दिया, पेहेले ऐसा खेल सहूर में ले।
जो खेल आया हक सहूर में, तो क्यों न होए कायम ए।। ८७ ।।

श्री राजजी महाराज ने पहले खेल दिखाने का विचार दिल में लिया और फिर फरामोशी का परदा दिया। अब जो खेल श्री राजजी महाराज के दिल में आ गया तो वह अखण्ड क्यों नहीं होगा?

हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमिनों नाम।
सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम।। ८८ ।।

मोमिनों के प्रतिबिम्ब के नाम इस खेल के मालिक बन गए। अब वह अपने श्यामा श्याम से अपना इश्क क्यों न लें? जिनकी निसबत उनसे है।

बड़ी बड़ाई इनकी, जिन इस्कें चौदे तबक।
करम जलाए पाक किए, तिन सबों पोहोंचाए हक।। ८९ ।।

इन मोमिनों की बड़ी बड़ाई लिखी है। जिनके इश्क ने चौदह तबकों को पश्चाताप की अग्नि में जलाकर पाक कर अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

इनों धोखा कैसा अर्स का, जिन सूरतें खेलावें असल।
खेलाए के खैंचे आपमें, तब असलै में नकल।। ९० ।।

जिनकी परआतम को चरणों में बिठाकर श्री राजजी महाराज खेल दिखा रहे हैं, उनको परमधाम के प्रति संशय कैसे रह सकता है? श्री राजजी महाराज खेल दिखाकर इनकी नकल को असल में खींच लेंगे।

नकलें असलें जुदागी, एक जरा है आड़ा पट।
कह्या सेहेरग से नजीक, तिन निपट है निकट।। ९१ ।।

नकली तन संसार में और असली तन परमधाम में हैं। एक जरा सा फरामोशी का परदा है, इसलिए मोमिन को श्री राजजी सेहेरग से नजदीक हैं।

इन सुपन देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस।
ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस।। ९२ ।।

श्री राजजी महाराज ने उनके स्वप्न के तन के अनुसार ही मोमिनों के दिल में प्रवेश किया है। अब जैसा उनका हुकम कहलवा रहा है, वैसे हमारा सपने का तन बोल रहा है।

अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों।। ९३ ।।

हमारी परआतम के दिल हमारे संसार के दिल को देख रहे हैं, इसलिए हमारे इन तनों को परआतम का प्रतिबिम्ब कहा है, क्योंकि हमारे दिल परआतम के दिल में हैं।

Nijanand App

ऐसा खेल किया हुकमें, हमारी उमेदां पूरन।
हम सुख लिए अर्स के, दुनी में आए बिन।। ९४ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमारी चाहना पूर्ण करने के लिए ऐसा खेल बनाया कि हम दुनियां में आए बिना ही परमधाम के सुख यहा ले रहे हैं।

ना तो ऐसा बरनन क्यों करें, ए जो वाहेदत नूरजमाल।
ना कोई इनका निमूना, ना कोई इन मिसाल।। ९५ ।।

वरना श्री राजजी महाराज की हम अंगना हैं, तो ऐसा वर्णन क्यों करतीं, जबकि संसार में श्री राजजी महाराज का न कोई नमूना है, न कोई मिसाल है।

अर्स भोम की एक कंकरी, तिन आगे ए कछुए नाहें।
तो क्यों दीजे बका सुभान को, सिफत इन जुबांए।। ९६ ।।

परमधाम की एक कंकरी के सामने संसार कुछ भी नहीं है, तो फिर अखण्ड धाम धनी के स्वरूप की सिफत को यहां की जबान से कैसे कहें?

अर्स जिमी सब वाहेदत, दूजा रहे ना इनों नजर।
ज्यों रात होए काली अंधेरी, त्यों मिटाए देवे फजर।। ९७ ।।

परमधाम की अखण्ड जमीन में एकदिली है। उनके सामने दूसरा टिक ही नहीं सकता। जिस तरह से काली अंधेरी रात का अंधेरा प्रातः सूर्य के सामने मिट जाता है।

है हमेसा एक वाहेदत, एक बिना जरा न और।
अंधेर निमूना न लगत, अंधेर राखत है ठौर।। ९८ ।।

संसार के अंधेरे का नमूना यहां उचित लगता नहीं है, क्योंकि संसार के अंधेरे के लिए संसार में ठिकाना है। परमधाम में एक श्री राजजी महाराज के बिना कुछ नहीं है।

ए चौदे तबक कछुए नहीं, वेदों कह्या आकास फूल।
झूठा देखाई देत है, याको अंकूर ना मूल।। ९९ ।।

वेदों ने इस संसार को आकाश के फूल के समान बताया है, अर्थात् जैसे आकाश में फूल होते ही नहीं, वैसे ही यह चौदह तबक भी कुछ नहीं हैं। यह संसार झूठा दिखाई देता है, परन्तु न तो इसकी कोई जड़ है और न कोई डाल।

इत वाहेदत कबूं न जाहेर, झूठे हक को जानें क्यों कर।
सुध वाहेदत क्यों ले सकें, जो उड़ें देखें नजर।। १०० ।।

इस संसार में अखण्ड की सुध देने वाला कोई कभी आया ही नहीं, तो झूठे जीव सत श्री राजजी को जान कैसे सकते हैं? परमधाम की सुध कैसे ले सकते हैं? जिसे देखने मात्र से यह समाप्त हो जाते हैं।

असल बात वाहेदत की, अर्स अरवाहें जानें मोमिन।
इत हक सुध मोमिनों, जाके असल अर्स में तन।। १०१ ।।

परमधाम की असल हकीकत परमधाम की रूहें जानती हैं। संसार में भी अपने घर परमधाम तथा श्री राजजी की सुध केवल मोमिनों को ही है, क्योंकि उनके मूल तन परमधाम में हैं।

Nijanand App

अब तुम सुनियो मोमिनों, अर्स बिने तुमारी बात।
वाहेदत तो कहे मोमिन, जो रूहें असल हक जात।। १०२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम परमधाम की बात को देखो, क्योंकि मोमिनों को ही एक दिल कहा है, क्योंकि तुम ही श्री राजजी के असल अंग हो।

और एक मता रूहन का, देखो अर्स वाहेदत।
लीजो मोमिन दिल में, ए हक अर्स न्यामत।। १०३ ।।

रूहों की एक और खास बात देखो कि परमधाम में इनकी एकदिली है, इसलिए हे मोमिनो! परमधाम की सभी न्यामतें अपने दिल में ग्रहण करो।

नैन एक रूह के, जो सुख लेवें परवरदिगार।
तिन सुख से सुख पोहोंचहीं, दिल रूहों बारे हजार।। १०४ ।।

यदि एक रूह के नैन भी श्री राजजी के सुख लेते हैं, तो उस सुख से बारह हजार रूहों के दिलों को सुख मिलता है।

एक रूह बात करे हक सों, सुख लेवे रस रसनाएं।
सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के माहें।। १०५ ।।

इस तरह से यदि एक आत्मा श्री राजजी महाराज से बातों का सुख लेती है, तो वह सुख बारह हजार के दिल में आता है।

हक बोलावें रूह एक को, सो सुख पावे अतंत।
सो बात सुन रूह हक की, सब रूहें सुख पावत।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज एक रूह को बुलाते हैं, तो उसे बेहद सुख मिलता है। फिर उस रूह को जो बात सुनने से सुख मिला है, वह सभी बारह हजार को सुख होता है।

रूह सुख हर एक बात का, हकसों अर्स में लेवत।
सो सुख सुन रूहें सबे, दिल अपने देवत।। १०७ ।।

परमधाम में रूहें हर एक बात का सुख श्री राजजी महाराज से लेती हैं। उस सुख को सुनकर सब रूहें अपने दिल में सुख लेती हैं।

तो हकें कह्या अर्स अपना, मोमिनों का जो दिल।
तो सब ल्याए वाहेदत में, जो यों सुख लेत हिलमिल।। १०८ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। सबको अपने चरणों तले मूल-मिलावा में बिठा रखा है, क्योंकि यह सब रूहें हिल-मिलकर सुख लेती हैं।

इन विध सुख केते कहूं, अर्स अरवा मोमिन।
तो आए वाहेदत में, जो हक कदम तले इनों तन।। १०९ ।।

इस तरह से परमधाम की रूहों के सुख कहां तक कहूं, जो मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठी हैं।

Nijanand App

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, और भेज दिया इलम।
क्यों आवें अर्स दिल झूठ में, इत है हक का हुकम।। ११० ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अपना अर्श कहा है और उन्हीं के वास्ते ही अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजा है। जिन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं, वह इस झूठे संसार में कैसे आ सकते हैं? परन्तु यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम की हिकमत है।

ताथें बरनन इन दिल, अर्स हक का होए।
इस्क हक के से जल जाए, और जरा न रेहेवे कोए।। १११ ।।

इनका दिल श्री राजजी का अर्श होने के कारण से ही यह श्री राजजी का वर्णन करने में समर्थ हैं। बाकी दुनियां तो हक के इश्क की आग में जल जाती है और कुछ भी बाकी नहीं रहता।

इन दिल को अर्स तो कह्या, जो खोल दिए बका द्वार।
ताथें फेर फेर बरनवूं, हक वाहेदत का सिनगार।। ११२ ।।

इन मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है कि इनके कारण परमधाम की पहचान सबको हो गई, इसलिए बार-बार श्री राजजी महाराज का और मोमिनों के सिनगार का वर्णन करती हूं।

किसोर सूरत हादी हक की, सुन्दर सोभा पूरन।
मुख कमल कहूं मुकट की, पीछे सब अंग वस्तर भूखन।। ११३ ।।

श्री राजश्यामाजी का स्वरूप किशोर है, सुन्दर है और शोभा से भरपूर है। अब पहले श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द और मुकुट की शोभा का वर्णन करती हूं। इसके बाद सभी अंग और वस्त्र आभूषणों का वर्णन करूंगी।

नख सिख लों बरनन करूं, याद कर अपना तन।
खोल नैन खिलवत में, बैठ तले चरन।। ११४ ।।

अपनी परआतम को ध्यान में लेकर श्री राजजी महाराज के सिनगार का नख से शिख तक वर्णन करती हूं। ऐसा अनुभव कर कि मेरी परआतम श्री राजजी के चरणों के तले मूल-मिलावे में बैठी है और उनके स्वरूप को देख रही है, सिनगार का वर्णन करती हूं।

जैसा केहेत हों हक को, यों ही हादी जान।
आसिक मासूक दोऊ एक हैं, ए कर दई मसिएं पेहेचान।। ११५ ।।

जैसा श्री राजजी के सिनगार का वर्णन करती हूं, वैसा श्री श्यामाजी का भी समझ लेना। यह दोनों आशिक माशूक, श्री राजश्यामाजी एक हैं। इसकी पहचान श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने करा दी है।

जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग।
हक खिन में कई रूप बदलें, याही विध हादी रंग।। ११६ ।।

यह श्री राजश्यामाजी एक ही अंग हैं, परन्तु इनको युगल किशोर करके कहा है। श्री राजजी महाराज के एक क्षण में कई सिनगार बदल जाते हैं। इसी तरह श्री श्यामाजी के सिनगार बदल जाते हैं।

Nijanand App

हमारे फुरमान में, हकें केते लिखे कलाम।
मासूक मेरा महंमद, आसिक मेरा नाम।। ११७ ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने कई जगह लिखा है कि माशूक श्यामा महारानी हैं और मैं आशिक हूं।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

केस तिलक निलाट पर, दोऊ रेखा चली लग कान।
केस न कोई घट बढ़, सोभा चाहिए जैसी सुभान।। ११८ ।।

श्री राजजी महाराज के माथे (मस्तक) पर सुन्दर बाल और तिलक शोभा देता है। बाल दोनों कानों तक और तिलक की दो रेखाएं माथे पर शोभा देती हैं। बाल कोई छोटे बड़े नहीं हैं। जैसे चाहिए वैसे बराबर हैं।

एक स्याम नूर केसन की, चली रोसन बांध किनार।
दूजी गौर निलाट संग, करे जंग जोत अपार।। ११९ ।।

माथे के ऊपर काले बालों का नूर कानों तक जाता है। दूसरा गोरे माथे का नूर, दोनों की किरणें आपस में टकराती हैं।

सोभा चलि आई लवने लग, पीछे आई कान पर होए।
आए मिली दोऊ तरफ की, सोभा केहेवे न समर्थ कोए।। १२० ।।

बालों की शोभा लवने (कनपटी) को लगती हुई कानों तक आती है। दोनों तरफ की शोभा ऐसी सुन्दर है, जिसका वर्णन करने की शक्ति किसी में नहीं है।

याही भांत भौंह नेत्र संग, करत जंग दोऊ जोर।
स्याह उज्जल सरभर दोऊ, चली चढ़ि टेढ़ी अनी मरोर।। १२१ ।।

इस तरह से काली भौंहें नैनों के साथ टकराती हैं। भौंहों का काला रंग, नैनों की उज्ज्वलता और दोनों की टेढ़ाई बड़ी सुन्दर दिखाई देती है।

दोऊ अनियां भौंह केसन की, निलाट तले नैन पर।
रेखा बांध चली दोऊ किनारी, आए अनियां मिली बराबर।। १२२ ।।

भौंहों के दोनों कोने माथे के नीचे नैनों तक आकर मिलते हैं। दोनों किनारों के कोने बराबर एक से सुन्दर शोभा देते हैं।

दोऊ नेत्र किनारी सोभित, घट बढ़ कोई न केस।
उज्जल स्याह दोऊ लरत हैं, कोई दे ना किसी को रेस।। १२३ ।।

आंखों के दोनों किनारों पर भौंहों के बाल शोभा देते हैं। कोई भी घट-बढ़ नहीं है। इस तरह से उज्ज्वल सफेद रंग की तथा काले रंग की किरणें टकराती हैं। कोई किसी से कम नहीं है।

तिलक निलाट न किन किया, असल बन्यो रोसन।
कई रंग खूबी खिन में, सोभा गिनती होए न किन।। १२४ ।।

श्री राजजी महाराज के माथे (मस्तक) पर तिलक किसी ने लगाया नहीं है उनके अंग में ही बना है। जिसके अन्दर कई तरह के रंग की खूबियां हैं जो क्षण-क्षण बदलती हैं, जिनको कोई नहीं गिन सकता।

Nijanand App

देह इन्द्री फरेब की, देखत इल्लत फना।
सो क्यों कहे बका सुभान मुख, इन अंग की जो रसना।। १२५ ।।

मेरे शरीर के गुण, अंग, इन्द्रियां झूठे संसार की हैं, जो क्षण भर में मिट जाने वाली हैं। ऐसे झूठे अंग की जबान से अखण्ड धाम धनी के मुखारबिन्द की शोभा का वर्णन कैसे करें?

नासिका हक सूरत की, ए जो स्वांस देत खुसबोए।
ब्रह्मांड फोड़ इत आवत, इत रूह बास लेत सोए।। १२६ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका के स्वांसों से अति सुगन्धि होती है, जो इस संसार को फोड़कर हमें इस संसार में निसबत होने के कारण यहां मिलती है।

बिन मोमिन कोई ना ले सके, हक नासिका गुन।
कह्या अर्स हक वतन, सो किया दिल जिन।। १२७ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका के गुणों को मोमिनों के अतिरिक्त और कोई नहीं ले सकता, इसलिए ऐसे मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है।

हक सूरत की बारीकियां, ए जानें अर्स अरवाए।
हक सूरत तो जान हीं, जो कोई और होए इसदाए।। १२८ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की खास बातें परमधाम की रूहें ही जानती हैं। इनके बिना दूसरा कोई तब जाने, जब वह परमधाम में शुरू से ही हो।

तीन खूंनें तले नासिका, खूंना चढ़ता चौथा ऊपर।
ए खूबी जानें रूह अर्स की, ए जो अनी आई नमती उतर।। १२९ ।।

नासिका के नीचे तीन कोने हैं और चौथा कोना ऊपर है। इसकी उतरी हुई टेढ़ाई की खूबी को परमधाम की रूहें ही जानती हैं।

दोऊ छेद्रों के गिरदवाए, यों पांखड़ी फूल कटाव।
बीच अनी आई जो नासिका, ए मोमिन जानें मुख भाव।। १३० ।।

नासिका के दोनों छेदों के चारों तरफ फूल की पंखुड़ी जैसी शोभा है और बीच में जो नोंक आई है, उससे मुखारबिन्द की शोभा का भाव मोमिन जानते हैं।

इन अनिएं और अनी मिली, तिन उतर अनी हुई दोए।
किनार तले दो छेद्र के, सोभा लेत अति सोए।। १३१ ।।

ऊपर के कोने से आकर नीचे के दोनों कोने मिले हैं, जिनके किनारे के नीचे दो छेद बड़े सुन्दर शोभा देते हैं।

दोऊ छेद्र तले अधुर ऊपर, तिन बीच लांक खूंने तीन।
सोई सोभा जाने इन अधुर की, जो होए हुकम आधीन।। १३२ ।।

नासिका के दोनों छेदों के नीचे होंठ शोभा देते हैं और दोनों होंठों के बीच की गहराई में तीन कोने दिखाई देते हैं। इन होंठों की शोभा को वही जानते हैं, जो मोमिन हैं और हुकम के अधीन हैं।

Nijanand App

और तले जो अधुर, दोऊ जोड़ सोभित जो मुख।
रेखा लाल दोऊ सोभित, रूह देख पावे अति सुख।। १३३ ।।

नीचे का होंठ और ऊपर के होंठ जुड़े शोभा देते हैं। दोनों की लाल रेखाएं बड़ी सुन्दर शोभा देती हैं। जिनको रूहें देखकर बहुत सुखी होती हैं।

तले अधुर के लांक जो, मुख बराबर अनी तिन।
सेत बीच बिन्दा खुसरंग, ए मुख सोभा जानें मोमिन।। १३४ ।।

होठों के तले की गहराई में मुख के समान ही कोना दिखाई देता है। गोरे मुखारबिन्द के बीच में गोरे रंग के बीच में लाल रंग के बिन्दा की शोभा मुखारबिन्द की शोभा बढ़ाती है, जिसे मोमिन ही जानते हैं।

इन तले गौर हरवटी, जानों मुख सदा हंसत।
ए सोभा जाने अरवा अर्स की, जिन दिल में हक बसत।। १३५ ।।

लाल बिन्दी के नीचे गोरी हरवटी (ठोड़ी) है, जिससे मुखारबिन्द सदा हंसता दिखाई देता है। इस शोभा को परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज बसे हैं।

ए रंग कहे मैं इन मुख, पर किन विध कहूं सलूक।
ए करते मुख बरनन, दिल होत नहीं टूक टूक।। १३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने इस मुख से श्री राजजी महाराज के रंग का वर्णन किया है। अब सलूकी का वर्णन कैसे करूं? इस मुख का वर्णन करते समय दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

फेर कहूं हरवटीय से, ज्यों सुध होए मुख कमल।
हक मुख मोमिन निरखहीं, जिन दिल अर्स अकल।। १३७ ।।

फिर से हरवटी का वर्णन करती हूं, जिससे मोमिनों को मुख कमल की सुध आ जाए। जिनके दिल में परमधाम की सुध है, वही मोमिन श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को देखते हैं।

हरवटी गौर मुख मुतलक, खुसरंग बिन्दा ऊपर।
बीच लांक तले अधुर, चार पांखड़ी हुई बराबर।। १३८ ।।

हरवटी गोरे रंग की है। हरवटी के ऊपर लाल रंग का बिन्दा शोभा देता है। होंठों के नीचे की गहराई फूल की चार पंखुड़ी की तरह शोभा देती है।

गौर पांखड़ी दो लांक की, लाल पांखड़ी दो तिन पर।
अधुर अधुर दोऊ जुड़ मिले, हुई लांक के सरभर।। १३९ ।।

गहराई की दो पंखुड़ियां गोरे रंग की हैं और उसके ऊपर दो लाल रंग की पंखुड़ी होंठों की हैं। श्री राजजी महाराज के दोनों होंठ मिल जाते हैं, तो उनकी शोभा गहराई के बराबर हो जाती है।

जोड़ बनी दोऊ अधुर की, निपट लाल सोभित।
तिन ऊपर दो पांखड़ी, हरी नेक टेढ़ी भई इत।। १४० ।।

दोनों होंठों की जोड़ी लाल दिखाई देती है। उसके ऊपर दो पंखुड़ी थोड़ी टेढ़ाई लिए हरी दिखाई देती हैं।

Nijanand App

दन्त सलूकी रंग की, इन जुबां कही न जाए।
मुख मुस्कत दन्त देखत, क्या केहे देऊं बताए।। १४१ ।।

दांत की सलूकी और रंग यहां की जबान से कैसे वर्णन करें? श्री राजजी महाराज जब मुस्कराते हैं, तो दांत दिखाई देते हैं। उनका वर्णन कैसे करूं?

क्यों कहूं रंग रसना, मुख मीठा बोल बोलत।
स्वाद लेत रस अर्स के, जुबां केहे ना सके सिफत।। १४२ ।।

रसना का रंग कैसे बताऊं, जिससे श्री राजजी महाराज रस भरी बोली बोलते हैं तथा परमधाम के रसों का स्वाद लेते हैं। वहां का वर्णन यहां की जबान नहीं कर सकती।

रस जानत सब अर्स के, रस बोलत रसना बैन।
रूहें एक सब्द सुनें रस का, तो पावें कायम सुख चैन।। १४३ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना से बड़ी रस भरी आवाज आती है। तब सब तरह के रसों का स्वाद मिलता है। जिनका एक शब्द सुनने से ही रूहों को अखण्ड सुख मिल जाता है।

नेक अधुर दोऊ खोलहीं, दन्त लाल उज्जल झलकत।
अधुर लाल दो पांखड़ी, जानों के नित्य मुसकत।। १४४ ।।

श्री राजजी महाराज थोड़ा सा होंठ खोलते हैं, तो दांतों की लालिमा और उज्ज्वलता दिखाई देती है। दोनों होंठों की दो पंखुड़ियां हैं, जो सदा मुस्कराती रहती हैं।

दन्त उज्जल ऐनक ज्यों, माहें जुबां देखाई देत।
देख दन्त की नाजुकी, अति सुख मोमिन लेत।। १४५ ।।

दांत शीशे की तरह इतने उज्ज्वल हैं कि इनमें से रसना दिखाई देती है। दांतों की ऐसी कोमलता देखकर मोमिन बड़े सुख लेते हैं।

कबूं दन्त रंग उज्जल, कबूं रंग लालक।
दोऊ खूबी दन्तन में, माहें रोसन ज्यों ऐनक।। १४६ ।।

कभी दांतों का रंग उज्ज्वल होता है, कभी लाल। दोनों प्रकार की खूबियों के अन्दर जिह्वा (जीभ) दिखाई देती है।

दोऊ बीच अधुर रेखा मुख, कटाव तीन तीन तरफ दोए।
पांखें रंग सुरंग दोऊ उपली, चढ़ि टेढ़ी सोभा देत सोए।। १४७ ।।

मुखारबिन्द के दोनों होंठों के बीच की रेखाओं के तीन-तीन कटाव दिखाई देते हैं। उनकी पांखें दोनों लाल रंग की पतली चढ़ती हुई टेढ़ी शोभा दिखाई देती है।

खुसरंग बीच सिंघोड़ा, तले दो अनी ऊपर एक।
इन दोऊ पांखें खुसरंग, ए कटाव सोभा विसेक।। १४८ ।।

इस लालिमा के ऊपर बीच में नासिका की बनावट सिंघाड़े की तरह दिखाई देती है। इन दोनों की पांखें लाल रंग की हैं, जिनके कटाव की शोभा विशेष रूप की है।

Nijanand App

तिन अनी पर दूजी अनी, सोभित सिंघोड़ा सुपेत।
ऊपर पांखें दोऊ फिरवली, बीच छेद्र सोभा दोऊ देत।। १४९ ।।

उस कोने के ऊपर दूसरा कोना भी सफेद रंग के सिंघाड़े की तरह शोभा देता है। इनके ऊपर दो पांखें आई हैं, जिनके बीच नाक के छेद शोभा देते हैं।

इन फूल ऊपर आई नासिका, सो आए बीच अनी सोभाए।
तिन पर रेखा दोऊ तिलक की, रंग खिन में कई देखाए।। १५० ।।

इस फूल के ऊपर नासिका है जिसकी नोंक आई है, जिनके बीच की अति सुन्दर शोभा दिखाई देती है। जिस पर सुन्दर तिलक की दो रेखाएं आई हैं, जिनके रंग क्षण-क्षण बदलते हैं।

दोऊ नेत्र टेढ़े कमल ज्यों, अनी सोभा दोऊ अतन्त।
जब पांपण दोऊ खोलत, जानों कमल दो विकसत।। १५१ ।।

श्री राजजी महाराज के दोनों नेत्र कमल के समान टेढ़े हैं। उनके दोनों कोने अत्यन्त शोभा देते हैं। जब आंखों की दोनों पल्कों को खोलते हैं, तो लगता है दो कमल के फूल खिल गए हैं।

नासिका के मूल सें, जानों कमल बने अदभूत।
स्याम सेत झांईं लालक, सोभा क्यों कहूं अंग लाहूत।। १५२ ।।

ऐसा लगता है कि नासिका की जड़ में दो अद्‌भुत कमल के फूल हैं, जिनमें कालापन, सफेदी और लालिमा झलकती है। परमधाम के ऐसे अंग का वर्णन कैसे करूं?

और कई रंग दोऊ कमल में, टेढ़े चढ़ते निपट कटाव।
मेहेर भरे नूर बरसत, हक सींचत सदा सुभाव।। १५३ ।।

नैन कमल में कई तरह के रंग हैं, जो तिरछे चढ़ते हुए और कई तरह के कटाव वाले हैं। यह श्री राजजी महाराज के नैन मेहर से भरपूर नूर की बरसात करते हैं। श्री राजजी महाराज अपने सहज स्वभाव से मोमिनों को अपने नूर से सींचते रहते हैं।

गौर गलस्थल गिरदवाए, और बीच नासिका गौर।
स्याह पांखड़ी कमल पर, सोभित टेढ़ियां नूर जहूर।। १५४ ।।

गाल का रंग चारों तरफ से गोरा है। नासिका भी गोरी है। नैन कमल के ऊपर भौंहों की काले रंग की पंखुड़ियां हैं और उनका टेढ़ेपन का नूर चमक रहा है।

अनी चार दोऊ कमल की, दो बंकी चढ़ती ऊपर।
अति स्याह टेढ़ी पांखड़ी, कछू अधिक दोऊ बराबर।। १५५ ।।

दोनों नेत्र कमल के चारों कोने तथा दोनों का तिरछापन ऊपर को चढ़ता नजर आता है। उनके ऊपर टेढ़ी पंखुड़ी काली भौंहें नजर आती हैं।

उज्जल निलाट तिन पर, आए मिली केस किनार।
सोहे रेखा बीच तिलक, जुबां कहा कहे सोभा अपार।। १५६ ।।

भौंहों के ऊपर माथा अति उज्ज्वल है, जिस पर बालों की किनारें आकर मिलती हैं। माथे (मस्तक) के बीच तिलक की रेखाएं हैं, जिनकी बेशुमार शोभा है। जबान से कही नहीं जाती।

Nijanand App

दोऊ तरफों रेखा हरवटी, आए मिली कानन।
गौर कान सोभा क्यों कहूं, नहीं नेत्र जुबां मेरे इन।।१५७।।

हरवटी के दोनों तरफ यह रेखाएं कानों को जाकर मिलती हैं। कान बड़े सुन्दर गोरे हैं, जिन्हें यहां के नेत्र देख नहीं सकते और जबान वर्णन नहीं कर सकती।

गौर गाल दोऊ निपट, माहें झलकत मोती लाल।
ए सोभा कान की क्यों कहूं, इन जुबां बिना मिसाल।।१५८।।

दोनों गाल गोरे हैं। इनमें कानों के लाल और मोती झलकते हैं। बिना उपमा के कानों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

केस रेखा कानों पीछे, बीच में अंग उज्जल।
हक मुख सोभा क्यों कहिए, इन जुबां इन अकल।।१५९।।

कानों के पीछे बालों की रेखाएं हैं और उनके बीच का अंग बड़ा उज्ज्वल दिखाई देता है। ऐसे श्री राजजी के मुखारबिन्द की शोभा यहां की जबान और बुद्धि से कैसे कहूं?

मुकट बन्यो सिर पाचको, रंग नंग तामें अनेक।
जुदे जुदे दसों दिस देखत, रंग एक पे और विसेक।।१६०।।

श्री राजजी महाराज के माथे पर पाच के नग का मुकुट है, जिसमें अनेक तरह के नगों के रंग हैं। अलग-अलग रंग को जब दसों दिशाओं में देखते हैं तो एक रंग से दूसरा और अच्छा लगता है।

असल नंग पाच एक है, असल रंग तामें दस।
दस दस रंग हर दिसें, सोभा क्यों कहूं जवेर अर्स।।१६१।।

मुकुट में असली नग पाच का है और फिर उसमें दस रंग दिखाई देते हैं, जो दसों दिशाओं में शोभा देते हैं। परमधाम के ऐसे मुकुट के जवेर का कैसे वर्णन करूं?

और मुकट सिर हक के, केहेनी सोभा तिन।
सो न आवे सोभा सब्द में, मुकट क्यों कहूं जुबां इन।।१६२।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर जो मुकुट है, उसकी शोभा का वर्णन करना है। उस मुकुट की शोभा शब्दातीत है। यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

दस रंग कहे एक तरफ के, दूजी तरफ दस रंग।
सो रंग रंग कई किरने उठें, किरन किरन कई तरंग।।१६३।।

मुकुट के एक तरफ दस रंग हैं। वैसे ही दस रंग दूसरी तरफ हैं। इन रंगों की कई किरणें हैं और किरणों में कई तरंगें उठती हैं।

किन विध कहूं सलूकियां, हर दिस सलूकी अनेक।
देख देख जो देखिए, जानों उनथें एह नेक।।१६४।।

मुकुट की सलूकी कैसे बताऊं? हर दिशा में अनेक तरह की शोभा है। जब बार-बार देखती हूं तो एक से दूसरी अच्छी लगती है।

Nijanand App

एक दोरी रंग नंग दस की, ऐसी मूल मुकट दोरी चार।
गिरदवाए निलवट पर, सुख क्यों कहूं सोभा अपार।। १६५ ।।

मुकुट में दस रंग की एक डोरी आई है। ऐसी चार डोरी घेरकर आई हैं, जो माथे के चारों तरफ शोभा देती हैं। इस बेशुमार सुख का वर्णन कैसे करूं?

यामें एक दोरी अव्वल तले, कांगरी दस रंग ता पर।
तिन दोरी पर बनी बेलड़ी, और कहूं सुनो दिल धर।। १६६ ।।

इस मुकुट में नीचे एक डोरी आई है, जिसमें दस रंगों के कंगूरे आए हैं। उसके ऊपर जो डोरी आई है उसमें बेलें बनी हैं, जिसका मैं वर्णन करती हूं। तुम ध्यान से सुनो।

इन पर भी दोरी बनी, ता पर बेल और जिनस।
तिन पर दोरी और कांगरी, जानों उनथें एह सरस।। १६७ ।।

इस डोरी के ऊपर जो डोरी बनी है उसमें कई तरह की बेलें और नक्शकारी है। इसके ऊपर चौथी डोरी है, जिसमें कंगूरे बने हैं। लगता है यह उनसे भी अच्छे हैं।

चारों दोरी के रंग कहे, और दस रंग कांगरी दोए।
और जिनस दो बेल की, रंग बोहोत ना गिनती होए।। १६८ ।।

मैंने चारों डोरी के रंग बताए हैं, दो डोरी में दस रंगों की कांगरी बताई है। दो में बेलों की शोभा बताई है, जिनके बेशुमार रंग हैं, जिनकी गिनती नहीं हो सकती।

दस रंग कांगरी के कहूं, चार मनके ऊपर तीन।
दो तीन पर एक दो पर, ए जानें दस रंग रूह प्रवीन।। १६९ ।।

कांगरी के दस रंग बताती हूं। पहले चार मनके, फिर तीन मनके, फिर दो और दो के ऊपर एक। यह दस मनके दस रंग के हैं, जो रूहों को अच्छे लगते हैं।

ए दस रंग के मनके दस, ऊपर एक रंग तले दोए।
दोए रंग तले तीन हैं, तीन रंग तले चार सोए।। १७० ।।

यह दस मनके दस रंग के हैं। ऊपर वाला मनका एक रंग, नीचे वाले दो-दो रंग के, उसके नीचे वाले तीन-तीन रंग के और उसके नीचे वाले चार-चार रंगों के हैं।

इन विध चार दोरी भई, और दोए भई कांगरी।
दोए बेली कई रंगों की, ए गिनती जाए न करी।। १७१ ।।

इस तरह से चार डोरी और दो कांगरी आई हैं। दो बेलों में कई रंग हैं, जिनकी गिनती नहीं होती है।

ऊपर फिरते फूल कटाव कई, कई बूटियां नकस।
तिन पर कही जो कांगरी, फिरती अति सरस।। १७२ ।।

इसके ऊपर कई तरह के फूल, कटाव, बेलियां, नक्शकारी है। उसके ऊपर जो कांगरी आई है, वह बड़ी सुन्दर है।

Nijanand App

तिन ऊपर टोपी बनी, ऊपर चढ़ती अनी एक।
तले कटाव कई रंग नंग, ए अनी फूल बन्यो विसेक।। १७३ ।।

इसके ऊपर टोपी बनी है, जिसके ऊपर चढ़कर एक नोक आई है। उस नोक के नीचे कई रंग नग के कटाव हैं। ऐसे सुन्दर फूल की बनावट की नोक बनी है।

तीन खूंने तिन ऊपर, दो दोऊ तरफों बीच एक।
दस दस नंग तिनों में, सो मोमिन कहें विवेक।। १७४ ।।

उस नोक के ऊपर तीन कलंगियां हैं दो दोनों तरफ, एक बीच में। उनमें दस-दस नग हैं। मोमिन इसका विवरण जानते हैं।

मानिक मोती पांने नीलवी, गोमादिक पाच पुखराज।
और हीरा नंग लसनियां, बीच मनि दसमी रही बिराज।। १७५ ।।

माणिक, मोती, पन्ना, नीलवी, गोमेद, पाच, पुखराज, हीरा, लसनियां और बीच में मणि के दस नग शोभा देते हैं।

ए दस रंग नंग तिनों में, फिरते बने तीन फूल।
तले डांड़ियां रंग अनेक हैं, ए सोभा देख हूजे सनकूल।। १७६ ।।

इन दसों नगों के रंग तीनों कलंगियों में हैं, जिसको घेरकर तीन फूल आए हैं। इनकी डंडियों में भी अनेक रंग हैं। यह शोभा देखकर मन अति प्रसन्न होता है।

दसों दिसा जित देखिए, मन चाह्या रूप देखाए।
बिना निमूने इन जुबां, किन बिध देऊं बताए।। १७७ ।।

दसों दिशाओं में जहां भी देखें, मन की चाहना अनुसार ही मुकुट का रूप दिखाई देता है। बिना नमूने के संसार की जबान से मैं कैसे तुम्हें बताऊं?

जिन रूह का दिल जिन विध का, सोई विध तिन भासत।
एक पलक में कई रंग, रूह जुदे जुदे देखत।। १७८ ।।

रूह के दिल में जैसी इच्छा होती है, उसी तरह का मुकुट दिखाई देता है, जो एक पल में कई रंग बदलता है, जिसे रूहें अलग-अलग तरीके से देखती हैं।

एह मुकुट इन भांत का, पल में करे कई रूप।
जो रूह जैसा देख्या चाहे, सो तैसा ही देखे सरूप।। १७९ ।।

यह मुकुट इस तरह का है कि पल में इसके कई तरह के रूप बदल जाते हैं। रूह जैसा देखना चाहती है, मुकुट का वैसा स्वरूप बन जाता है।

मैं मुकट कहूं बुध माफक, ए तो अर्स जवेर के नंग।
नए नए कई भांत के, कई खिन में बदले रंग।। १८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं मुकुट का वर्णन अपनी बुद्धि के अनुसार कहती हूं, वरना यह तो परमधाम के नग हैं, जो एक पल में कई तरह के रंगों और रूपों में बदल जाते हैं।

Nijanand App

और विध मुकट में, रूहें आवें सब मिल।
सब रूप रंग देखे इनमें, जो चाहे जैसा दिल।। १८१ ।।

मुकुट की एक और विशेषता देखो कि जब रूहें सब मिलकर इकट्ठी आती हैं, तो जिनकी चाहना जैसी होती है उनको वैसा ही रूप दिखाई देता है।

याही भांत सब भूखन, याही भांत वस्तर।
वस्तर भूखन सब एक रस, ज्यों कुन्दन में जड़तर।। १८२ ।।

इसी तरह के आभूषण हैं और वस्त्र हैं, जो एक रस हैं और सोने में जड़े हैं।

ए जड़े घड़े किन ने नहीं, ना पेहेर उतारत।
दिल चाहे रंग खिन में, मन पर सोभा फिरत।। १८३ ।।

इन वस्त्रों को, आभूषणों को न किसी ने बनाया है, न किसी ने जड़ा है। न किसी ने पहना ही है। न किसी ने उतारा है। एक पल में दिल के चाहे अनुसार इसकी शोभा बदल जाती है।

जिन खिन रूह जैसा चाहत, सो तैसी सोभा देखत।
बारे हजार देखें दिल चाहे, ए किन विध कहूं सिफत।। १८४ ।।

जिस पल में रूह जैसा देखना चाहती है उसे वैसी ही शोभा दिखाई देती है। इस तरह से बारह हजार रूहें अपने दिल के अनुसार शोभा देखती हैं, जिनकी सिफत कैसे बताऊं?

मोती करन फूल कुंडल, कहूं केते नाम भूखन।
पलमें अनेक बदलें, सुन्दर सरूप कानन।। १८५ ।।

मोती, कर्णफूल, कुण्डल और अनेक आभूषणों के नाम हैं, जो सुन्दर कानों में एक पल में अनेक तरह के रूप में बदल जाते हैं।

जवेर कहे मैं अर्स के, और जवेर तो जिमी से होत।
सो हक बका के अंग को, कैसी देखावे जोत।। १८६ ।।

मैंने परमधाम के सिनगार में जवेर कहा है, पर जवेर तो जमीन से पैदा होता है, फिर श्री राजजी महाराज के अखण्ड अंग की शोभा को यहां की किस उपमा से बताएं?

और नई पैदास अर्स में नहीं, ना पुरानी कबूं होए।
या रसांग या जवेर, जिन जानों अर्स में दोए।। १८७ ।।

परमधाम में नया कुछ पैदा नहीं होता और न कुछ पुराना है। परमधाम के जवेर हों, नग हों, यह सब एक हैं, इन्हें दो नहीं समझना।

अर्स साहेबी बुजरक, तिनको नाहीं पार।
ए नूर के एक पलथें, कई उपजे कोट संसार।। १८८ ।।

परमधाम की साहेबी बहुत भारी और बेशुमार है। श्री राजजी महाराज के सत अंग (अक्षर) के एक पल में कई करोड़ों संसार पैदा हो जाते हैं।

Nijanand App

सो नूर नूरजमाल के, नित आवें दीदार।
तिन हक के वस्तर भूखन, ए मोमिन जानें विचार।।१८९।।

वह अक्षर ब्रह्म श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए प्रतिदिन आते हैं। उन श्री राजजी महाराज के वस्त्र और आभूषणों की महिमा को मोमिन दिल में विचार कर लेंगे।

जिन मोमिन की सिफायत, करी होए मेंहेंदी महंमद।
सो जानें अर्स बारीकियां, और क्या जाने दुनी जो रद।।१९०।।

जिन मोमिनों की महिमा इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने की है, वही परमधाम की बारीक (खास) बातें जानते हैं। बाकी जो दुनियां नाशवान है, इस हकीकत को कैसे जान सकती है?

पेहेनावा नूरजमाल का, वस्तर या भूखन।
ज्यों नूर का जहूर, ए जानत अर्स मोमिन।।१९१।।

श्री राजजी महाराज के सिनगार में वस्त्र या आभूषणों के नूर को परमधाम के मोमिन ही जानते हैं।

ए कबूं न जाहेर दुनी में, अर्स बका हक जात।
सो इन जुबां इत क्या कहूं, जो इन सरूप को सोभात।।१९२।।

हक श्री राजजी की जात परमधाम के मोमिन हैं जो आज दिन तक इस दुनियां में जहिर ही नहीं हुए थे तो उनकी शोभा इस जबान से मैं अब क्या कहूं?

वस्तर भूखन हक के, ए केहेनी में ना आवत।
सिनगार करें दिल चाह्या, जो सबों को भावत।।१९३।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्र और आभूषणों की शोभा कही नहीं जाती, क्योंकि वह रूहों के दिल चाहा सिनगार करते हैं जो सबको अच्छा लगता है।

तो ए क्यों आवे बानी में, कर देखो सहूर हक।
ए अर्स तनों विचारिए, तुम लीजो बुध माफक।।१९४।।

अपनी परआतम के तनों से श्री राजजी महाराज की शोभा को देखो और बुद्धि माफिक ग्रहण करो, क्योंकि यह शोभा कही नहीं जा सकती।

अर्स में भी रूहें लेत हैं, जैसी खाहिस जिन।
रूह जैसा देख्या चाहे, तिन तैसा होत दरसन।।१९५।।

परमधाम में जिसकी जैसी चाहना होती है, रूहें उसी शोभा को देखती हैं। जो जैसा रूप देखना चाहती है, उसको वैसा ही रूप दिखाई देता है।

वस्तर भूखन किन ना किए, हैं नूर हक अंग के।
ए क्यों आवें इन केहेनी में, अंग सांई के सोभावें जे।।१९६।।

यह वस्त्र और आभूषण किसी ने न बनाए हैं न गढ़े हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग का नूर है जो श्री राजजी महाराजजी के अंग को शोभा देता है, वह यहां कैसे कहा जाए?

Nijanand App

अपार सूरत साहेब की, अपार साहेब के अंग।
अपार वस्तर भूखन, जो रेहेत सदा अंगो संग।। १९७ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग की, स्वरूप की, वस्त्र और आभूषणों की शोभा बेशुमार है, जो सदा श्री राजजी महाराज के अंग के साथ रहती है।

जो सोभा हक सूरत की, सो क्यों पुरानी होए।
नई पुरानी तित कहावत, जित कहियत हैं दोए।। १९८ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा कभी पुरानी नहीं होती। नई-पुरानी वहां कही जाती है, जहां दो हों, अर्थात् अंग अलग हो और सिनगार अलग हो, वहीं नया-पुराना होता है।

इत कबूं न होए पुराना, ना पैदा कबूं नया।
दीदार करें रूहें खिन में, खिन खिन दिल चाह्या।। १९९ ।।

यहां नया-पुराना कभी नहीं होता। रूहें जैसा दिल में चाहती हैं, एक-एक क्षण में बदले हुए सिनगार का दर्शन करती हैं।

जामा पटुका और इजार, ए सबे हैं एक रस।
कण्ठ हार सोभा जामें पर, जानों एक दूजे पे सरस।। २०० ।।

जामा, पटका और इजार सब एक रस हैं और अंग की शोभा हैं। इस तरह से जामा के ऊपर गले में हारों की शोभा है। वह एक दूसरे से अधिक अच्छे लगते हैं।

कण्ठ तले हार दुगदुगी, कई विध विध के विवेक।
कई रंग जंग जोतें करे, देखत अलेखे रस एक।। २०१ ।।

गले में हारों के नीचे दुगदुगी है, जो कई-कई तरह की हैं, जिनमें कई तरह के रंगों की किरणें आपस में टकराती हैं और सब बेशुमार एक रस दिखाई देती हैं।

जुड़ बैठी जामें पर चादर, सोभा याही के मान।
ए नाम लेत जुदे जुदे, हक सोभा देख सुभान।। २०२ ।।

जामे के ऊपर चादर अंग पर शोभा देती है, जो उसी के अनुसार है। श्री राजजी महाराज की शोभा को देखकर मैं अलग-अलग वस्त्रों के नाम बताती हूं। वह सब अंग की ही शोभा हैं।

बगलों कोतकी कटाव, और बंध बेल गिरवान।
रंग जुदे जुदे झलकत, रस एकै सब परवान।। २०३ ।।

जामे की बगलों में सुन्दर भरत (कशीदाकारी) का काम किया हुआ दिखता है। जामे की सुन्दर तनी दिखाई देती है। इनमें अलग-अलग रंग झलकते दिखाई देते हैं, परन्तु है सब अंग की शोभा।

बांहें बाजू बंध सोभित, रंग केते कहूं गिन।
तेज जोत लरें आकास में, क्यों असल निरने होए तिन।। २०४ ।।

बाजूबन्ध बाहों पर बंधे शोभा देते हैं, जिनके रंग गिनकर कितने बताऊं? इनकी किरणें आकाश में टकराती हैं, तो असल रंग कौन सा है, यह निर्णय कैसे हो?

Nijanand App

क्यों कहूं सोभा फुंदन, लटकत हैं एक जुगत।
आहार देत हैं आसिकों, देख देख न होए तृपित।। २०५ ।।

बाजूबन्ध के फुंदन एक विशेष युक्ति के साथ लटकते हैं, जिसे देख-देखकर आशिक रूह की चाहना तृप्त नहीं होती।

या विध काड़ों पोहोंचियां, या विध कड़ों बल।
कई ऊपर रंग जंग करें, तामें गिने न जाए असल।। २०६ ।।

इसी तरह से कलाई में कड़े और पोहोंची हैं। कड़ों के बल की कैसे बताऊं? इसके ऊपर के कई रंग आपस में टकराते हैं, जिसमें से असल रंगों को भी गिना नहीं जा सकता।

हस्त कमल अति कोमल, उज्जल हथेली लाल।
केहेते लीकें सलूकियां, हाए हाए लगत न हैड़े भाल।। २०७ ।।

श्री राजजी महाराज का हस्त कमल अति कोमल कमल के समान है, जिसकी हथेली उज्ज्वल लाल रंग की है। हथेलियों की रेखाओं की बनावट वर्णन करते समय हाय! हाय! दिल में घाव क्यों नहीं लगते?

पतली पांचों अंगुरियां, पांचों जुदी जुगत।
जुदे जुदे रंग नंग मुंदरी, सोभा न पोहोंचे सिफत।। २०८ ।।

हाथों की पांचों उंगलियां पतली व अलग युक्ति की हैं। इसमें अलग-अलग रंग के नगों की मुंदरियां हैं, जिनकी शोभा और सिफत का बयान नहीं हो पाता।

निरमल अंगुरियों नख, ताकी जोत भरी आकास।
सब्द न इन आगूं चले, क्यों कहूं अर्स प्रकास।। २०९ ।।

उंगलियों के नख बड़े निर्मल हैं, जिनकी रोशनी आकाश में भरी है। अब इसके आगे कहने की शक्ति नहीं है, तो परमधाम की इस रोशनी का वर्णन कैसे करूं?

अब चरन कमल चित्त देय के, बैठ बीच खिलवत।
देख रूह नैन खोल के, ज्यों आवे अर्स लज्जत।। २१० ।।

हे मेरी आत्मा! अब श्री राजजी के चरण कमलों को चित्त में लेकर मूल-मिलावा में ध्यान लगा। अपनी आत्मदृष्टि खोलो, जिससे परमधाम का सुख मिले।

इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे।
नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए।। २११ ।।

यहीं बैठकर श्री राजजी महाराज के चरणों की सुन्दरता को चित्त से देख, जिनके चरणों की तली बहुत नर्म और उज्ज्वल है और जो तुझे सुख देने वाली है।

जोत देख चरन नख की, जाए लगी आसमान।
चीर चली सब जोत को, कोई ना इन के मान।। २१२ ।।

हे मेरी रूह! श्री राजजी के चरणों के नख की जोत को देख, जो आसमान तक जाती है। इनके समान ही सब नगों की जोत चीरकर आसमान तक जाती है। इनके समान कोई उपमा नहीं है। कैसे समझाऊं?

Nijanand App

तेज कोई ना सेहे सके, बिना अर्स रूह मोमिन।
तेजें उड़े परदा अन्धेरी, ए सहे बका अर्स तन।। २१३ ।।

नखों के तेज को सहन करने की शक्ति परमधाम की रूहों के अतिरिक्त किसी को नहीं है। इनके तेज से इस संसार का तन छूट जाता है। इसको सहन करने की शक्ति परमधाम के तनों को ही है।

अर्स तन की एह बैठक, ए जोतै के सींचेल।
ए अरवा तन सब अर्स के, इनों नजरों रहे ना खेल।। २१४ ।।

परमधाम के तनों की मूल-मिलावे की बैठक श्री राजजी के चरणों के नख की जोत के ही आशिक है। यही परमधाम के तनों की रूहें हैं। इनकी नजरों के सामने खेल टिक नहीं सकता।

पांउं देख देख भूखन, कई विध सोभा करत।
सो नए नए रूप अनेक रंगों, खिन खिन में कई फिरत।। २१५ ।।

चरणों को देख-देखकर आभूषणों की तरफ देखती हूं, जो कई तरह की शोभा के हैं। यह आभूषण एक क्षण में कई तरह के रंगों में नए-नए रूपों में बदल जाते हैं।

चारों जोड़े चरन तो कहूं, जो घड़ी साइत ठेहेराय।
खिन में करें कोट रोसनी, सो क्यों आवे माहें जुबांए।। २१६ ।।

कांबी, कड़ला, घुंघरी, झांझरी जो चरण कमलों में पहन रखे हैं, उनकी शोभा एक क्षण के लिए स्थिर हो जाए तो कुछ वर्णन कर सकूं, परन्तु एक ही पल में वह कई तरह के रूप बदलते हैं तो इनकी रोशनी का यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

हरी इजार माहें कई रंग, ऊपर जामा दावन सुपेत।
कई रंग झांई देख के, अर्स रूहें सुख लेत।। २१७ ।।

हरी इजार में कई तरह के रंग हैं, जिसके ऊपर सफेद रंग का जामा आया है। इन कई रंगों की झांई को देखकर परमधाम की रूहें बहुत सुख लेती हैं।

फुन्दन बन्ध अति सोभित, माहें रंग अनेक झलकत।
ए सेत हरे के बीच में, माहें नरम झाबे खलकत।। २१८ ।।

जामे की तनी के फुन्दन बड़े शोभायमान हैं, जिसमें कई तरह के रंग झलकते हैं। सफेद जामा, हरी इजार के बीच में फुन्दन के गुच्छे टकराते हैं।

जामें दावन सेत झलकत, जोत उठत आकास।
और जोत चढ़त करती जंग, पीत पटुके की प्रकास।। २१९ ।।

बागे की सफेद किरणें आकाश तक जाती हैं। इसी अनुसार पीले पटके की किरणें आकाश में जाकर टकराती हैं।

हार सोभित हिरदे पर, बाजू बन्ध पोहोंची कड़े।
सुन्दर सरूप सिर मुकट, दिल आसिकों देखत खड़े।। २२० ।।

गले में सुन्दर हार शोभा देते हैं। हाथ में बाजूबन्ध, पोहोंची और कड़े शोभा देते हैं। शीश पर सुन्दर मुकुट धारण किया है। यह शोभा आशिकों के दिल में अटक जाती है।

Nijanand App

चोली चादर हार झलकत, आकास रह्यो भराए।
तो सोभा मुख मुकट की, किन बिध कही जाए।।२२१।।

जामे की चोली और आसमानी चादर और गले के हारों की जोत आकाश में भर रही है, तो फिर मुखारबिन्द और मुकुट की शोभा का कैसे वर्णन करें?

मीठी सूरत किसोर की, गौर लाल मुख अधुर।
ए आसिक नीके निरखत, मुख बानी बोलत मधुर।।२२२।।

श्री राजजी महाराज का लुभावना मुखारबिन्द (मुख), गोरे लाल अधर, जिससे मधुर रसीली वाणी बोलते हैं, आशिक रूहें अच्छी तरह से देखती हैं।

चारों चरन बराबर, सुभान और बड़ी रूह जी।
गौर सब गुन पूरन, सुन्दर सोभा और सलूकी।।२२३।।

श्री राजश्यामाजी के चारों चरण गोरे, सब गुणों से भरे, सनकूल और सुन्दर शोभा देते हैं।

तेज जोत नूर भरे, लाल तली कोमल।
लाल लांके लीकें क्यों कहूं, रूह निरखे नेत्र निरमल।।२२४।।

चरणों की तली लाल है। लांक की रेखाएं भी लाल हैं, जो तेज से भरपूर हैं। इनको रूहें अपने निर्मल नेत्रों से देखती हैं।

चारों तरफों चकलाई, फना अदभुत रूह खैंचत।
एड़ियां अति अचरज, इत आसिक तले बसत।।२२५।।

पांव के पंजे के चारों ओर की सुन्दरता रूह को आकर्षित करती है। चरणों की एड़ियों की शोभा अद्भुत है। आशिक रूहें इन चरणों के तले ही रहती हैं।

चारों चरन अति नाजुक, जो देखूं सोई सरस।
ए अंग नाहीं तत्व के, याकी जात रूह अर्स।। २२६।।

श्री राजजी और श्री श्यामाजी के चारों चरण बहुत नाजुक हैं। जिसे देखती हूं वही अच्छा लगता है। इनके अंग पांच तत्व के नहीं हैं। यह परमधाम में अखण्ड हैं।

ए मेहेर करें चरन जिन पर, देत हिरदे पूरन सरूप।
जुगल किसोर चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप।।२२७।।

श्री राजश्यामाजी के चरण जिन पर कृपा कर देते हैं, उनके हृदय में दोनों स्वरूप पूर्ण रूप से विराजमान हो जाते हैं। श्री राजश्यामाजी की शोभा चित्त में चुभ जाती है। इनका सुन्दर स्वरूप उपमा रहित सुन्दर सुख देने वाला है।

जुगल किसोर अति सुन्दर, बैठे दोऊ तखत।
चरन तले रूहों मिलावा, बीच बका खिलवत।।२२८।।

श्री राजश्यामाजी के दोनों सुन्दर स्वरूप तख्त पर विराजमान हैं। अखण्ड मूल-मिलावा के बीच रूहें उनके चरणों के तले बैठी हैं।

Nijanand App

महामत कहे मेहेबूब की, जेती अर्स सूरत।
सो सब बैठीं कदमों तले, अपनी ए निसबत।। २२९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम में जितनी श्री राजजी की अंगना हैं, वह सब उनके चरण कमलों के तले बैठी हैं। यही हमारी निसबत है, हमारा यही अर्श है।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। १४४६ ।।

सिनगार कलस तिन सिनगार बरनन विरहा रस

क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन कैसे करूं, जो आज तक किसी ने नहीं किया। यह वर्णन सुनकर यह झूठी देह कैसे रह सकती है?

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन।। २ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन नहीं कर सकतीं और इनके सिवाय वहां कोई पहुंचता नहीं है, तो फिर श्री राजजी महाराज की हकीकत जाहिर कैसे हो, जिन्हें देखते ही यह तन नष्ट हो जाता है।

हक देखे वजूद ना रहे, ज्यों दारू आग से उड़त।
यों वाहेदत देखें दूसरा, पाव पल अंग न टिकत।। ३ ।।

जैसे बारूद का पहाड़ जरा सी आग की चिनगारी से उड़ जाता है, वैसे ही श्री राजजी महाराज को देखकर सांसारिक तन नहीं रह सकते। इस तरह से मोमिनों के अतिरिक्त दूसरा कोई एक क्षण मात्र के लिए भी श्री राजजी महाराज को नहीं देख सकता।

हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम॰ अलमस्त।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क की आग बड़ी जोरदार है, जिसमें मोमिन रहते हैं। जिन मोमिनों को इश्क की आग लगी है, वह आठों पहर उसी में मग्न रहते हैं।

जो निस दिन रहे आग में, ताए आगै के सब तन।
वाको जलाए कोई ना सके, उछरे आगै के वतन।। ५ ।।

जो रात-दिन इश्क की आग में रहते हैं, उनके तन सभी आग के हो जाते हैं। उनको दूसरा फिर कोई जला नहीं सकता। वह इश्क की आग में ही अपने घर में उछलते-कूदते रहते हैं।

आग जिमी पानी आग का, आग बीज आग अंकूर।
फल फूल बिरिख आग का, आग मजकूर आग सहूर।। ६ ।।

इनके लिए जमीन, पानी, बीज, फल, फूल सब आग के हैं। विचार करके देखो तो सब जगह इश्क का ही रंग है।

Nijanand App

बिरिख मोमिन आग इस्क, और आग इस्क अर्स।
सब पीवें आग इस्क रस, दिल आगै अरस–परस।। ७ ।।

मोमिन अर्श के वृक्ष के समान हैं और आग भी परमधाम के इश्क की है। सभी मोमिन इश्क की आग को ही पीते हैं। इस तरह से मोमिनों का दिल और इश्क की आग दोनों अरस-परस (परस्पर) हैं।

घर मोमिन आग इस्क में, हक अगनी के पालेल।
सोई इस्क आग देखावने, ल्याए जो माहें खेल।। ८ ।।

मोमिनों का घर परमधाम इश्क की आग का है। इनको श्री राजजी महाराज ने अपने इश्क की अग्नि से ही पाला है। उसी इश्क की आग को दिखाने के वास्ते श्री राजजी महाराज इन्हें खेल में लाए हैं।

जो पैदा हुआ आग का, सो आग में जलत नाहें।
वह वजूद आग इस्क के, रहें हमेसा आग माहें।। ९ ।।

जो तन आग में पैदा हुआ है, वह आग में जलता नहीं है। ऐसे इश्क के तन सदा इश्क की आग में रहते हैं।

सोई बात करें हक अर्स की, सहूर या बेसहूर।
हुए सब विध पूरन पकव, हक अर्स दिन जहूर।। १० ।।

मोमिन होश में या बेहोशी में श्री राजजी महाराज या परमधाम की ही बातें करते हैं। इस तरह से मोमिन सब तरह से पक्के हो गए। उन्हें श्री राजजी महाराज और परमधाम की जागृत बुद्धि का ज्ञान है।

जो हक देखे टिक्या रहे, सोई अर्स के तन।
सोई करें मूल मजकूर, सोई करे बरनन।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज को देखकर जो नष्ट न हों, वही परमधाम के तन हैं। वही खेल की शुरूआत में इश्क रब्द (विवाद) का वर्णन करेंगे।

पर ए देख्या अचरज, जो विरहा सब्द सुनत।
क्यों तन रह्या जीव बिना, हाए हाए ए सुनत न अरवा उड़त।। १२ ।।

एक बड़ी हैरानी वाली बात यह देखो कि विरह का शब्द सुनते ही मोमिनों का तन उड़ जाना चाहिए। फिर भी यह वचन सुनकर भी यह संसार में खड़े हैं। पता नहीं श्री राजजी के बिना इनके तन कैसे खड़े हैं?

आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरहा ना निकसत।
जब दिल विरहा जानिया, तब आह अंग चीर चलत।। १३ ।।

जो अर्श के आशिक हैं, उनके मुख से विरह कभी निकलता नहीं है। जब उनके दिल में वियोग की पहचान हो जाती है, तो उनकी रूह के एक ही इश्क की आह में तन छूट जाते हैं।

ए हांसी कराई हुकमें, इस्क दिया उड़ाए।
मुरदा ज्यों इस्क बिना, गावत विरहा लड़ाए।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने इश्क को छीनकर यह हंसी कराई है। यह मुर्दा तन इश्क के बिना ही विरह के गीत बड़े प्यार से गा रहा है।

Nijanand App

कबूं अर्स रूहें ऐसी ना करें, जैसी हमसे हुई इन बेर।
अर्स रूहों को विरहा रसें, हुए बेसक न लैयां घेर।। १५ ।।

परमधाम की रूहें कभी ऐसा नहीं कर सकतीं जैसे इस बार हमसे हुआ है। परमधाम की रूहों को पहचान हो जाने पर भी वह विरह के रस में मग्न नहीं हुईं।

चरन तली की जो लींकें, सो एक लीक न होए बरनन।
तो मुख से चरन क्यों बरनवूं, जो नूरजमाल का तन।। १६ ।।

चरण कमलों की तली में जो रेखाएं हैं, उनकी एक भी रेखा का वर्णन नहीं हो सकता, तो फिर श्री राजजी महाराज के चरण कमल जो श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं, उनका वर्णन इस मुख से कैसे करूं?

इन चरनों विध क्यों कहूं, नाजुक निपट नरम।
ए बरनन करते इन जुबां, हाए हाए उड़त न अंग बेसरम।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की हकीकत कैसे बताऊं, जो बहुत ही नाजुक और कोमल हैं। इस अंग का यहां की जबान से वर्णन करते हुए यह बेशर्म तन समाप्त क्यों नहीं हो जाता?

चरन केहेती हों मुखथें, जो निरखती थी निस दिन।
सो समया याद न आवहीं, क्यों न लगे कलेजे अगिन।। १८ ।।

मैं अपने मुख से चरण कमलों की शोभा कहती हूं, जिसे रात-दिन देखा करती थी। अब वह समय याद क्यों नहीं आता और कलेजे में चोट क्यों नहीं लगती?

चरन अंगूठे चित्त दे, नैनों नखन देखती जोत।
नजरों निमख न छोड़ती, हाए हाए सो अब लोहू भी ना रोत।। १९ ।।

चरणों के अंगूठे के नखों की जोत को मैं नैनों से बड़े प्यार से देखा करती थी और एक पल के लिए भी कभी नजर से अलग नहीं रहती थी। हाय! हाय! अब मेरी ऐसी हालत हो गई कि मेरी आंखों से खून के आंसू क्यों नहीं निकलते?

नैनों अंगुरियां देखती, कोमलता हाथ लगाए।
सो मेरे नैन नाम धराए के, हाए हाए जल बल क्यों न जाए।। २० ।।

मैं अपने नैनों से श्री राजजी महाराज के चरणों की उंगलियों की कोमलता हाथ लगा लगाकर देखती थी। अब यही मेरे नैन मेरी बदनामी करा रहे हैं। हाय! हाय! यह नैन जल बल कर नष्ट क्यों नहीं होते?

चरन तली रेखा देखती, मेरी आंखों नीके कर।
ए कटाव किनार पर कांगरी, हाए हाए नैना जले न नाम धर।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली की रेखाओं को मेरी आंखें अच्छी तरह से देखा करती थीं। अब जिन चरणों के किनारे पर रेखाओं में कटाव और कांगरी बनी है, हाय! हाय! वही देखकर भी यह हमारे नैन जल क्यों नहीं जाते? क्यों बदनामी कराते हैं?

रंग लाल कहूं के उज्जल, के देख खूबियां होत खुसाल।
सो देखन वाले नाम धराए के, हाए हाए ओ जले न माहें क्यों झाल।। २२ ।।

चरण कमल का रंग लाल कहूं कि उज्ज्वल कहूं? इनकी खूबी देखकर बहुत खुशी होती है। ऐसे इन चरणों को देखने वाले मोमिन क्यों अपने नाम की बदनामी कराते हैं? जलकर खाक क्यों नहीं हो जाते?

Nijanand App

नाजुक सलूकी मीठी लगे, नैना देखत ना तृपिताएं।
हाए हाए ए अनुभव दिल क्यों भूलै, ए हुकमें भी क्यों पकराए।। २३ ।।

इन चरणों की नजाकत और सलूकी बड़ी अच्छी लगती है, जिसे देखकर नेत्र तृप्त क्यों नहीं होते? हाय! हाय! हम अपने घर की बातें क्यों भूल गए? श्री राजजी महाराज ने हमें हुकम के अधीन क्यों कर दिया?

नाम जो लेते विरह को, मेरी रसना गई ना टूट।
सो विरहा नैनों देख के, हाए हाए गैयां न आंखां फूट।। २४ ।।

हम श्री राजजी से बिछुड़ गये हैं। ऐसी बात कहते समय मेरी जबान टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गई? अब आंखों से देख भी रहे हैं कि हम बिछुड़ गए हैं। हाय! हाय! फिर भी मेरी आंखें क्यों नहीं फूट गईं?

हक बानी कानों सुनती, कानों सुन के करती मैं बात।
सो अवसर हिरदे याद कर, हाए हाए नूर कानों का उड़ न जात।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के वचन मैं अपने कानों से सुनती थी और फिर सुनने के बाद उनसे बातें करती थी। उस समय को याद करके हाय! हाय! यहीं कानों का नूर समाप्त क्यों नहीं हो जाता?

क्यों कहूं चरन के भूखन, अर्स जड़ सबे चेतन।
सोभा सुन्दर सब दिल चाही, बोल बोए नरम रोसन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण के आभूषणों को कैसे कहें? परमधाम में सब जड़ भी चेतन हैं और दिल के चाहे अनुसार सभी सुन्दर लगते हैं। बोली और नरमाई तथा सुगन्धि अच्छी लगती है।

क्या वस्तर क्या भूखन, असल अंग के नूर।
हाए हाए रूह मेरी क्यों रही, करते एह मजकूर।। २७ ।।

वस्त्र या आभूषण सभी श्री राजजी के अंग की शोभा हैं, जिनका वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरी रूह क्यों यहां संसार में रह गई?

रंग रेसम हेम जवेर, ना तेज जोत सब्द लगत।
एही अचरज अरवाहें अर्स की, ए सुनते क्यों ना उड़त।। २८ ।।

परमधाम के नग, रेशम, सोना, जवेर के तेज व जोत का वर्णन करने के लिए यहां शब्द ही नहीं हैं। एक बड़ी हैरानी वाली बात है कि यह सब सुन करके भी परमधाम की रूहें फना क्यों नहीं हो जातीं?

याही भांत इजार की, भांत भूखन की सब।
रूप करें कई दिल चाहे, जैसा रूह चाहे जब।। २९ ।।

इसी तरह से इजार के भराव और चरणों के आभूषणों की हकीकत है। जब जैसी शोभा रूहें चाहती हैं, तब वैसे ही उनके रूप बदल जाते हैं।

इजार बंध याही रस का, भांत भांत झलकत।
देख लटकते फुंदन, हाए हाए अरवा क्यों न कढ़त।। ३० ।।

इजारबन्ध भी इसी तरीके का झलक रहा है, जिसके लटकते हुए फुंदड़े को देखकर रूहें फना क्यों नहीं हो जातीं?

Nijanand App

चरन से कमर लग, भूखन या वस्तर।
हेम जवेर या रेसम, सब एकै रस बराबर।। ३१ ।।

चरण कमलों से लेकर कमर तक आभूषण हों या वस्त्र, सोना, जवेर हो या रेशम, सब एक रस और बराबरी की शोभा रखते हैं।

दिल चाही नरम सोभित, दिल चाही जोत खुसबोए।
जिन खिन जैसा दिल चाहे, सब विध दें सुख सोए।। ३२ ।।

यह सब दिल के चाहे अनुसार नर्म हो जाते हैं तथा इनकी जोत और सुगन्धि जिस क्षण जैसा दिल चाहता है, वैसा ही बन जाती हैं, फिर यह सब तरह के सुख देते हैं।

कई रंग हैं इजार में, उठत जामें में झांईं।
अरवा क्यों सखत हुई, दिल देख उड़त क्यों नाहीं।। ३३ ।।

इजार में कई रंग हैं, जिसकी झलक जामे में दिखाई देती है। मेरी अरवाह (रूह) इतनी सख्त क्यों हो गई? यह दिल के चाहे अनुसार शोभा को देखकर भी फना क्यों नहीं हो जाती?

आसमान जिमी के बीच में, भरी जोत उठें कई रंग।
घट बढ़ काहूं है नहीं, करें दिल चाही कई जंग।। ३४ ।।

आसमान जमीन के बीच नग और जवेर सभी की कई रंग की किरणें उठती हैं, जो एक दूसरी से न कम हैं न ज्यादा हैं, बल्कि दिल में चाहे अनुसार ही इनकी किरणें आपस में टकराती हैं।

ए सब विध दिल देखत, करे जुबां अकल बरनन।
तो भी अरवा ना उड़ी, कोई सखत अंतस्करन।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज के सिनगार की यह सब शोभा दिल में दिखाई देती है, जिसका वर्णन यहां की जबान और बुद्धि करती है। फिर भी हमारी रूह फना क्यों नहीं हो जाती? यह दिल इतना सख्त कैसे हो गया?

दिल सखत बिना इन सरूप की, इत लज्जत लई न जाए।
ए हुकम करत सब हिकमतें, हक इत ए सुख दिया चाहें।। ३६ ।।

दिल सख्त किए बगैर श्री राजजी महाराज के स्वरूप की लज्जत भी तो यहां नहीं मिल सकती। यह सब काम श्री राजजी महाराज का हुकम बड़ी हिकमत से करता है, क्योंकि श्री राजी महाराज मोमिनों को संसार में सुख देना चाहते हैं।

ए रूह के नैनों देखिए, नाजुक कमर निपट।
अति देखी सुन्दर चढ़ती, कही जाए न सोभा कटि।। ३७ ।।

रूह की नजर से देखें तो श्री राजजी महाराज की नजर बहुत ही नर्म है, जिसकी शोभा दूसरे अंगों से चढ़ती दिखाई देती है, इसलिए कमर की शोभा कही नहीं जा सकती।

कटि कमर सलूकी देख के, नैना क्यों रहे अंग को लाग।
ए बातें दिल से विचारते, हाए हाए लगी न दिल को आग।। ३८ ।।

कमर की सलूकी को देखकर मेरी यह आंखें संसार के तन में क्यों खड़ी हैं? इस बात को दिल में विचार करने से हाय! हाय! दिल को आग क्यों नहीं लग जाती?

Nijanand App

ए गौर रंग लाल उज्जल, छाती कई विध देत तरंग।
नाहीं निमूना जोत जवेर, जो दीजे अर्स के नंग।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती गोरी लाल रंग की उज्ज्वल है, जिससे कई तरह की तरंगें उठती हैं। जवेरों की जोत का नमूना संसार में है ही नहीं, जिसकी तुलना परमधाम के नग से की जा सके।

हैड़ा हक का देख कर, मेरा जीव रह्या अंग माहें।
हाए हाए मुरदा दिल मेरा क्यों हुआ, ए देख चलया नाहें।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के हृदय को देखकर मेरा जीव अंग में ही अटक कर रह गया। हाय! हाय! यह मेरा दिल इतना मुर्दा क्यों हो गया, जो ऐसी शोभा को देखकर फना नहीं हुआ?

हक हैड़ा देखकर, मेरे हैड़े रेहेत क्यों दम।
मांग्या सुख इत देवे को, सो राखत मासूक हुकम।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज के हृदय को देखकर मेरे तन में सांस क्यों अटक रहा है? हमने श्री राजजी महाराज से परमधाम में संसार के सुख की मांग की थी और इसलिए श्री राजजी महाराज का हुकम हमें जिन्दा रखे है।

हाथ पांउं मेरे क्यों रहे, देख हक हाथ पांउं।
हाए हाए ए जुलम क्यों सह्या, क्यों भूले अवसर दाउ।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज के हाथ-पांव को देखकर मेरे हाथ-पांव कैसे खड़े हैं? हाय! हाय! ऐसे जुल्म को हमने कैसे सहन कर लिया? अवसर को हाथ से क्यों जाने दिया?

चकलाई दोऊ खभन की, अंग उतरता सलूक।
देख कमर कटि पतली, हाए हाए दिल होत ना टूक टूक।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज के दोनों बाजुओं की शोभा तथा बाजू से कलाई तक उतरती हुई सलूकी और पतली कमर को देखकर हाय! हाय! मेरे दिल के टुकड़े क्यों नहीं हो जाते?

मैं देख्या अंग जामे बिना, नाजुक जोत नरम।
ए केहेनी में न आवहीं, ए अंग होएं न मांस चरम।। ४४ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के अंग को बिना वस्त्रों के भी देखा है, जो बहुत ही नाजुक और नर्म है। उसका वर्णन किया नहीं जा सकता, क्योंकि श्री राजजी महाराज का अंग मांस और चमड़े से नहीं बना है।

जामे दावन बांहें चोली, सिंध सागर रल्या मानो खीर।
जोत भरी जिमी आसमान, मानो चलसी ऊपर चीर।। ४५ ।।

जामे का घेरा, बाहें तथा चोली ऐसे मिले हैं, जिनकी शोभा दूध (खीर) के सागर के समान दिखाई पड़ती है, जिनकी किरणें जमीन और आसमान में भरी हैं। लगता है यह जोत अभी और ऊपर जाएगी।

चीन मोहोरी बगल या बीच, गिरवान कोतकी नकस।
सब जामा जानों के भूखन, ठौर एक दूजे पे सरस।। ४६ ।।

बगल की बीच की या मोहरी की चुन्नटें तथा जामे पर भरत की नक्शकारी जामे के यह सभी आभूषण एक दूसरे से अच्छे लगते हैं।

Nijanand App

जब जैसा दिल चाहत, तिन खिन तैसा देखत।
वस्तर भूखन हक अंग के, केहेनी में न आवत।।४७।।

जिस समय दिल जैसा देखना चाहता है, उसी क्षण उसे वही शोभा दिखाई देने लगती है, इसलिए श्री राजजी महाराज के वस्त्र आभूषणों की शोभा कही नहीं जा सकती।

ए वस्तर भूखन भांत और हैं, अर्स अंग का नूर।
जो सोभा देत इन अंग को, सो क्यों आवे माहें सहूर।।४८।।

वस्त्र और आभूषण एक और तरह के हैं, जो श्री राजजी महाराज के अंग के नूर की ही शोभा हैं। जिससे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा होती है, उनका वर्णन कैसे करें?

और क्या चीज ऐसी अर्स में, जो सोभा देवे सरूप को।
हक सरभर कछू न आवहीं, रूह देखे विचार दिल मों।।४९।।

परमधाम में ऐसी और कौन सी चीज है जो श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा देती है। हे मेरी रूह! दिल से विचार करके देख। श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा के समान और कुछ भी नहीं है।

ए निपट बात बारीक है, अर्स रूहें करना विचार।
और कोई होवे तो करे, बात अलेखे अपार।।५०।।

यह बात बड़ी खास है (बारीक है) जिसे परमधाम की रूहों! तुम विचार करना। यह शोभा बेशुमार है। यदि कोई दूसरा हो तो वर्णन करें।

सोभा हक के अंग की, सो अंग ही की सोभा अंग।
ऐसी चीज कोई है नहीं, जो सोभे इन अंग संग।।५१।।

श्री राजजी महाराज के अंग के सिनगार उनके अंग की ही शोभा हैं। परमधाम में ऐसी कोई चीज नहीं है, जो श्री राजजी महाराज के अंग के समान शोभा देने वाली हो।

कहूं पटुके की सलूकी, के ए भूखन कहूं कमर।
ए छब फब दिल देख के, न जानों रूह रेहेत क्यों कर।।५२।।

पटुके की बनावट कहूं या आभूषणों का वर्णन करूं या फिर कमर की छवि और सुन्दरता को दिल से देखूं, फिर भी यह सब देखकर पता नहीं, मेरी रूह क्यों खड़ी है? फना क्यों नहीं हो गई?

ए कहे जांए न वस्तर भूखन, ए चीज दुनियां के।
जो सोभा देत हक अंग को, ताए क्यों नाम धरिए ए।।५३।।

वस्त्र और आभूषण दुनियां की चीजें कही जाती हैं। वस्त्र-आभूषण जो परमधाम में हैं, वह श्री राजजी के अंग की ही शोभा है, इसलिए इनके नाम वस्त्र, आभूषण अलग से क्यों कहें?

हक के अंग का नूर जो, ए रूहों अर्स में सुध होत।
इत सब्द न कोई पोहोंचहीं, जो कोट रोसन कहूं जोत।।५४।।

यह श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा है, जिसकी जानकारी परमधाम में रूहों को होती है। यदि करोड़ों की संख्या से इनकी जोत का वर्णन करूं, तो भी यहां के शब्द शोभा में नहीं पहुंचते।

Nijanand App

नख अंगुरीयां अंगूठे, कोई दिया न निमूना जाए।
जोत क्यों कहूं इन मुख, रहे अंबर जिमी भराए।।५५ ।।

अंगूठे और उंगलियों के नाखूनों का संसार में कोई नमूना नहीं है। इनकी जोत जमीन और आसमान में फैली है। उसे संसार के मुख से कैसे बताएं?

पतली अंगुरियां उज्जल, सोभा क्यों कहूं मुंदरियों मुख।
ए देखे रूह मोमिन, सोई जानें ए सुख।।५६ ।।

हाथ की उंगलियां बड़ी पतली और उज्ज्वल हैं। उनकी मुंदरियों की शोभा यहां के मुख से कैसे बताएं? जो मोमिन (रूह) देखते हैं, इस सुख को वही जानते हैं।

लीकें हथेली उज्जल, सलूकी पोहोंचों ऊपर।
ए बेवरा केहेते अकल, हाए हाए अरवा रेहेत क्यों कर।।५७ ।।

हाथ की रेखाएं बड़ी उज्ज्वल हैं और पंजे के ऊपर की पोहोंचे की बनावट बड़ी सुन्दर है। संसार की अक्ल से इसका विवरण करते हुए हाय! हाय! यह अरवाह (रूह) फना क्यों नहीं हो जाती?

पोहोंची काड़ों कड़े झलकत, हेम जवेर कई रंग रस।
दिल चाह्या रूप रंग ल्यावहीं, जो देखिए सोई सरस।।५८ ।।

कलाई में पोहोंची और कड़े झलक रहे हैं, जिनमें सोने और जवेर के कई रंग हैं। जो दिल चाहे अनुसार रूप बदलते रहते हैं तथा जिसे भी देखें, अच्छा लगता है।

मोहोरी चूड़ी बांहें बाजू बंध, सोभा बारीक कई बरनन।
नाम लेत इन चीज का, हाए हाए अरवा उड़त ना मोमिन।।५९ ।।

बाहों की मोहरी पर चुन्नटें हैं। भुजाओं पर चुन्नटे हैं, जिनमें कई तरह की बारीक शोभा है। इनके अन्दर की चीजों का नाम लेकर हाय! हाय! मोमिनों की अरवाह क्यों नहीं उड़ जाती?

हक हुकम राखत जोरावरी, बात आई ऊपर हुकम।
ना तो रहे ना सुन वचन, पर ज्यों जानें त्यों करें खसम।।६० ।।

विचार करके देखा तो पता चला कि श्री राजजी महाराज के हुकम से ही यह तन खड़ा है, इसलिए सभी बातें हुकम पर आ जाती हैं। वरना स्वरूप के ऐसे शब्दों को सुनकर रूह खड़ी नहीं रह सकती, परन्तु जैसा धनी चाहते हैं, वैसा वह कर रहे हैं।

सोभा लेत हैड़े खभे, कर हेत सुनत श्रवन।
विचार किए जीवरा उड़े, या उड़े देख भूखन।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज की छाती और बाजू बहुत शोभा देते हैं। श्री राजजी महाराज बड़े प्यार से अपने कानों से रूहों की बातें सुनते हैं। इनके सिनगार के आभूषण को देखकर विचार करें, तो यह जीव उड़ जाए।

गौर हरवटी अति सुन्दर, या देख के लांक सलूक।
लाल अधुर देख ना गया, लोहू मेरे अंग का सूक।।६२ ।।

हरवटी गोरी है, बहुत सुन्दर है, फिर उसके ऊपर की गहराई को देखती हूं जो बहुत सुन्दर है। उसके ऊपर लाल होंठों को देखकर मेरे अंग का खून क्यों नहीं सूख गया?

Nijanand App

मुख चौक छबि सलूकियां, सुन्दर अति सरूप।
गाल लाल अति उज्जल, सुखदायक सोभा अनूप।।६३।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की छवि और सलूकी देखती हूं तो वह बहुत ही सुन्दर दिखाई देती हैं। गाल लाल और अति उज्ज्वल हैं और बेशुमार शोभा के सुख को देने वाले हैं।

निलवट तिलक नासिका, रंग पल में अनेक देखाए।
दंत बीड़ी मुख मोरत, हाए हाए जीवरा उड़ न जाए।।६४।।

नासिका से लेकर माथे तक तिलक लगा है। जिसके रंग एक क्षण में कई दिखाई देते हैं। श्री राजजी महाराज दांतों से पानों का बीड़ा चबाते हैं। उसे देखकर हाय! हाय! यह जीव क्यों नहीं उड़ जाता?

रंग नासिका की मैं क्यों कहूं, गुन सलूक अदभूत।
सुन्य ब्रह्मांड को फोड़ के, अर्स बास लेत बीच नासूत।।६५।।

श्री राजजी महाराज की नासिका का रंग तथा सलूकी अद्भुत है। मेरी आत्मा इस क्षर ब्रह्माण्ड को पारकर परमधाम की सुगन्धि के सुख को इस मृत्युलोक में लेती है।

नैन सैन जो करत हैं, सामी रूह मोमिन।
ए सैना दिल लेय के, हाए हाए चिराए न गया ए तन।।६६।।

श्री राजजी महाराज रूहों के सामने जब नैनों से इशारों से बात करते हैं, तो इन इशारों को दिल में लेकर हाय! हाय! यह तन क्यों नहीं फट गया?

ए नैना नूरजमाल के, देख सलोंने सलूक।
ए सुन नैन बिछोड़ा मोमिन, हाए हाए हो न गए भूक भूक।।६७।।

श्री राजजी महाराज के नैन रसीले और मनमोहक हैं। ऐसे नैनों का वियोग सुनकर हाय! हाय! मोमिनों के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत।
ए सोभा मुख क्यों कहूं, कानों मोती लाल लटकत।।६८।।

आसमान और जमीन के बीच में बालों की तथा गालों की शोभा झलकती है। कानों में मोती और लाल लटकते हैं। इस शोभा को यहां के मुख से कैसे बताऊं?

कानन मोती केहेत हों, पल में बदलत भूखन।
आसिक देखे कई भांतों, सुख देवें दिल रोसन।।६९।।

कानों की शोभा में मैंने मोती का नाम लिया है, परन्तु कानों के आभूषण क्षण-क्षण में बदलते हैं, जिन्हें आशिक रूहें अपने दिल के चाहे अनुसार कई भांति की शोभा देखती हैं और अपने दिल को सुख देती हैं।

कानों कड़ी गठौरी-मुरकी, जुगत जिनस नहीं पार।
नाम नंग रंग रसायन क्यों कहूं, रूप खिन में बदलें बेसुमार।।७०।।

कानों में बाली और गठी हुई मुरकी (बाली) की जुगती बेशुमार है। उसके नाम, रंग, नग और रसायन का कैसे वर्णन करू, जिसके रूप एक क्षण में बेशुमार बदल जाते हैं।

Nijanand App

उज्जल निलाट लाल तिलक, क्यों कहूं सोभा असल।
सुन्दर सलूकी सरूप की, माहें आवत ना अकल।।७१ ।।

श्री राजजी महाराज के उज्ज्वल माथे पर लाल टीका शोभा देता है। तिलक की सलूकी से स्वरूप की सुन्दरता और बढ़ जाती है। असल शोभा का वर्णन करना यहां की अक्ल से सम्भव नहीं होता।

पाग कही सिर हक के, और कह्या सिर मुकट।
हाए हाए जीवरा क्यों रह्या, खुलते हिरदे ए पट।।७२ ।।

श्री राजजी महाराज के शीश कमल पर पाग और मुकुट बताया है। हाय! हाय! इसकी पहचान होने पर भी जीव फना क्यों नहीं हो गया?

कलंगी दुगदुगी तो कहूं, जो पगरी होए और रस।
वस्तर भूखन या अंग तीनों, हर एक पे एक सरस।।७३ ।।

पाग के ऊपर की कलंगी और दुगदुगी का वर्णन तब करें जब यह पगड़ी से अलग हों। श्री राजजी महाराज के वस्त्र, आभूषण और अंग तीनों एक से ही इकट्ठे लगते हैं।

ताथें रस तो सब एक है, तामें अनेक रंग।
कलंगी दुगदुगी ठौर अपने, करत माहों माहें जंग।।७४ ।।

इसलिए यह सभी अंग, वस्त्र, आभूषण एक रस हैं, जिनमें अनेक तरह के रंग हैं। कलंगी और दुगदुगी के नगों की किरणें आपस में टकराती हैं।

मोमिन असल सूरत अर्स में, अबलों न जाहेर कित।
खोज खोज कई बुजरक गए, सो अर्स रूहें ल्याई हकीकत।।७५ ।।

मोमिनों के असल तन परमधाम में हैं, जो आज दिन तक किसी को पता नहीं था। बड़े-बड़े लोगों ने यहां खोजा, परन्तु परमधाम की जानकारी रूहों के आने पर ही संसार में जाहिर हुई।

नूर खूबी कही केसन की, हक सरूप की इत।
हाए हाए मेरा अंग मुरदा ना हुआ, केहेते बका निसबत।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के नूरी बालों की खूबी का वर्णन किया। अपने धनी की अंगना होने की पहचान होने पर भी हाय! हाय! मेरा यह तन टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गया?

नख सिख लों बरनन किया, और गाया लड़ाए लड़ाए।
मोमिन चाहिए विरहा सुनते, तबहीं अरवा उड़ जाए।।७७ ।।

श्री राजजी महाराज के सिनगार का नख से शिख तक वर्णन किया और बड़े प्यार से मोमिनों को समझाया। अब मोमिनों को इस जुदाई की बात सुनकर तुरन्त ही तन त्याग देना चाहिए।

जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को।
आसिक और मासूक, कैसी तफावत इनमों।।७८ ।।

जब संसार की उपमा हमारी परआतम (मूल तन) को नहीं लगती, तब श्री राजजी महाराज के अंग का वर्णन कैसे करें? आशिक रूहें माशूक श्री राजजी महाराज में यह कैसा फर्क हो गया?

Nijanand App

नाजुक सोभा हक की, जो रूह के आवे नजर।
तो अबहीं तोको अर्स की, होए जाए फजर।। ७९ ।।

श्री राजजी महाराज की यह नजाकत यदि रूह को दिख जाए, तो मोमिनों से तुरन्त संसार छूट जाए और परमधाम दिखने लगे।

ज्यों सूरत दिल देखत, त्यों रूह जो देखे सूरत।
बेर नहीं रूह लज्जत, तेरे अंग जात निसबत।। ८० ।।

रूहों के दिल श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखते हैं। वह यदि संसार में बैठकर श्री राजजी महाराज के स्वरूप का दर्शन कर लें तो अखण्ड लज्जत पाने में एक क्षण नहीं लगेगा, क्योंकि उनके मूल तन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

फरक नहीं दिल रूह के, ए तो दोऊ रहे हिल मिल।
अर्स में जो रूह है, तो हकें कह्या अर्स दिल।। ८१ ।।

रूह की परआतम के दिल और श्री राजजी महाराज के दिल में कोई अन्तर नहीं है। यह दोनों हिले मिले हैं, इसलिए परमधाम में जिनकी परआतम है, उनके दिल में संसार में श्री राजजी महाराज आकर बैठे हैं।

तेरा दिल लग्या ज्यों सूरत को, त्यों जो सूरतें रूह लगे।
तो अबहीं ले रूह लज्जत, एक पलक में जगे।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! परमधाम में श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखती है। वैसे ही खेल में यदि तुमारी सुरता उस परआतम से श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देखने लगे तो रूह को तुरन्त आराम मिलेगा और एक पल में जाग जाएगी।

रूह तो तेरी दिल बीच में, तो कह्या दिल अर्स।
सेहेरग से नजीक तो कह्या, जो रूह दिल अरस-परस।। ८३ ।।

हे मेरी रूह! तेरी परआतम श्री राजजी के दिल में परमधाम में है, इसलिए संसार में भी श्री राजजी महाराज ने तेरे दिल को अर्श किया है, इसलिए श्री राजजी महाराज हमसे सेहेरग से नजदीक हैं, क्योंकि रूह का दिल और श्री राजजी का दिल यहां और परमधाम में एकाकार है।

सूरत केहेते हक की, आगूं रूह मोमिन।
हाए हाए रूह मुरग ना उड़या, बरनन करते अर्स तन।। ८४ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे स्वरूप का जो परमधाम में अखण्ड है, मोमिनों के आगे वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरी रूह! तेरा यह तन मिट क्यों नहीं जाता?

आगूं अरवाहें अर्स की, करी बातें हक जुबान।
हाए हाए तन मेरा क्यों रह्या, करते खिलवत बयान।। ८५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के मोमिनों के सामने यहां की जबान से श्री राजजी महाराज की तथा मूल-मिलावा की बातें बताई हैं। हाय! हाय! यह वर्णन करते समय मेरा तन क्यों खड़ा रहा?

Nijanand App

रूहें रहें अर्स दरगाह में, जो दरगाह नूर-जमाल।
ए किया बयान खिलवत का, हाए हाए रूह रही किन हाल।। ८६ ।।

रूहें परमधाम में श्री राजजी महाराज के चरणों तले मूल-मिलावा में बैठी हैं। फिर मैंने मूल-मिलावा की जब हकीकत बताई, तो उसे सुनकर रूहों की रहनी क्यों नहीं बदली?

फेर फेर मेहेबूब देखिए, लगे मीठड़ा मुख मासूक।
अंग गौर जोत अंबर लों, छब देख दिल होत न भूक भूक।। ८७ ।।

बार-बार अपने महबूब श्री राजजी को देखते हैं तो माशूक श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द बड़ा लुभावना लगता है। उनके गोरे रंग की जोत आकाश तक फैली है। इस शोभा को देखकर भी दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं होता?

रूप रंग अंग छबि सलूकी, कहे वस्तर भूखन।
ए केहेते अरवा ना उड़ी, हाए हाए कैसी हुज्जत मोमिन।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के रूप को, रंग को और सलूकी तथा वस्त्र, आभूषण जो मैंने बताए हैं, की शोभा बताते समय हाय! हाय! मेरी रूह उड़ क्यों नहीं गई? हाय! हाय! हम कैसी रूहें हैं जो श्री राजजी महाराज की अंगना कहलाती हैं?

पांउं लीक केहेते अरवा उड़े, क्यों बरनवी हक सूरत।
बंध बंध छूट ना गए, हाए हाए कैसी अर्स हुज्जत।। ८९ ।।

चरण कमलों की तली की रेखाएं वर्णन करते समय ही अरवाह उड़ जानी चाहिए। पता नहीं फिर कैसे मैंने श्री राजजी के स्वरूप का वर्णन कर दिया। ऐसा वर्णन करते समय मेरे शरीर के जोड़-जोड़ क्यों नहीं खुल गए? हाय! हाय! हमारी अंगना होने का यह कैसा दावा है?

कह्या गौर मुख मासूक का, और निलवट असल तिलक।
हाए हाए ए बयान करते क्यों जिए, हम में रही नहीं रंचक।। ९० ।।

श्री राजजी महाराज के मुख का रंग मैंने गोरा बताया है और यह भी कहा है कि उनके माथे पर तिलक शोभा देता है। हाय! हाय! ऐसा बयान करते समय मैं कैसे जिन्दा रही? मुझे परमधाम की जरा भी सुध नहीं रह गई?

बरनन किया श्रवन का, जाके ताबे दिल हुकम।
मासूक अंग बरनवते, हाए हाए मोमिन रहे क्यों हम।। ९१ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के कान अंग का वर्णन किया है, जिसके अधीन श्री राजजी महाराज का दिल और हुकम रहता है। माशूक श्री राजजी महाराज के अंगों का वर्णन करते समय हाय! हाय! हम मोमिनों के झूठे तन कैसे रह गए?

कहे गौर गलस्थल हक के, कई छब नाजुक कोमलता।
हाए हाए रूह इत क्यों रही, मुख देख मासूक बका।। ९२ ।।

श्री राजजी महाराज के कण्ठ का रंग मैंने गोरा, नाजुक और कोमल बताया है। इस छवि से श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को देखकर हाय! हाय! मेरी रूह यहां कैसे खड़ी रही?

Nijanand App

बड़ी रूहें देख्या हक को, हकें देख्या सामी भर नैन।
हाए हाए बात करते जीव क्यों रह्या, एह देख नैन की सैन।।९३।।

श्री श्यामाजी ने श्री राजजी को नजर भरकर देखा और श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी को नजर भरकर देखा। उनकी नजरों के इशारों को देखकर हाय! हाय! इस शोभा की बात बताते हुए मेरा जीव कैसे रह गया?

भौंह स्याह नैन अनियां कही, और कह्या जोड़ गौर अंग।
हाए हाए ए तन हुकमें क्यों रख्या, हुआ कतल न होते जंग।।९४।।

मैंने श्री राजजी के स्वरूप का वर्णन करते समय भौंहें काली रंग की, नैन नुकीले और अंग को गोरा बताया है, जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं। ऐसा वर्णन करते हुए हाय! हाय! मेरे तन को हुकम ने कैसे जिन्दा रखा?

देखी निरमलता दंतन की, न आवे मिसाल लाल मानिक।
ज्यों देखत बीच चसमों, त्यों देखी जाए जुबां मुतलक।।९५।।

मैंने दांतों की निर्मलता को देखा। जिसको लाल माणिक की भी उपमा नहीं लगती। जैसे हम चश्मे में से देखते हैं, वैसी ही श्री राजजी के दांतों में से जबान दिखाई देती है।

कबूं हीरा कबूं मानिक, इन रंग सोभा कई लेत।
दोऊ निरमल ऐनक ज्यों, परे होए सो देखाई देत।।९६।।

यह दांत कभी हीरे के समान सफेद, तो कभी माणिक के समान लाल दिखाई देते हैं, परन्तु दोनों ही ऐनक (शीशे) की तरह दिखाई देते हैं। थोड़ा दूर होकर देखो तो अन्दर की जिह्वा दिखाई देती है।

लालक इन अधुर की, हक कबूं दिलों देखावत।
बंध बंध जुदे होए ना पड़े, मेरा हैड़ा निपट सखत।।९७।।

होंठों की लालिमा श्री राजजी महाराज अपने मोमिनों को कभी-कभी दिखाते हैं। हाय! हाय! मेरा दिल इतना कठोर हो गया और ऐसी शोभा को देखकर इस तन के जोड़-जोड़ अलग क्यों नहीं हो गए?

हक मुख सलूकी क्यों कहूं, छबि सोभित गौर गाल।
बरनन करते ए सूरत, हाए हाए लगी न हैड़े भाल।।९८।।

श्री राजजी महाराज के मुख की सलूकी तथा गोरे गालों की छवि कैसे बताऊं? क्योंकि इस स्वरूप का वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरे दिल में भाले के समान चोट क्यों नहीं लगी?

मैं कही जो मुख मांड़नी, और कह्या मुख सलूक।
ए केहेते सलूकी मेरा अंग, हाए हाए हो न गया टूक टूक।।९९।।

मैंने श्री राजजी महाराज के मुख की सुन्दरता और सलूकी बताई है। ऐसी सलूकी का वर्णन करते हुए हाय! हाय! मेरे अंग के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

कही गौर हरवटी हक की, लांक पर लाल अधुर।
कही दंत जुबां बीड़ी मुख, हाए हाए रूह क्यों रही सुन मधुर।।१००।।

श्री राजजी महाराज की हरवटी गोरी है और हरवटी के ऊपर की लांक (गहराई) तथा उसके ऊपर लाल होंठों की शोभा है। उस पर दांतों की, जबान की तथा पान बीड़ा की हकीकत बताई है। हाय! हाय! यह सुनकर मेरी रूह क्यों खड़ी है?

Nijanand App

लाल अधुर कहे मासूक के, सो दिलें भी देखी लालक।
ए देख लोहू मेरा क्यों रह्या, सूक न गया माहें पलक।। १०१ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के होंठ लाल बताए हैं। मेरे दिल ने उस लालिमा को देखा है। मेरे तन का खून एक पल में ही सूख क्यों नहीं गया?

कंठ खभे बंध बंध का, नख सिख किया बरनन।
हाए हाए जीवरा मेरा क्यों रह्या, टूट्या न अन्तस्करन।। १०२ ।।

मैंने गले का, बाजू का तथा हर अंग के जोड़ों का नख से शिख तक वर्णन किया है। ऐसा वर्णन करते समय मेरे जीव का अन्तःकरण फट क्यों नहीं गया?

बरनन किया बका हक का, मैं हुकम लिया दिल ल्याए।
केहेते हैड़े की सलूकी, हाए हाए मेरी छाती न गई चिराए।। १०३ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम को सिर चढ़ाकर उनके अखण्ड स्वरूप का वर्णन किया है। उनकी छाती की सलूकी का वर्णन करते समय हाय! हाय! मेरी छाती क्यों नहीं फट गई?

हकें अर्स किया दिल मोमिन, ए मता आया हक दिल से।
हकें दिल दिया किया लिख्या, हाए हाए मोमिन डूब न मुए इनमें।। १०४ ।।

मोमिन के दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया। अपना दिल देकर मोमिनों के दिल को अर्श किया है, लिखा है। यह सब जानकारी श्री राजजी महाराज के दिल से ही संसार में आई है। हाय! हाय! मोमिन फिर भी ऐसा वर्णन सुनकर डूबकर मर क्यों नहीं गए?

हार कहे हैड़े पर, जोत भरी जिमी आसमान।
हाए हाए ए मुरदा जल ना गया, नूर एता होते सुभान।। १०५ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज की छाती पर हारों की शोभा बताई है, जिनकी किरणें जमीन और आसमान में फैली हैं। श्री राजजी महाराज के ऐसे सुन्दर नूर के सामने यह मेरा मुर्दा तन जल क्यों नहीं गया?

कटि पेट पांसे कहे हक के, ले दिल के बीच नजर।
हाए हाए ख्वाबी तन क्यों रह्या, ए दिल को लेकर।। १०६ ।।

मैंने अपनी आत्मदृष्टि से श्री राजजी महाराज के पेट, कमर, पसलियां बताई हैं। ऐसे श्री राजजी महाराज की शोभा को दिल में लेकर हाय! हाय! यह झूठा तन कैसे खड़ा है?

कांध पीठ लीक सलूकी, कही इलमें दिल दे।
हाए हाए हुकमें ए तन क्यों रख्या, जो हुकम बैठा हुज्जत रूह ले।। १०७ ।।

कन्धे का, पीठ की गहराई का तथा अंग की सलूकी का मैंने जागृत बुद्धि के ज्ञान से वर्णन किया है। हाय! हाय! ऐसा वर्णन करते समय यह मेरा तन क्यों खड़ा रहा? यह श्री राजजी का हुकम मेरी रूह को क्यों पकड़ कर बैठा है?

अर्स जवेर की क्यों कहूं, देखे बाजू बंध के नंग।
जिमी से आसमान लग, हाए हाए जीव कतल न हुआ देख जंग।। १०८ ।।

परमधाम के बाजूबन्ध के नग, उनकी किरणों की टकराहट जो जमीन से आसमान तक फैली हुई है, उन जवेरों को जो बाजूबन्ध में जड़े हैं, की शोभा को कैसे बताऊं? इस शोभा को देखकर जीव मर क्यों नहीं गया?

Nijanand App

हक हाथों की बरनन करी, मच्छे कोनी कलाई काड़े।
ए सुन जीव क्यों रेहेत है, ले ख्वाब झूठे भांडे।। १०९ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के हाथों का काड़ा, कलाई, कोहनी और मच्छों का वर्णन किया है, जिसे सुनकर भी यह जीव झूठे सपने के तन को लेकर क्यों खड़ा है?

पोहोंचे लीकें हथेलियां, छबि अंगुरियां नख तेज।
देखो अचरज मुख केहेते, हो न गया रेजा रेज।। ११० ।।

पोहोंचों का, हाथों की रेखाओं का, उंगलियों की सुन्दरता का तथा नाखून के तेज का मैंने वर्णन किया है। बड़ी हैरानी की बात है कि ऐसा वर्णन करते समय मेरा अंग टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गया?

रंग सलूकी भूखन, देख काड़े हाथों के।
ए जोत ले जीव ना उड़या, हाए हाए बड़ा अचम्भा ए।। १११ ।।

आभूषणों की सलूकी (सुघड़ता) और रंग तथा हाथों की कलाई देखकर हाय! हाय! यह जीव क्यों नहीं उड़ा? यही बड़ी हैरानी की बात है।

कई रंग इजार मासूक की, दावन में झांई लेत।
छेड़े पटुके दावन पर, हाए हाए दिल अजूं न घाव देत।। ११२ ।।

श्री राजजी महाराज के कई रंग जामे के घेरे में झलकते दिखाई देते हैं। पटुके के किनारे जामे के दामन पर आए हैं। हाय! हाय! इसका विचारकर दिल में घाव क्यों नहीं लगता?

चरन कमल मासूक के, चित्त में चुभें जिन।
ए छबि सलूकी भूखन, क्यों कर छोड़ें मोमिन।। ११३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल जिसके चित्त में चुभ गए हैं, उन चरणों की सलूकी और छबि मोमिन कैसे छोड़ दें?

ए चरन आवें जिन दिल में, सो दिल अर्स मुतलक।
कई मुतलक बातें अर्स की, दिल सब विध हुआ बेसक।। ११४ ।।

यह चरण कमल जिसके दिल में आ गए, निश्चित है कि श्री राजजी महाराज उसके दिल में बैठे हैं। फिर निश्चित है कि परमधाम की सब गुझ (गुप्त) बातें उसे अपने आप पता लग जाएंगी और सब प्रकार के संशय मिट जाएंगे।

क्यों कहूं खूबी चरन की, और खूबी भूखन।
अदभुत सोभा हक की, क्यों न होए अर्स तन।। ११५ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तथा आभूषणों की खूबी कैसे बताऊं? इन चरणों की अद्भुत शोभा मोमिन की परआतम (अर्श तन) में क्यों नहीं होगी?

चकलाई इन चरन की, भूखन छबि अनूपम।
दिल ताही के आवसी, जाको मुतलक मेहेर खसम।। ११६ ।।

चरण कमलों की सुन्दरता और आभूषणों की बेमिसाल छबि उसी के दिल में आएगी, जिसके ऊपर धनी की मेहर होगी।

Nijanand App

जो होवे अरवा अर्स की, सो इन कदम तले बसत।
सराब चढ़े दिल आवत, सो रूह निस दिन रहे अलमस्त।। ११७ ।।

जो परमधाम की रूहें होंगी वह श्री राजजी के चरणों के तले ही रहती हैं। जब उनके दिल में चरण याद आ जाते हैं, तो रूहें रात-दिन इश्क की शराब की मस्ती में अलमस्त हो जाती हैं।

निमख न छोड़े चरन को, मोमिन रूह जो कोए।
निस दिन रहे खुमार में, आवत है चरन बोए।। ११८ ।।

इसलिए जो भी रूहें (आशिक मोमिन) हैं, वह श्री राजजी महाराज के चरणों को एक पल के लिए भी नहीं छोड़तीं। वह रात-दिन इन चरणों के चितवन के नशे में रहती हैं और चरणों की लज्जत भी उन्हीं को मिलती है।

मासूक के चरनों का, किया बेवरा बरनन।
जीव उड़या चाहिए केहेते लीक, हाए हाए क्यों रहे मोमिन तन।। ११९ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज के चरणों का वर्णन मैंने किया है, जिनके चरणों की तली की रेखाओं का वर्णन करते जीव उड़ जाना चाहिए। हाय! हाय! यह मोमिन तन कैसे लेकर खड़े हैं?

हाथ पांउं मुख हैयड़ा, वस्तर भूखन हक सूरत।
ए ले ले अर्स बारीकियां, हाए हाए रूह क्यों न जागत।। १२० ।।

श्री राजजी महाराज के हाथ की, पैर की, मुख की, छाती की, वस्त्रों, आभूषणों की और श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की खास बातें देखकर भी हाय! हाय! यह मोमिन क्यों नहीं जागते?

जो जोत कहूं अंग नंग की, देऊं निमूना नरम पसम।
ए तो अर्स पत्थर या जानवर, सो क्यों पोहोंचे परआतम।। १२१ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के अंगों के नगों की जोत बताई है और नरमाई में उपमा पश्म की बताई है। संसार के पत्थर या जानवरों की उपमा परमधाम की अखण्ड परआतम को कैसे दी जाए?

जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को।
खेलौने और खावंद, बड़ो तफावत इन मों।। १२२ ।।

जो उपमा रूहों की परआतम को नहीं दी जा सकती, तो वह श्री राजजी महाराज के अंग को कैसे दी जाए? श्री राजजी महाराज के तन और संसार के तनों में खिलौने और खावन्द जैसा फर्क है।

जित आद अन्त न पाइए, तित तेहेकीक होए क्यों कर।
इत सब्द फना का क्या कहे, जित पाइए न अव्वल आखिर।। १२३ ।।

परमधाम में जहां आदि नहीं है और अन्त भी नहीं है, वहां इस फर्क का निर्णय कैसे हो? इस झूठे संसार के शब्दों से कैसे वर्णन करूं?

ए निरने करना अर्स का, तिन में भी हक जात।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात।। १२४ ।।

संसार में बैठकर परमधाम का निश्चित रूप से वर्णन करना कठिन है और उस पर भी हकजात ब्रह्मसृष्टियों के बारे में निर्णय करना अति कठिन है, जिसका वर्णन अक्षरब्रह्म की बुद्धि कैसे करेगी, जिन मोमिनों की हकीकत का वर्णन करने में स्वयं श्री राजजी महाराज की जबान लड़खड़ाती है (क्योंकि आशिक माशूक की शोभा का वर्णन कभी कर ही नहीं सकता)।

Nijanand App

जवेर पैदा जिमीय से, सो भी नहीं कह्या अर्स में।
चौदे तबक उड़ावे अर्स कंकरी, इत भी बोलना नहीं तार्थे।। १२५ ।।

जवेर (जवाहरात) संसार में जमीन से निकलते हैं। परमधाम में ऐसा नहीं होता। वह अंग की ही शोभा हैं। परमधाम की एक कंकरी यहां के चौदह लोक के ब्रह्माण्ड को उड़ा सकती है, इसलिए संसार की चीजों की उपमा परमधाम के वर्णन करने में नहीं लगती।

जित चीज नई पैदा नहीं, ना कबूं पुरानी होए।
तित सब्द जुबां जो बोलिए, सो ठौर न रही कोए।। १२६ ।।

परमधाम में जहां कोई चीज नई पैदा नहीं होती और कोई चीज पुरानी नहीं होती, वहां के लिए यहां के शब्द और जबान से बोलने का कोई ठिकाना नहीं है, क्योंकि यहां हर चीज मिटने वाली है।

जो कहूं हक दिल माफक, तो इत भी सब्द बंधाए।
तार्थे अर्स बारीकियां, सो किसी विध कही न जाए।। १२७ ।।

यदि मैं यहां श्री राजजी महाराज के दिल के अनुसार भी कुछ कहती हूं, तो मेरे यह शब्द भी निराकार के आगे नहीं जाते, इसलिए परमधाम की बारीक बातों का वर्णन किसी तरह भी नहीं किया जा सकता।

चुप किए भी ना बने, हुकम इलम आया इत।
और काम इनको नहीं, जो अर्स अरवा लई हुज्जत।। १२८ ।।

चुप रहकर भी नहीं चलता, क्योंकि श्री राजजी का हुकम और इलम आया है, जिन्होंने रूहों के नाम का दावा ले रखा है, इसलिए हुकम और इलम को वर्णन करने के सिवाय दूसरा काम नहीं है।

इलम कह्या जो लदुन्नी, सो तो हक का मुतलक।
इत मोमिन मिल पूछसी, क्यों रही रूहों को सक।। १२९ ।।

जिसको इलम-ए-लदुन्नी कहा है, बेशक वह श्री राजजी महाराज ने अपने मुखारबिन्द से कहा है। इस संसार में मोमिन मिलकर पूछ सकते हैं कि ऐसा बेशक इलम मिलने पर भी रूहों को संशय कैसे रह गया?

जो अर्स बातें सक हमको, तो हकें क्यों कह्या अर्स कलूब।
मोमिन कहे बीच वाहेदत, इन आसिकों हक मेहेबूब।। १३० ।।

अर्श की वाणी में यदि मोमिनों को ही शक है, तो उनके दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श क्यों कहते हैं? परमधाम में जहां एकदिली है, वहां के आशिक मोमिन ही श्री राजजी को अपना महबूब कह सकते हैं।

मेहेबूब आसिक एक कहें, वाहेदत भी एक केहेलाए।
अर्स भी दिल मोमिन कह्या, ए तो मिली तीनों विध आए।। १३१ ।।

आशिक मोमिन, महबूब श्री राजजी महाराज दोनों एक बतलाए हैं, इसलिए तो इनको वाहेदत कहते हैं। मोमिनों के दिल को भी अर्श कहा है, तो इस तरह से मोमिनों के संसार के तन, परमधाम की परआतम तथा श्री राजजी महाराज यह तीनों एक हैं।

Nijanand App

और भी कहूं सो सुनो, मोमिन अर्स से आए उतर।
इलम दिया हकें अपना, अब इनों जुदे कहिए क्यों कर।। १३२ ।।

और भी कुछ कहती हूं। मोमिन परमधाम से खेल में उतरकर आए हैं और श्री राजजी महाराज ने इन्हें अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है, इसलिए अब इनको अलग कैसे माना जाए?

फुरमान आया इनों पर, अहमद इनों सिरदार।
हक बिना कछुए ना रखें, इनों दुनियां करी मुरदार।। १३३ ।।

कुरान मोमिनों के वास्ते आया। श्री श्यामा महारानी इनके सुभान हैं। वह भी मोमिनों के वास्ते आए हैं और मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के सिवाय दुनियां को मुरदार समझकर छोड़ दिया है।

ए सब बुजरकी इनों की, क्यों जुदे कहिए वाहेदत।
इने कुन्नकी दुनी क्या जानही, रूहें अर्स हक निसबत।। १३४ ।।

यह सारी महिमा मोमिनों की है, जो श्री राजजी महाराज की अंगनाएं हैं। इनको अलग कैसे कहा जाए? कुन शब्द कहने से पैदा हुई दुनियां वाले इस रहस्य को कैसे जानेंगे कि परमधाम में रूहें श्री राजजी महाराज की अंगना हैं?

तिन से अर्स मता क्यों छिपा रहे, जो दिल अर्स कह्या मोमिन।
एक जरा न छिपे इन से, ए देखो फुरमान वचन।। १३५ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, उनसे परमधाम की कोई भी हकीकत रंचमात्र भी छिपी नहीं रह सकती। यह कुरान में स्पष्ट लिखा है।

बका पट किने न खोलिया, अव्वल से आज दिन।
हाए हाए तन न हुआ टुकड़े, करते जाहेर ए वतन।। १३६ ।।

शुरू से आज दिन तक परमधाम की पहचान किसी ने नहीं बताई। अपने घर की बातें जाहिर करते समय हाय! हाय! मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

अर्स बका द्वार खोल के, करी जाहेर हक सूरत।
अंग मेरा रह्या अचरजें, द्वार खोलते वाहेदत।। १३७ ।।

अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर मैंने श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन किया। इस अखण्ड घर के मूल-मिलावा की पहचान कराते समय बड़ी हैरानी होती है कि मेरा यह तन संसार में खड़ा कैसे है?

मेरी रूहे कह्या आगे रूहन, सुन्या मैं हक के मुख इलम।
ए बात केहेतें तन ना फट्या, हाए हाए ए देख्या बड़ा जुलम।। १३८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने रूहों के सामने कहा है कि यह जागृत बुद्धि का ज्ञान मैंने श्री राजजी से सुना है। यह बात कहते हुए मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गए? यही बहुत बड़ी हैरानी है।

यों चाहिए मोमिन को, रूह उड़े सुनते हक नाम।
बेसक अर्स से होए के, क्यों खाए पिए करे आराम।। १३९ ।।

मोमिनों को श्री राजजी महाराज का नाम सुनते ही शरीर छोड़ देना चाहिए। परमधाम के सभी संशय मिट जाने पर भी इस संसार में कैसे खा, पी रहे हैं और कैसे चैन से रह रहे हैं?

Nijanand App

हक अर्स याद आवते, रूह उड़ न पोहोंचे खिलवत।
बेसक होए पीछे रहे, हाए हाए कैसी ए निसबत।। १४० ।।

परमधाम और श्री राजजी की याद आते ही रूह को तन छोड़कर मूल-मिलावे में पहुंच जाना चाहिए। अब नि:संदेह होने पर भी संसार में कैसे बैठे हैं?

क्यों न खेलावें खिलवत में, रूह अपनी रात दिन।
हक इलमें अजूं जागी नहीं, कहावें अर्स अरवा तन।। १४१ ।।

परमधाम और श्री राजजी की पहचान होने के बाद भी रात-दिन मूल-मिलावा के सुख क्यों नहीं लेते? इससे मालूम होता है कि रूहें जागृत बुद्धि की वाणी से अभी जागी नहीं हैं, जबकि अर्श की अरवाह श्री राजजी की अंगना कही जाती है।

बैठ इन ख्वाब जिमीय में, कहे अर्स अजीम का बातन।
हड्डी हड्डी जुदी होए ना पड़ी, तो कैसी रूह मोमिन।। १४२ ।।

इस झूठे संसार में बैठकर परमधाम के छिपे रहस्यों को बताया है। ऐसा वर्णन करते समय मेरी हड्डी-हड्डी अलग क्यों नहीं हो गई? हम कैसे मोमिन हैं!

याद न जेता हक अर्स, एही मोमिनों बड़ा कुफर।
हक वाहेदत इलम चीन्ह के, अजूं क्यों देखे दुनी नजर।। १४३ ।।

मोमिनों को श्री राजजी महाराज और परमधाम की याद जितने समय तक नहीं आती, उतना ही उनके अन्दर कुफ्र है, माया है। वरना श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान हो जाने पर अभी भी मोमिनों की चाहना दुनियां की क्यों है?

सुनते नाम हक अर्स का, तबहीं अरवा उड़ जात।
हाए हाए ए बल देख्या हुकम का, अजूं एही करावे बात।। १४४ ।।

श्री राजजी महाराज और परमधाम का नाम सुनकर मोमिनों की अरवाह तुरन्त संसार से छूट जानी चाहिए। हाय! हाय! यह हुकम की शक्ति है, जो फिर भी हमारे तन को संसार में रखे है।

वस्तर और भूखन कहे, हक अंग वाहेदत के।
ए केहेते बारीकियां अर्स की, हाए हाए तन उड़या न ख्वाबी ए।। १४५ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग मोमिनों के वस्त्र और आभूषणों का मैंने वर्णन किया है। परमधाम की ऐसी बारीक बातें (खास बातें) कहते हुए हाय! हाय! यह झूठा तन क्यों नहीं उड़ गया?

बेसक इलम ले दिल में, बरनन किया बेसक।
हुए बेसक रूह ना उड़ी, हाए हाए पोहोंची ना खिलवत हक।। १४६ ।।

श्री राजजी महाराज का बेशक इलम दिल में लेकर श्री राजजी महाराज के स्वरूप का भी निस्संदेह वर्णन किया। रूह के संशय न रहने पर वह संसार को छोड़कर श्री राजजी के सामने मूल-मिलावे में क्यों नहीं पहुंच जाती?

Nijanand App

कहे इलम रूहें इत हैं नहीं, है हुकम तो हक का।
हुए बेसक हुकम क्यों रहे, ले हुज्जत रूह बका।। १४७ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान यह बतलाता है कि रूहें खेल में आई नहीं हैं। यहां श्री राजजी महाराज का हुकम ही उनके नाम का तन धारण किए है। तारतम ज्ञान से फिर संशय रहित होने पर हुकंम भी हमारी रूह के नाम से संसार में क्यों रहे? अखण्ड घर क्यों नहीं चला जाता?

बेसक हुए जो अर्स से, और बेसक हुए वाहेदत।
मुतलक इलम पाए के, हाए हाए हुकम क्यों रह्या ले हुज्जत।। १४८ ।।

मोमिन परमधाम और अपने अंगना होने की एकदिली से निस्संदेह हो गए हैं। उन्हें जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी मिल गई है, तो हाय! हाय! हुकम हमारे नाम का दावा लेकर संसार में कैसे खड़ा है?

नैन रहे नैन देख के, एही बड़ा जुलम।
न जानो क्यों सुरखरु, करसी हक हुकम।। १४९ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों को रूह के नैन देखकर खड़े रहे, यही बड़ी हैरानी है। पता नहीं श्री राजजी महाराज का हुकम रूहों को श्री राजजी के सामने खड़े होने के योग्य कैसे बनाएगा?

ए विरहा सुन श्रवन रहे, लगी न सीखां कान।
हाए हाए वजूद न गल गया, सुन विरहा हादी सुभान।। १५० ।।

श्री राजजी महाराज के बिछुड़ने की बात सुनकर यह कान कैसे खड़े रहे? इनको गरम-गरम सलाखें क्यों नहीं लगी? श्री राजश्यामाजी के बिछुड़ने की बात सुनकर हाय! हाय! यह संसार का तन गल क्यों नहीं गया?

संध संध टूटी नहीं, सुनते विरहा सुकन।
रोम रोम इन तन के, क्यों न लगी अगिन।। १५१ ।।

श्री राजजी महाराज के विरह के वचन सुनकर अंग के जोड़-जोड़ क्यों नहीं खुल गए तथा इस सांसारिक तन के रोम-रोम में आग क्यों नहीं लग गई?

बातें इन विरह की, मैं गाई अंग अंग कर।
अचरज इन निसबतें, अरवा ना गई जर बर।। १५२ ।।

श्री राजजी महाराज के बिछुड़ने की बातों को मैंने उनके अंग-अंग का वर्णन करके गाया। बड़ी हैरानी वाली बात है कि अंगना होने पर भी मेरी रूह जल-बल क्यों नहीं गई?

मेरे अंग सबे उड़ ना गए, सब देख हक के अंग।
सेज सुरंगी हक छोड़ के, रही पकड़ मुरदे का संग।। १५३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंगों को देखने पर मेरे यह संसार के तन के अंग समाप्त क्यों नहीं हो गए? श्री राजजी महाराज की सुन्दर सेज का सुख छोड़कर यह मिटने वाले तन को क्यों पकड़े रही?

क्यों न उड़ी अकल अंग थें, जो बरनन किया अर्स हक।
ए पूरी हांसी बीच अर्स के, माहें गिरो आसिक।। १५४ ।।

श्री राजजी महाराज और परमधाम का मैंने वर्णन किया, तो मेरे अंग की अक्ल क्यों नहीं समाप्त हो गई? इसकी हंसी परमधाम में सब रूहों के बीच होगी।

Nijanand App

करी हांसी हकें हम पर, ता विधसों चले न किन।
अब सो क्योंए न बनि आवहीं, जो रोऊं पछताऊं रात दिन।। १५५ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे ऊपर हंसी की है। जैसा हमने दावा भरा था, उसके अनुसार हममें से कोई भी नहीं चल सका। अब रात-दिन रोती हूं, पछताती हूं, परन्तु बिगड़ी बात किसी तरह से नहीं बनती।

सोई देखी जो कछू देखाई, अब देखसी जो देखाओगे।
हंसो खेलो जानों त्यों करो, बीच अर्स खिलवत के।। १५६ ।।

श्री राजजी महाराज! आपने जो खेल हमको दिखलाया वह देखा और आगे भी जो दिखाओगे सो देखूंगी। श्री राजजी महाराज! हंसो, खेलो, जैसा चाहो वैसा करो, परन्तु यह सब परमधाम मूल-मिलावे के अन्दर ही करो।

मोमिन दिल अर्स कर के, आए बैठे दिल माहें।
खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमिनों सिर नाहें।। १५७ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कर श्री राजजी महाराज इनके दिलों में आकर बैठ गए हैं, इसलिए अब मोमिनों का अहंभाव खत्म हो गया, इसलिए अब मोमिनों पर कोई गुनाह नहीं बनता।

फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत।
ए बेवरा है कलस में, मोमिन लेसी देख तित।। १५८ ।।

दुबारा विचार करके देखें तो गुनाह रूहों के सिर ही आता है। मोमिनों के सिर गुनाह किस तरह से आता है, इसका विवरण 'कलस' किताब में कहा। वहां से देख लेंगे।

रूहें मोमिन इत आई नहीं, तिन वास्ते नहीं गुना।
पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अर्स का।। १५९ ।।

रूह मोमिन खेल में आए ही नहीं, इसलिए कोई गुनाह नहीं है। उनको उतना गुनाह फिर भी लगता है, जितना परमधाम का अंश उनके अन्दर है (अर्थात् उनका नाम तो है)।

महामत कहे मोमिनों पर, करी हांसी हुकमें।
ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक सें।। १६० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमारे पर हंसी करने के वास्ते ही हमारी ऐसी हालत कर दी है कि संसार में निस्संदेह होने पर भी हम यहां पर ही खड़े हैं।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ १६०६ ॥

मोमिन दुनीका बेवरा

अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत।। १ ।।

जो परमधाम की आशिक रूहें हैं, उनके दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज का स्वरूप उनके हृदय में से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकता।

Nijanand App

और न पावे पैठने, इत बका बीच खिलवत।
बका अर्स अजीम में, कौन आवे बिना निसबत।। २ ।।

मोमिनों के अतिरिक्त खिलवतखाना (मूल-मिलावे) में और कोई नहीं आ सकता। ठीक भी है। बिना श्री राजजी महाराज की अंगना के, जिनकी परआतम परमधाम में है, कौन आएगा?

और तो कोई है नहीं, बिना एक हक जात।
जात माहें हक वाहेदत, हक हादी गिरो केहेलात।। ३ ।।

हकजात मोमिन के सिवाय परमधाम में कोई नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के तन कहलाते हैं। लीला के वास्ते श्री राजश्यामाजी और मोमिन अलग-अलग कहलाते हैं।

वस्तर भूखन पेहेर के, मेरे दिल में बैठे आए।
हकें सोई किया अर्स अपना, रूह टूक टूक होए बल जाए।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज वस्त्र-आभूषणों सहित सिनगार करके मेरे दिल में आकर बैठ गए हैं। श्री राजजी महाराज ने मेरे दिल को अर्श किया है, इसलिए मेरी रूह श्री राजजी महाराज पर बलि-बलि जाती है।

दई बड़ाई मेरे दिल को, हक बैठे अर्स कर।
अपनी अंगना जो अर्स की, रूह क्यों न खोले नजर।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज मेरे दिल को साहेबी (मान) देकर अपना अर्श बनाकर बैठ गए हैं। अब जो उनकी परमधाम की अंगना हैं, वह अपनी बातूनी नजर खोलकर क्यों पहचान नहीं करतीं?

दम न छोड़े मासूक को, मेरी रूह की एह निसबत।
क्यों बातें याद दिए न आवहीं, जो करियां बीच खिलवत।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज जो हमारे माशूक हैं। उनकी मैं अंगना हूं एक पल भी मैं उन्हें छोड़ नहीं सकती। खिलवतखाना (मूल-मिलावा) के बीच जो बातें और वायदे किए थे, अब याद क्यों नहीं आते?

जाको अनुभव होए इन सुख को, ताए अलबत आवे याद।
अर्स की रूहों को इस्क का, क्यों भूले रस मीठा स्वाद।। ७ ।।

जिन्हें परमधाम के सुखों का अनुभव हो, उन्हें घर की बातें निश्चित याद आनी ही चाहिए, क्योंकि यह रूहें श्री राजजी महाराज के इश्क के मीठे रस के स्वाद को कैसे भूल सकती हैं?

रूह केहेलाए छोड़े क्यों अपना, क्यों याद दिए जाय भूल।
हकें याही वास्ते, भेज्या अपना नूरी रसूल।। ८ ।।

परमधाम की आत्मा कहलाकर अपने घर को कैसे छोड़ दें? उन्हें याद कराने पर भी भूली बातें क्यों याद नहीं आतीं? श्री राजजी महाराज ने उनके वास्ते ही अपने नूरी रसूल को भेजा है।

हम अरवाहें जो अर्स की, तिन सब अंगों इस्क।
सो क्यों जावे हम से, जो आड़ा होए न हुकम हक।। ९ ।।

हम परमधाम की जो रूहें हैं, उनके सभी अंग इश्क के हैं। यदि श्री राजजी महाराज का हुकम आड़े नहीं आता, तो इश्क हमसे कैसे छूटता?

Nijanand App

ए निसबत नूरजमाल से, जो रूह को पोहोंचे रंचक।
तो लाड़ अर्स अजीम के, क्यों भूलें मुतलक।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की अंगना होने की थोड़ी सी खबर मिल जाती, तो परमधाम के लाड़ हम कैसे भूल जाते?

पर हुआ हाथ हुकम के, जो हुकम देवे याद।
हुकमें पेहेचान होवहीं, हुकमें आवे स्वाद।। ११ ।।

पर यह सब अब हुकम के हाथ की बात है, हुकम ही याद कराए तो याद आएगी और हुकम ही पहचान कराए तो परमधाम के लाड़ का स्वाद आ सकता है।

कबूल करी हम हांसी को, और अपनी मानी भूल।
सब सुध पाई कुंजी से, और फुरमान रसूल।। १२ ।।

हमने अपनी भूल मानकर श्री राजजी महाराज की हंसी को स्वीकार कर लिया है। यह सभी सुध तारतम ज्ञान की कुंजी से और रसूल साहब के कुरान से मिली।

अब हुई पेहेचान हुकम की, एक जरा न रही सक।
बोझ हम सिर ना रह्या, हक इलमें देखाया मुतलक।। १३ ।।

अब हमें हुकम की पहचान हो गई है। जरा भी संशय नहीं रह गया। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान ने साफ बता दिया है कि हमारे सिर पर कोई जिम्मेदारी नहीं है।

अब भूल हमारी जरा नहीं, और हक कर थके हांसी।
बात आई सिर हुकम के, अब काहे बिलखे रूह खासी।। १४ ।।

अब जरा भी हमारी भूल नहीं है। श्री राजजी महाराज हंसी करके थक गए हैं। सारी जिम्मेदारी श्री राजजी के हुकम की है, तो फिर हमारी रूह क्यों बिलखे?

देखना था सो सब देख्या, हक इस्क और पातसाई।
और हांसी रूहों इस्क पर, सब देखी जो देखाई।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के इश्क और बादशाही को जो देखना था सो देख लिया। अब श्री राजजी महाराज को जो रूहों के इश्क पर हंसी करनी है, वह सब भी देख ली, जो उन्होंने दिखाई।

क्यों न होए हुकम को हुकम, जो पेहेले किया इसदाए।
हुई उमेद सब की पूरन, अब क्यों न दीजे रूहें जगाए।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज उस हुकम को दुबारा हुकम क्यों नहीं देते, जो खेल के शुरू में दिया था। अब हम सब रूहों की चाहना पूर्ण हो गई है, तो इन्हें अब फरामोशी से क्यों नहीं जगाते हो?

लाड़ हमारे अर्स के, हम से न छूटें खिन।
अक्स हमारे के अक्स, क्यों लगे दाग तिन।। १७ ।।

परमधाम के हमारे लाड़ एक क्षण के लिए भी हमसे नहीं छूटते, तो हमारे मूल तन के अक्स आत्मा और आत्मा के अक्स इन तनों के ऊपर गुनाह का दाग क्यों लगाया जा रहा है?

Nijanand App

अब जो दिन राखो खेल में, सो याही के कारन।
इस्क दे बोलाओगे, ऐसा हुकमें देखें मोमिन।। १८ ।।

हे श्री राजजी महाराज! जितने दिन तक आप हमको इस खेल में रख रहे हैं, तो केवल हमें गुनहगार बनाने के वास्ते, कब आप इश्क देकर हमें बुलाओगे? ऐसे हुकम की राह हम मोमिन देख रहे हैं।

एक तिनका हमारे अर्स का, उड़ावे चौदे तबक।
तो क्यों न उड़े रूह अक्सें, बल इलम लिए हक।। १९ ।।

परमधाम के एक तिनके के सामने यह चौदह लोक का ब्रह्माण्ड समाप्त हो जाता है। फिर श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान की शक्ति जिन रूहों के इन तनों में आ गई है, तो फिर वह रूह इस तन में से निकलकर उड़ क्यों नहीं जाती?

जो कदी कहोगे रूहें इत न हुती, ए तो हुकमें किया यों।
तो नाम हमारे धर के, हुकम करे यों क्यों।। २० ।।

हे श्री राजजी महाराज! शायद आप यह कहें कि परमधाम की रूहें खेल में आई ही नहीं। यह तो सब खेल हुकम का है, तो फिर आपका हुकम हमारे नाम धर कर ऐसा खेल क्यों कर रहा है?

जो कदी हम आइयां नहीं, तो नाम तो हमारे धरे।
और तिन में हुकम हक का, हक तासों ऐसी क्यों करे।। २१ ।।

यदि हम खेल में नहीं हैं, तो हुकम ने हमारे नाम यहां क्यों धरे हैं? जिन तनों में श्री राजजी का हुकम है, तो फिर उन तनों को श्री राजजी महाराज गुनहगार क्यों बना रहे हैं?

अब तो सब ही करोगे, टालने हमारे दाग।
तुम रखियां ऐसा जान के, ना तो क्यों रहें पीछे हम जाग।। २२ ।।

अब हमारे दागों को मिटाने के लिए आप ही सब कुछ करोगे। ऐसा जानकर ही आपने खेल में हमें खड़ा कर रखा है। वरना जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागने के बाद हम पीछे कैसे रह सकते हैं?

हुकम पर ले डारोगे, तेहेकीक कराओगे दिल।
दाग अक्सों क्यों मिटे, जो हमारे नामों किए सब मिल।। २३ ।।

लगता है कि आप यह गुनाह हुकम पर डालकर हमारे दिल को तसल्ली करा दोगे, परन्तु हमारे इन अक्सों पर जो दाग आपने और आपके हुकम ने मिलकर हमारे नाम रखकर लगाए हैं, वह कैसे मिटेंगे?

जो कदी ए दाग धोए डारोगे, मन वाचा कर करमन।
अक्स हमारे नाम के, कदी रूहें बातें तो करसी वतन।। २४ ।।

यदि मन, वचन और कर्म से हमारे दाग मिट भी जाएं तो भी हमारे तनों के जो यहां नाम हैं, उनकी बातें परमधाम में तो कभी होंगी ही।

इन बात की हांसियां, अक्स नाम भी क्यों सहे।
हक विरहा बात सुन के, झूठी देह पकड़ क्यों रहे।। २५ ।।

इस बात की भी हंसी हमारे यह रूह के तन कैसे सहन करें? श्री राजजी महाराज से बिछुड़ने की बात सुनकर मोमिन इस झूठी देह को पकड़कर क्यों बैठे हैं?

Nijanand App

सो मैं गाया याद कर कर, कबूं पाया न विरहा रस।
नाम सहे ना हुकम सहे, ना कछू सहे अक्स।। २६ ।।

मैंने आपके इश्क को याद करके गा-गाकर मोमिनों को बताया, पर आपके विरह का रस कभी नहीं मिला। आपके बिछुड़ने के विरह को न हमारे नाम, न हुकम और न ही हमारी रूह के यह तन सुन सकते हैं।

और हांसी सब सोहेली, पर ए हांसी सही न जाए।
अक्स भी ना सेहे सकें, जब इलमें दिए पढ़ाए।। २७ ।।

परमधाम में सब तरह की हंसी सहन करना सहज है, पर यह दाग लग जाने वाली हंसी सहन नहीं होगी। जागृत बुद्धि ने जब हमारे सपने के तन को होश में ला दिया है, तो हमारे यह संसार के झूठे तन भी सहन नहीं कर सकते हैं।

ना रह्या इस्क अपना, ना रह्या वतन सों।
हक सों भी ना रह्या, तो कहा कहूं हुकम कों।। २८ ।।

खेल में न हमारा परमधाम से सम्बन्ध रहा और न श्री राजजी से ही इश्क रहा, तो अब हुकम को कैसे दोष दूं?

तुम हीं आप देखाइया, पेहेचान तुम इलम।
तुम हीं दई हिंमत, तुम हीं पकड़ाए कदम।। २९ ।।

आपने ही अपनी जागृत बुद्धि के ज्ञान से अपनी पहचान कराई। आपने ही हमारी हिम्मत बढ़ाकर अपने चरणों में ले लिया।

तुम हीं इस्क देत हो, तुम हीं दिया जोस।
सोहोबत भी तुम हीं दई, तुम हीं ल्यावत माहें होस।। ३० ।।

अब आप ही चरणों में लेकर हमको फरामोशी से होश में लाते हैं और अपना इश्क और जोश देते हैं।

तुम हीं उतर आए अर्स से, इत तुम हीं कियो मिलाप।
तुम हीं दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप।। ३१ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आप ही परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं। यहां आकर हमसे मिले हैं। आपने ही अपनी जागृत बुद्धि से परमधाम की पहचान कराकर ऐसी सुध दे दी, जैसे आप परमधाम की ही तरह साक्षात् हमारे पास हो।

तुम हीं देखाई निसबत, तुम हीं देखाई खिलवत।
तुम हीं देखाया सुख अखण्ड, तुम हीं देखाई वाहेदत।। ३२ ।।

आपने ही, मैं आपकी अंगना हूं, यह पहचान कराई। आपने ही मूल-मिलावे में एकदिली के साथ चरणों में बैठने का सुख दिखाया है।

खेल भी तुम देखाईया, दई फरामोसी भी तुम।
तुम हीं जगावत जुगतें, कोई नहीं तुम बिना खसम।। ३३ ।।

खेल भी आपने दिखाया है। फरामोशी भी आपने दी है और जागृत बुद्धि के ज्ञान से आप जगा भी रहे हो। आपके सिवाय कोई दूसरा नहीं है।

Nijanand App

काहू तरफ न देखाई अपनी, यों रहे चौदे तबक सें दूर।
सो सेहेरग से नजीक तुम हीं, हमको लिए कदमों हजूर।। ३४ ।।

आप चौदह तबकों से दूर ही बैठे रहे। किसी को अपनी सुध नहीं दी। आपने ही हमें अपने चरणों में लेकर, हमको सेहेरग से नजदीक आप हैं, ऐसा दिखा दिया।

मैं भी इत हों नहीं, ए भी कहावत तुम।
जब दूजे कर बैठाओगे, तब खसम को कहेंगे हम।। ३५ ।।

मैं भी यहां पर नहीं हूं, यह भी आप कहलवा रहे हैं। जब आप हमारे इन तनों से हमारी आत्मा को अलग करके हमारे जीवों को बहिश्त में जुदा कर बिठाओगे, तब हे धनी! हम आपसे खसम कहकर बातें करेंगे।

दूजे तो हम हैं नहीं, ए बोले बेवरा वाहेदत का।
ज्यों खेलावत त्यों खेलत, ना तो क्या जाने बात बका।। ३६ ।।

वाहेदत की एकदिली के विवरण से जाहिर है कि हम आपसे अलग नहीं हैं। अब इस संसार में जैसा आप खेलाते हैं, वैसा ही मैं खेलती हूं, वरना अखण्ड घर की बातें हम कैसे जानते?

ना तो नींद उड़े तन सुपना, ए रेहेवे क्यों कर।
देखो अचरज अदभुत, धड़ बोले सिर बिगर।। ३७ ।।

नींद उड़ जाने पर यह संसार का तन कैसे रह सकता है? बड़ी हैरानी वाली बात एक यह देखो कि हमारा धड़ संसार में है और सिर परमधाम में है, पर यहां धड़ बिना सिर के बोल रहा है।

धड़ दो एक सुकन कहे, तित अचरज बड़ा होए।
ए तन बिन बोले रूह अर्स की, कहे बानी बिना हिसाबें सोए।। ३८ ।।

यह तन (धड़) एक दो वचन जो कहता भी है, तो बड़ी हैरानी होती है। मेरी रूह तो परमधाम की है और तन भी श्री राजजी महाराज के चरणों के तले है, तो फिर रूह अपने तन के बिना यहां कैसे बिना हिसाब वाणी बोल रही है?

सो भी बानी नहीं फना मिने, अर्स बका खोल्या द्वार।
जो अब लग किने न खोलिया, कई हुए पैगंमर अवतार।। ३९ ।।

मोमिनों के धड़ (तन) जो वाणी बोलते हैं, तो वह वाणी संसार की नहीं है। इनकी वाणी ने ही परमधाम की पहचान कराई है, जिस परमधाम की खबर आज दिन तक कोई पैगंबर या अवतार नहीं दे सके।

अर्स रूहें पेहेचान जाहेर, इनों कौल फैल हाल पार।
सोई जानें पार वतनी, जाको बातून रूहसों विचार।। ४० ।।

परमधाम की रूहों की पहचान जाहिर है, उनकी कहनी, करनी और रहनी सब पार परमधाम की ही होगी। इनको वही जान सकेंगे, जिनकी आत्मदृष्टि खुल चुकी होगी।

सो पट बका खोलिया, और बोले न बका बिन।
इनों पीठ दई चौदे तबकों, करें जाहेर अर्स रोसन।। ४१ ।।

मोमिनों ने ही अखण्ड परमधाम की पहचान कराई। वह परमधाम के अतिरिक्त संसार की वाणी नहीं बोलते। यह ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को छोड़कर परमधाम की पहचान कराते हैं।

Nijanand App

चौदे तबक की दुनी में, बका तरफ न पाई किन।
सो सबों ने देखिया, किया जाहेर बका हक दिन।। ४२ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में अखण्ड घर (परमधाम) की जानकारी किसी को नहीं मिली। मोमिनों ने अखण्ड जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सबको पहचान दे दी।

बेवरा किया फुरमान में, और हदीसें महंमद।
जिने खुली हकीकत मारफत, सोई जाने बातून सब्द।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में और रसूल साहब ने हदीस में इस बात का विवरण स्पष्ट लिखा है, परन्तु इनके रहस्यों को वही समझेगा, जिसको हकीकत और मारफत के भेद खुल गए हैं।

महंमद सिखापन ए दई, जो उतरीं अरवाहें सिरदार।
हक बका सिर लीजियो, छोड़ो दुनियां कर मुरदार।। ४४ ।।

श्री प्राणनाथजी ने एक बात और समझाई है कि जो परमधाम की रूहें हैं और खेल में आई हैं, वह श्री राजजी महाराज और परमधाम को शिरोधार्य करके बाकी दुनियां को मुरदार समझकर छोड़ दें।

महंमद कहें ए मोमिनों, ए अर्स अरवाहों रीत।
हक बका ल्यो दिल में, छोड़ो दुनियां कर पलीत।। ४५ ।।

मुहम्मद साहब (श्री प्राणनाथजी) कहते हैं कि हे मोमिनो! परमधाम की रूहों की यह रहनी है कि वह श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को दिल में रखकर नापाक (अपवित्र) दुनियां को छोड़ दें।

अर्स रूहें मोमिनों, लई महंमद हिदायत।
चौदे तबक को पीठ दे, आए माहें हक खिलवत।। ४६ ।।

परमधाम की रूहों ने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की हिदायत को समझा और दुनियां से चित्त हटाकर मूल-मिलावा में ध्यान लगाया।

कहें महंमद अर्स रूहें, तुम मछली हौज कौसर।
जो जीव दुनी मुरदार के, सो रहें ना तिन बिगर।। ४७ ।।

श्री प्राणनाथजी अपनी रूहों से कहते हैं कि तुम हौज कौसर में रहने वाली मछली हो। जैसे इस दुनियां के मुरदार जीव दुनियां के बिना नहीं रह सकते वैसे तुम्हें भी परमधाम के बिना नहीं रहना चाहिए।

अर्स अल्ला दिल मोमिन, और दुनी दिल सैतान।
दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान।। ४८ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है। दुनियां के दिल पर शैतान की बादशाही कही है, जिसकी गवाही रसूल साहब ने हदीसों में और श्री राजजी महाराज ने कुरान में दी है।

कहे कुरान दूजा कछुए नहीं, एक हक न्यामत वाहेदत।
और हराम सब जानियो, जो कछू दुनी लज्जत।। ४९ ।।

कुरान में लिखा है कि श्री राजजी महाराज और रूहों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। दुनियां के सभी ऐशो-आराम को हराम समझना।

Nijanand App

दुनी दोजख दरिया मछली, पातसाह सैतान दिल पर।
हराम खात है अबलीस, तिन तले दुनी का घर।।५०।।

दुनियां के जीव दोजख में जलने वाली भवसागर की मछली हैं। इनके दिलों पर शैतान (अबलीस, नारद) बैठा है। इस शैतान अबलीस की खुराक ही झूठ है, जिसके अधीन दुनियां पड़ी है।

ओलिया लिल्ला दोस्त, मोमिन बीच खिलवत।
ए अरवाहें अर्स की, इनों दिल में हक सूरत।।५१।।

मोमिन परमधाम में, श्री राजजी महाराज के ज्ञान को जानने वाले, श्री राजजी महाराज के दोस्त कहे जाते हैं। यह परमधाम की रूहें हैं, इनके दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो कायम हक वतन।
रूहें कही दरगाह की, जित असल मोमिनों तन।।५२।।

इसलिए मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अखण्ड वतन कहा है, जहां मूल तन परआतम हैं। रूहें उसी परमधाम रंग महल की रहने वाली हैं।

आदम नसल हवा बिना, ज्यों मछली जल बिन।
यों असल न छूटे अपनी, कही जुलमत दुनी वतन।।५३।।

जैसे मछली जल के बिना नहीं रहती, इसी तरह यह संसार के जीव माया के बिना नहीं रह सकते। इस तरह से अपनी असल कोई नहीं छोड़ता, इसलिए दुनियां का धाम निराकार कहा है।

मोमिन अर्स बका बिना, रेहे ना सके एक पल।
जो हौज कौसर की मछली, तिन हैयाती वह जल।।५४।।

मोमिन अखण्ड परमधाम के बिना एक पल नहीं रह सकते। यह हौज-कौसर की मछली हैं और उनका जीवन अखण्ड परमधाम का जल है।

मोमिन और दुनी के, कह्या जाहेर बड़ा फरक।
करे दुनी आहार फना मिने, अर्स मोमिन बका हक।।५५।।

मोमिन और दुनियां के जीवों में जाहिरी रूप से यही बड़ा अन्तर है। दुनियां की खुराक झूठा संसार है और मोमिनों का घर अखण्ड परमधाम है।

आए मोमिन नूर बिलंद से, और दुनियां कही जुलमत।
यों जाहेर लिख्या फुरमान में, किन पाई न तफावत।।५६।।

मोमिन परमधाम से आए हैं। दुनियां निराकार से है। ऐसा कुरान में जाहिर लिखा है, पर यह फर्क किसी को समझ में आया नहीं।

ए तो जाहेर कुरान पुकारहीं, और महंमद हदीस।
ए बेवरा क्या जानहीं, जिन नसलें लिख्या अबलीस।।५७।।

कुरान और मुहम्मद साहब की हदीस में साफ कहा है कि जिनके नसीब में शैतान लिखा है, जो शैतान के अधीन हैं, वह इस फर्क को कैसे जान सकते हैं?

Nijanand App

जो मोमिन होते इन दुनी के, तो करते दुनी की बात।
चलते चाल इन दुनी की, जो होते इन की जात।।५८।।

मोमिन यदि दुनियां के होते, तो दुनियां की बातें करते और दुनियां की चाल चलते।

जो यारी होती मोमिन दुनी सों, तो दुनीको न करते मुरदार।
रूहें इनसे जुदी तो हुई, जो हम नाहीं इन के यार।।५९।।

मोमिनों की यदि दुनियां से यारी होती, तो दुनियां को मुर्दा समझकर न छोड़ते, इसलिए मोमिन इन दुनियां वालों से अलग होते हैं, क्योंकि दुनियां वालों से उन्हें कोई लगाव नहीं होता।

दुनी चलन इन जिमी का, चलना हमारा आसमान।
मोमिन दुनी बड़ी तफावत, ए जानें मोमिन विध सुभान।।६०।।

दुनियां की रीति-रिवाज संसार की होती है और रूहों की अपने परमधाम की, इसलिए मोमिन और दुनियां में बड़ा फर्क है, जिसको मोमिन ही समझ सकते हैं।

हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल।।६१।।

श्री प्राणनाथजी महाराज तो बहुतों को मिले, पर उनकी रहनी पर कोई नहीं चल सका (कदमों पर कदम नहीं रखे)। उनकी रहनी पर वही चलेंगे, जो परमधाम के होंगे।

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम।
आदमी चले न चाल रूहकी, इत दुनी मार न सके दम।।६२।।

मोमिन श्री प्राणनाथजी के बताए रास्ते पर चलेंगे। दुनियां के आदमी मोमिनों की रहनी पर एक पल के लिए भी नहीं चल सकते।

आदमी छोड़ वजूद को, ले न सके रूह की चाल।
दुनियां बंदी हवाए की, मोमिन बंदे नूरजमाल।।६३।।

संसार के जीव शरीर को सम्भालने में लगे रहेंगे। वह रूह (मोमिनों) की रहनी में नहीं आ सकते। दुनियां निराकार की पूजक है और मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं।

रूहें आइयां बीच दुनी के, धरे नासूती वजूद।
रूहें चाल न छोड़ें अपनी, जो कदी आइयां बीच नाबूद।।६४।।

रूहें खेल में उतरी हैं और माया के तन धारण कर रखे हैं। फिर भी नाचीज दुनियां में आकर अपनी रहनी को नहीं छोड़ सकतीं।

दुनी रूहें एही तफावत, चाल एक दूजे की लई न जाए।
रूह मोमिन पर ईमान के, दुनी पर बिन क्यों उड़ाए।।६५।।

दुनियां वालों और मोमिनों में यही बड़ा फर्क है कि वह एक दूसरे की चाल पर नहीं चलते। मोमिनों को ईमान के पर (पंख) लगे हैं। दुनियां परों के बिना उड़ नहीं सकती।

करना दीदार हक का, एही मोमिनों ताम।
पानी पीवना दोस्ती हक की, इनों एही सुख आराम।।६६।।

मोमिनों का खाना, पीना श्री राजजी के दर्शन और दोस्ती है। उनका आराम इसी में है।

Nijanand App

मोमिन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क।
इस्क आए पीछे बंदगी, ए जानें मासूक या आसिक।।६७।।

मोमिनों को जब तक इश्क नहीं आ जाता तभी तक बंदगी करते हैं। इश्क आने के बाद आशिक मोमिन, माशूक श्री राजजी महाराज एक हो जाते हैं, फिर उसके बाद बन्दगी किसकी?

आसिक की एही बंदगी, जाहेर न जाने कोए।
और आसिक भी न बूझहीं, एक होत दोऊ से सोए।।६८।।

आशिक रूहों की यही बन्दगी है, जिसको जाहिरी में कोई नहीं जानता। आशिक रूहें भी नहीं समझतीं कि यह श्री राजजी महाराज से एक कैसे हो गईं?

ए जाहेर है तफावत, जो कर देखो सहूर।
दुनियां सहूर भी ना कर सके, क्या करे बिना जहूर।।६९।।

विचार करके देखो तो यह फर्क बिल्कुल स्पष्ट है। दुनियां इस तरह सोच भी नहीं सकती। बिना पहचान के वह क्या करे?

मोमिन खाना अर्स में, हुआ दुनी जिमी में आहार।
दुनी रोजगार नासूती, जो मोमिनों करी मुरदार।।७०।।

मोमिनों का आहार परमधाम में है और दुनियां के जीवों का झूठे संसार में। दुनियां मृत्युलोक के रोजगार-धन्धे में लगी है, जिसको मोमिनों ने तुच्छ समझकर छोड़ दिया।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कही दुनी आई जुलमत।
जो देखो वेद कतेब को, तो जाहेर है तफावत।।७१।।

मोमिन परमधाम से उतरे हैं, दुनियां निराकार से पैदा हुई है। वेद और कतेबों में देखो। यह अन्तर स्पष्ट लिखा है।

मोमिन लिखे आसमानी, दुनियां जिमी की कही।
ना तो वजूद दोऊ आदमी, ए तफावत क्यों भई।।७२।।

मोमिनों को आकाश का लिखा है और दुनियां को जमीन का, वरना दोनों ही आदमी के तन में हैं, तो यह फर्क कैसे हो गया?

कहे पर इस्क ईमान के, रस्ते मोमिन छोड़ें न पल।
सो दुनी को है नहीं, उत पांउं न सके चल।।७३।।

मोमिनों के ईमान और इश्क के पर (पंख) कहे हैं, जिसे वह एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ सकते। दुनियां वालों के पंख नहीं है और वहां पांव से चलकर जा नहीं सकते।

हकें फुरमाया चौदे तबक, है चरकीन का चरकीन।
सो छोड़ें एक मोमिन, जिनमें इस्क आकीन।।७४।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में साफ लिखा है कि चौदह लोक गन्दी से गन्दी जगह है। इसे केवल मोमिन छोड़ सकेंगे, जिनके अन्दर ईमान और इश्क है।

Nijanand App

सो दुनी को है नहीं, जासों उड़ पोहोंचे पार।
ईमान इस्क जो होवहीं, तो क्यों रहें बीच मुरदार।। ७५ ।।

दुनियां वालों के पास पर (ईमान और इश्क) नहीं हैं जिससे वह हद को छोड़कर बेहद में चले जाएं। अगर इनमें भी ईमान और इश्क आ जाता, तो यह नाचीज दुनियां में कैसे रह जाते?

ऊपर तले अर्स ना कह्या, अर्स कह्या मोमिन कलूब।
ए जानें रूहें अर्स की, जिन का हक मेहेबूब।। ७६ ।।

परमधाम दुनियां में ऊपर-नीचे कहीं नहीं है। अर्श मोमिनों के दिल को कहा है। यह परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जिनके महबूब अक्षरातीत श्री राजजी महाराज हैं।

दुनी दिल मजाजी कह्या, मोमिन हकीकी दिल।
बिना तरफ दुनी क्यों पावहीं, जो अर्सें रहे हिल मिल।। ७७ ।।

दुनियां के दिल को झूठा कहा है और मोमिनों के दिल को सच्चा। जिस तरह से मोमिन अर्श में श्री राजजी से हिले-मिले एक तन हैं, दुनियां को उसकी खबर भी नहीं लग सकती, तो वह उसे कैसे प्राप्त करे?

वेद कतेब पढ़ पढ़ गए, किन पाई न हक तरफ।
खबर अर्स बका की, कोई बोल्या न एक हरफ।। ७८ ।।

दुनियां वालों ने वेद-कतेब पढ़े, पर पारब्रह्म के ठिकाने का पता किसी को नहीं चला, इसलिए अखण्ड परमधाम का एक शब्द भी कोई नहीं बोला।

इंतहाए नहीं अर्स भोम का, सब चीजों नहीं सुमार।
ऊपर तले माहें बाहेर, दसों दिसा नहीं पार।। ७९ ।।

परमधाम की भूमि का अन्त नहीं है और न वहां की चीजों की ही गिनती है। ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर दसों दिशाओं में सभी चीजें बेशुमार हैं।

तो भी दुनियां अर्स देखे नहीं, यों देखावत कतेब वेद।
पावे न लाम इलम बिना, कोई इन विध का है भेद।। ८० ।।

वेद-कतेब ऐसा कहते हैं, फिर भी दुनियां परमधाम की तरफ नहीं देखती। जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना जो मलकी स्वरूप श्री श्यामाजी लाए हैं, इस भेद को दुनियां वाले नहीं समझ सकते।

सुध दई महंमद ने, अर्स पाइए मोमिन बीच दिल।
जिनपे इलम हक का, दिल अर्स रहे हिल मिल।। ८१ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने बताया है कि मोमिनों का दिल श्री राजजी का अर्श है और इनके वास्ते ही जागृत बुद्धि का ज्ञान आया है। इस तरह से मोमिन ही श्री राजजी महाराज से हिले-मिले हैं।

दुनी जाने मोमिन दुनी से, ए नहीं बीच इन खलक।
एता भी न समझै, पुकारत कलाम हक।। ८२ ।।

दुनियां वाले मोमिनों को दुनियां का ही समझते हैं, पर मोमिन दुनियां के नहीं हैं। कुरान में ऐसा स्पष्ट कहने पर भी दुनियां वाले नहीं समझ पाए।

Nijanand App

कहे मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत।
ए अर्स में अर्स इन दिल में, यों हिल मिल बीच खिलवत।। ८३ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि मोमिन परमधाम के हैं और इनका दिल खुदा का अर्श है। इनके दिलों में खुदा बैठा है। यह संसार में रहते हुए भी परमधाम में हैं और इनका दिल ही अर्श है। इस तरह से यह मोमिन श्री राजजी महाराज से एकाकार हैं।

खुली मुसाफ हकीकत, तिन इतहीं हक वाहेदत।
अर्स बरकत सब इतहीं, इतहीं हक निसबत।। ८४ ।।

इनको ही कुरान की हकीकत का ज्ञान है और यह ही संसार में बैठकर श्री राजजी और मूल-मिलावा का आनन्द लेते हैं। यह परमधाम की अंगना हैं और सारी बरकत इनके पास है।

इतहीं न्यामत मोमिनों, सब खुली जो इसारत।
इतहीं मेला रूहों असल, इतहीं रूहों कयामत।। ८५ ।।

मोमिनों की सब इशारतें जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुल गई हैं, इसलिए परमधाम की सब न्यामतें इनके पास यहीं पर हैं। यहीं पर उन्हें परमधाम की रूहों से मिलावा होगा। यहीं पर दुनियां को अखण्ड मुक्ति देंगी।

ए बारीक बातें रूह मोमिनों, सो समझें रूह मोमिन।
सो आदमी कहे हैवान, जो इस्क इमान बिन।। ८६ ।।

यह मोमिनों की बारीक (खास) बातें हैं, इसे वही समझ सकते हैं। जिनके पास इश्क और ईमान नहीं है, वह इन्सान पशु के समान हैं।

दुनी जाने तन मोमिन, बैठे हैं हम माहें।
बोलत हैं बानी बका, ए रूहें तन दुनी में नाहें।। ८७ ।।

दुनियां वाले यह समझते हैं कि मोमिनों के तन हमारे समान हैं। हमारे बीच में बैठे हैं। जबकि यह मोमिन परमधाम की वाणी बोलते हैं और इनके असल तन दुनियां में नहीं हैं।

रूहें तन माहें अर्स बका, और अर्स में बैठे बोलत।
तो नजीक कहे सेहेरग से, देखो मोमिनों हक हिकमत।। ८८ ।।

रूहों के असल तन परमधाम में हैं। वह अर्श से ही बोल रहे हैं। श्री राजजी महाराज की इस हिकमत को देखो, इसलिए मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने सेहेरग से नजदीक कहा है।

इनों तन असल अर्स में, इनों दिल में जो आवत।
सोई इनों के अक्स में, सुकन सोई निकसत।। ८९ ।।

इनके मूल तन परमधाम में हैं और तनों में जो चाहना होती है, उनके प्रतिबिम्ब जो संसार के तन हैं, उनसे भी वही वाणी निकलती है।

मोमिन तन असल से, अर्स मता कछू न छिपत।
तो बका सूरज फुरमान में, कह्या फजर होसी इत।। ९० ।।

मोमिनों की परआतम से परमधाम का कुछ छिपा नहीं है, इसलिए इनको ही कुरान में अखण्ड सूर्य कहा है और इनसे ही अज्ञान का अन्धकार मिटकर ज्ञान का सवेरा होगा।

Nijanand App

ए बारीक बातें अर्स की, जो गुजरीं माहें वाहेदत।
हक हादी और मोमिन, सो जाहेर हुई खिलवत।। ९१ ।।

यह परमधाम की बारीक बातें है जो परमधाम में हुई थीं। अब श्री राजश्यामाजी और मोमिनों की सभी बातें मूल-मिलावा की जाहिर हो गईं।

तो दुनियां होसी हैयाती, ले मोमिनों बका बरकत।
ए बात दुनी क्यों बूझहीं, ओ जात हक निसबत।। ९२ ।।

अब मोमिनों की कृपा से ही सारी दुनियां को कायमी (अखण्ड मुक्ति) मिलेगी, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज की अंगना हैं। इन्हें दुनियां कैसे समझेगी?

ए हक मता रूह मोमिन, इनों ताले लिखी न्यामत।
सो क्यों कर दुनियां समझै, कही असल जाकी जुलमत।। ९३ ।।

मोमिनों के ताले में (नसीब में) परमधाम का ज्ञान और श्री राजजी महाराज की न्यामतें हैं। इस भेद को दुनियां वाले नहीं समझ सकते, क्योंकि वह निराकार से पैदा हैं।

आब हैयाती बका मिने, झूठी जिमी आवे क्यों कर।
दिल आवे अर्स मोमिन के, और न कोई कादर।। ९४ ।।

दुनियां को अखण्ड करने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान इस झूठी दुनियां में कैसे आ सकता है? यह तो मोमिनों के अर्श दिल में ही आ सकता है और दूसरा कोई भी समर्थ नहीं है।

ए मोहोरे जो खेल के, झूठे खाकी नाबूद।
आब हैयाती पीय के, क्यों होसी बका बूद।। ९५ ।।

यह खेल के मालिक त्रिदेव भी झूठे और मिटने वाले हैं। वह भी इस अखण्ड ज्ञान को प्राप्त करके अखण्ड हो जाएंगे।

ए मोहोरे पैदा जो खेल के, हक मोमिनों देखावत।
याही बराबर अक्स, मोमिनों के बका बोलत।। ९६ ।।

श्री राजजी महाराज अपने मोमिनों को इस संसार के त्रिगुण का खेल दिखला रहे हैं। इस तरह मोमिनों के प्रतिबिम्ब नश्वर माया में बैठकर परमधाम की वाणी बोलते हैं।

जो तन अर्स में मोमिनों, सो मता अक्सों पोहोंचावत।
सो अक्सों से बीच दुनी के, मोमिन मेहेर करत।। ९७ ।।

मोमिनों की जो परआतम परमधाम में है, उनकी सारी बातें खेल में रूहों के इन तनों में पहुंच जाती हैं। श्री राजजी की मेहर से ही यह परमधाम की बातें उनके अक्स माया के तनों में पहुंच जाती हैं।

आब हैयाती इन विध, अर्स से रूहें ल्यावत।
ए बरकत रूह अल्लाह की, यों अर्स मता आया इत।। ९८ ।।

इस तरह से परमधाम का वह अखण्ड ज्ञान रूहें खेल में लाती हैं। श्री श्यामा महारानी की कृपा से जागृत बुद्धि का ज्ञान इसी तरह से संसार में आया।

Nijanand App

और बरकत महंमद की, साहेदी देत फुरमान।
तिन साहेदी से ईमान, पोहोंच्या सकल जहान।। ९९ ।।

कुरान गवाही देता है कि आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की कृपा से यह ज्ञान सारे संसार में आएगा जिससे सबको ईमान आएगा।

ए इलम जानें रूहें अर्स की, और न काहूं खबर।
खेल मोहोरे तो कछू हैं नहीं, एक जरे भी बराबर।। १०० ।।

इस ज्ञान को परमधाम की रूहें ही जानती हैं और किसी को खबर नहीं है। इस खेल के मोहरे त्रिदेव एक कण के बराबर भी नहीं हैं।

ए खाकीबुत सब नाबूद, इनको कायम किए मोमिन।
आब हैयाती अर्स की, पिलाए के सबन।। १०१ ।।

इस मिट जाने वाली दुनियां को परमधाम का अखण्ड ज्ञान देकर मोमिनों ने बहिश्तों में अखण्ड कायमी दी।

ऐसा मता मोमिन, अर्स सेती ल्यावत।
बुतखाकी सरभर रूहों की, समझे बिना करत।। १०२ ।।

ऐसा अखण्ड ज्ञान मोमिन परमधाम से लाए हैं। संसार के नाचीज जीव बिना समझे ही मोमिनों की बराबरी करते हैं।

अर्स इलम हुआ जाहेर, जब सब हुए रोसन।
तब अंधेरी और उजाला, जुदे हुए रात दिन।। १०३ ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड ज्ञान जाहिर हो गया है, जिससे सबको पता लग गया। अब अज्ञानता का अंधेरा मिट गया और ज्ञान का उजाला हो गया। इस तरह से रात और दिन की अलग-अलग पहचान हो गई।

अर्स तो दूर है नहीं, कहें दोऊ कतेब वेद।
अर्स में रूहें दुनी फना जिमी, ए इलम लदुन्नी जानें भेद।। १०४ ।।

वेद और कतेब (कुरान) दोनों ऐसा कहते हैं कि परमधाम दूर नहीं है। रूहें परमधाम में रहती हैं और दुनियां मिटने वाली, निराकार के अन्दर रहती है। इस भेद को तारतम ज्ञान ने ही जाहिर किया है।

पर ए सुध दुनी में है नहीं, तो क्या जाने कित अर्स।
क्यों हक क्यों हादी रूहें, क्यों दिल मोमिन अरस-परस।। १०५ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान दुनियां वालों के पास नहीं है, तो परमधाम कहां है, वह कैसे जानें? किस तरह से श्री राजश्यामाजी और रूहें एक दिल हैं, इसे वह कैसे समझें?

बका जिमी जल तेज वाए, और बका आसमान।
आपन बैठे वाही अर्स में, पर नजरों देखें जहान।। १०६ ।।

परमधाम की जमीन, आसमान, जल, वायु, अग्नि सभी अखण्ड हैं। रूहों के असल तन भी परमधाम में हैं, जहां वह बैठी हैं, पर ध्यान से संसार को देख रही हैं।

Nijanand App

जहान तो कछू है नहीं, है अर्स बका हक।
हक इलम ले देखिए, तो होइए अर्स माफक।। १०७ ।।

संसार तो कुछ भी नहीं है। अखण्ड तो केवल परमधाम है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से जब देखें, तो हम परमधाम के हैं, ऐसा मालूम होता है।

नाबूद कही जो दुनियां, तिनकी नजर भी नाबूद।
अर्स रूहें हक इलमें, ए आसिकै देखे मेहेबूब।। १०८ ।।

दुनियां मिटने वाली है, इसलिए दुनियां वालों की नजर भी मिटने वाली दुनियां में ही रहती है, जबकि परमधाम की रूहें श्री राजजी के अखण्ड ज्ञान से श्री राजजी को ही देखती हैं।

इत आंखें चाहिए हक इलम की, तो हक देखिए नैना बातन।
नैना बातून खुलें हक इलमें, ए सहूर है बीच मोमिन।। १०९ ।।

संसार में श्री राजजी को देखने के लिए जागृत बुद्धि के ज्ञान की शक्ति चाहिए। फिर पारब्रह्म को आत्मदृष्टि से देख सकते हैं। बातूनी दृष्टि जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही खुलती है, जिसका विचार मोमिनों के पास है।

जिन बेचून बेचगून नजरों, ताए खबर न इलम हक।
हक इलम देखावे मासूक, इन हाल मोमिन कहे आसिक।। ११० ।।

जिन दुनियां वालों को निराकार और निर्गुण ही दिखाई देता है, उन्हें श्री राजजी महाराज के इलम की पहचान नहीं है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान श्री राजजी महाराज के दर्शन करा देता है, जिनके आशिक मोमिन हैं।

कहे पांच तत्व ख्वाब के, तामें बुजरक केहेलाए कई लाख।
पर अर्स बका हक ठौर की, कहूं जरा न पाइए साख।। १११ ।।

संसार पांच तत्व, तीन गुण का है। इसमें लाखों ज्ञानी और अगुए हो गए हैं, परन्तु अखण्ड ठिकाना परमधाम का ज्ञान किसी को प्राप्त नहीं हुआ, इसलिए किसी ने वहां की गवाही नहीं दी।

ख्वाब पैदा बका जिमी से, पर देखे न बका को।
एक जरा बका आवे जो ख्वाब में, तो सब ख्वाब उड़े तिनसों।। ११२ ।।

यह संसार अखण्ड परमधाम से ही पैदा है पर यहां के जीव अखण्ड को नहीं देख सकते। अखण्ड की एक जर्रा मात्र सुध भी सपने में आ जाए, तो यह संसार ही मिट जाए।

ना तो ख्वाब जिमी बका जिमी सों, एक जरा न तफावत।
पर झूठ न रहे सांच नजरों, आंखें खुलतै ख्वाब उड़त।। ११३ ।।

वरना संसार की जमीन और परमधाम की जमीन में थोड़ा भी फर्क नहीं है। परमधाम की नजर के सामने यह झूठा संसार रह नहीं सकता। जैसे ही परमधाम से फरामोशी का परदा हटेगा, वैसे ही संसार समाप्त हो जाएगा।

ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमिनों की सरभर।
हक देखे जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर।। ११४ ।।

यह संसार के लोग सब सपने के हैं, जो मोमिनों की बराबरी करते हैं। सच को देखकर जो समाप्त हो जाए, उसे दूसरा कैसे कहा जाए?

Nijanand App

हक देखे जो खड़ा रहे, तो दूजा कह्या जाए।
दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नींद उड़े उड़ जाए।। ११५ ।।

सत के सामने जो खड़ा रहे, वही दूसरा कहला सकता है, इसलिए संसार के जीव जो सपने के हैं, उन्हें दूसरा कैसे कहा जाए? यह तो नींद के समाप्त होते ही समाप्त हो जाएंगे।

ए इलमें सुनो अर्स बारीकियां, जो सहें अर्स हक रोसन।
ताए भी दूजा क्यों कहिए, कहे कुल्ल मोमिन वाहिद तन।। ११६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम की बारीक (खास) बातें सुनें। जो श्री राजजी महाराज और परमधाम की बातों को सुनकर सहन कर सकते हैं, उनको भी दूसरा कैसे कहा जाए? वह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं।

हक हादी रूहें मोमिन, ए अर्स में वाहेदत।
पर ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रूहें हक खिलवत।। ११७ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें परमधाम में एक दिल हैं। इस बात को परमधाम की रूहें ही जानती हैं कि वह श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा में बैठी हैं।

इतहीं कजा होएसी, इतहीं होसी भिस्त।
दोजख इतहीं होएसी, दुनी तले नूर नजर कयामत।। ११८ ।।

यहीं संसार में बैठकर खुदा सबके न्यायाधीश बनकर सबका न्याय चुकाएंगे। यहीं पर बैठकर सब दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करेंगे और यहीं पर दुनियां को पश्चाताप की अग्नि में जलाकर अक्षर की नजर योगमाया में अखण्ड कर देंगे।

दम ख्वाबी देखें क्यों बका को, कर देखो सहूर।
ख्वाब दुनी तब क्यों रहे, जब हुआ दिन बका जहूर।। ११९ ।।

विचार करके देखो। यह संसार के जीव अखण्ड को कैसे देख सकते हैं? जब अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर हो गया, तो यह स्वप्न की दुनियां कैसे रह सकती है?

दुनी मगज न जाने मुसाफ का, तो देखे अर्स को दूर।
जो जानें हक इलम को, तो देखें मोमिन हक हजूर।। १२० ।।

दुनियां वाले कुरान के भेदों को नहीं समझते, इसलिए अर्श को दूर समझते हैं। जो श्री राजजी महाराज के इलम को समझते हैं, वही मोमिन श्री राजजी के पास रहते हैं।

भिस्त दोजख दोऊ जाहेर, ए लिख्या माहें फुरमान।
तिन छोड़ी दुनियां हराम कर, जिन हुई हक पेहेचान।। १२१ ।।

बहिश्त और दोजख की पहचान कुरान में जाहिर लिखी है। जिनको श्री राजजी महाराज की पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान से हो जाती है, वह दुनियां को मिटने वाली नाचीज समझकर छोड़ देते हैं।

तो तरक करी इनों दुनियां, जो अर्स दिल मोमिन।
दुनी जलसी इत दोजख, जब दिन हुआ बका रोसन।। १२२ ।।

मोमिनों ने दुनियां को छोड़ दिया है, क्योंकि इनके दिल को अर्श कहा है। जब अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय होगा, तो दुनियां पश्चाताप की अग्नि में जलेगी।

Nijanand App

हकें दिया लदुन्नी जिनको, सो बैठे अर्स में बेसक।
जब कौल पोहोंच्या सरत का, तब होसी दुनी इत दोजक।। १२३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जिन्हें जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है, वह अवश्य ही परमधाम में बैठे हैं। जब ब्रह्माण्ड की कायमी का समय आ जाएगा, तब दुनियां पश्चाताप की अग्नि में जलेगी।

अर्स नासूत दोऊ इतहीं, होसी जाहेर अपनी सरत।
देखें मोमिन दुनी जलती, बीच बैठे अपनी भिस्त।। १२४ ।।

परमधाम और मृत्युलोक दोनों का ज्ञान अपने समय पर संसार में जाहिर हो जाएगा और तब मोमिन अपने घर में बैठकर दुनियां को पश्चाताप की अग्नि में जलता देखेंगे।

काफर देखें मोमिनों भिस्त में, आप पड़े बीच दोजक।
सुख मोमिनों का देख के, जलसी आग अधिक।। १२५ ।।

सब दुनियां के काफिर लोग पश्चाताप की अग्नि में जलते हुए मोमिनों को अखण्ड सुख में देखेंगे। उस सुख को देखकर वह और भी ईर्ष्या की अग्नि में जलेंगे।

मोमिन दुनी दोऊ आदमी, हुई तफावत क्यों कर।
ए बेवरा है फुरमान में, पर कोई पावे न हादी बिगर।। १२६ ।।

संसार में मोमिनों के और जीवों के तन एक से होने पर ही इस तरह से उनमें फर्क क्यों हो गया। इसका विवरण कुरान में लिखा है, परन्तु स्वामी श्री प्राणनाथजी की मेहर बिना कोई नहीं पा सकता।

बीते नब्बे साल हजार पर, मुसाफ मगज न पाया किन।
तो गए एते दिन रात में, हुआ जाहेर न बका दिन।। १२७ ।।

रसूल साहब से एक हजार नब्बे वर्ष तक, अर्थात् सम्वत् १७३५ तक कुरान के भेदों को कोई नहीं समझ सका। इतने दिन तक अज्ञानता का अंधेरा रहा। अखण्ड ज्ञान के सूर्य श्री प्राणनाथजी तब जाहिर नहीं हुए थे।

मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, खोली हक हकीकत मारफत।। १२८ ।।

मोमिन परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं, उनके दिलों में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं। उन्होंने ही हकीकत और मारफत के भेद खोले हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है।

दुनी दिल पर अबलीस, और पैदास कही जुलमत।
काम हाल इनों अंधेर में, हवा को खुदा कर पूजत।। १२९ ।।

दुनियां के दिल पर शैतान अबलीस की बादशाही है और यह निराकार से पैदा है। इनकी कहनी, करनी और रहनी सब माया की है और यह निराकार को ही खुदा करके पूजते हैं।

कुलफ हवा का दुनी के, दिल आंखों कानों पर।
ईमान क्योंए न आए सके, लिख्या फुरमान में यों कर।। १३० ।।

दुनियां के दिल, कान और आंखों पर निराकार का परदा पड़ा है, इसलिए इनको ईमान किसी तरह से नहीं आ सकता, ऐसा कुरान में लिखा है।

Nijanand App

कौल हाल मोमिन के नूर में, रूहअल्ला आया इनों पर।
दिया इलम लदुन्नी इन को, खोलनें मुसाफ खातिर।। १३१ ।।

मोमिनों की कहनी और रहनी सब परमधाम के लिए है। श्यामा महारानी इन्हीं के वास्ते ही आईं और कुरान के छिपे रहस्य खोलने के लिए जागृत बुद्धि का ज्ञान इन्हीं को दिया है।

राह तौहीद पाई इनों नें, जो राह मुस्तकीम सिरात।
ए मेहेर मोमिनों पर तो भई, जो तले कदम हक जात।। १३२ ।।

परमधाम का सरल रास्ता इन्होंने ही पाया है, क्योंकि यह श्री राजजी के चरणों तले बैठे हैं और उन्हीं के अंग हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज की मेहर मोमिनों पर है।

हुई लानत अजाजील को, सो उलट लगी सब जहान।
अबलीस लिख्या दुनी नसलें, कही ए विध माहें कुरान।। १३३ ।।

अजाजील फरिश्ते को हुकम न मानने से लानत लगी, सजा मिली। वह सजा सारी दुनियां को लग गई, क्योंकि कुरान में लिखा है कि दुनियां वालों के दिलों पर अबलीस, शैतान (नारद) की बादशाही है।

देसी पैगंमर की साहेदी, गिरो अदल से उठाई जे।
करी हकें हिदायत इन को, बहत्तर नारी एक नाजी ए।। १३४ ।।

कुरान में लिखा है कि मोमिनों को, दुनियां के न्याय से पहले ही, दुनियां से उठा लिया जाएगा। यही वह नाजी फिरका है जिनके पास पारब्रह्म का ज्ञान होगा। बाकी बहत्तर फिरके दोजखी होंगे।

तन मोमिन अर्स असल, आड़ी नींद हुई फरामोस।
सो नींद वजूद ले उड़या, तब मूल तन आया माहें होस।। १३५ ।।

मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं, जिन पर फरामोशी का परदा पड़ा है। जब उनके यह संसार के तन हट जाएंगे तो उनकी परआतम से फरामोशी टल जाएगी और होश में आकर उठ खड़े होंगे।

दुनी तन जुलमत से, इन की असल न बका में।
जब फरामोसी उड़ी जुलमत, तब जरा न रह्या दुनी सें।। १३६ ।।

दुनियां के तन निराकार से पैदा हैं, जिनका मूल अखण्ड में नहीं है। जब फरामोशी समाप्त हो जाएगी, तो दुनियां का महाप्रलय हो जाएगा (इनका कुछ भी नहीं रह जाएगा)।

अरवाहें जो सुपन की, देखें न जाग्रत को।
जो होए जाग्रत में असल, सो आवे जाग्रत मों।। १३७ ।।

यह सपने के जीव जागृत को नहीं देख सकते। जिनके असल तन परमधाम में हैं, वही परमधाम में आएंगे।

कही दुनियां हुई कुंन सों, सो जुलमत उड़ें उडत।
ताको भिस्त देसी हादी हुकमें, गिरो मोमिनों की बरकत।। १३८ ।।

जो दुनियां कुंन शब्द के कहने से पैदा हुई वह निराकार के हटते ही समाप्त हो जाएगी। फिर मोमिनों की कृपा से श्री राजजी महाराज का हुकम दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करेगा।

Nijanand App

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते।। १३९ ।।

दुनियां के जीव अखण्ड मुक्ति पा जाने के बाद मोमिनों की सिफत करेंगे और कहेंगे कि श्री राजश्यामाजी और रूहों के कारण ही हमें बहिश्त मिली है।

खुदाए कर पूजेंगे, बका मिनें बेसक।
पाक होसी हक इलम सों, करें बंदगी होए आसिक।। १४० ।।

फिर वह अखण्ड बहिश्तों में बैठकर हम मोमिनों को खुदा जानकर पूजा करेंगे और जागृत बुद्धि के ज्ञान से पाक-साफ होकर आशिक होकर श्री राजजी की बन्दगी करेंगे।

मोमिन उतरे अर्स अजीम से, दुनी तिन सों करे जिद।
ए अर्स से आए हक पूजत, दुनी पूजना हवा लग हद।। १४१ ।।

मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं, दुनियां उनसे झगड़ा करती है। मोमिन परमधाम से आकर श्री राजजी महाराज की पूजा करते हैं। दुनियां के जीव निराकार की पूजा करते हैं।

दुनियां दिल अबलीस कह्या, हक अर्स दिल मोमिन।
ए जाहेर किया बेवरा, कुरान में रोसन।। १४२ ।।

दुनियां के दिलों में शैतान, अबलीस की बादशाही है और मोमिनों के दिलों पर श्री राजजी महाराज बैठे हैं। कुरान में यह जाहिर लिखा है।

अबलीस सोई बतावसी, जिन सों होसी दोजक।
बोली चाली मोमिन अर्स की, जासों पाइए बका हक।। १४३ ।।

शैतान, अबलीस तो वहीं का रास्ता बताएगा, जिससे दुनियां को दोजख की अग्नि में जलना पड़ेगा। मोमिनों की बोलचाल सब परमधाम की होगी, जिससे अखण्ड श्री राजजी महाराज और परमधाम मिलेगा।

बैठे बातें करें बका अर्स की, सोई भिस्त भई बैठक।
दुनी बातें करे दुनी की, आखिर तित दोजक।। १४४ ।।

मोमिन जहां भी बैठकर परमधाम की बातें करेंगे, वही स्थान अखण्ड बहिश्त हो जाएगा। दुनियां वाले अपने पूज्य स्थान पर भी यदि दुनियां की बातें बोलेंगे, तो वह स्थान भी दोजख के समान हो जाएगा।

ए बोहोत भांत है बेवरा, मोमिन और दुनियां।
मोमिन नजर बका मिने, दुनी नजर बीच फना।। १४५ ।।

इस तरह से मोमिनों में और दुनियां वालों में कई तरह से फर्क हैं। मोमिनों की नजर हमेशा परमधाम में रहती है और दुनियां की नजर कुफ्र में (झूठे संसार में)।

कहे महामत अर्स अरवाहें, किया पेहेलें बेवरा फुरमान।
जिन हुई हक हिदायत, सोई बातून करे बयान।। १४६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों का कुरान में पहले से ही विवरण बता रखा है। अब जिनको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि प्राप्त हुई है, वही इस अखण्ड ज्ञान को जाहिर करेंगे।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। १७५२ ।।

Nijanand App

हकीकत मारफत का बेवरा

सोई कहूं हकीकत मारफत, जो रखी थी गुझ रसूल।
वास्ते अर्स रूहन के, जिन जावें आखिर भूल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं उस हकीकत और मारफत के ज्ञान को जाहिर करती हूं जो रसूल साहब ने हकीकत के गुप्त रखे और मारफत के लिखे ही नहीं। वह अब परमधाम की रूहों के वास्ते मैं जाहिर करती हूं, ताकि वह आखिरत को भूल न जाएं।

फिरके बनी असराईल, हुए पीछे मूसा महत्तर।
एक नाजी नारी सत्तर, कहे फुरमान यों कर।। २ ।।

असराईल के बेटे मूसा पैगम्बर के सत्तर नारी और एक नाजी फिरके का ज्ञान कुरान में लिखा है।

याही भांत ईसा के, फिरके बहत्तर कहे।
एक नाजी तिन में हुआ, और नारी इकहत्तर भए।। ३ ।।

इसी तरह से ईसा पैगम्बर के बहत्तर फिरकों का बयान है, जिसमें एक नाजी मर्द मोमिनों का और इकत्तर दोजखी फिरके बताए हैं।

तेहत्तर फिरके कहे महंमद के, बहत्तर नारी एक नाजी।
नारी जलसी आग में, नाजी हिदायत हक की।। ४ ।।

रसूल मुहम्मद के इसी तरह तेहत्तर फिरके हुए हैं, जिनमें बहत्तर दोजखी और एक मर्द मोमिनों का है। नारी फिरके दोजख की आग में जलेंगे। नाजी फिरके को श्री राजजी महाराज की कृपा से जागृत बुद्धि का ज्ञान प्राप्त होगा।

जाहेर पेहेचान है तिन की, ले चलत माएने बातन।
कौल फैल चाल रूह नजर, इनों असल बका अर्स तन।। ५ ।।

मोमिनों की जाहिरी पहचान यही है कि वह कुरान के शब्दों के बातूनी माएने खोलेंगे। इनकी कहनी, करनी, रहनी और रूह की नजर सब परमधाम की होगी, क्योंकि इनके मूल तन परमधाम में हैं।

फुरमान आया जिन पर, ए सोई जानें इसारत।
ले मारफत बैठे अर्स में, बीच बका खिलवत।। ६ ।।

कुरान का ज्ञान जिनके वास्ते आया है, वही इसकी इशारतों को समझते हैं। वह यह मारफत का ज्ञान लेकर ऐसा अनुभव करते हैं, जैसे वह मूल-मिलावा परमधाम में बैठे हों।

ए इलम कहे खेल उड़ जावे, बका कंकरी के देखे।
तो अर्स रूहों की नजरों, ख्वाब रेहेवे क्यों ए।। ७ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान बताता है कि अखण्ड परमधाम की एक कंकरी के सामने यह संसार खत्म हो जाता है, तो फिर परमधाम की रूहों की नजर के सामने यह संसार कैसे रह सकता है?

तो मोमिन तन में हुकम, फैल करे लिए रूह हुज्जत।
वास्ते हादी रूहन के, ए हकें करी हिकमत।। ८ ।।

मोमिनों के तनों में श्री राजजी का हुकम ही मोमिनों के नाम से सब काम करता है। श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामा महारानी और रूहों के वास्ते ऐसी हिकमत कर रखी है।

Nijanand App

तो कह्या अर्स दिल मोमिन, ना मोमिन जुदे अर्स से।
पर ए जानें अरवाहें अर्स की, जो करी बेसक हक इलमें।। ९ ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, क्योंकि वह परमधाम से अलग नहीं है, परन्तु इसे परमधाम की रूहें ही जान सकती हैं, जो जागृत बुद्धि के ज्ञान से जाग गई हैं।

बसरी मलकी और हकी, तीन सूरत महंमद की जे।
ए तीनों सूरत दे साहेदी, आखिर अर्स देखावें ए।। १० ।।

बसरी, मलकी, हकी मुहम्मद साहब की तीन सूरतें कही हैं। यह तीनों सूरतें गवाही देकर आखिरत में परमधाम का दर्शन करा देंगी।

रूहों हक अर्स नजरों, हुकम नजर खेल माहें।
अर्स नजीक रूहों को खेल से, इत धोखा जरा नाहें।। ११ ।।

रूहों की नजर परमधाम और श्री राजजी के चरणों में है। हुकम की नजर खेल में है इसलिए रूहों को परमधाम नजदीक है। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

तो हक सेहेरग से नजीक, कोई जाने ना लदुन्नी बिन।
एही लिख्या फुरमान में, यों ही रूहअल्ला कहे वचन।। १२ ।।

इसलिए मोमिनों को खुदा सेहेरग से नजदीक कहा है, जिसे जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना कोई समझ नहीं पाता। ऐसा ही कुरान में लिखा है और ऐसा ही श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने भी कहा।

ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक, खेल त्यों त्यों होवे दूर।
यों करते छूट्या खेल नजरों, तो रूहें कदमै तले हजूर।। १३ ।।

जैसे-जैसे परमधाम नजदीक होता जाता है, वैसे-वैसे खेल दूर होता जाता है। ऐसा करते-करते संसार रूहों से छूट जाएगा और श्री राजजी के चरणों में जागृत होकर मोमिन उठ बैठेंगे।

नजर खेल से उतरती देखिए, त्यों अर्स नजीक नजर।
यों करते लैल मिटी रूहों, दिन हुआ अर्स फजर।। १४ ।।

जैसे-जैसे नजर खेल से हटती जाती है, वैसे-वैसे परमधाम नजदीक दिखाई पड़ता है। इस तरह से रूह की रात्रि (फरामोशी) समाप्त हो जाती है और परमधाम के ज्ञान से दिन हो जाता है। अज्ञानता का परदा हट जाता है।

ए जो देत देखाई वजूद, रूह मोमिन बीच नासूत।
ए दुनी जाने इत बोलत, ए बैठे बोलें माहें लाहूत।। १५ ।।

रूह मोमिनों के जो तन संसार में दिखाई देते हैं, तो दुनियां समझती है यह तन ही मोमिन हैं, परन्तु हकीकत में वह परमधाम में बैठे ही बोल रहे हैं।

तो बातून गुझ लाहूत का, जाहेर सब करत।
ना तो अर्स बका की रोसनी, क्यों होवे जाहेर इत।। १६ ।।

इसलिए मोमिन परमधाम की छिपी बातों को यहां जाहिर करते हैं, वरना अखण्ड परमधाम का ज्ञान यहां कैसे जाहिर हो?

Nijanand App

अर्स बका हमेसगी, हक हादी रूहें वाहेदत।
ए तीन खेल हुए जो लैल में, ऐसा हुआ न कोई कबूं कित।। १७ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजश्यामाजी और रूहें हमेशा से ही एक दिल हैं। यह तीन खेल (बृज, रास और जागनी के) जो रूहों की फरामोशी (रात्रि) में हुए हैं, ऐसे पहले कभी नहीं हुए थे।

तो खाकीबुत कायम किए, जो किया वास्ते खेल उमत।
रूहों पट दे बका बुलाए के, दई चौदे तबकों भिस्त।। १८ ।।

इन झूठे जीवों को अखण्ड किया है। मोमिनों ने खेल देखा है, इसलिए इनको अखण्ड किया है। रूहों को पहले फरामोशी देकर खेल दिखाया। फिर वापस परमधाम बुलाकर दुनियां को अखण्ड मुक्ति दी। वह भी मोमिनों के खेल में आने के कारण।

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते।। १९ ।।

अब दुनियां जो बहिश्तों में कायम होगी, सब मोमिनों की सिफत गाएंगे। श्री राजश्यामाजी और रूहें सब एक दिल हैं। इनके कारण ही सब दुनियां को बहिश्तों में कायमी मिलेगी।

अर्स रूहें हक बिना न रहें, विरहा न सहें एक खिन।
जब इलमें हुई अर्स बेसकी, रूहें रहें न बिना वतन।। २० ।।

परमधाम की रूहें श्री राजजी महाराज के बिना एक क्षण नहीं रह सकतीं। और न उनका वियोग ही सहन कर सकती हैं। जब जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम की पूरी पहचान हो गई तो घर के बिना रूहें संसार में नहीं रह सकतीं।

जो कदी मोमिन तन में हुकम, तो हुकम भी रहे ना इत।
क्यों ना रहे इत हुकम, हुकम हुकम बिना क्यों फिरत।। २१ ।।

यदि यह माना जाए कि मोमिनों के तन में श्री राजजी का हुकम है, तो फिर हुकम भी घर की पहचान हो जाने पर यहां नहीं रह सकता है, परन्तु हुकम भी क्या करे जब तक दूसरा हुकम न मिल जाए, तो वह भी वापस नहीं जा सकता।

हुकम आया तन मोमिनों, लई अर्स रूह हुज्जत।
ले इत लज्जत अर्स हक की, क्यों हुकम रेहे सकत।। २२ ।।

संसार में मोमिनों का नाम लेकर हुकम तन धारण करके बैठा है। संसार में श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम का आनन्द लेकर वह हुकम भी संसार में कैसे रह सकता है?

ए हुकम सो भी मासूक का, सो क्यों जुदागी सहे।
खिलवत वाहेदत सुध सुन, पल एक ना रहे।। २३ ।।

यह हुकम भी हमारे माशूक श्री राजजी महाराज का है, इसलिए जुदाई सहन नहीं कर सकता, वह मूल-मिलावा की एक दिली का ज्ञान सुनकर एक क्षण भी यहां नहीं रह सकता।

ए हुकम तिन मासूक का, जो आप उलट हुआ आसिक।
सो हुकम विरहा ना सहे, बिना मासूक एक पलक।। २४ ।।

यह हुकम माशूक श्री राजजी का है, जो खेल में आकर उलटे आशिक बन गए, इसलिए श्री राजजी का हुकम भी एक पल के लिए भी श्री राजजी महाराज का वियोग सहन नहीं कर सकता।

Nijanand App

ए अर्स बका बातें सुन के, एक पलक न रहें अरवाहें।
रूहों हुकम राखे आड़ा पट दे, हक इत लज्जत देखाया चाहें।। २५ ।।

अखण्ड घर की बातें सुनकर मोमिन एक पल के लिए भी नहीं रह सकते, परन्तु हुकम का परदा आड़े देकर श्री राजजी महाराज खेल दिखा रहे हैं।

रूहों हक पे मांगी लज्जत, सो क्यों रहें देखे बिगर।
कोट गुनी देखावें लज्जत, जो रूहों मांगी प्यार कर।। २६ ।।

रूहों ने श्री राजजी महाराज से खेल की लज्जत मांगी थी, तो वह खेल देखे बिना कैसे रह सकती हैं। रूहों ने प्यार से जो खेल मांगा था, धनी उससे करोड़ गुना लज्जत दिखा रहे हैं।

ना तो इस्क इनों का असल, सब अंगों इस्क रूहन।
इस्क उड़ावे अंग लज्जत, आया इलम वास्ते इन।। २७ ।।

मोमिनों का इश्क असल अंग का है। अंग भी इश्क के हैं। यह इश्क संसार को छुड़ा देने वाला है, इसलिए जागृत बुद्धि इनके वास्ते आई है।

हक को काम और कछू नहीं, देवें रूहों लाड़ लज्जत।
ए तो बिगर चाहे सुख देत हैं, तो मांग्या क्यों न पावत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज को अपनी रूहों को लाड़-लज्जत देने के सिवाय और कोई काम नहीं है। श्री राजजी महाराज तो बिना मांगने पर ही सुख देते हैं, तो मांगने पर क्यों नहीं मिलेगा?

सुख उपजें कई विध के, आगूं अर्स में बड़ा विस्तार।
सो रूहें सब इत देखहीं, जो कर देखें नीके विचार।। २९ ।।

इससे आगे परमधाम में कई तरह के बहुत बड़े सुख मिलेंगे। यह सब रूहें अच्छी तरह से विचार करके संसार में बैठकर देख लेंगी।

सो बिगर कहे सुख देत हैं, ए तो रूहों मांग्या मिल कर।
इन जिमी बैठाए सुख अर्स के, हक देत हैं उपरा ऊपर।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज तो बिना कहे सुख देते हैं और यह तो सब रूहों ने मिलकर खेल मांगा है, इसलिए इस जमीन में बिठाकर भी ऊपर से परमधाम के सुख देते हैं।

दुनी में बैठाए न्यारे दुनी से, किए ऐसी जुगत बनाए।
सुख दिए दोऊ ठौर के, अर्स दुनी बीच बैठाए।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुछ ऐसी हिकमत कर रखी है कि मोमिनों को दुनियां में बिठाया भी और अलग भी कर रखा है। इस तरह से दुनियां में बिठाकर संसार के तथा परमधाम के सुख दिखा रहे हैं।

एक तन हमारा लाहूत में, नासूत में और तन।
असल तन रूहें अर्स बीच में, तन नासूत में आया इजन।। ३२ ।।

हमारा एक तन परमधाम में है, दूसरा संसार में। हमारे असल तन परमधाम में हैं और मृत्युलोक में श्री राजजी का हुकम हमारे नाम से तन धारण कर लीला कर रहा है।

Nijanand App

अर्स तन देखें तन नासूती, तन नासूत में जो हुकम।
सो सुध दई अर्स अरवाहों को, इने सेहेरग से नजीक हम।।३३।।

हमारे परमधाम के तन हमारे प्रतिबिम्ब इस तन को देख रहे हैं, जिनमें श्री राजजी का हुकम बैठकर लीला कर रहा है, इसलिए परमधाम की अरवाहों (रूहों) को श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सेहेरग से नजदीक बताया है।

दुनियां चौदे तबक में, किन पाई न बका तरफ।
तिन अर्स में बैठाए हमको, जाको किन कह्यो ना एक हरफ।।३४।।

चौदह तबकों की दुनियां में अखण्ड घर का कोई एक अक्षर भी नहीं बोल सका। ऐसे अखण्ड घर में हमें बिठा दिया।

जो जाहेर माएने देखिए, तो बीच पड़यो ब्रह्मांड।
एता बिछोड़ा कर दिया, हक अर्स और इन पिंड।।३५।।

यदि जाहिर माएनों से देखें तो आतम और परआतम में वजूद का परदा है। श्री राजजी महाराज ने परमधाम के तनों और संसार के तनों में इतना फर्क कर रखा है।

हुआ बिछोड़ा बीच ब्रह्मांड के, एते पड़े थे हम दूर।
सो हकें इलम ऐसा दिया, बैठे कदमों तले हजूर।।३६।।

श्री राजजी महाराज से बिछुड़कर हम इतने दूर ब्रह्माण्ड में आ गए, परन्तु श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान ने हमें इतना नजदीक कर दिया, लगता है कि हम श्री राजजी के चरणों में बैठे हैं।

हुकमें कई मता पोहोंचाईया, बीच ऐसी जुदागी में।
हकें न्यामत दे अघाए, कई हांसी करियां हम सें।।३७।।

श्री राजजी महाराज की ऐसी जुदाईगी में हुकम ने कई न्यामतें हम रूहों के पास पहुंचाईं और इस तरह से श्री राजजी महाराज ने अपनी सब न्यामतें देकर अपनी इच्छा पूरी कर ली और इस तरह से हम रूहों से कई प्रकार की हंसी की है।

अर्स-अजीम की कंकरी, उड़ावे चौदे तबक।
तो तिन को है क्यों कहिए, जो देख ना सके हक।।३८।।

अर्श-ए-अजीम की एक कंकरी चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड को उड़ा देती है। जो सत को देख ही नहीं सकता है, उसे सत कैसे कहा जाए?

जो हक को देखे ना उड़े, सो दूजा कहिए क्यों कर।
ए बातें अर्स वाहेदत की, पाइए हक इलमें खबर।।३९।।

जो श्री राजजी महाराज को देखकर समाप्त न हो, उसे श्री राजजी महाराज से अलग कैसे मानें? यह परमधाम की एकदिली की बातें हैं, जिनकी पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही मिलती है।

हकें इलम दिया अपना, सो आया इस्क बखत।
सो इस्क न देवे बढ़ने, ऐसे किए हिरदे सखत।।४०।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है, जिससे इश्क लेने का समय आ गया है, परन्तु हमारा दिल इतना कठोर हो गया है कि दिल इश्क को बढ़ने ही नहीं देता।

Nijanand App

और जित आया हक इलम, अर्स दिल कह्या सोए।
हक न आवें इस्क बिना, और हक बिना इस्क न होए।।४१ ।।

जहां श्री राजजी महाराज का इलम आ गया, उनका दिल अर्श बन गया। बिना इश्क के श्री राजजी महाराज नहीं आते और बिना श्री राजजी महाराज के इश्क नहीं आता।

अर्स कहिए दिल तिन का, जित है हक सहूर।
इलम इस्क दोऊ हक के, दोऊ हक रोसनी नूर।।४२ ।।

उनके दिल को ही श्री राजजी का अर्श कहना चाहिए, जिनको जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया है। इलम और इश्क दोनों ही श्री राजजी महाराज के हैं और दोनों से ही उनकी पहचान होती है।

इस्क इलम बारीकियां, दिल जाने अर्स मोमिन।
जो जागी होए रूह हुकमें, ताए लज्जत आवे अर्स तन।।४३ ।।

इश्क और इलम की बारीक बातें मोमिनों के दिल ही जानते हैं, इसलिए जो रूह श्री राजजी के हुकम से जागृत हो गई हो, उसे अपनी परआतम के आनन्द मिलते हैं।

जो जोरा करे इस्क, तन मोमिन देवे उड़ाए।
दिल सखती बिना अर्स अजीम की, इत लज्जत लई न जाए।।४४ ।।

यदि मोमिनों के तन में इश्क जोर लगाए तो यह नश्वर तन समाप्त हो जाएगा। बिना दिल को सख्त किए परमधाम की लज्जत यहां नहीं मिल सकती।

इस्क नूर-जमाल बिना, और जरा न कछुए चाहे।
इस्क लज्जत ना सुख दुख, देवे वाहेदत बीच डुबाए।।४५ ।।

इश्क श्री राजजी महाराज के बिना किसी और को नहीं चाहता। इश्क की लज्जत के सामने दु:ख-सुख कुछ भी नहीं हैं और इश्क ही श्री राजजी महाराज की एकदिली में गर्क कर देता है।

ना तो सखत दिल मोमिन के, हक करें क्यों कर।
पर अर्स लज्जत बीच दुनी के, लिवाए न सखती बिगर।।४६ ।।

वरना मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज कठोर क्यों बनाएं? पर दिल को सख्त किए बिना (दुनियां से तोड़े बिना) परमधाम की लज्जत दुनियां में नहीं मिल सकती।

एकै नजर मोमिन की, हक सुख दिया चाहें दोए।
रूहें अर्स सुख लेवें खेल में, और खेल सुख अर्स में होए।।४७ ।।

मोमिनों की एक ही चाह परमधाम में सुख लेने की है, परन्तु श्री राजजी महाराज दोनों सुख देना चाहते हैं। रूहें परमधाम का सुख खेल में अनुभव करें और फिर खेल के सुख परमधाम में लें।

हकें दई जुदागी हमको, इस्क बेवरे को।
बिना जुदागी बेवरा, पाइए ना अर्स मों।।४८ ।।

इश्क के ब्यौरे (विवरण) के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने हमको जुदाई दी है, क्योंकि बिना जुदाई के परमधाम में इश्क का विवरण हो नहीं सकता था।

Nijanand App

होए न जुदागी अर्स में, तो क्यों पाइए बेवरा इस्क।
तार्थे दई नेक फरामोसी, बीच अर्स के हक।।४९ ।।

परमधाम में जुदाई होती नहीं, तो इश्क का विवरण कैसे हो? इसलिए श्री राजजी महाराज ने परमधाम में जरा सी फरामोशी दी है।

हम खेल देखें बैठे अर्स में, ए जो चौदे तबक।
रूह हमारी इत है नहीं, लई परदे में हक।।५० ।।

हम परमधाम में बैठे-बैठे ही चौदह तबकों के खेल को देख रहे हैं। हमारी परआतम यहां नहीं है। श्री राजजी महाराज ने उसे फरामोशी के परदे में रखा है।

फेर दिया इलम अपना, जासों फरामोसी उड़ जाए।
खेल में मता सब अर्स का, इलमें सब विध दई बताए।।५१ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया, जिससे फरामोशी समाप्त हो जाए। खेल के बीच में परमधाम की सारी न्यामतें श्री राजजी के इलम ने बता दी हैं।

जो रूह हमारी आवे खेल में, तो खेल रहे क्यों कर।
याको उड़ावे अर्स कंकरी, झूठ क्यों रहे रूहों नजर।।५२ ।।

यदि हमारी परआतम संसार में आती, तो संसार कैसे खड़ा रहता? परमधाम की एक कंकरी के सामने झूठा संसार नहीं रहता, तो रूहों की नजर के सामने कैसे रहता?

देखत है दिल खेल को, लिए अर्स रूह हुज्जत।
फुरमान आया इनों पर, और इलम आया न्यामत।।५३ ।।

रूहों के दिल परआतम के नाम से खेल को देख रहे हैं। इनके वास्ते ही कुरान आया, जागृत बुद्धि का ज्ञान आया। परमधाम की सब न्यामतें आईं।

या विध करी जो साहेब ने, हम हुए दोऊ के दरम्यान।
सुध अर्स नासूत की, दोऊ हमको देवें सुभान।।५४ ।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज ने हमारी आतम और परआतम में फर्क डाल रखा है। श्री राजजी महाराज हमको अखण्ड घर के और मृत्युलोक दोनों के सुख देते हैं।

हुकम तन बीच नासूत, हम फरामोस अर्स तन।
नासूत देखें हम नजरों, अर्सें पोहोंचे ना दृष्ट मन।।५५ ।।

हमारे मूल तन परमधाम में फरामोशी में हैं और मृत्युलोक में हमारे तन में हुकम बैठा है। मृत्युलोक को हम नजर से देखते हैं। यहां की नजर और मन परमधाम नहीं पहुंचता।

बोले हुकम दावा ले रूहन, बीच तन नासूत।
ले सब सुध अर्स इलमें, देत दुनी में लज्जत लाहूत।।५६ ।।

यहां संसार में हुकम ही मोमिनों के नाम से बोलता है और परमधाम के ज्ञान से सब सुख लेता है। इस तरह से श्री राजजी महाराज परमधाम की सारी लज्जत मोमिनों को दुनियां में दे रहे हैं।

Nijanand App

खिलवत निसबत वाहेदत, जेती अर्स हकीकत।
ए लज्जत हुकम सिर लेवहीं, अर्स रूहें सिर ले हुज्जत।।५७।।

परमधाम की (मूल-मिलावा की) अंगना होने की, एक दिली की, जो कुछ भी हकीकत है, वह श्री राजजी महाराज का हुकम रूहों के नाम से लज्जत ले रहा है।

यों हुकम नूरजमाल का, अर्स सुख देत रूहों इत।
चुन चुन न्यामत हक की, रूहों हुकम पोहोंचावत।।५८।।

इस तरह से नूरजमाल श्री राजजी का हुकम परमधाम की रूहों को यहां सुख देता है और परमधाम की सब न्यामतें चुन-चुन करके रूहों के पास पहुंचाता है।

कई सुख लें हक के खेल में, फेर हुकम पोहोंचावे खिलवत।
कई अनहोंनी कर सुख दिए, हुकमें जान हक निसबत।।५९।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज के कई तरह के सुख खेल में मोमिनों को मिलते हैं और फिर हुकम मूल-मिलावा की पहचान कराता है। श्री राजजी महाराज ने हमें अपनी अंगना जानकर ही कई अनहोनी बातें करके सुख दिए हैं।

कई विध के सुख हुकमें, दोऊ तरफों आड़ा पट दे।
अर्स दुनी बीच रूहों को, दिए सुख दोऊ तरफों के।।६०।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमें कई तरह के सुख, हमारी आतम और परआतम के बीच तन का परदा डालकर, संसार के सुख तथा परमधाम के सुख दिये हैं।

ए झूठ न आवे अर्स में, ना कछू रहे रूहों नजर।
तार्थे दोऊ काम इन विध, हकें किए हिकमत कर।।६१।।

इस झूठे संसार में कोई चीज आ नहीं सकती और रूहों की नजर के सामने झूठा संसार रह नहीं सकता। श्री राजजी महाराज ने यह दोनों काम बड़ी हिकमत कर हमें दिखाए।

जेती अरवाहें अर्स की, हक सेहेरग से नजीक तिन।
दे कुंजी अर्स पट खोलिया, हादिएं किए सब रोसन।।६२।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं, श्री राजजी महाराज उनके सेहेरग से नजदीक हैं। श्री श्यामा महारानीजी ने तारतम ज्ञान की कुंजी से परमधाम की सब तरह से पहचान करा दी है।

इलम लदुन्नी पाए के, अर्स रूहें हुई बेसक।
जगाए खड़े किए अर्स में, बीच खिलवत खासी हक।।६३।।

जागृत बुद्धि की वाणी से रूहों के संशय मिट गए और परमधाम मूल-मिलावा में श्री राजजी के सामने जागृत हो गईं।

या तो खड़ी रहे रूह खिलवतें, या तो देवे तवाफ।
हौज जोए या अर्स में, तूं इन विध हो रहे साफ।।६४।।

अब या तो रूहें परमधाम के मूल-मिलावा में ध्यान मग्न रहती हैं या फिर परमधाम के पच्चीस पक्षों का चितवन करती हैं। हौज कौसर, जमुनाजी या परमधाम में इस तरह से घूमती हैं कि संसार से अलग रहती हैं।

Nijanand App

पाक पानी से न होइए, ना कोई और उपाए।
होए पाक मदत तौहीद की, हकें लिख भेज्या बनाए।।६५।।

यहां के पानी से नहाने से कोई पाक नहीं होता और यहां कोई उपाय है ही नहीं। श्री राजजी महाराज की मेहर हो, मदद हो, तभी रूह संसार से पाक-साफ हो सकती है। ऐसा श्री राजजी महाराज ने लिख भेजा है।

फेर फेर हक अंग देखिए, ज्यों याद आवे निसबत।
है अनुभव तो एक अंग का, जो हमेसा वाहेदत।।६६।।

जैसे-जैसे अपनी अंगना होने का सम्बन्ध याद आता है, तैसे-तैसे बार-बार श्री राजजी महाराज के अंग देखने की चाहना होती है। हमें तो परमधाम की एकदिली का अनुभव है और वही हमारी वाहेदत (एकदिली) है।

ताथें तूं चेत रूह अर्स की, ग्रहे अपने हक के अंग।
रहो रात दिन सोहोबत में, हक खिलवत सेवा संग।।६७।।

हे मेरी आत्मा! तू जागृत होकर परमधाम में अपने श्री राजजी महाराज के स्वरूप को ग्रहण कर और रात-दिन उनके साथ ही सेवा में मूल-मिलावा में रहकर अनुभव कर।

जो खावंद अर्स अजीम का, ए हक नूरजमाल।
आए तले झरोखे झांकत, दीदार को नूरजलाल।।६८।।

अर्शे-अजीम (परमधाम) के मालिक श्री राजजी महाराज हैं, जिनके दर्शन अक्षरब्रह्म तीसरी भोम के झरोखे के सामने नीचे चांदनी चौक में आकर करते हैं।

जाके पलथें पैदा फना, कई दुनी जिमी आसमान।
सो आवत दायम दीदार को, ऐसा खावंद नूर-मकान।।६९।।

इस अक्षरब्रह्म के एक पल में ऐसे दुनियां के कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। ऐसे अक्षरब्रह्म अक्षरधाम से प्रतिदिन श्री राजजी महाराज के दर्शन को आते हैं।

तिन चाह्या दीदार रूहन का, जो रूहें बीच बड़ी दरगाह।
ए मरातबा मोमिनों, जिन वास्ते हुकम हुआ।।७०।।

इस अक्षरब्रह्म ने परमधाम (रंग महल) में रहने वाली रूहों के दर्शन की चाहना की। मोमिनों की साहेबी के लिए ही श्री राजजी महाराज का हुकम हुआ।

देख देख मैं देखया, ए सब करत हक हुकम।
ना तो अर्स दिल एता मता लेय के, खिन रहे न बिना कदम।।७१।।

मैंने देख-देखकर विचार किया कि श्री राजजी महाराज का हुकम ही यह सब कुछ करता है वरना मोमिनों के अर्श दिल में इतनी न्यामतें आने पर श्री राजजी के चरणों के बिना एक क्षण भी रहना सम्भव नहीं है।

Nijanand App

हकें अर्स लिख्या मेरे दिल को, क्यों रहे रूह सुन सुकन।
एक दम ना रहे बिना कदम, पर रूहों ठौर बैठा हक इजन।।७२ ।।

श्री राजजी ने मेरे दिल को अर्श किया है। ऐसे वचनों को सुनकर रूह कैसे रहे? रूह एक क्षण भी श्री राजजी के चरणों के बिना नहीं रह सकती, पर क्या करें? रूहों की जगह पर श्री राजजी का हुकम बैठा है।

हुकम कहे सो हुकमें, अर्स बानी बोले हुकम।
रूहों दिल हुकम क्यों रेहे सके, ए तो बैठी तले कदम।।७३ ।।

अब हुकम ही कहने वाला है और हुकम ही सुनने वाला है। परमधाम की वाणी बोलने वाला भी परमधाम का हुकम ही है। अब रूहें जो श्री राजजी के चरणों तले बैठी हैं, उनके दिल में श्री राजजी का हुकम कैसे रह सकता है?

खेल तन में हुकम ना रेहे सके, हुज्जत लिए रूहन।
हुकम हमारे खसम का, क्यों देवे दाग मोमिन।।७४ ।।

मोमिनों के संसार के तन में मोमिनों के नाम से हुकम नहीं रह सकता। हुकम हमारे धनी का है, इसलिए हमको दाग नहीं लगने देगा।

पर हक अर्स लज्जत तो पाइए, बैठे मांग्या खेल में जे।
सो हुकमें मांग्या दे हुकम, हकें करी वास्ते हांसी के।।७५ ।।

पर श्री राजजी महाराज के चरणों का सुख और आराम तो तब मिले जब हम खेल में बैठकर मांगते हैं। अब हुकम ही मंगवाता है और देने वाला भी हुकम ही है। यह तो श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते किया है।

ए बातें होसी सब अर्स में, हंस हंस पड़सी सब।
ए हुकमें करी कई हिकमतें, सब वास्ते हमारे रब।।७६ ।।

जब यह सब बातें परमधाम में होंगी, तब हम हंस-हंसकर गिरेंगे। हुकम ने इस तरह से हमारे धनी के वास्ते कई तरह की हिकमतें कर रखी हैं।

हक मुख हुकमें देख हीं, हुकम देखावे खेल।
हुकम देवे सुख लदुन्नी, हुकम करावे इस्क केलि।।७७ ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द भी हुकम से देख पाएंगे। यह हुकम ही खेल दिखाता है। हुकम ही जागृत बुद्धि की वाणी से सुख देता है। हुकम ही हमें इश्क का खेल खेलाता है।

हुकमें जोस गलबा करे, हुकमें जोर बढ़े इस्क।
हुकमें इलम रखे सुख को, हुकम प्याले पिलावे माफक।।७८ ।।

हुकम से जोश छा जाता है और हुकम से इश्क की ताकत बढ़ती है। हुकम से ही इलम द्वारा सुख मिलते हैं और हुकम से ही श्री राजजी महाराज इश्क के प्याले पिलाते हैं।

हुकम बेहोस ना करे, हुकम जरा जरा दे लज्जत।
हुकम पनाह करे सब रूहन, हुकमें जानी जात निसबत।।७९ ।।

हुकम बेहोश नहीं करता, थोड़ा-थोड़ा मस्त बनाता है। हुकम ही रूहों को श्री राजजी की शरण में लेता है और हुकम से ही, रूहें श्री राजजी की अंगना हैं, ऐसी पहचान होती है।

Nijanand App

प्याला हुकम पिलावहीं, करें हुकम रखोपा ताए।
ना तो इन प्याले की बोए से, तबहीं अरवा उड़ जाए।। ८० ।।

हुकम ही इश्क के प्याले पिलाता है और हुकम ही उनकी रक्षा करता है, वरना इश्क के प्याले की खुशबू से ही अरवाह (रूह) उड़ जाती।

ए प्याला कबूं किन ना पिआ, हम रूहें आइयां तीन बेर।
ए प्याले पेहेले तो पिए, जो हम थे बीच अंधेर।। ८१ ।।

इस इश्क के प्याले को आज दिन तक किसी ने नहीं पीया। हम रूहें इस संसार में बृज, रास और जागनी में तीन बार आई हैं। हमने जो इश्क के प्याले (बृज में) पिए, उस समय हमें अज्ञानता थी। घर की खबर नहीं थी।

ए प्याले पिए जाए क्यों जागतें, तन तब हीं जाए चिराए।
बोए भी ना सेहे सके, तो प्याला क्यों पिआ जाए।। ८२ ।।

अब जागृत अवस्था में इश्क के प्याले पीने पर तन को तुरन्त ही फट जाना चाहिए। अब तो इश्क की खुशबू भी सहन नहीं कर सकते, तो प्याला कैसे पीया जाएगा?

हुकम जो प्याला देवहीं, सो संजमें संजमें पिलाए।
पूरी मस्ती न हुकम देवहीं, जानें जिन कांच सीसा फूट जाए।। ८३ ।।

अब हुकम जो इश्क का प्याला देता है, वह धीरे-धीरे रूहों को पिलाता है। हुकम पूरी मस्ती नहीं दे रहा है। यह जानकर कि कांच का शीशा जैसे टूट जाता है, ऐसे ही रूहें कहीं शरीर न छोड़ दें?

ना तो ए प्याला पीय के, ए कच्चा वजूद न रख्या किन।
पर हुकम राखत जोरावरी, प्याला पिलावे रखे जतन।। ८४ ।।

वरना यह इश्क का प्याला पीकर यह झूठा वजूद किसी ने नहीं रखा, परन्तु हुकम अपनी ताकत से बड़े यत्न से इश्क का प्याला पिलाता है।

हुकम मेहेर बारीकियां, ए मैं कहूं बिध किन।
नजर हमारी एक बिध की, सब बिध सुध ना रूहन।। ८५ ।।

हुकम और मेहर की बारीक (खास) बातें मैं कैसे कहूं, क्योंकि हमारी नजर एक ही तरह की है। सब तरह की सुध रूहों को नहीं है।

हुकम देवे लज्जत, प्याला जेता पिआ जाए।
हर रूहों जतन करें कई बिध, जानें जिन प्याला देवे गिराए।। ८६ ।।

रूहों से जितना इश्क का प्याला पिया जाता है, हुकम उतनी ही लज्जत देता है और हुकम ही हर रूह के साथ कई तरह के उपाय करके इश्क देता है, ताकि रूह प्याले को गिरा न दे।

जिन जेता हजम होवहीं, ज्यों होए नहीं बेहोस।
तब हीं फूटे कुप्पा कांच का, पाव प्याले के जोस।। ८७ ।।

जिन रूहों को जितना इश्क हजम हो सकता है, जिससे वह बेहोश न हों, हुकम उतना ही इश्क देता है। नहीं तो इश्क के चौथाई प्याले से ही मोमिनों का यह तन कांच के कप (प्याले) की तरह टूट जाएगा।

Nijanand App

सही जाए न बोए जिनकी, सो क्यों सकिए मुख लगाए।
सो पैदरपे क्यों पी सके, पर हुकम करत पनाह।।८८।।

जिस इश्क की खुशबू भी सही नहीं जा सकती, उससे भरे प्याले को मुख से कैसे लगाएं? उसे लगातार कैसे पिया जा सकता है? पर हुकम ही यह सब कुछ शरण में रखकर करता है।

ए अंग लगे प्याला जिनके, सब खलड़ी जाए उतर।
ना तो ए प्याला हजम क्यों होवहीं, पर हक राखत पनाह नजर।।८९।।

जिस किसी मोमिन के अंग को प्याला छू जाए, उसकी तुरन्त ही चमड़ी उतर जाती है, वरना यह प्याला कैसे हजम होता? पर श्री राजजी महाराज अपनी शरण में रखकर मेहर करते हैं।

ए प्याला कोई न पी सके, जुबां लगते मुरदा होए।
पर हक राखत हैं जीव को, ना तो याकी खैंच काढ़े खुसबोए।।९०।।

इस इश्क के प्याले को कोई संसारी जीव नहीं पी सकता। इसके जबान से लगते ही मर जाते हैं, परन्तु श्री राजजी महाराज ही इन्हें जिन्दा रखते हैं, वरना इश्क की खुशबू ही जीव को संसार छुड़ा दे।

प्याले पर प्याले पिलावहीं, ताकी निस दिन रहे खुमार।
देवे तवाफ निस दिन, हुकम मेहेर को नहीं सुमार।।९१।।

रूहों को इश्क के प्याले पर प्याले पिलाते हैं, ताकि श्री राजजी का नशा सदा बना रहे और रात-दिन वह इसी के चक्कर लगाती रहें, क्योंकि श्री राजजी का हुकम और मेहर बेशुमार है।

बड़ा अचरज इन हुकम का, मुरदे राखत जिवाए।
मौत सरबत निस दिन पीवै, सो मुरदे रखे क्यों जाए।।९२।।

हुकम की यह हिकमत बड़ी हैरानी वाली है। यह मोमिनों के मुर्दा तनों को जिन्दा रखता है। जो मोमिन रात-दिन मौत के ही शर्बत पीते हैं, वह जीवित कैसे रहते हैं? अर्थात् क्यों खड़े हैं।

हुकम मुरदों बोलावत, और ऐसी देत अकल।
करत नजीकी हक के, मुरदे कहावें अर्स दिल।।९३।।

हुकम से रूहों के मुर्दा तन बोलते हैं और हुकम ही उन्हें अकल देकर श्री राजजी के नजदीक ले जाता है। तभी मोमिनों के मुर्दा तन श्री राजजी महाराज के अर्श दिल कहलाते हैं।

हुकम लाख विधों जतन करे, हर रूहों ऊपर सबन।
हुकम जतन तो जानिए, जो याद आवे अर्स वतन।।९४।।

हुकम लाखों तरीके से हर रूह के ऊपर यत्न करता है, जिसे तब जाना जाए जब अपने अखण्ड घर परमधाम की याद आए।

जो पेहेले आप मुरदे हुए, तो दुनियां करी मुरदार।
हक तरफ हुए जीवते, उड़ पोहोंचे नूर के पार।।९५।।

यदि पहले मोमिन मुर्दे के समान हो गए, तो बाद में दुनियां को भी मुर्दा समझकर छोड़ा। जब श्री राजजी का ज्ञान लेकर खड़े हुए, तो तुरन्त अक्षर के पार परमधाम पहुंच गए।

Nijanand App

दुनियां इस्क न ईमान, क्यों उड़या जाए बिना पर।
तो दुनी कही जिमी नासूती, रूहें आसमानी जानवर।।९६ ।।

दुनियां वालों के पास न इश्क है न ईमान, तो वह बिना पर के कैसे उड़ सकते हैं? इसलिए दुनियां वालों को मृत्युलोक का कहा है और रूहों को आसमान में उड़ने वाला कहा है।

ए दुनियां जो खेल की, छोड़ सुरिया आगे ना चलत।
सो कायम फना क्या जानहीं, जाकी पैदास कही जुलमत।।९७ ।।

यह झूठे खेल की दुनियां सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) को छोड़कर आगे नहीं चलती। यह अखण्ड और नाशवान के भेद को कैसे समझे, जो निराकार से पैदा है।

महामत कहे ए मोमिनों, बका हासिल अर्स रूहन।
कह्या दिल जिनों का अर्स बका, ए मोमिन असल अर्स में तन।।९८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! परमधाम की रूहों को अपना अखण्ड घर प्राप्त है। जिनके दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, उन मोमिनों के असल तन परमधाम में हैं।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। १८५० ।।

मोमिनों की सरियत, हकीकत, मारफत इस्क रब्द का प्रकरण

इस्क रब्द खिलवत में, हुआ हक हादी रूहों सों।
सबों ज्यादा इस्क कह्या अपना, तो तिलसम देखाया रूहों कों।। १ ।।

मूल-मिलावा (परमधाम) में श्री राजश्यामाजी और सखियों के बीच इश्क का वार्तालाप हुआ। सभी ने अपने इश्क को ज्यादा कहा, इसलिए इश्क के विवरण के लिए रूहों को यह तिलसम का खेल दिखाया।

तिन फरेब में रल गैयां, जित पाइए ना इस्क हक।
कहें हक मोहे तब पाओगे, जब ल्योगे मेरा इस्क।। २ ।।

ऐसे माया के झूठे संसार में आकर रूहें भी हिल-मिल गई, जहां श्री राजजी महाराज का इश्क नहीं है। श्री राजजी महाराज ने कहा कि अब तुम मुझे तब पाओगे, जब मेरे इश्क को लोगे।

यों हकें छिपाइयां खेल में, दे इलम करी खबरदार।
रब्द किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार।। ३ ।।

इस तरह से रूहों को श्री राजजी ने खेल में छिपा दिया (भुला दिया) और अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी देकर जगा दिया। इश्क के वास्ते ही वार्तालाप किया था। अब श्री राजजी कहते हैं कि अपने इश्क को लो और मेरे पास आ जाओ।

मोमिन हक को जानत, नजीक बैठे हैं इत।
हक कदम हमारे हाथ में, पर हम नजरों ना देखत।। ४ ।।

मोमिन जानते हैं कि श्री राजजी महाराज हमारे पास बैठे हैं। उनके चरण हमारे हाथ में हैं, पर हम अपनी नजर से उन्हें देख नहीं सकते।

Nijanand App

ए तेहेकीक किया हक इलमें, इनमें जरा न सक।
यों नजीक जान पेहेचान के, हम बोलत ना साथ हक।।५।।

श्री राजजी महाराज के इलम ने यह निश्चित कर दिया है। कोई संशय भी नहीं है कि हम सावधान होकर श्री राजजी के चरणों में बैठे हैं, पर हमारे तन बोल नहीं सकते।

ए फरामोसी फरेबी, हम जान के भूलत।
हक छिपे हमसों हांसीय को, हाए हाए ए भूल दिल में भी न आवत।।६।।

इस फरामोशी और इस झूठे संसार की जानकारी श्री राजजी महाराज ने हमें दे दी थी। फिर भी हम जानकर भूल रहे हैं। श्री राजजी महाराज हम पर हंसी करने के वास्ते ही छिप गए हैं। हाय! हाय! यही भूल हमारे दिल में अब क्यों नहीं आती?

बैठे मासूक जाहेर, पर दिल ना लगे इत।
मासूक मुख देखन को, हाए हाए नैना भी ना तरसत।।७।।

प्यारे माशूक श्री राजजी महाराज मूल-मिलावा में जाहिर बैठे हैं, परन्तु अब हमारा दिल वहां लगता ही नहीं। श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के दर्शन करने की याद भी हमारे दिल में नहीं रही। जो हमारे नैन एक पल भी धनी से ओझल नहीं होते थे, अब इन नैनों को भी दर्शनों की चाह नहीं रही।

सुनने कान ना दौड़त, मासूक मुख की बात।
इस्क न जानों कहां गया, जो था मासूक सों दिन रात।।८।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की बातें यहां के कान भी सुनना नहीं चाहते। श्री राजजी महाराज के इश्क में दिन-रात गर्क रहते थे, वह भी पता नहीं अब कहां चला गया?

रूह अंग ना दौड़े मिलन को, ऐसा अर्स खावंद मासूक।
मेहेबूब जुदागी जान के, अंग होत नहीं टूक टूक।।९।।

माशूक श्री राजजी महाराज से मिलने के लिए अब रूह का तन परआतम भी दौड़ती नहीं है। श्री राजजी महाराज की ऐसी जुदाई जानकर भी हमारे इस संसार के तन के टुकड़े-टुकड़े नहीं होते।

जो याद आवे ए कदम की, तो तबहीं जावे उड़ देह।
कोई बन्ध पड्या फरेब का, आवे जरा न याद सनेह।।१०।।

यदि श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की याद आए, तो संसार का यह तन तुरन्त समाप्त हो जाए, परन्तु इस संसार के ऐसे बन्धन पड़े हैं कि अपने इश्क की जरा भी याद नहीं आती।

इस्क हमारा कहां गया, जो दिल बीच था असल।
तिन दिलें सहूर क्यों छोड़िया, जो विरहा न सेहेता एक पल।।११।।

परमधाम में जो हमारा सच्चा इश्क था। वह अब चला गया। जो हमारे तन एक पल का भी वियोग सहन नहीं करते थे, वह विचार हमने क्यों छोड़ दिया?

जो दिल से ए सहूर करें, तो क्यों रहें मिले बिगर।
अर्स बेसकी सुन के, अजूं क्यों रहें नींद पकर।।१२।।

अब दिल से विचार करें तो श्री राजजी से मिले बिना कैसे रह सकते हैं? परमधाम की ऐसी निस्संदेह बातें सुनकर भी हम नींद क्यों पकड़े बैठे हैं?

Nijanand App

बातें सबे सुपन की, करें जागे पीछे सब कोए।
पर जागे की बातें सबे, सुपने में कबूं न होए।। १३ ।।

सपने की बातें जागने के बाद घर में सभी करते हैं, परन्तु जागृत अवस्था की बातें तो सपने में कभी नहीं होतीं।

सो जरे जरे जाग्रत की, सब बातें होत बेसक।
नींद रेहेत अचरज सों, आए दिल में अर्स मुतलक।। १४ ।।

अब जागृत अवस्था की जरा-जरा बातें भी यहां सपने में हो रही हैं। श्री राजजी महाराज दिल में आकर बैठ गए हैं और फिर भी यह सपने का तन खड़ा है, यह बड़ी हैरानी है।

सो कराई मासूकें हमपे, सब अर्स बातें सुपने।
सब गुजरी जो हक हादी रूहों, सो सब करत हम आप में।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम की सभी बातें मुझसे सपने के संसार में जाहिर करवाईं। जो श्री राजश्यामाजी और रूहों के बीच इश्क का वार्तालाप हुआ था, वह अब हम सब बैठकर बातें करते हैं।

हुआ जाती सुमरन जिनको, अर्स अजीम जैसा सुख।
निसबत बका नूरजमाल, अजूं क्यों पकड़ रहें देह दुख।। १६ ।।

जिनको अपने आप को परमधाम में श्री राजजी की अंगना होने की याद आ गई है और परमधाम के सुखों की याद आ गई है, वह भी क्यों दुःख के संसार को पकड़कर बैठी हैं?

ज्यों जाहेर खड़े देखिए, त्यों देखिए इन इलम।
यों लाड़ लज्जत सुख देवहीं, बैठाए अपने तले कदम।। १७ ।।

जैसा जाहिर में परमधाम को खड़े होकर देखा करते थे, वैसे अब यहां इलम से देख रहे हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज परमधाम के लाड़-लज्जत के सुख अपने चरणों तले बिठाकर दे रहे हैं।

सुपन त्यों का त्यों खड़ा, लिए नींद वजूद।
अर्स मता सब देख्या बका, देह झूठी इन नाबूद।। १८ ।।

फिर भी यह सपने के संसार का तन जैसे का तैसा खड़ा है, जबकि अखण्ड परमधाम की सब न्यामतें इस झूठे तन में देख ली हैं।

जब सुपन से जागिए, तब नींद सबे उड़ जात।
सो जागे में सक ना रही, करें माहों–माहें सुपन बात।। १९ ।।

सपने से जाग जाते हैं, तो सब नींद समाप्त हो जाती है। तो अब जागने में भी शक नहीं रह गई, क्योंकि हम सब आपस में बैठकर सपने की बातें करते हैं।

ऐसा किया हकें सुपन में, जानों जागे में सक नाहें।
ऐसी हुई दिल रोसनी, फेर बोलत सुपनें माहें।। २० ।।

श्री राजजी महाराज ने सपने के संसार में ही ऐसा कर दिया कि लगता है कि हम निश्चित रूप से जागे हैं। हमारे दिल में ऐसा ज्ञान आ गया है, फिर भी सपने के तन से बोल रहे हैं।

Nijanand App

जानों सुपने नींद उड़ गई, मुरदे हुए वजूद।
हकें हक अर्स देखाइया, सुपन हुआ नाबूद।।२१।।

लगता है, सपने में हमारी नींद समाप्त हो गई और हमारे तन मर चुके। श्री राजजी महाराज ने अपने सच्चे परमधाम को दिखा दिया है और सपना समाप्त हो गया है।

फेर सुपन तरफ जो देखिए, तो मुरदे खड़े बोलत।
बातें करें अकल में, ऐसा हुकमें देख्या खेल इत।।२२।।

फिर सपने की तरफ देखते हैं तो यह मुर्दे तन खड़े होकर बोल रहे हैं और बातें भी बुद्धिमानी की कर रहे हैं। ऐसा विचित्र यह खेल श्री राजजी के हुकम ने दिखाया।

कबूं कोई न बोलिया, बका बातें हक मारफत।
दे मुरदों को इलम अपना, सो बातें हुकम बोलावत।।२३।।

अखण्ड परमधाम के ज्ञान की बातें यहां आज तक किसी ने नहीं बताईं। हमारे इन झूठे तनों को अपना इलम देकर अखण्ड परमधाम की सभी बातें हुकम बुलवा रहा है।

हुए वजूद नींद के अर्स में, सो नींद दई उड़ाए।
दे जाग्रत बातें दिल में, दिल अरसै किया बनाए।।२४।।

परमधाम में हमारे तन फरामोशी में हो गए थे। वह फरामोशी अब समाप्त हो गई। अब जागृत अवस्था की बातें दिल में लेकर हम मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बना लिया है।

असल मुरदा वजूद, भी हक इलमें दिया मार।
जगाए दिए बीच अर्स के, बातें मुरदा करे समार।।२५।।

हमारे मूल तनों पर परमधाम में फरामोशी का परदा डालकर मुर्दे के समान कर दिया है। इस बात की पहचान श्री राजजी के जागृत बुद्धि के ज्ञान ने हमें दी है। अब इस संसार के मुर्दे तन को अपना अर्श बनाकर परमधाम जैसा तन बना दिया है, जिससे ऐसा लगता है, कि हम परमधाम में जाग गए हैं।

यों कई बातें हांसीय को, मासूक करत हम पर।
वास्ते रब्द इस्क के, ए हकें बनाई यों कर।।२६।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कई तरह की हंसी की बातें करते हैं। इश्क रब्द के फलस्वरूप ही श्री राजजी महाराज ने ऐसी हालत बना रखी है।

अब जो हिंमत हक देवहीं, तो उठ मिलिए हक सों धाए।
सब रूहें हक सहूर करें, तो जामें तबहीं देवें उड़ाए।।२७।।

अब श्री राजजी महाराज ही अपनी हिम्मत दें, तो उठें और दौड़कर उनसे मिलें। ऐसा जब सब रूहें विचारें तो यह संसार के तन उसी समय समाप्त हो जाएं।

सहूर बिना ए रेहेत है, तेहेकीक जानियो एह।
ए भी हुकम हक बोलावत, हक सहूरें आवत सनेह।।२८।।

जब तक ऐसा विचार नहीं आता, तब तक निश्चित यह संसार खड़ा है। यह भी श्री राजजी महाराज का हुकम बुलवाता है और ऐसा विचार भी श्री राजजी महाराज की मेहर से आता है।

Nijanand App

सनेह आए झूठ ना रहे, जो पकड़ बैठे हैं हम।
ए झूठ नजरों तब क्यों रहे, जब याद आवें सनेह खसम।।२९ ।।

जिस तन को हम पकड़े बैठे हैं, इश्क आने पर यह नहीं रहेगा। यह झूठा संसार तब कैसे रह सकता है, जब श्री राजजी महाराज के इश्क की याद आ जाएगी।

हकें इलम भेज्या याही वास्ते, देने हक अर्स लज्जत।
सो मांगी लज्जत सब देय के, आखिर उठावसी दे हिंमत।।३० ।।

अर्श की लज्जत देने के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने यह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी भेजी। इस मांगे हुए खेल की सब चाहना पूरी कर अन्त समय में अपनी हिम्मत देकर हमें उठाएंगे।

जो हक न देवे हिंमत, तो पूरा होए न हांसी सुख।
जो रूह भाग जाए आखिर लग, हांसी होए न बिना सनमुख।।३१ ।।

यदि श्री राजजी महाराज हौसला न बढ़ाएं, हिम्मत न दें, तो हंसी का सुख पूरा नहीं हो सकता। जो रूहें आखिर तक जागी ही नहीं, तो श्री राजजी के सामने जाए बिना उन पर हंसी नहीं होगी।

हक हिंमत देसी तेहेकीक, हांसी होए ना हिंमत बिन।
ए गुझ बातें तब जानिए, हक सहूर आवे हादी रूहन।।३२ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज निश्चित रूप से हिम्मत देंगे। बिना हिम्मत दिए हंसी हो नहीं सकती। यह रहस्य की बातें हम तब समझें, जब हमें, श्री श्यामाजी और रूहों को, श्री राजजी की पहचान हो और याद आए।

ए बारीक बातें मारफत की, तिन बारीक का बातन।
ए बातें होंए हक हिंमतें, हक सहूर करें मोमिन।।३३ ।।

यह परमधाम की बारीक (खास) बातें और बारीक की भी यह बातून बारीक बाते हैं। यह सब श्री राजजी महाराज की हिम्मत से होती हैं। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का मोमिन विचार कर सकते हैं।

हिंमत तो भी हुकम, रूह हुज्जत सो भी हुकम।
तन हुकम सो भी हुकम, सब हुकम तले कदम।।३४ ।।

हिम्मत भी हुकम दे रहा है। रूहें जो दावा लेती हैं वह भी हुकम देता है। मोमिनों का तन भी हुकम से है। श्री राजजी महाराज के चरणों तले भी हुकम से ही हम बैठे हैं।

इलम इस्क तो भी हुकम, सहूर समझ सो हुकम।
जोस होस सो भी हुकम, आद अंत हुकम तले हम।।३५ ।।

इलम, इश्क और समझ सब हुकम से ही आते हैं। जोश और होश भी सब हुकम से आता है। इस तरह से आदि से अन्त तक हम सब हुकम के अधीन हैं।

बातें हकसों अर्स में, जो करते थे प्यार।
सो निसबत कछूए ना रही, ना दिल चाहे दीदार।।३६ ।।

परमधाम में श्री राजजी हमसे बड़े प्यार से जो बातें करते थे, अब वह अंगना होने का कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहा और न दर्शन करने की दिल में चाहना ही रही।

Nijanand App

ना तो बैठे हैं ठौर इतहीं, इतहीं किया रब्द।
पर ऐसा फरेब देखाइया, जो पोहोंचे ना हमारा सब्द।। ३७ ।।

नहीं तो हम मूल-मिलावा में बैठे हैं और यहीं पर इश्क का वार्तालाप हुआ, परन्तु यह ऐसा झूठा खेल दिखाया है कि अब हमारी आवाज परमधाम तक नहीं जाती।

इतथें कोई उठी नहीं, बैठा मिलावा मिल।
बेर साइत एक ना हुई, यों इलमें बेसक किए दिल।। ३८ ।।

मूल-मिलावा से कोई रूह उठी नहीं है। सब मिलकर मूल-मिलावा में बैठी हैं। वहां एक पल की भी देरी नहीं हुई है। इस तरह से जागृत बुद्धि की वाणी से निस्संदेह हो गए हैं।

इस्क मिलावा और है, और मिलावा मारफत।
इलमें लई कई लज्जतें, इस्क गरक वाहेदत।। ३९ ।।

इश्क से मिलना और है। मारफत ज्ञान से मिलने की हकीकत अलग है। इलम से कई तरह की लज्जत मिलती है। इश्क एकाकार करके गर्क कर देता है।

ताथें बड़ी हकीकत मोमिनों, बड़ी मारफत लज्जत।
मोमिन लीजो अर्स दिल में, ए नेक हुकम कहावत।। ४० ।।

इसलिए हे मोमिनो! मारफत के ज्ञान की लज्जत बहुत बड़ी है, जिसे तुम अपने अर्श दिल में लेना। यह थोड़ा सा भी श्री राजजी का हुकम ही कहलवा रहा है।

जो कदी इस्क आवे नहीं, तो मोमिन बैठ रहें क्यों कर।
अर्स हकसों बेसक होए के, क्यों रहें अर्स बिगर।। ४१ ।।

यदि इश्क आता नहीं है तो मोमिन शान्ति से क्यों बैठे हैं? श्री राजजी महाराज और परमधाम की निश्चित पहचान हो जाने के बाद यह परमधाम के बिना कैसे रह रहे हैं?

इस्क क्यों ना उपजे, पर रूहों करना सोई उद्दम।
राह सोई लीजिए, जो आगूं हादिएं भरे कदम।। ४२ ।।

इश्क आता क्यों नहीं है? इसके लिए रूहों को उपाय करना है। हमें भी उसी रास्ते पर चलना पड़ेगा, जिस रास्ते पर श्री प्राणनाथजी ने चलकर बताया है।

ए तिलसम क्योंए न छूटहीं, जहां साफ न होवे दिल।
अर्स दिल अपना करके, चलिए रसूल सामिल।। ४३ ।।

जब तक दिल साफ न हो जाए, यह झूठा संसार नहीं छूटता, इसलिए अपने दिल में श्री राजजी महाराज को बैठाकर और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी को साथ लेकर चलें।

पाक न होइए इन पानिएं, चाहिए अर्स का जल।
न्हाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल।। ४४ ।।

संसार के इस पानी से दिल साफ नहीं होता। दिल को साफ करने के लिए परमधाम की वाणी चाहिए। फिर दिल साफ हो जाने पर श्री राजजी महाराज के साक्षात् दर्शन होंगे।

Nijanand App

पाक होना इन जिमिएं, और न कोई उपाए।
लीजे राह रसूल इस्कें, तब देवें रसूल पोहोंचाए।। ४५ ।।

इस संसार में पाक होने का और कोई रास्ता नहीं है। हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने इश्क का जो रास्ता बताया है, यदि उस पर चलें तो वह स्वयं परमधाम पहुंचा देंगे।

अब कहूं सरीयत मोमिनों, जिन लई हकीकत हक।
हक के दिल की मारफत, ए तिन में हुए बेसक।। ४६ ।।

अब जिन मोमिनों को श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई है, उन्हें संसार में कैसे रहना है, वह तरीका बताती हूं, क्योंकि श्री राजजी महाराज के दिल की बातें (मारफत ज्ञान) जान लेने से ही संसार में उनके कोई संशय नहीं रहते।

मोमिन उजू जब करें, पीठ देवें दोऊ जहान को।
हौज जोए जो अर्स में, रूहें गुसल करे इनमों।। ४७ ।।

मुसलमान लोग नमाज के समय अपने इस शरीर के चौदह अंग इस पानी से धोते हैं, लेकिन मोमिन हकीकत की नमाज के लिए कालमाया के ब्रह्माण्ड और योगमाया के ब्रह्माण्ड को पीठ देकर हौजकौसर और जमुनाजी के चितवन से नहाते हैं। यह मोमिनों का उजू है।

दम दिल पाक तब होवहीं, जब हक की आवे फिराक।
अर्स रूहें दिल जुदा करें, और सबसे होए बेबाक।। ४८ ।।

इस तरह से नहाने के बाद मोमिनों के शरीर और दिल तभी पाक होते हैं, जब उन्हें अपने धनी का वियोग तड़पाता है। तब अर्श की रूहें संसार के सब सम्बन्धों को तोड़ें, तो वही दुनियां से बेबाक होना है और अपने दिल से सब दुनियां वालों को निकाल देना है।

चौदे तबक को पीठ देवहीं, ए कलमा कह्या तिन।
कलाम अल्ला यों केहेवहीं, ए केहेनी है मोमिन।। ४९ ।।

यह जागृत बुद्धि का ज्ञान मोमिनों के वास्ते आया है। मोमिन इसे समझकर चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को छोड़ देंगे। कुरान में इसको मोमिनों की कहनी बतलाई है।

ला फना सब ला करें, और इला बका ग्रहें हक।
ए कलमा हकीकत मोमिनों, और हक मारफत बेसक।। ५० ।।

मोमिन इस नाश होने वाले संसार को बिलकुल समझकर छोड़ देते हैं। अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज को दिल में बसाना मोमिनों की हकीकत है। श्री राजजी के साथ पल-पल परमधाम के सुख लेना मोमिनों की मारफत है।

नूर के पार नूर तजल्ला, रसूल अल्ला पोहोंचे इत।
मोमिन उतरे नूर बिलंद से, सो याही कलमें पोहोंचें वाहेदत।। ५१ ।।

मोमिन उस परमधाम से उतरे हैं, जहां अक्षर के पार परमधाम में रसूल साहब श्री राजजी महाराज के पास पहुंचे थे। अब मोमिन भी इसी रास्ते से परमधाम (मूल-मिलावा) में पहुंचेंगे।

Nijanand App

जब हक बिना कछू ना देखे, तब बूझ हुई कलमें।
जब यों कलमा जानिया, तब बका होत तिनसें।।५२ ।।

जब मोमिन श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त किसी और में चाहना नहीं रखते, तब समझो कि उन्हें ज्ञान की पहचान हो गई। जब उन्हें इस तरह से हकीकत के ज्ञान की पहचान हो जाती है, तब उन्हें अखण्ड घर मिल जाता है।

ए मोमिनों की सरीयत, छोड़ें ना हकको दम।
अर्स वतन अपना जानके, छोड़ें ना हक कदम।।५३ ।।

मोमिनों की यही शरीयत है कि वह श्री राजजी महाराज को एक क्षण के लिए भी न छोड़ें। फिर वह परमधाम को अपना अखण्ड घर समझकर श्री राजजी महाराज के चरणों को नहीं छोड़ते।

महंमद ईसा इमाम, बैत बका निसान।
सोई तीन सूरत महंमद की, देखावें अर्स रेहेमान।।५४ ।।

रसूल साहब, श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) तथा इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने अखण्ड घर के निशान बताए हैं। यही मुहम्मद की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी हैं, जो श्री राजजी महाराज और परमधाम का दर्शन कराते हैं।

दुनी किबला करें पहाड़ को, और हक तरफों में नाहें।
अर्स बका तरफ न राखत, ए देखे फना के माहें।।५५ ।।

दुनियां पहाड़ों को पूजती है। पारब्रह्म की तरफ का ज्ञान नहीं है। अखण्ड घर परमधाम की तरफ का ज्ञान न होने के कारण से वह जाहिरी पहाड़ों को पूजते हैं और खुदा को दुनियां में है, ऐसा समझते हैं।

हकें देखाया किबला, बीच पाइए मोमिन के दिल।
ऊपर तले न दाएं बाएं, सूरत हमेसा असल।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को ही अर्श (पूज्य स्थान) बताया है। ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं कहीं अर्श नहीं है। श्री राजजी महाराज हमेशा मोमिनों के दिल में हैं।

मजाजी और हकीकी, दिल कहे भांत दोए।
ए बेवरा हकी सूरत बिना, कर न सके दूजा कोए।।५७ ।।

संसार में झूठे और सच्चे दो तरह के दिल कहे हैं। इसका फर्क हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई जाहिर नहीं कर सका।

इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकात ज्यारत।
साथ हकी सूरत के, मोमिनों सब न्यामत।।५८ ।।

मोमिनों का रोजा, जकात और तीर्थयात्रा (जियारत) श्री प्राणनाथजी के चरणों में है। मोमिनों के वास्ते यही सब न्यामतें हैं।

मोमिन हक बिना न देखें, एही मोमिनों ताम।
बन्दगी तवाफ सब इतहीं, मोमिनों इतहीं आराम।।५९ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखते। श्री राजजी महाराज का दीदार ही उनकी खुराक है। श्री राजजी महाराज की परिकरमा और बन्दगी ही मोमिनों का आराम है।

Nijanand App

खाना पीना सब इतहीं, इतहीं मिलाप मजकूर।
इतहीं पूरन दोस्ती, इत बरसत हक का नूर।।६०।।

खाना, पीना, मिलना, चर्चा करना, सब श्री जी के चरणों में ही है। श्री राजजी महाराज के नूरी अंग होने से यह कदीमी दोस्त कहलाते हैं और इन पर ही श्री राजजी की मेहर बरसती है।

सरूप ग्रहिए हक का, अपनी रूह के अन्दर।
पूरन सरूप दिल आइया, तब दोऊ उठे बराबर।।६१।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को मोमिन अपने दिल में धारण कर लें, तब श्री राजजी का स्वरूप दिल में आ जाता है। फिर आतम परआतम एक रूप हो जाती हैं।

ए सरीयत अपनी मोमिनों, और है हकीकत।
क्यों न विचार के लेवहीं, हक हादी बैठे तखत।।६२।।

हे मोमिनो! यही अपनी शरीयत है। अब हकीकत की बात देखो। तुम अपने दिल से विचार करके श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी के सिंहासन पर विराजमान युगल किशोर को अपने दिल में धारण करो।

जो कदी दिल में हक लिया, कछू किया ना प्रेम मजकूर।
क्यों कहिए ताले मोमिन, जाको लिख्या बिलन्दी नूर।।६३।।

यदि श्री राजजी महाराज को दिल में तो बिठा लिया और उनसे फिर प्रेम की बातें न कीं, तो उनको परमधाम के रहने वाले कैसे कहा जाए?

ए हकीकत मोमिनों, और ले न सके कोए।
बेसक होए बातें करें, तो मजकूर हजूर होए।।६४।।

मोमिनों की इस हकीकत को दूसरा और कोई नहीं ले सकता, जो निःसंदेह होकर श्री राजजी महाराज से आमने-सामने बातें करे।

जो तूं ले हकीकत हक की, तो मौत का पी सरबत।
मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजूकर खिलवत।।६५।।

यदि श्री राजजी महाराज की हकीकत का ज्ञान तेरे दिल में आता है, तो पहले संसार से अपना बिलकुल सम्बन्ध तोड़कर दुनियां की तरफ से मरना होगा। फिर श्री राजजी के सामने खड़े होकर धनी के सुख ले सकती है।

जो लों जाहेरी अंग ना मरें, तो लों जागें ना रूह के अंग।
ए मजकूर रूह अंग होवहीं, अपने मासूक संग।।६६।।

जब तक आतम को संसार के तन की चाहना समाप्त नहीं होती, तब तक परआतम के अंग परमधाम में जगते नहीं। परमधाम में जगने के बाद ही परआतम श्री राजजी महाराज जी से बातें करेंगी।

कौल फैल आए हाल आइया, तब मौत आई तोहे।
तब रूह की नासिका को, आवेगी खुसबोए।।६७।।

जब कहनी, करनी और रहनी धनी की आ जाए तो समझ लो संसार की तरफ से हम मर गए हैं। तब तुम्हारी रूह को परमधाम की सुगन्धि मिलनी शुरू हो जाएगी।

Nijanand App

रूह नैनों दीदार कर, रूह जुबां हक सों बोल।
रूह कानों हक बातें सुन, एही पट रूह का खोल।। ६८ ।।

रूह की नजर खोलकर श्री राजजी महाराज का दर्शन करो। रूह की जबान से श्री राजजी महाराज से बातें करो। रूह के नाते से ही श्री राजजी महाराज की बातें सुनो। यह आत्मदृष्टि खोलनी है।

ए सहूर करो तुम मोमिनों, जब फैल से आया हाल।
तब रूह फरामोसी ना रहे, बोए हाल में नूरजमाल।। ६९ ।।

हे मोमिनो! जागृत बुद्धि से विचार करके देखो। जब तुम्हारी करनी रहनी में बदल गई, तब तुम्हारी परआतम पर फरामोशी नहीं रहेगी और तब श्री राजजी महाराज के सुख की सुगन्धि मिलेगी।

बेसक होए दीदार कर, ले जवाब होए बेसक।
एही मोमिनों मारफत, खिलवत कर साथ हक।। ७० ।।

फिर निश्चित ही श्री राजजी महाराज का दर्शन होगा। श्री राजजी का जवाब लेकर संशय रहित हो जाएंगे। मोमिनों का यही मारफत का ज्ञान है कि सब तरह श्री राजजी महाराज के साथ मिलकर बातें करें।

रूह हकसों बात विचार कर, दिल परदा दे उड़ाए।
रूह बातें वतन की, कर मासूक सों मिलाए।। ७१ ।।

मोमिनों की रूह श्री राजजी महाराज की बातों का विचारकर दिल से फरामोशी का पर्दा उड़ा देती हैं और फिर श्री राजजी से मिलकर अपने घर की बातें करती हैं।

जो गुझ अपनी रूह का, सो खोल मासूक आगूं।
यों कर जनम सुफल, ऐसी कर हक सों तूं।। ७२ ।।

अपनी रूह की छिपी बातें श्री राजजी महाराज के आगे बताती हैं। इसलिए, हे मोमिनो! तुम ऐसी रहनी बदलकर अपने जन्म को सफल बनाओ।

सब अंग सुफल यों हुए, करी हकसों सलाह सबन।
देख बोल सुन खुसबोए सों, जिनका जैसा गुन।। ७३ ।।

मोमिनों के सभी अंग इस तरह से रहनी में आने से सफल हो जाते हैं। फिर श्री राजजी महाराज से बातें करते हैं। यह श्री राजजी महाराज को देखकर, उनसे बोलकर, उनकी बातों को सुनकर, जिनकी जितनी शक्ति है, वह उतना ग्रहण करती हैं।

जेते अंग आसिक के, सो सारे किए सुफल।
सोई असल रूह आसिक, जिन मोमिन अर्स दिल।। ७४ ।।

आशिक रूहें इस तरह से सभी अंग पाक-साफ करती हैं। हकीकत में वह रूहें आशिक हैं, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श बनाकर बैठे हैं।

ए निसबत बिना होए नहीं, मासूक सों मजकूर।
ए मजकूर इन बिध होवहीं, यों कहे हक सहूर।। ७५ ।।

श्री राजजी महाराज से अंगनाओं के बिना बातें नहीं हो सकतीं। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान को ही उनसे बातें करने का तरीका बतलाया है।

Nijanand App

मोमिनों हकीकत मारफत, इनमें भी बिध दोए।
एक गरक होत इस्क में, और आरिफ लदुन्नी सोए।।७६ ।।

मोमिनों की हकीकत और मारफत में भी दो भेद हैं। एक तो जो इश्क में गर्क हो जाते हैं, दूसरे ब्रह्मज्ञानी बनते हैं।

एक इस्क दूजा इलम, ए दोऊ मोमिनों हक न्यामत।
इस्क गरक वाहेदत में, इलमें हक अर्स लज्जत।।७७ ।।

एक इश्क देता है, दूसरा इल्म। यह दोनों मोमिनों की न्यामतें हैं। इश्क वाहेदत में गर्क करता है। इल्म से श्री राजजी की साहेबी का पता चलता है।

मारफत लदुन्नी मोमिनों, बंदा हक का कामिल।
बड़ी बुजरकी इन की, करें बातें हक सामिल।।७८ ।।

मोमिनों को ही तारतम ज्ञान की पहचान है। वे ही श्री राजजी महाराज के सच्चे, योग्य बन्दे कहलाते हैं। इनकी साहेबी बड़ी भारी है। श्री राजजी महाराज से बातें भी यही करते हैं।

सक नाहीं लदुन्नीय में, कहे अर्स की जाहेर बातन।
करें हकसों बातें इन विध, ज्यों करें अर्स के तन।।७९ ।।

तारतम ज्ञान आने से किसी प्रकार के संशय नहीं रह जाते। यह परमधाम की बाहरी और बातूनी सभी बातें बतलाती हैं (तारतम वाणी)। श्री राजजी से इस तरह से बातें करते हैं, जैसे परमधाम के तन (परआतम)।

हक दिया चाहें लज्जत, ताए इलम देवें बेसक।
रुह बातें करें हकसों, देखे हौज जोए हक।।८० ।।

श्री राजजी मोमिनों को लज्जत देना चाहते हैं। रूहों को पहले इल्म देकर संशय मिटाते हैं। फिर रूहें श्री राजजी महाराज से हौज कौसर और जमुनाजी को देखकर बातें करती हैं।

मारफत लदुन्नी जिन लई, सो करे हक सहूर।
सहूर किए हाल आवहीं, सो हाल बीच हक मजकूर।।८१ ।।

मारफत का ज्ञान जिन्होंने लिया है, वही श्री राजजी महाराज का विचार कर सकते हैं (बातें कर सकते हैं)। शहूर करने से उनकी रहनी बदल जाती है और रहनी में आने से श्री राजजी महाराज से बातें होती हैं।

यों हक कहावत मोमिनों, नजीक हाल है तुम।
हक बातें किया चाहें, रूह सों वाहेदत खसम।।८२ ।।

इसलिए मोमिनों के वास्ते श्री राजजी महाराज कहलवा रहे हैं कि मोमिनों की रहनी उन्हें धनी के नजदीक ले आई है, इसलिए श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं से बातें करना चाहते हैं।

पीछे हक सब करसी, रूह सुख लिया चाहे अब।
सुख लेने को अवसर, पीछे लेसी मोमिन सब।।८३ ।।

पीछे तो श्री राजजी महाराज सब करेंगे, पर मोमिन अभी सुख लेना चाहते हैं। सुख लेने का समय अभी आया है। पीछे तो सब सुख मोमिनों को मिलने वाला है।

Nijanand App

रूह विरहा खिन एक ना सहें, सो अब चली जात मुद्दत।
अर्स रूहें यों भूल के, क्यों छोड़ें हक मारफत।। ८४ ।।

जो रूहें एक क्षण का बिछोह सहन नहीं कर सकती थीं, उनके लिए यहां मुद्दतें बीत रही हैं, इसलिए परमधाम की रूहें इस तरह से भूलकर भी श्री राजजी महाराज का मारफत का ज्ञान नहीं छोड़ेंगी।

मारफत हुई हाथ हक के, क्यों ले सकिए सोए।
ए दोस्ती तब होवहीं, जब होए प्यार बराबर दोए।। ८५ ।।

क्योंकि मारफत भी श्री राजजी के हाथ में है। उसको कैसे ले सकते हैं? यह दोस्ती तभी सम्भव है जब दोनों तरफ से प्यार हो।

मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार।
इस्कें मिलिए हकसों, इस्कें खुले पट द्वार।। ८६ ।।

श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान से इश्क मिलता है। इश्क से दीदार होता है। इश्क से श्री राजजी महाराज का मिलना होता है। इश्क से ही परमधाम के दरवाजे खुलते हैं।

सोई रब्द जो हकसों किया, वास्ते इस्क के।
सो इस्क तब आइया, जब हकें दिया ए।। ८७ ।।

इस इश्क के वास्ते ही परमधाम में श्री राजजी महाराज से इश्क का वार्तालाप किया था। अब वह इश्क तब आया जब श्री राजजी महाराज ने दिया।

हांसी करी रूहन पर, दे इलम बेसक।
मासूक हंस के तब मिले, जब हकें दिया इस्क।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को बेशक इलम देकर हंसी की। जब अपना इश्क दिया, तब हंसते हुए रूहों से मिले।

महामत कहे ए मोमिनों, सब बातों का ए मूल।
ए काम किया सब हुकमें, आए इमाम मसी रसूल।। ८९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सब बातों का यही मूल है (सार है) कि यह सब काम श्री राजजी महाराज के हुकम ने किया है। हुकम से ही यहां पर रसूल साहब, श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आए हैं।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। १९३९ ।।

कलस का कलस

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
कारज सारे सिध किए, अव्वल बीच आखिरत।। १ ।।

बसरी, मल्की और हकी–मुहम्मद की तीन सूरतें कुरान में लिखी हैं। जिन्होंने शुरू के, बीच के और आखिरत के सभी काम पूरे किए।

Nijanand App

ए तीनों मिल किया जहूर, अव्वल आखिर रोसन।
हक बैठे इन इलम में, तो दिल अर्स हुआ मोमिन।।२।।

इन तीनों सूरतों ने मिलकर शुरू में, बीच में और आखिर में परमधाम की हकीकत बताई। श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि के ज्ञान इस वाणी में बैठे हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

ए जुबां मैं हक की, और बोलत है हुकम।
हक अर्स बरनन तो हुआ, जो वाहेदत बका खसम।।३।।

श्री महामतिजी कहते है कि मैं जो जबान से बोल रही हूं, वह श्री राजजी का हुकम ही बोल रहा है, इसलिए श्री राजजी महाराज का तथा परमधाम का वर्णन, जो अखण्ड रूहों का घर है और श्री राजजी उनके खसम हैं, किया है।

गैब खिलवत जाहेर तो हुई, जो हकें कराई ए।
ए खबर नहीं नूर को, करी लदुन्निएं जाहेर जे।।४।।

मूल-मिलावा की छिपी बातें भी श्री राजजी महाराज ने ही जाहिर कराई हैं। जो खबर अक्षरब्रह्म को नहीं है, वह तारतम वाणी में सब जाहिर कर दी।

बरनन किया अर्स का, सो सब हिसाब अर्से के।
गिनती सो भी अर्स की, ए बातें मोमिन समझेंगे।।५।।

मैंने जो परमधाम का वर्णन किया वह सब गिनती परमधाम की है। उसी हिसाब से वर्णन किया है। इस बात को मोमिन समझेंगे।

या पहाड़ या तिनका, सो सब चीज बिध आतम।
सब देत देखाई जाहेर, ज्यों देखिए माहें चसम।।६।।

परमधाम का पहाड़ हो या तिनका, सबकी हकीकत रूहों की तरह ही है। हम जैसी नजर से देखते हैं, वैसे यह सब दिखाई देते हैं।

और भी खूबी रूह नैन की, चीज दसों दिसा की सब देखत।
पाताल या आसमान की, रूह नजरों सब आवत।।७।।

रूह के नैनों की एक और खास बात यह है कि यह दसों दिशाओं की सभी चीजें देखते हैं। पाताल और आसमान रूह की नजर से सब दिखता है।

रूह का एही लछन, बाहेर अन्दर नहीं दोए।
तन दिल दोऊ एकै, रूह कहियत हैं सोए।।८।।

रूह अन्दर और बाहर से एक ही होती है, दो नहीं। यही उसकी पहचान है। जिनके तन और दिल में एक ही बात हो, उसे ही रूह समझना।

दूर नजीक भी अर्स के, सो भी पाइए अर्स सहूर।
नैन चरन अंग तीनों हीं, एक यादै में हजूर।।९।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम दूर है या नजदीक का ज्ञान हो जाता है, इसलिए रूह श्री राजजी के चरण, नेत्र और अंग तीनों की एक बार ही याद करने से चरणों में पहुंच जाती है।

Nijanand App

चाल मिलाप या दीदार, ए तीनों रूह के नेक।
जब हीं याद जो आवहीं, तब हीं होए माहें एक।।१०।।

रूहों का श्री राजजी महाराज के साथ चलना, मिलना या दीदार करना तीनों ही रूहों के लिए अच्छे हैं। इन तीनों में जब जो याद आ जाए, तभी श्री राजजी महाराज का मिलन हो जाए।

यातो जिमी के दूर लग, या नजीक आगूं नजर।
दूर नजीक सब याद में, ए दोऊ बराबर।।११।।

चाहे जमीन पर दूर हो या श्री राजजी महाराज की नजर के सामने हो, यह दूरी और नजदीकी तो याद आते ही बराबर हो जाती है।

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो हक सों रूह निसबत।
ना तो अर्स दिल आदमी का, क्यों कह्या जाए ख्वाब में इत।।१२।।

मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा कि यह श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, वरना सपने के ब्रह्माण्ड में आदमी के दिल को अर्श कैसे कहा जाए?

रूह तन की असल अर्स में, अर्स ख्वाब नहीं तफावत।
तो कह्या सेहेरग से नजीक, हक अर्स दुनी बीच इत।।१३।।

रूह की परआतम परमधाम में है, इसलिए परमधाम के तन और संसार के तन में कोई फर्क नहीं है। श्री राजजी महाराज ने इसलिए मोमिन को सेहेरग से नजदीक और खुदा को दुनियां में बताया है, क्योंकि खुदा मोमिनों के दिल को अर्श कर बैठे हैं।

दिल मोमिन अर्स तन बीच में, उन दिल बीच ए दिल।
केहेने को ए दिल है, है अर्से दिल असल।।१४।।

मोमिनों के इस संसार के तन का जो दिल है, वह उनकी परआतम के दिल में है, इसलिए उनकी परआतम के दिल में जो आता है, वही यह दिल काम करता है। कहने को यहां संसार का दिल कहा जाता है, पर असली दिल तो परमधाम में है।

तो हक नजीक कह्या रूहन को, और नूर नजीक फरिस्तन।
और आम खलक देखन को, जो कहे जुलमत से तन।।१५।।

इसलिए श्री राजजी महाराज को रूहों के नजदीक कहा है और अक्षरब्रह्म को फरिश्तों (ईश्वरीसृष्टि) के नजदीक कहा है। बाकी जीवसृष्टि तो देखने मात्र के वास्ते हैं, जिनके तन निराकार (मोह तत्व) के हैं।

ए तीनों गिरो कही जाहेर, पर ए बीच मारफत राह।
ए कलाम अल्ला में बेवरा, योहीं कह्या रूह अल्लाह।।१६।।

ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि तीनों की पहचान मारफत के ज्ञान में बतलाई है। कुरान में भी ऐसा ही लिखा है और ऐसा ही रूह अल्लाह श्री श्यामाजी ने बताया है।

पर आम खलक ना समझें, जाकी पैदास कही जुलमत।
इलम लदुन्नी से जानत, रूह मोमिन बीच वाहेदत।।१७।।

पर आम दुनियां के जीव निराकार से पैदा होने के कारण नहीं समझते। तारतम वाणी के ज्ञान से ही मोमिनों को अपने मूल-मिलावा की एकदिली की याद आती है।

Nijanand App

इलम नुकते की साहेदी, हक सूरत अर्स मारफतं।
सो सब बातें फुरमान में, खोले हकी सूरत हकीकत।। १८ ।।

तारतम ज्ञान से ही मोमिनों को श्री राजजी के स्वरूप और परमधाम का ज्ञान मिलता है। यह सब बातें कुरान में लिखी हैं, जिनके रहस्य हकी सूरत श्री प्राणनाथजी खोलेंगे।

बसरी मलकी और हकी, जो कही महंमद तीन सूरत।
दो देवे हक की साहेदी, फरदा रोज कयामत।। १९ ।।

बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की जो तीन सूरतें कही हैं, उनमें से रसूल साहब बसरी और श्यामा महारानी मलकी सूरत हैं। इन दोनों ने अपने ज्ञान से गवाही दी है और हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने आकर सब हकीकत और मारफत को जाहिर किया है।

नबी नबुवत कुरान माजजा, ए दोऊ साबित होवें इन से।
कुरान न खुले बिना खिताब, ना तो लिख्या सब इनमें।। २० ।।

रसूल साहब ने जो कुरान में कहा वह सत्य है। रसूल साहब की सच्चाई और साहेबी दोनों को, जिनके सिर पर इमाम मेंहदी का खिताब है, वह श्री प्राणनाथजी महाराज आकर सच्चा साबित करेंगे। कुरान में लिखा तो सब था, पर रसूल साहब को खोलने का अधिकार नहीं था।

इन साहेदिएं सब मिलसी, हिंदू या मुसलमीन।
मुआ दज्जाल सब का कुफर, यों सब पाक हुए एक दीन।। २१ ।।

कुरान की इस गवाही से हिन्दू या मुसलमान सबके दिलों का पाप मिट जाएगा और सभी पाक-साफ होकर एक निजानन्द सम्प्रदाय में आकर एक पारब्रह्म के पूजक बनेंगे।

और भी साहेदी फुरमान में, तबक चौदे जरा नाहें।
खेल नाम धरया सब केहेने को, ए जरा नहीं अर्स माहें।। २२ ।।

कुरान में और भी गवाही दी है कि चौदह तबक कुछ भी नहीं हैं। खेल के वास्ते ही इसे चौदह तबक कहा। परमधाम में तो इसका कुछ भी मूल नहीं है।

और ठौर न काहूं अर्स बिना, अर्स न कहूं इंतहाए।
जो आप कछुए है नहीं, तिन क्यों अर्स नजरों आए।। २३ ।।

परमधाम के बिना और कोई ठिकाना है ही नहीं। परमधाम बेशुमार है। संसार, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है, की नजर में परमधाम कैसे आ सकता है?

ए अर्स देखें रूह मोमिन, जो उतरे नूर बिलन्द से।
नाहीं क्यों देखे है को, ए तो जाहेर लिख्या किताबों में।। २४ ।।

परमधाम से उतरकर जो रूहें खेल में आई हैं, वही खेल में परमधाम को देख सकती हैं। यह संसार जो कुछ नहीं है, वह अखण्ड को कैसे देख सकता है? यह बात सभी शास्त्रों में स्पष्ट लिखी है।

बंझापूत फूल आकास, और ससिक सिंग।
कह्या वेद कतेब में, भंग न कछू अभंग।। २५ ।।

इस संसार को वेदों ने बांझ के पूत (पुत्र) के समान, आकाश में फूल के समान और खरगोश (ससला) के सिर पर सींग के समान कहा है, जो होते ही नहीं। वह नष्ट क्यों होगा और अखण्ड क्या होगा?

Nijanand App

यों असल खेल की है नहीं, ए तो दिल में देखाई देत।
किया हुकमें महंमद रूहों देखने, तो भिस्त में इनों को लेत।। २६ ।।

इस तरह से खेल की कुछ असलियत नहीं है। यह तो मात्र दिल का भ्रम है, जो श्री राजजी महाराज के हुकम ने श्री श्यामा महारानी और रूहों को दिखाने के लिए बनाया है। इनके कारण से ही इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर देंगे।

हक हुकमें सब बेवरा किया, वास्ते हादी रूहन।
जो सहूर कीजे मिल महामती, तो लज्जत लीजे अर्स तन।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने श्री श्यामा महारानी और रूहों के वास्ते ही यह विवरण किया है। श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि मिलकर हम सब विचार करें तो परमधाम के सब आराम और साहेबी के सुख यहीं पर मिल सकते हैं।

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ १९६६ ॥

मता हक–ताला ने मोमिनों को दिया

एता मता तुम को दिया, सो जानत है तुम दिल।
बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तुमको इतने बड़े परमधाम की जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है। यदि तुम्हें फिर भी इस वाणी की समझ न आए तो जागृत बुद्धि से सब मिल-बैठकर विचार करना।

ए तो देख्या बड़ा अचरज, पाए सुख बका अपार।
भी बेसक हुए हक इलमें, तो भी छूटे ना नींद विकार।। २ ।।

यह बड़ी हैरानी वाली बात देखी कि परमधाम के बेशुमार सुख पाकर और जागृत बुद्धि के ज्ञान से निःसंदेह होने पर भी माया की चाहना नहीं छूटती।

ए बोलावत है हुकम, खुदी भी हुकम की।
तो हमेसा पाक होए, हक इस्क प्याले पी।। ३ ।।

यहां श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है और हुकम के वास्ते (मोमिन के वास्ते) ही कहा गया है। इसलिए, हे मेरी आत्मा! दुनियां को पीठ देकर पाक-साफ होकर श्री राजजी के इश्क के प्याले पी।

खुदी हक हुकम की, सो तो भूलें नाहीं कब।
वह काम सोई करसी, जो भावे अपने रब।। ४ ।।

यह तो श्री राजजी महाराज के हुकम का ही अहं है जो कभी नहीं भूलेगा, इसलिए हुकम तो वही काम करेगा, जो श्री राजजी महाराज को पसन्द होगा।

हुकम तो है हक का, और खुदी भी ना हुकम बिन।
खुदी हुकम दोऊ हक के, इत क्या लगे रूहन।। ५ ।।

हुकम श्री राजजी का है और अहंभाव भी हुकम का है, इसलिए अहंभाव और हुकम दोनों श्री राजजी के हैं। यहां रूहों को क्या लेना-देना, सब कुछ कराने वाला हक का हुकम है।

Nijanand App

हक केहेवे नेकों को, दोस्त रखता हों मैं।
या खुदी या हुकम, टेढ़ी होए नहीं इनों सें।।६।।

श्री राजजी महाराज अपने पाक-साफ मोमिनों को कहते हैं कि मैं तुमसे दोस्ती रखता हूं। तुम्हारा दोस्त हूं। अब अहंभाव हो या मेरा हुकम यह दोनों तुम्हारे विरुद्ध कोई काम नहीं करेंगे।

हुकमें लिया भेख रूह का, सो भी हांसी खुसाली रूहन।
क्यों सिर लेना खुदी हुकम, पाक होए पकड़े चरन।।७।।

हुकम ने रूहों का भेष बनाया है। वह भी रूहों की हंसी और खुशी के वास्ते, इसलिए श्री राजजी महाराज के हुकम के अहं को मोमिन अपने सिर पर क्यों लेंगे? वह संसार से पाक-साफ होकर श्री राजजी के चरण पकड़ेंगे।

जब भेख काछा रूह का, फैल सोई किया चाहे तिन।
नाम धराए क्यों रद करे, हक एती देत बड़ाई जिन।।८।।

जब रूहों का भेष हुकम ने धारण किया है, तो रूहों की रहनी में हुकम को रहना चाहिए। श्री राजजी महाराज ने रूहों को इतनी बुजरकी (बड़ाई) दी है। हुकम उनके नाम पर क्यों धब्बा लगाकर रूहों की महानता को समाप्त करता है?

ए निस दिन बातें विचार हीं, सोई हुकम हुज्जत मोमिन।
पाक हुआ सो जो अर्स दिल, जाके हक कदम तले तन।।९।।

रात-दिन यही बातें विचार में आती हैं। जो मोमिनों का नाम है, वह श्री राजजी का हुकम ही है। जो संसार की चाहना से पाक-साफ हो गए हैं, उन्हीं के दिल में श्री राजजी महाराज अपना अर्श कर बैठे हैं। इन्हीं के मूल तन परआतम परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले मूल-मिलावा में बैठे हैं।

हुकम तो तन में सही, और लिए रूह की हुज्जत।
हिस्सा चाहिए तिन का, सो भी माहें बोलत।।१०।।

मोमिनों के नाम से हुकम संसार के तनों में है। अब इसमें जितना हिस्सा मोमिनों का होना चाहिए, वही मोमिन के अन्दर से बोलते हैं।

कह्या दिल अर्स मोमिन का, दिल कह्या न हुकम का।
देखो इनों का बेवरा, हिस्से रूह के हैं बका।।११।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, हुकम के दिल को नहीं। इसका विवरण कर देखो, क्योंकि मोमिन का घर अखण्ड परमधाम है (हुकम परमधाम में नहीं है)।

मोमिन तन में हुकम, तामें हिस्से रूह के देख।
दिल अर्स हक इलम, रूह की हुज्जत नाम भेख।।१२।।

मोमिनों के तन में श्री राजजी महाराज का हुकम है। उस तन में रूहों की चाहना के हिस्से को देखो। जागृत बुद्धि के ज्ञान से, मोमिनों का दिल अर्श है, यह पहचान हो गई है। यह हुकम रूह का झूठा भेष धारण किए है।

Nijanand App

जो कदी रूहें इत हैं नहीं, तो भी एता मता लिए आमर।
सो अर्स बका हक बिना, ले हुज्जत रहे क्यों कर।। १३ ।।

मान लिया जाए कि रूहें यहां नहीं हैं और यहां श्री राजजी का ज्ञान लेकर उनका हुकम ही है, तो अखण्ड परमधाम और श्री राजजी के बिना हुकम भी रूहों के नाम से संसार में कैसे रह सकता है?

एता मता रूह का, हुकम के दरम्यान।
तिन का जोरा चाहिए, जो हक आगूं होसी बयान।। १४ ।।

रूहों की इतनी बड़ी न्यामत हुकम के अन्दर है, तो फिर रूहों की शक्ति ज्यादा होनी चाहिए, जिसकी श्री राजजी महाराज के सामने चर्चा होगी।

हांसी न होसी हुकम पर, है हांसी रूहों पर।
जाको गुनाह पोहोंच्या खिलवतें, कहे कलाम अल्ला यों कर।। १५ ।।

परमधाम की हंसी रूहों पर होनी है, हुकम पर नहीं। मूल-मिलावा में गुनाह रूहों पर लगा है, ऐसा कुरान कहता है।

मोमिन बैठे खेल में, अर्जूं बीच ख्वाब।
गुनाह पेहेले पोहोंच्या अर्स में, करें मासूक रूहें हिसाब।। १६ ।।

मोमिन अब तक भी सपने के संसार में बैठकर खेल देख रहे हैं। इनका गुनाह इनसे पहले परमधाम पहुंच जाता है। श्री राजजी महाराज अपनी रूहों के गुनाहों का लेखा-जोखा (एकाउण्ट) परमधाम में कर रहे हैं।

हक हुकम तो है सब में, बिना हुकम कोई नाहें।
पर यामें हुकम नजर लिए, और रूह का बड़ा मता या माहें।। १७ ।।

श्री राजजी का हुकम तो सब पर है। बिना हुकम तो कोई नहीं है, पर जो संसार में रूह की इतनी बड़ी साहेबी है, यह हुकम रूहों पर भी नजर रखे हुए है।

जेता हिस्सा तन में जिनका, सो जोरा तेता किया चाहे।
ए विचार करें सो मोमिन, हक हुकम देसी गुहाए।। १८ ।।

अब इस संसार के तन में जितना हिस्सा रूहों का है और जितना हिस्सा हुकम का, उनको उसी अनुसार ताकत लगानी चाहिए। इस बात को जो विचारे, वही मोमिन है। उसकी गवाही श्री राजजी का हुकम देगा।

तार्थे हुकम के सिर दोस दे, बैठ न सकें मोमिन।
अर्स दिल खुदी से क्यों डरें, लिए हक इलम रोसन।। १९ ।।

इसलिए हुकम के सिर दोष देकर मोमिन चुपचाप बैठे नहीं रहेंगे। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की वाणी के ज्ञान से वह मोमिन, जिनके दिल में श्री राजजी विराजमान हैं, अहंभाव (स्वाभिमान) से नहीं डरेंगे।

गुनाह नूरतजल्ला मिनें, पोहोंच्या रूहों का जित।
कह्या गुनाह कुलफ मुंह मोतिन, दिल महंमद कुंजी खोलत।। २० ।।

परमधाम के बीच मूल-मिलावा में रूहों को गुनाह लगा। ऐसा नूरनामा में श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद को बताया। उनसे कहा कि यह मोमिन जो मोती हैं, यह गुनाह के कारण ही नहीं बोल रहे हैं। तेरी हकी सूरत तारतम ज्ञान की कुंजी से इनके गुनाह साफकर परमधाम में जागृत करेगी।

Nijanand App

हिसाब जिनों हाथ हक के, अर्स-अजीम के माहें।
अर्स तन बीच खिलवत, ताको डर जरा कहूं नाहें।। २१ ।।

मोमिनों का हिसाब परमधाम में श्री राजजी के हाथ है। जिनके तन मूल-मिलावा में हैं, उनको कहीं पर किसी तरह का जरा भी डर नहीं है।

करी हांसी हकें रूहों पर, जिन वास्ते किया खेल।
रूहों बहस किया इस्क का, बेर तीन देखाया माहें लैल।। २२ ।।

यह तो श्री राजजी महाराज ने रूहों के ऊपर हंसने के वास्ते ही खेल बनाया है और तीन बार बृज, रास और जागनी के खेल दिखाए हैं, क्योंकि रूहों ने परमधाम में इश्क का वार्तालाप किया था।

हक आगूं कहे महंमद, मोहे अर्स में बिना उमत।
हकें दिया प्याला मेहेर का, कहे मोहे मीठा न लगे सरबत।। २३ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज के आगे रसूल साहब ने कहा, हजूर! मुझे अपने भाइयों के बिना श्री राजजी के इश्क का दिया हुआ प्याला भी अभी मीठा नहीं लगता।

हकें दोस्त कहे औलिए, भए ऐसे बुजरक।
इनों को देखे से सवाब, जैसे याद किए होए हक।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मोमिनों को ही खुदाई इलम का ज्ञानी दोस्त कहा है। इनको ऐसी बुजरकी दी है कि दुनियां वालों को जो नफा खुदा के याद करने से मिलता है, वह नफा मोमिनों के दर्शन मात्र से ही मिल जाता है।

जित पर जले जबराईल, पोहोंच्या न बिलंदी नूर।
बिना रूहें इसारतें खिलवत, दूजा ए कौन जाने मजकूर।। २५ ।।

जिस परमधाम के अन्दर जबराईल फरिश्ता नहीं जा सका और कहता है कि मेरे पर (पंख) जलते हैं, उस मूल-मिलावा की रूहों की बातें, रूहों के बिना और कौन जान सकता है?

अलस्तो बे रब कह्या हक ने, तब जवाब दिया रूहन।
कोई और होवे तो देवहीं, ए फुरमान कहे सुकन।। २६ ।।

जब रूहों से श्री राजजी ने कहा कि मैं ही एक तुम्हारा खुदा (खावंद) हूं, तब रूहों ने दृढ़ता के साथ जवाब दिया कि हां, आप ही हमारे खुदा हैं। इस बात की जानकारी मोमिनों के अतिरिक्त और कौन दे सकता है? क्योंकि उनके अतिरिक्त और कोई दूसरा था नहीं। ऐसा कुरान में लिखा है।

तुम रूहें जात नासूत में, जाओगे मुझे भूल।
तब तुम ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल।। २७ ।।

रूहों से श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम मृत्युलोक में जा रहे हो। वहां जाकर मुझे भूल जाओगे। मैं तुम्हारे पास अपने रसूल को भेजूंगा। तब तुम ईमान ले आना।

तुम माहों माहें रहियो साहेद, इत मैं भी साहेद हों।
ए जिन भूलो तुम सुकन, मैं फुरमान भेजों तुमको।। २८ ।।

तुम आपस में गवाह रहना। मैं भी गवाह रहूंगा। इन बातों को तुम भूलना नहीं। मैं तुम्हारे पास कुरान भेजूंगा।

Nijanand App

और साहेद किए हैं फरिस्ते, सो भी देवेंगे साहेदी।
सो रसूल याद देसी तुमें, जो मेरे आगूं हुई इतकी।। २९ ।।

और असराफील फरिश्ता गवाही देगा। रसूल साहब तुम्हें इन बातों को जो मेरे आगे हुई हैं, याद दिलाएंगे।

ऐसी बड़ाई औलियों, हक अपने मुख दें।
कोई याको न जाने मुझ बिना, मैं छिपाए तले कबाए के।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज अपने ही मुख से मोमिनों की महिमा ऐसी बता रहे हैं। हे रूहो! मैंने आज दिन तक तुम्हें दामन के नीचे छिपा रखा है, जिसको मेरे बिना और कोई नहीं जानता है।

मांगी हुकमें रूह की हुज्जतें, दीजे दुनी में लाड़ लज्जत।
सो हक आप मंगावत, कर हांसी जुदाई बीच वाहेदत।। ३१ ।।

अब हुकम ने तुम्हारे नाम से दुनियां में लाड़-लज्जत मांगी, इसलिए श्री राजजी महाराज आप खुद ही मंगवाने वाले हैं और स्वयं ही हंसी के वास्ते जुदाई देने वाले हैं।

कबूं न जुदागी बीच वाहेदत, ए इलमें किए बेसक।
तेहेकीक बैठे तले कदमों, न जुदे रूहें हादी हक।। ३२ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान ने यह संशय मिटा दिए कि परमधाम में कभी जुदाई होती ही नहीं। हम निश्चित रूप से आपके चरणों तले मूल-मिलावा में बैठे हैं। इस तरह से श्री राजश्यामाजी और रूहें अलग नहीं हैं।

हुआ रब्द वास्ते इस्क, सबों बड़ा कह्या अपना।
हकें हांसी करी हादी रूहोंसों, कहे देखो खेल फना।। ३३ ।।

इश्क के वास्ते ही मूल-मिलावा में रब्द (वार्तालाप) हुआ। जहां श्री राजश्यामाजी और रूहों, सभी ने अपने इश्क को बड़ा बताया। अब श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी और रूहों से हंसी के वास्ते झूठे संसार का खेल देखाया।

खेल का जोस आया सबों, इस्क न रह्या किन।
सब चाहें साहेबी खेल की, हक इस्क न नजीक तिन।। ३४ ।।

इसलिए श्री श्यामाजी और रूहों को खेल का जोश चढ़ गया और इश्क किसी के पास नहीं रहा। अब सभी खेल में साहेबी चाहते हैं, इसलिए उनके पास श्री राजजी का इश्क नहीं आता।

था रब्द सबों इस्क का, हक देत फेर फेर याद।
रूहें क्योंए न छोड़ें खेल को, दुख लाग्या ऐसा कोई स्वाद।। ३५ ।।

मूल-मिलावा में सभी ने इश्क का वार्तालाप किया, जिसकी बार-बार श्री राजजी याद दिलाते हैं। संसार के दुःख का स्वाद ऐसा मीठा लग रहा है कि जिससे रूहें खेल को छोड़ना नहीं चाहतीं।

जब देखिए सामी खेल के, तो बीच पड़्यो ब्रह्मांड।
एती जुदाई हक अर्स के, और खेल वजूद जो पिंड।। ३६ ।।

जब खेल की तरफ देखें तो आतम और परआतम के बीच ब्रह्माण्ड खड़ा है। श्री राजजी महाराज और परमधाम की जुदाई में यह संसार का तन ही बाधक बनकर खड़ा है।

Nijanand App

हक इलमें ए पिंड देखिए, ए पिंड बीच अर्स तन।
एक जरा जुदागी ना रही, अर्स वाहेदत बीच वतन।। ३७ ।।

जब जागृत बुद्धि के ज्ञान से माया के शरीर की तरफ देखते हैं, तो इस शरीर से परमधाम के मूल तन दिखाई देते हैं, इसलिए परमधाम में श्री राजजी से एक जर्रा मात्र की जुदाई नहीं है।

जाहेर नजरों खेल देखिए, कहूं नजीक न अर्स हक।
तरफ भी न पाई किनहूं, बीच इन चौदे तबक।। ३८ ।।

अब जाहिरी नजर से खेल को देखें तो परमधाम और श्री राजजी महाराज खेल में कहीं दिखाई ही नहीं देते। चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड में यह जानकारी ही नहीं है कि श्री राजजी महाराज हैं कहां?

जबथें पैदा भई दुनियां, रही दूर दूर थें दूर।
फना बका को न पोहोंचहीं, ताथें कोई न हुआ हजूर।। ३९ ।।

जब से यह दुनियां पैदा हुई है, वह अखण्ड परमधाम से सदा दूर ही दूर रही है। नाशवान संसार का कोई भी अखण्ड को नहीं पहुंच सकता, इसलिए आज दिन तक कोई भी श्री राजजी महाराज के सामने नहीं जा सका।

दोऊ गिरो उतरी दोऊ अर्स से, रूहें और फरिस्ते।
हकें इलम भेज्या इनों पर सो ले दोऊ अर्सों पोहोंचे ए।। ४० ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की दो जमातें परमधाम और अक्षरधाम से खेल में उतरी हैं। श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान इन्हीं के वास्ते भेजा है, जिसके द्वारा दोनों अपने-अपने घर पहुंचेंगी।

आए फरिस्ते नूर मकान से, अर्स अजीम मकान रूहन।
कलाम अल्ला हक इलम, ए आए ऊपर रूह मोमिन।। ४१ ।।

ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम से आई है ब्रह्मसृष्टि परमधाम से। कुरान तथा जागृत बुद्धि का ज्ञान रूहों (मोमिनों) के वास्ते आया है।

दोऊ गिरो जो उतरी, दोऊ अर्सों से आईं सोए।
सो आप अपने अर्स में, बिना लदुन्नी न पोहोंचे कोए।। ४२ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि परमधाम और अक्षरधाम से खेल में आई हैं, इसलिए वह वापस अपने घर में बिना जागृत बुद्धि के ज्ञान के नहीं पहुंच सकतीं।

आप अपने अर्स में, जाए ना सके बिना इलम।
तो फुरमान इलम भेजिया, रूहें दरगाही जान खसम।। ४३ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अपने घर नहीं पहुंच सकतीं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने अपनी परमधाम की अंगनाओं के वास्ते कुरान और जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजा।

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो पकड़या इलम हक।
हक सूरत सुध अर्सों की, रूहों रही न जरा सक।। ४४ ।।

मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के जागृत बुद्धि के ज्ञान को ग्रहण किया, इसलिए इनके दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। अब रूहों के संशय मिट गए हैं। उन्हें क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की तथा श्री राजजी के स्वरूप की पहचान हो गई है।

Nijanand App

सोई मोमिन जाको सक नहीं, और दिल अर्स हक हुकम।
पट खोले नूर पार के, आए दिल में हक कदम।।४५।।

मोमिन वही हैं, जिनके संशय मिट गए हैं और जिनके दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं। हुकम ने अक्षर के पार अक्षरातीत, परमधाम की पहचान करा दी है, जिससे रूहों के दिल में श्री राजजी के चरण आ गए।

पेहेले पट दे खेल देखाइया, दई फरामोसी हांसी को।
दिया बेसक इलम अपना, तो भीं न आवें होस मों।।४६।।

पहले फरामोशी का परदा देकर खेल दिखाया, ताकि रूहों के ऊपर हंसी हो सके। अब अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दे रहे हैं। फिर भी रूहें होश में नहीं आती हैं।

इलमें अंदर जगाइया, तिन में जरा न सक।
कहे हुई है होसी अर्सों की, रूहें बैठी कदम तले हक।।४७।।

जागृत बुद्धि ने उनकी आत्म-दृष्टि खोल दी है। इसमें जरा भी संशय नहीं है। जो बातें कही थीं वह हुई हैं। सब अर्शों (बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम) की पहचान हो गई है। उनको यह भी पहचान हो गई है कि हमारी परआतम श्री राजजी के चरणों तले बैठी है।

इन बातों सक जरा नहीं, तो दिल अर्स कह्या मोमिन।
तो भी टले ना बेहोसी, वास्ते हांसी बीच वतन।।४८।।

इन बातों में जरा भी संशय नहीं रह गया, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। फिर भी मोमिनों की बेहोशी नहीं हटती, क्योंकि परमधाम में हंसी होनी है।

विरहा सुनत रूहें अर्स की, तबहीं जात उड़ तन।
सो गवाए याद कर कर हकें, जो बीतक अर्स वचन।।४९।।

श्री राजजी महाराज के वियोग की बातें सुनकर रूहों के तन छूट जाते, परन्तु श्री राजजी महाराज ने परमधाम की बीती बातों को बार-बार याद कराकर विरह का दु:ख समाप्त कर दिया।

मैं जान्या प्रेम आवसी, विरहे के वचनों गाए।
सो अव्वल से ले अबलों, विरहा गाया लडाए लडाए।।५०।।

मैंने सोचा था कि विरह के वचनों को बार-बार यादकर इश्क आ जाएगा, इसलिए शुरू से आज तक श्री राजजी महाराज के विरह के गीत बड़े प्रेम से गाए।

सो गाए विरहा न आइया, प्रेम पड्या बीच चतुराए।
हांसी कराई हुकमें, वचनों प्यार लगाए।।५१।।

श्री राजजी महाराज के विरह को बार-बार याद किया, इसलिए प्रेम चतुराई में पड़ गया। हुकम से संसार में हमारी हंसी कराई कि हमें श्री राजजी महाराज के वचनों से प्यार लग गया।

सो गाए गाए हुआ दिल सखत, मूल इस्क गया भुलाए।
मन चित्त बुध अहंकारें, गुझ अर्स कह्या बनाए।।५२।।

अब विरह के गीत गाते-गाते हमारा दिल कठोर हो गया है। धनी का इश्क भूल गया। अब मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार से परमधाम की छिपी बातें बना-बनाकर कहती हूं।

Nijanand App

अर्स मता जेता हुता, किया जाहेर नजर में लें।
हमें न आया इस्क सुपने, ए किया वास्ते जिन के।।५३ ।।

हमने परमधाम की छिपी बातों को ध्यान में ले-लेकर खूब जाहिर किया, परन्तु जिस इश्क के वास्ते यह सब कुछ किया, वह इश्क हमें इस सपने के संसार में नहीं मिला।

चौदे तबक बेसक हुए, इन बानी के रोसन।
सो इलम ले कायम हुए, सुख भिस्त पाई सबन।।५४ ।।

हमारे द्वारा जागृत बुद्धि का ज्ञान जाहिर होने से चौदह तबकों के संशय मिट गए। वह ज्ञान को लेकर अखण्ड हो गए। सबको बहिश्त के सुख मिले।

हक खिलवत गाए सें, जान्या हम को देसी जगाए।
इस्क पूरा आवसी, पर हकें हांसी करी उलटाए।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की हकीकत को मैंने जाहिर किया। मैंने जाना था कि हम इससे जागृत हो जाएंगे और पूरा इश्क आ जाएगा, परन्तु श्री राजजी महाराज ने हमारी भावनाओं को उलट दिया और हमारे ऊपर हंसी की है।

जो देते हम को इस्क, तो क्यों सकें हम गाए।
दिल अर्स पोहोंचे रूह इस्कें, तो इत क्यों रह्यो रूहों जाए।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज हमको इश्क दे देते, तो हम कैसे विरह के गीत गाते? हमारी रूह इश्क के द्वारा तुरन्त ही परआतम में पहुंच जाती और फिर रूहें कैसे रहतीं?

सब अंग हमारे हक हाथ में, इस्क मांगें रोए रोए।
सब अंग हमारे बांध के, हक आप करें हांसी सोए।।५७ ।।

हम संसार में आकर रो-रोकर धनी से इश्क मांगते हैं, पर हमारे सब अंग तो धनी के हाथ में हैं, जो उन्होंने बांध रखे हैं, इसलिए हमारे द्वारा इश्क मांगने पर हंसते हैं, हम पर हांसी करते हैं।

हम हुकम के हाथ में, हक के हाथ हुकम।
इत हमारा क्या चले, ज्यों जानें त्यों करे खसम।।५८ ।।

हम यहां खेल में श्री राजजी के हुकम के हाथ में हैं और हुकम श्री राजजी के हाथ में है, इसलिए संसार में हमारा क्या चल सकता है? जैसा श्री राजजी चाहें, वैसा करें।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें भुलाए हांसी कों।
हम दौड़े जान्या लें इस्क, हम को डारे बका इलम मों।।५९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते हमें भुला दिया है। हमने सोचा था हमारे परिश्रम से हमें इश्क मिल जाएगा, परन्तु श्री राजजी महाराज ने हमें परमधाम के अखण्ड ज्ञान में उलझा दिया।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। २०२५ ।।

Nijanand App

बरनन कराए मुझपे, हकें सब अपने अंग।
सो विध विध विवेक सों, सो गाया दिल रूह संग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुझसे अपने सभी अंगों का वर्णन कराया, इसलिए मैंने उसे अपने दिल और रूह के साथ अनेक प्रकार से जाहिर किया।

जो जोरा होए इस्क का, तो निकसे ना मुख दम।
सो गाए के इस्क गमाइया, जोरा कराया इलम।। २ ।।

यदि इश्क की ताकत होती तो मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलता। जागृत बुद्धि के ज्ञान की शक्ति से वियोग गा-गाकर इश्क को गंवा दिया।

इलम दिया याही वास्ते, कहूं जरा न रही सक।
अव्वल से आज लगे, ऐसा कराया हक।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान इसलिए दिया, ताकि किसी प्रकार का संशय न रह जाए। श्री राजजी महाराज ने शुरू से आज दिन तक ऐसा ही मुझसे कराया।

इस्क हमसे जुदा किया, दिया दुनी को सुख कायम।
वचन गवाए हमपे, जो हमेसगी दायम।। ४ ।।

हमसे श्री राजजी महाराज ने इश्क छीन लिया। हमारे द्वारा दुनियां को तारतम ज्ञान दिलाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान कराई। उस वाणी को हमसे गवाया, जिस अखण्ड सुख के हम हमेशा से लेने वाले हैं।

नैन श्रवन या रसना, जो अंग किए बरनन।
तिन इस्क देखाया हक का, और देख्या ना या बिन।। ५ ।।

हमने नेत्र, कान, रसना और श्री राजजी महाराज के अंगों का जो वर्णन किया है, उसमें हमें श्री राजजी महाराज का इश्क ही दिखाई दिया। इश्क के बिना और कुछ नहीं।

जो अंग देखे आखिर लग, तिनसे देखे चौदे तबक।
और काहूं न देख्या कछूए, बिना हक इस्क।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग जो भी मैंने अन्त तक देखे, उससे मुझे चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड की पहचान हो गई कि यह संसार मिथ्या है। श्री राजजी महाराज के किसी भी अंग में सिवाय इश्क के और कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

बूझी तुमारी साहेबी, दिया सब अंगों इस्क देखाए।
तुमारे हर अंगों ऐसा किया, रहे चौदे तबक भराए।। ७ ।।

हे श्री राजजी महाराज! हमने आपकी साहेबी को पहचान लिया है। आपने अपने सभी अंगों के इश्क को दिखा दिया है। अब आपके हर एक अंग ने ऐसा कर दिया है कि मैं चौदह लोकों में आपका इश्क ही भरा देखती हूं।

रसनाएं इस्क देखाइया, तिन भरया जिमी आसमान।
इस्क बिना न पाइए, बीच सकल जहान।। ८ ।।

आपकी जागृत बुद्धि की वाणी ने इश्क दिखलाया। उससे सारी जमीन और आसमान इश्क से भर गया। अब संसार में इश्क के बिना कहीं कुछ नहीं है।

Nijanand App

सब अंग देखे ऐसे हक के, ऐसा दिया इलम।
हक इस्क सबों में पसरया, इस्क न जरा माहें हम।। ९ ।।

अब आपके सभी अंगों को मैंने ऐसा देखा, जैसा आपकी जागृत बुद्धि के ज्ञान ने बताया। अब सारे संसार में इश्क फैल गया है और हमारे अन्दर जरा भी नहीं है। हम कोरे के कोरे हैं।

यों हर अंग हक के, सब सो ए किए रोसन।
आसमान जिमी के बीच में, कछू देख्या न इस्क बिन।। १० ।।

अब श्री राजजी महाराज के सभी अंगों को मैंने संसार में जाहिर किया। अब आसमान और जमीन के बीच में इश्क के बिना इस संसार में कुछ दिखाई नहीं देता।

इस्क हमारा हक सों, दिया हुकमें आड़ा पट।
हक का इस्क हम सों, किया दुनियां में प्रगट।। ११ ।।

हमारे और आपके इश्क के बीच में आपके हुकम ने यह वजूद का आड़ा पट डाल रखा है, इसलिए श्री राजजी महाराज के इश्क को हुकम ने हमसे दुनियां में जाहिर कराया।

यों हांसी हम पर करी, बनाए हमारे अक्स।
इस्क लिया खैंच के, होसी एही हांसी बीच अर्स।। १२ ।।

हुकम से हमारे ऐसे नकली तन बनाकर हमारे ऊपर हंसी की है। हमसे इश्क छीन लिया है। यही परमधाम में हंसी होगी।

हक फेर फेर ऊपर जगावहीं, बिना हुकम न जागे अंदर।
फेर फेर बड़ाई मांगें इत, हक हांसी करें इनों पर।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज बार-बार ऊपर से जगाते हैं, परन्तु अन्दर से हुकम जागने नहीं देता। वह बार-बार संसार में साहेबी मंगवा रहा है, ताकि श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर हंसी कर सकें।

मांगे दुनी में हक लज्जत, सो भी बुजरकी वास्ते।
इलमें हुए यों बेसक, एक जरा न दुनियां ए।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से हम निःसंदेह हो गए और हमें यह पता चल गया कि यह दुनियां कुछ भी नहीं है। फिर भी हमने श्री राजजी महाराज से दुनियां में बुजुरकी मांगी, ताकि इनके बीच हम बड़े कहला सकें।

यों जान मांगें फना मिने, लज्जत दुनी में हक।
यों हुकम हांसी करावहीं, दे अपना इलम बेसक।। १५ ।।

ऐसा जानकर भी हम झूठे संसार में श्री राजजी महाराज की साहेबी की लज्जत (महाराज बनना) चाहते हैं। अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हुकम हमारी ऐसी हंसी कराता है।

आप मंगावें आप देवहीं, ए सब हांसी कों।
ए सब जानें मोमिन, सक नहीं इनमों।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज हम से मंगवाते हैं और आप ही देने वाले हैं। यह सब हंसी के वास्ते है। इस बात को मोमिन जानते हैं। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

Nijanand App

कैयों पेहेचान होवहीं, कैयों नहीं पेहेचान।
सो सब होत हांसीय को, करत आप सुभान।। १७ ।।

कई मोमिनों को पहचान हो गई। कई को नहीं हुई। यह सब हंसी के वास्ते ही श्री राजजी महाराज कर रहे हैं।

ए किया वास्ते इस्क बेवरे, सो इस्क न आया किन।
काहूं जोस जरा आइया, काहूं जरा ना किस तन।। १८ ।।

यह खेल इश्क के विवरण के वास्ते बनाया, इसलिए यहां इश्क किसी को नहीं आया। किसी को जरा सा जोश आया और किसी के तन में कुछ भी नहीं आया।

वास्ते रब्द इस्क के, जो किया बीच खिलवत।
सो हुकम आड़ा सब दिलों, तो इस्क न काहूं आवत।। १९ ।।

मूल-मिलावा में इश्क के वास्ते ही रब्द हुआ था, इसलिए रूहों के दिलों पर हुकम का आड़ा परदा डाल दिया है और किसी को भी इश्क नहीं मिल रहा है।

इलम दिया सबन को, किया अर्स दिल मोमिन।
दूर कर सब हिजाब, आप आए अर्स दिल इन।। २० ।।

सभी मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया और उनके दिल को अपना अर्श किया। हमारे सभी अज्ञानता के परदे हटा करके ही हम मोमिनों के दिल में बैठे हैं।

पेहेचान सब अर्सों की, अर्सों बीच की हकीकत।
सो जरा छिपी ना रखी, सब दई हक मारफत।। २१ ।।

आपने क्षर, अक्षर, अक्षरातीत की सभी अर्शों की पहचान करा दी और उनकी हकीकत बतला दी। अब आपके मारफत के ज्ञान से मोमिनों से कोई बात छिपी नहीं है।

पर इस्क न दिया आवने, वास्ते रब्द के।
हक आए इस्क क्यों न आवहीं, किया हुकमें हांसी को ए।। २२ ।।

परन्तु इश्क रब्द के कारण से ही इश्क नहीं आने दिया। नहीं तो श्री राजजी के आने पर इश्क क्यों नहीं आता? यह हालात हुकम ने हंसी के वास्ते ही बना दिये हैं।

रूहों लज्जत मांगी हकपे, अर्स की दुनियां माहें।
तो इलम दिया सबों अपना, बिना इलम लज्जत नाहें।। २३ ।।

रूहों ने श्री राजजी महाराज से संसार में परमधाम की लज्जत मांगी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने सबको अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दे दिया, क्योंकि बिना इस ज्ञान के लज्जत नहीं मिलती।

जो हक देवें इस्क, तो इस्क देवे सब उड़ाए।
सुध न लेवे वार पार की, देवे वाहेदत बीच डुबाए।। २४ ।।

अब श्री राजजी महाराज ही इश्क दें, तो इश्क से सारा संसार छूट जाए और फिर मूल-मिलावा की एकदिली में गर्क हो जाए। संसार या परमधाम की सुध लेने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

Nijanand App

जब इलम सबों आइया, सो कछू सखती देवे दिल।
तिन सखती तन अर्स की, पाइए लज्जत असल।। २५ ।।

जब सभी को जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया, तो सभी के दिल कुछ कठोर हो गए। उन कठोर दिलों से परमधाम की असली लज्जत का सुख मिला।

हुकम मांगे देवे हुकम, सो सब वास्ते हांसी के।
ए बातें होसी सब खिलवतें, इस्क रब्द किया जे।। २६ ।।

हुकम मंगवाता है और देने वाला भी हुकम ही है। यह सब हंसी के वास्ते ही है। जहां इश्क रब्द किया था, उस मूल-मिलावा में ही बातें होंगी।

अनेक हकें हिकमत करी, सो इन जुबां कही न जाए।
होसी हांसी सबों अर्स में, जब करसी बातें बनाए।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज ने कई तरह की हिकमत कर रखी है जो इस जबान से कही नहीं जाती। हम सबके ऊपर परमधाम में हंसी होगी। उस समय सभी अपनी-अपनी बातें करेंगी।

हकें किया सब हांसीय को, जो जरे जरा माहें खेल।
इस्क रब्द के कारने, तीन बेर आए माहें लैल।। २८ ।।

खेल में जर्रा-जर्रा जो कुछ भी हो रहा है, यह सब श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते ही किया है। इश्क रब्द के कारण ही हम तीन बार खेल देखने रात्रि में आए।

हक हांसी बातें जानें हक, या जाने हक इलम।
इन इलमें सिखाई रूहों, सो बातें अर्स में करसी हम।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज की हंसी की बातों को श्री राजजी महाराज ही जानते हैं या उनकी जागृत बुद्धि का ज्ञान जानता है। इनके इलम ने रूहों को सब कुछ सिखाया है, जिसकी बातें हम परमधाम में करेंगे।

एही खुलासा सब बात का, हकें किया हांसी को।
रेहेता रब्द रूहों इस्क का, सब केहेतियां बड़ा हम मों।। ३० ।।

सब बातों का एक यही सार है कि श्री राजजी महाराज ने यह सब कुछ हंसी के वास्ते किया है। परमधाम में सभी रूहें रब्द के समय अपने इश्क को बड़ा बताती थीं।

याही वास्ते खेल देखाइया, इस्क गया सबों भूल।
फेर के सब सुध दई, भेज फुरमान रसूल।। ३१ ।।

और इस वास्ते यह खेल दिखाया। इश्क हम सब भूल गए। फिर श्री राजजी महाराज ने रसूल साहब के हाथ कुरान भेजकर याद दिलाई।

इनमें इसारतें रमूजें, सो खोल न सके कोए।
कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, इमाम हाथ खोलाया सोए।। ३२ ।।

इस कुरान में श्री राजजी महाराज ने सभी बातें इशारतों में लिखी हैं, जिसे और कोई नहीं खोल सकता। फिर जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी श्री श्यामा महारानी के हाथ भेजी और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी से सारे भेद खुलवाए।

Nijanand App

हांसी याही बात की, किए सब खेल में खबरदार।
तो भी इस्क न आवत, हुई हांसी बे-सुमार।। ३३ ।।

इस तरह से हम सब रूहों को खेल में सावचेत (सतर्क) कर दिया। फिर भी हमको इश्क नहीं आता है। इसी वास्ते ही बेशुमार हंसी होगी।

हक इस्क जाहेर हुआ, खेल माहें दम दम।
और न चौदे तबकों, बिना इस्क खसम।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क खेल में हर किसी को जाहिर हो गया है। चौदह तबकों में श्री राजजी महाराज के इश्क के बिना कुछ भी नहीं है।

ऐसा इलम हकें दिया, हुआ इस्क चौदे भवन।
मूल डार पात पसरया, नजरों आया सबन।। ३५ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ऐसा ज्ञान दिया कि चौदह तबकों में इश्क फैल गया। यहां तक कि पाताल से बैकुण्ठ तक डाल-डाल तथा पत्तों-पत्तों में इश्क दिखने लगा।

तले सात तबक जिमीय के, या बीच ऊपर आसमान।
मूल बिरिख पात फूल फैलिया, सब हुआ इस्क सुभान।। ३६ ।।

इस जमीन के नीचे सात लोक हैं और ऊपर छः आसमान। यहां पाताल से बैकुण्ठ तक सभी जगह श्री राजजी महाराज का इश्क फैल गया है।

नजरों आया सबन के, जब पसरया ए इलम।
तब और न देखे कछू नजरों, बिना इस्क खसम।। ३७ ।।

जब जागृत बुद्धि का ज्ञान फैला, तो सबको पारब्रह्म की पहचान हुई और तब एक उस खसम के इश्क के बिना किसी को और कुछ दिखाई ही नहीं देगा।

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, ऐसी दई बुजरकी रूहन।
ढूंढ़ ढूंढ़ थके चौदे तबकों, पर बका तरफ न पाई किन।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन रूहों के दिल को अर्श कहा है। ऐसी साहेबी रूहों को दी है। चौदह तबकों की दुनियां खोज-खोजकर थक गई, पर अखण्ड घर की खबर किसी को नहीं मिली।

तबक चौदमें मलकूत, ला हवा सुन्य तिन पर।
ता पर बका नूरमकान, जो नूरजलाल अछर।। ३९ ।।

चौदवें लोक में बैकुण्ठ है और शून्य निराकार उसके ऊपर। फिर अखण्ड अक्षरधाम है। जहां के साहेब नूरजलाल (अक्षरब्रह्म) कहलाते हैं।

कई ऐसे खेल पैदा फना, होंए नूरजलाल के एक पल।
इन कादर की कुदरत, ऐसा रखत है बल।। ४० ।।

अक्षरब्रह्म के एक पल में ऐसे कई खेल बनकर मिट जाते हैं। अक्षरब्रह्म की योगमाया इतनी शक्ति रखती है।

Nijanand App

तरफ अर्स अजीम की, कोई जाने ना एक नूर बिन।
पर गुझ मता न जानहीं, जो है नूरजमाल बातन।।४१।।

इस अक्षरब्रह्म के अतिरिक्त परमधाम की बात कोई नहीं जानता। यह अक्षरब्रह्म भी श्री राजजी महाराज के बातूनी गुप्त रहस्यों को नहीं जानते।

सो गुझ हक हादीय का, दिया खेल में बीच मोमिन।
तो दिल अर्स किया हकें, जो अर्स अजीम में इनों तन।।४२।।

वह गुप्त हकीकत श्री राजश्यामाजी की मोमिनों को खेल में मिल गई। इनके मूल तन परमधाम में हैं। उनके ही संसार के दिल में श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया है।

हकें अर्स की सुध सब दई, पाई हकीकत मारफत।
हक हादी रूहें खिलवत, ए बीच असल वाहेदत।।४३।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम की सभी सुध हकीकत और मारफत के ज्ञान से दी, जो श्री राजश्यामाजी और रूहों के मूल-मिलावा में असल तनों के बीच हुई थीं।

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हक इस्क बोले बेसक।
इस्क रब्द वाहेदत में, हक उलट हुए आसिक।।४४।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से मोमिनों को कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने वचनों से जो इश्क का दावा किया था, वही सच्चा है। परमधाम के मूल-मिलावा के इश्क रब्द में कहे अनुसार इस संसार में माशूक श्री राजजी महाराज आशिक बन गए।

|| प्रकरण || २८ || चौपाई || २०६९ ||

हक मेहेबूब के जवाब

रूहों मैं–रे तुमारा आसिक, मैं सुख सदा तुमें चाहों।
वास्ते तुमारे कई विध के, इस्क अंग उपजाओं।।१।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे रूहो! मैं तुम्हारा आशिक हूं और सदा ही तुम्हारे सुख की चाहना करता हूं। तुम्हारे अंगों में इश्क उपजाने के लिए कई तरह के उपाय करता हूं।

मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल।
मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल।।२।।

मैं तुम्हारा आशिक हूं। यह इश्क के शब्द मैंने कुरान में लिखे। मैंने तुम्हें अपना माशूक करके लिखा। इन वचनों पर भी तुमने ध्यान नहीं दिया।

अव्वल बीच और आखिर, लिखे तीनों ठौर निसान।
ए बीतक हम तुम जानहीं, भेजी तुमको पेहेचान।।३।।

कुरान में मैंने शुरू के, बीच के और आखिर के (बृज, रास और जागनी) सभी निशान लिखे हैं। यह मेरे और तुम्हारे बीच बीती बातें हैं। तुम्हें याद कराने के लिए कुरान में लिखीं।

Nijanand App

दो बेर दुनियां नई कर, किन दो बेर डुबाई जहान।
तुमको लैलत कदर में, दो बेर किन बचाए तोफान।।४।।

किसने दो बार दुनियां को डुबोकर (महाप्रलय) दुबारा नई दुनियां बनाई? तुम्हें लैल तुल कदर की इस रात में महाप्रलय में से दो बार किसने बचाया? एक बार हूद-तूफान में गोवर्धन पर्वत के तले बचाया। दूसरी बार योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले जाकर सुरक्षित किया।

फेर तीसरी बेर दुनी कर, जिनमें होसी फजर।
सब विध बेसक करके, तुमें खेल देखाया और नजर।।५।।

अब तीसरी बार फिर से दुनियां नई बनाई, जिसमें तारतम ज्ञान से अज्ञानता का अन्धकार मिटाकर ज्ञान का सवेरा होगा। हर तरह से तुम्हारे संशय मिटाकर तुम्हें जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर आत्मदृष्टि से संसार का खेल दिखाया।

तुम जो अरवाहें अर्स की, साथ हक जात निसबत।
ए जो दोस्ती हक हमेसगी, बीच खिलवत के वाहेदत।।६।।

तुम परमधाम की रूहें हो। तुम मेरी ही अंगना हो। मेरी तुमसे मूल-मिलावा (परमधाम) में अनादि से दोस्ती है।

कोई तरफ न जाने अर्स की, तो मुझे जाने क्यों कर।
नूरजलाल नूर मकाने, एक इने मेरे तरफ की खबर।।७।।

इस संसार में किसी को भी परमधाम की खबर नहीं है, तो मुझे कोई कैसे जानता? अक्षरधाम के अक्षरब्रह्म को ही केवल मेरी खबर थी।

दूजा तरफ तो जानहीं, कोई और ठौर बका होए।
नाहीं क्यों जाने तरफ है की, किन ठौर से तरफ ले कोए।।८।।

यदि कोई और दूसरा अखण्ड ठिकाना होता, तो उसकी जानकारी होती। संसार, जो कुछ है ही नहीं, वह अखण्ड ठिकाने को कैसे जान पाए?

खेल कई कोट एक पल में, देख उड़ावे पैदा कर।
ऐसी कुदरत नूरजलालपे, नूर-मकान ऐसा कादर।।९।।

अक्षरब्रह्म की कुदरत ऐसी शक्तिशाली है कि एक पल में ऐसे कई करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा कर मिटा देती है। ऐसी शक्ति वाला अक्षरधाम है।

ए बातून जो मेरे अर्स का, सो सुध नूर को भी नाहें।
मेरी गुझ अर्स जो खिलवत, तुम इन खिलवत के माहें।।१०।।

मेरे परमधाम के रंग महल की बातूनी (अन्दरूनी) बातों की खबर अक्षरब्रह्म को भी नहीं है। रंग महल के मूल-मिलावा की गुझ (गोपनीय) बातें केवल तुम ही जानते हो, क्योंकि तुम मूल-मिलावा में बैठे हो।

दोस्ती हक हमेसगी, क्यों भुलाए दई मोमिन।
तुम जो रूहें अर्स की, मेरे अर्स के तन।।११।।

हे मोमिनो! मेरी तुमसे अनादि की दोस्ती है। उसे तुमने क्यों भुला दिया? तुम मेरी परमधाम की रूहें हो और मेरे ही परमधाम के अंग हो।

Nijanand App

अंग हादी मेरे नूर से, तुम रूहें अंग हादी नूर।
तो अर्स कह्या तुम दिल को, जो रूहें वाहिद तन हजूर।। १२ ।।

श्यामा महारानी मेरे अंग का नूर हैं। श्यामा महारानी के अंग के नूर से तुम सब हो। तुम एक तन एक दिल होकर मूल-मिलावा में बैठी हो, इसलिए मैंने तुम्हारे दिल को अपना अर्श कहा है।

और भी लिख्या महंमद को, आसमान से तेहेतसरा।
ए बहुविध बेहेरुल हैवान, जल सिर लग कुफर भरया।। १३ ।।

कुरान में यह भी मैंने लिखा है कि पाताल से आसमान तक बहुत तरह के जानवरों का सागर है, जिनके सिर तक कुफ्र ही कुफ्र भरा है।

कई विध के माहें हैवान, कई जिन देव इन्सान।
बीच मरजिया होए काढ़ी सीप, मिने मोती महंमद पेहेचान।। १४ ।।

इस तरह कई तरह के जानवरों में कई प्रेत हैं (भूत हैं) कई देव हैं, कई इन्सान हैं। ऐसे भवसागर में से मैंने मरजिया (समुद्र में गोता लगाने वाला) बनकर मोती की सीप को निकाला और जिसमें से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी (इन्द्रावती की आत्मा) को पहचान कर निकाला।

सो तुम अजूं न समझे, मैं कर लिख्या मासूक।
ए सुकन सुन तुम मोमिनों, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक।। १५ ।।

तुम अभी तक यह नहीं समझे कि मैंने तुमको माशूक क्यों लिखा? इन वचनों को सुनकर भी हे मोमिनो! हाय! हाय! तुम्हारे टुकड़े क्यों नहीं हो गए?

बसरी मलकी हकी लिखी, आई महंमद तीन सूरत।
एक अव्वल दो आखिर, सो वास्ते तुम उमत।। १६ ।।

बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की तीन सूरतें आएंगी, ऐसा कुरान में लिखा। एक बसरी सूरत पहले आएगी और दो मलकी और हकी सूरतें बाद में तुम रूहों के वास्ते ही आएंगी।

बंदगी मजाजी और हकीकी, ए जो कहियां जुदियां दोए।
एक फरज दूजा इस्क, क्यों न देख्या बेवरा सोए।। १७ ।।

खुदा की बन्दगी दो तरह की कुरान में कही है। एक झूठी बन्दगी और दूसरी सच्ची। झूठी बन्दगी शरीयत (कर्मकाण्ड) की फर्ज बन्दगी कहलाती है और दूसरी हकी बन्दगी इश्क की कहलाती है।

ए जो फरज मजाजी बंदगी, बीच नासूत हक से दूर।
होए मासूक बंदगी अर्स में, कही बका हक हजूर।। १८ ।।

शरीयत की (कर्मकाण्ड की) झूठी बन्दगी फर्ज की बन्दगी होती है। वह इस संसार में होती है और हक से दूर करती है। हकीकत की बन्दगी माशूक मोमिन परमधाम (रंग महल) की करते हैं, इसलिए वह अखण्ड की हजूरी बन्दगी होती है।

दोस्ती कही हक की, तिन में समनून पातसाह।
पातसाह कौन होए बिना मासूक, देखो इस्म कुरान खुलासा।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा के दोस्तों में से समनून बादशाह होगा। अब हे मोमिनो! विचार करके देखो कि तुम्हारे बीच समनून बादशाह दोस्ती निभाने वाला कौन है? अब समनून नाम को देखो। वह मैं ही तुम्हारा माशूक हूं। यह कुरान का खुलासा है।

Nijanand App

अव्वल दोस्ती हक की, लिखी माहें फुरमान।
पीछे दोस्ती बंदन की, क्यों करी ना पेहेचान।। २० ।।

कुरान में लिखा है कि दोस्ती पहले श्री राजजी महाराज की होगी। पीछे उनके बन्दे रूह मोमिनों की होगी। इस बात को तुमने क्यों नहीं पहचाना?

मैं कदीम लिखी मेरी दोस्ती, ए किए न सहूर सुकन।
तुमको बेसक किए इलम सों, हाए हाए अजूं याद न आवे रूहन।। २१ ।।

कुरान में मैंने खुदा और मोमिनों के बीच अनादि काल की दोस्ती लिखी है। इन वचनों का विचार किसी ने नहीं किया। अब तुमको हमने जागृत बुद्धि की अखण्ड तारतम वाणी से संशय रहित कर दिया। हाय! हाय! रूहो! तुमको फिर भी याद नहीं आती?

दोस्त मेरे मोमिन, और मासूक हादी बेसक।
तो नाम लिख्या अपना, मैं तुमारा आसिक।। २२ ।।

मैंने कुरान में मोमिनों को अनादि का दोस्त और श्री श्यामाजी को माशूक करके लिखा तथा अपना नाम आशिक लिखा है।

मैं लिख्या है तुम को, जो एक करो मोहे साद।
तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद।। २३ ।।

मैंने कुरान में तुमको लिखा है कि यदि तुम केवल एक मुझे ही (सबको छोड़कर) रिझा लो, तो मैं तुम्हारे आगे दस बार 'जी-जी' करके तुम्हें याद करूंगा।

और भी लिख्या मैं तुमको, मैं करत तुमारी जिकर।
मेरी तुम पीछे करत हो, क्यों कर ना देखी फिकर।। २४ ।।

मैंने कुरान में यह भी लिखा है कि खुदा को केवल अपनी रूहों की ही फिक्र है, अर्थात् मुझे सदा आपका ही ध्यान है। तुम मेरी बाद में फिक्र करते हो। इस बात को तुमने ध्यान से कुरान में नहीं देखा।

ए जो मैं लिखी बुजरकियां, सो है कोई तुम बिन।
जित भेजों मासूक अपना, जो चीन्हे मेरे सुकन।। २५ ।।

मैंने जो कुरान में तुम्हारी महिमा गाई है, तुम उसे विचार कर देखो कि तुम्हारे बिना कोई और है, जो मेरे वचनों को पहचाने, जिसके लिए मैंने अपने माशूक श्री श्यामाजी महारानी को भेजा।

मैं किन पर भेजों इसारतें, पढ़ी जाएं न रमूजें किन।
तुम जानत हो कोई दूसरा, है बिना अर्स रूहन।। २६ ।।

मैंने कुरान में जो इशारतें लिखी हैं, उन्हें दूसरा कौन समझ सकता है? तुम जानते हो कि परमधाम में रूहों के बिना और कौन दूसरा है?

ए जो औलाद आदम की, सब पूजत हैं हवा।
सो जाहेर लिख्या फुरमान में, क्या तुम पाया न खुलासा।। २७ ।।

यह सारी दुनियां आदम की औलाद है। सब निराकार को पूजने वाले हैं। यह बात कुरान में जाहिर लिखी है, तो क्या तुमने इसको नहीं समझा?

Nijanand App

ए जो दुनियां खेल कबूतर, तित भी दिए कुलफ दिल पर।
पावे हकीकत कलाम अल्लाह की, सो खुले ना लदुन्नी बिगर।। २८ ।।

यह दुनियां खेल के कबूतर के समान झूठी है। ऊपर से इनके दिलों पर ताले लगे हैं। कुरान की हकीकत को जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना नहीं जाना जा सकता।

सो तो दिया मैं तुम को, सो खुले ना बिना तुम।
जो मेरी सुध द्यो औरों को, तित चले तुमारा हुकम।। २९ ।।

वह जागृत बुद्धि मैंने तुमको दी है, इसलिए कुरान के छिपे भेदों को और कोई नहीं खोल सकता। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान से दुनियां को मेरी पहचान कराओ, तो फिर हुकम तुम्हारा चलेगा।

ए सुकन हकें अव्वल कहे, अर्स में महंमद को।
केतेक जाहेर कीजियो, बाकी गुझ रखियो दिल मों।। ३० ।।

यह बातें परमधाम में रसूल साहब को शुरू में ही मैंने कही थीं और आदेश दिया था कि इनमें से कुछ जाहिर करना और कुछ गुप्त रखना और बाकी दिल में रखना।

सरा सुकन कराए जाहेर, गुझ रखे बका बातन।
मूंद्या रख्या द्वार मारफत का, वास्ते पेहेचान अर्स रूहन।। ३१ ।।

शरीयत के वचन कुरान में जाहिर कराए। अखण्ड घर की हकीकत की बातें गुप्त रखीं। मारफत के ज्ञान के दरवाजे तो बन्द ही रखे, ताकि जब परमधाम की रूहें आएंगी तो वही इनकी पहचान कराएंगी।

पट बका किने न खोलिया, कई अवतार हुए तीर्थंकर।
हक इलम बिना क्योंए ना खुले, कई लाखों हुए पैगंमर।। ३२ ।।

कई अवतारी पुरुष और तीर्थंकर हो गए, पर अखण्ड दरवाजे आज तक किसी ने नहीं खोले। लाखों पैगम्बर और भी हो गये हैं, पर जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना कोई भी इसे नहीं खोल सका।

अर्स बका पट खोलसी, आखिर बखत मोमिन।
साहेब जमाने की मेहेर से, दिन करसी बका रोसन।। ३३ ।।

आखिरत के समय मोमिन आएंगे और वही अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे। वह आखिरी जमाने के खावंद इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की मेहर से अज्ञानता का परदा हटाकर अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे।

राह देखाई तौहीद की, महंमद चढ़ उतर।
सो ए तुमारे वास्ते, क्यों न देखो सहूर कर।। ३४ ।।

रसूल साहब ने परमधाम जाने का रास्ता बताया। यह सब तुम्हारे वास्ते ही किया है। इसे तुम विचारकर क्यों नहीं देखते हो?

और जो पैदा जुलमत से, सो तुम जानत हो सब।
ए क्यों छोड़ें हवा को, जिनों असल देख्या एही रब।। ३५ ।।

जो दुनियां निराकार से पैदा है, इसकी हकीकत तुम सब जानते हो। जिन्होंने निराकार को ही खुदा मान लिया है, वह निराकार को कैसे छोड़ सकते हैं?

Nijanand App

इलम लदुन्नी तुमपे, जिन पेहेले पाई खबर।
और न कोई वाहेदत बिना, तो इत आवेंगे क्यों कर।। ३६ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारे पास ही जागृत बुद्धि का ज्ञान है। अखण्ड परमधाम की खबर तुमको ही सबसे पहले मिली। तुम्हारे बिना मूल-मिलावा में दूसरा आ ही कैसे सकता है?

मेयराज हुआ महंमद पर, सो कौल अर्स बका के।
सो साहेदी के दो एक सुकन, बीच मुहककों पसरे।। ३७ ।।

रसूल साहब को मेयराज (दर्शन) हुआ, उन्होंने कुरान में आकर परमधाम के वायदे लिखे। उन वायदों के दो एक वचन रसूल के अनुयाइयों में फैले।

बका सुकन सब मेयराज के, जाहेर किए सब में।
सब अर्स बका मुख बोलहीं, और सुकन ना गिरो से।। ३८ ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की सब बातें संसार में आकर जाहिर कीं। अब मोमिनों की जमात अखण्ड परमधाम के अतिरिक्त मुख से और कोई शब्द नहीं बोलेंगे।

सो खासी गिरो महंमद की, तामें ए बात होत निस दिन।
मुख छोटे बड़े एही सुकन, और बोले न बका बिन।। ३९ ।।

अब आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की ब्रह्मसृष्टियों की जमात सुन्दरसाथ में रात-दिन इसी की चर्चा होती है। छोटे-बड़े सभी के मुख से अखण्ड परमधाम के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं निकलते।

बका सब्द मुख सब के, सो इलम सब में गया पसर।
सब्द फना को न देवे पैठने, ऐसा किया बखत रूहों आखिर।। ४० ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान सबके अन्दर फैल गया है, इसलिए परमधाम के अतिरिक्त और कोई चर्चा ही नहीं होती। आखिर वक्त में ब्रह्मसृष्टियों ने कोई झूठा ज्ञान अपने अन्दर नहीं आने दिया।

सब्द फना गए रात में, किया बका सब्दों फजर।
कुफर अंधेरी उड़ गई, बोल पाइए न बका बिगर।। ४१ ।।

संसार के अज्ञानता के सभी ज्ञान अन्धकार में छिप गए। परमधाम की अखण्ड जागृत बुद्धि के ज्ञान ने सवेरा कर दिया। झूठ और फरेब सब समाप्त हो गये। अब अखण्ड परमधाम की चर्चा के सिवाय कुछ और सुनाई नहीं देता।

ए कह्या था अव्वल, रसूलें इत आए।
सो रूहें रूहअल्ला इमाम, फजर करी बनाए।। ४२ ।।

यह भी रसूल साहब ने पहले से आकर कहा था, तो उनके कहे अनुसार ही रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने आकर ज्ञान का सवेरा किया।

अव्वल कह्या इलम ल्यावसी, आया तिनसे ज्यादा बेसक।
सो नीके लिया मोमिनों, पाई अर्स मारफत हक।। ४३ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि जागृत बुद्धि का ज्ञान श्री श्यामा महारानी लाएंगी। उससे भी ज्यादा ज्ञान (कुलजम सरूप) श्री प्राणनाथजी लाए। मोमिन इसे अच्छी तरह से समझेंगे और परमधाम की मारफत के ज्ञान की पहचान इनको मिलेगी।

Nijanand App

ए इलम लिए ऐसा होत है, आप बेसक होत हैयात।
और कायम हुए देखे सबको, पावे दीदार बातून हक जात।। ४४ ।।

इस जागृत बुद्धि के ज्ञान को ग्रहण करने से आदमी स्वयं निःसंदेह होता है। अखण्ड हो जाता है। फिर सारी दुनियां की अखण्ड होने की बात को समझता है। हकजात मोमिनों की पहचान कर दर्शन करता है।

देखी अपनी भिस्त आप नजरों, जो होसी बका परवान।
सब करम काटे हक इलमसों, ए देखी बेसक मेहेर सुभान।। ४५ ।।

मोमिनों के सारे जीव अखण्ड होंगे। वह अपनी नजर से अपनी बहिश्त देखेंगे। श्री राजजी महाराज की मेहर से जागृत बुद्धि के ज्ञान से उनके सभी संसार के कर्म बन्धन कट जाएंगे।

हक तरफ जानें नूर अछर, और दूजा न जाने कोए।
पर बातून सुध तिन को नहीं, हक इलम देखावे सोए।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज की पहचान अक्षरब्रह्म को है और दूसरा कोई नहीं जानता, परन्तु बातूनी बातों की सुध अक्षरब्रह्म को भी नहीं थी, जो अब जागृत बुद्धि का ज्ञान दे रहा है।

कई सुख कायम इन इलम में, आवें न माहें हिसाब।
हक सुराही बका खिलवत में, ए इलम पिलावे सराब।। ४७ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी में कई अखण्ड सुख बेशुमार हैं, बेहिसाब हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज के अखण्ड मूल-मिलावा में दिल की सुराही से इश्क के प्याले शराब (इश्क) पिलाते हैं।

सो मैं भेज्या तुमें मोमिनों, देखो पोहोंच्या इस्क चौदे तबक।
ऐसा इस्क मेरा तुमसों, इनमें पाइए न जरा सक।। ४८ ।।

हे मोमिनो! वह इश्क मैंने तुम्हारे वास्ते चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में भेजा है। मेरा तुमसे इतना अधिक प्यार है कि तुम्हें इसमें जरा भी संशय नहीं आएगा।

यों किया वास्ते ईमान के, आवे आखिर रूहन।
सो आए हुआ सबों रोसन, जाहेर बका अर्स दिन।। ४९ ।।

आखिर के समय रूहों को ईमान आए, इसलिए यह किया है। अब वह इलम और इश्क सबमें जाहिर हो गया। अखण्ड परमधाम की पहचान सबको होगी।

अव्वल से बीच अब लग, तरफ पाई न बका की।
महंमद एता ही बोलिया, जासों ईसा पावें साहेदी।। ५० ।।

आदि से आज तक परमधाम की खबर किसी को नहीं थी। रसूल साहब ने भी इतना ही बताया, जिससे श्री श्यामा महारानी को गवाही मिल जाए।

सो लई रूहअल्ला साहेदी, दूजी साहेदी आप दई।
त्यों करी इमामें जाहेर, ज्यों सब में रोसन भई।। ५१ ।।

श्री श्यामा महारानी ने कुरान की गवाही को लिया और दूसरे स्वयं अपनी भी गवाही दी। फिर उसी तरह से इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने जैसे गवाहियां लिखी थीं, सारी हकीकत को जाहिर किया।

Nijanand App

लई ईसे महंमद की साहेदी, बका जाहेर किया इमाम।
हक हादी रूहन की, करी खिलवत जाहेर तमाम।।५२।।

रसूल साहब और श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) की गवाही लेकर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने अखण्ड परमधाम को जाहिर किया। उन्होंने श्री राजश्यामाजी और रूहों के मूल-मिलावा की सभी बातों को भी जाहिर किया।

इन आखिर दिनों इमाम, बानी बोले न बका बिन।
सो सिर ले सुकन गिरोहने, कायम किए सबन।।५३।।

इस आखिरत के समय में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी अखण्ड परमधाम की वाणी के बिना और कुछ नहीं बोलते हैं। उनकी वाणी को ब्रह्मसृष्टियों ने सिर चढ़ाया और सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड किया।

दुनियां चौदे तबक के, दिए इलमें मुरदे उठाए।
ताए मौत न होवे कबहूं, लिए बका मिने बैठाए।।५४।।

इनकी जागृत बुद्धि की वाणी से चौदह लोक के मुर्दे जिन्दा हो गए। अब वह कभी नहीं मरेंगे। उनको अखण्ड मुक्ति मिल गई है।

बड़ाई इन इलम की, क्यों इन मुख करों सिफत।
सो आया तुममें मोमिनों, जाको सब्द न कोई पोहोंचत।।५५।।

इस जागृत बुद्धि की वाणी की महिमा इस मुख से कैसे करें? मोमिनो! ऐसा अदभुत ज्ञान तुमको मिल गया है जिसकी महिमा करने के लिए संसार में कोई शब्द ही नहीं है।

और सराब मेरी सुराही का, सो रख्या था मोहोर कर।
सो खोलने बोहोतों किया, पर क्यों खोलें कबूतर।।५६।।

श्री राजजी महाराज कह रहे हैं कि मेरे दिल की सुराही में शराब (इश्क) मोहर बन्द कर रखी थी। जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न बहुतों ने किया, पर यह संसार के झूठे जीव जो खेल के कबूतर की तरह हैं, कैसे पा सकते हैं?

सो रख्या तुमारे वास्ते, सो तुमहीं ल्यो दिल धर।
लिखे फूल प्याले तुम ताले, अछूत पियो भर भर।।५७।।

हे मोमिनो! इस इश्क को मैंने तुम्हारे वास्ते ही सुरक्षित रखा है। अब तुम जी भर के पियो। यह इश्क के प्याले तुम्हारे ही नसीब में लिखे हैं। आज तक कोई इन्हें छू नहीं सका। अब तुम इन प्यालों में धनी के इश्क को पीयो।

सराब मेरी सुराही का, सो रूहों मस्ती देवे पूरन।
दे इलम लदुन्नी लज्जत, हक बका अर्स तन।।५८।।

मेरे दिल की सुराही का इश्क रूहों को पूरी मस्ती देगा। यह अखण्ड वाणी अखण्ड परमधाम के तनों की और श्री राजजी महाराज की लज्जत भी देगी।

Nijanand App

जो बैठे हैं होए पहाड़ ज्यों, सो उड़ाए असराफीलें सूर।
सूरें खोले मगज मुसाफ के, हुए जाहेर तजल्ला नूर।।५९ ।।

संसार में बड़े-बड़े धर्मों के ठेकेदार, आचार्य, गादीपति, इत्यादि पहाड़ बने बैठे थे। असराफील ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से इन्हें उड़ा दिया। अब असराफील की वाणी ने कुरान के सारे रहस्य खोल दिए। परमधाम की पहचान सबको हो गई।

तब उड़े काफर हुते जो पहाड़ से, हुए मोमिनों बान चूर।
लगे और बान अर्स इलमें, तिन हुए कायम नूर हजूर।।६० ।।

तब संसार के धर्माचार्य, गादीपति जो पहाड़ों के समान काफिर बनकर बैठे थे, वह रूहों की वाणी से चकनाचूर हो जाएंगे। परमधाम की तारतम वाणी के बाण उनको चुभेंगे और फिर वाणी के तीरों से घायल होकर अक्षरब्रह्म की नजर में बहिश्तों में अखण्ड हो जाएंगे।

जो लिखी सिफतें फुरमान में, सो सब तुम अर्स रूहन।
और सिफत तो होवहीं, जो कोई होवे वाहेदत बिन।।६१ ।।

कुरान में जो महिमा गाई गई है, वह सब परमधाम की रूहों के वास्ते है। यह सिफत तो तुम्हारे सिवाय और किसी की तब होती, यदि तुम्हारे अतिरिक्त कोई और होता।

चौदे तबक पढ़ पढ़ गए, किन खोली नहीं किताब।
इसारतें रमूजें क्यों खुलें, देखो किन खोलाई दे खिताब।।६२ ।।

चौदह तबकों के लोग पढ़ते ही रह गए, परन्तु कुरान के रहस्य किसी ने नहीं खोले। फिर वह इशारतें और रमूजें खुल भी कैसे सकती थीं ? अब तुम विचार करके देखो कि किसने तुमको अपनी साहेबी देकर कुरान के रहस्य खुलवाए।

मुकता हरफ तुम वास्ते, अखत्यार दिया हादी पर।
जो चौदे तबक दुनी मिले, तो माएने होए न हादी बिगर।।६३ ।।

अलिफ-लाम-मीम के हरफे मुक्तआत तुम्हारे वास्ते ही हमने लिखे, जिसको खोलने का अधिकार श्री प्राणनाथजी को दिया। उनके अतिरिक्त चौदह लोकों की दुनियां में कोई नहीं खोल सकता।

जाहेर खिताब हादी पर, दिया वास्ते मोमिन।
सो मुकता हरफ के माएने, होए न लदुन्नी बिन।।६४ ।।

मोमिनों के वास्ते ही इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी को खोलने का खिताब दिया है। इन हरफे मुक्तआत के अर्थ तारतम वाणी के बिना नहीं खुल सकते।

सो दिया लदुन्नी तुम को, तुम खोलो मुकता हरफ।
मैं अर्स किया दिल मोमिन, जाकी पाई न किन तरफ।।६५ ।।

अब वह जागृत बुद्धि का ज्ञान तुमको दे दिया। अब तुम हरफे मुक्तआत के अर्थ खोलो। मैंने मोमिनों के दिल को अर्श किया, जिसकी खबर आज दिन तक किसी को नहीं हुई।

ए जाहेर तुमारा माजजा, पढ़े हरफ कर पढ़ते थे।
ए भेद हक हादी रूहों, बीच खिलवत का जे।।६६ ।।

यह जाहिर में तुम्हारी पहचान कराने वाला चमत्कार है। इल्मी लोग इन हरफों को पढ़ते तो थे, पर इन हरफे मुक्तआत में श्री राजश्यामाजी और रूहें तथा मूल-मिलावा की हकीकत है, यह नहीं जानते थे।

Nijanand App

सो रख्या तुमारे वास्ते, ए खोलो तुम मिल।
दुनी पावे ना इन तरफ को, सो बीच अर्स तुमारे दिल।।६७ ।।

हे मोमिनो! यह सब तुम्हारे वास्ते सुरक्षित रखे थे। अब तुम सब मिलकर इनके अर्थ खोलो। दुनियां वाले तो इन्हें समझ ही नहीं सकते। वह तुम्हारे अर्श दिल में हैं।

हक बका मता जाहेर किया, पर ए समझ्या नाहीं कोए।
कह्या हरफै के बयान में, बिना ताले न पेहेचान होए।।६८ ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड ज्ञान जाहिर कर दिया, परन्तु कोई समझ नहीं सका। इन हरफों की पहचान बिना मोमिनों के नहीं हो सकती।

ए बयान पुकारे जाहेर, इत पोहोंचे ना दुनी सहूर।
ए हादी जानें या अर्स रूहें, हक खिलवत का मजकूर।।६९ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि दुनियां में सोचने की क्षमता है ही नहीं। इसे श्री प्राणनाथजी या परमधाम की रूहें ही जानती हैं, क्योंकि इनमें मूल-मिलावा की हकीकत है।

तरफ भी किन पाई नहीं, पावे तो जो दूसरा होए।
तुम तो बीच वाहेदत के, और जरा न कित काहूं कोए।।७० ।।

दुनियां में तो किसी ने अखण्ड की सुध ही नहीं पाई। इस दुनियां में कोई यदि अखण्ड का होता तो उसे अखण्ड की जानकारी होती। हे मोमिनो! तुम मूल-मिलावा के हो। जहां तुम्हारे अतिरिक्त और कोई है ही नहीं।

तुम जानो हम जाहेर, होएं जुदे हक बिगर।
हम तुम अर्स में एक तन, तुम जुदे होए सको क्यों कर।।७१ ।।

हे मोमिनो! तुमने समझा था कि हम दुनियां में अपने इश्क के बल से श्री राजजी महाराज के बिना ही जाहिर हो जाएंगे। हम जब परमधाम में एक तन हैं, तो तुम हमसे अलग कैसे हो सकते हो?

दुनी जुदे तुमें तो जानहीं, जो तुम जुदे हो मुझ सें।
हम तुम होसी भेले जाहेर, अपन वाहेदत हैं अर्स में।।७२ ।।

यदि तुम मुझसे अलग हो तो दुनियां तुमको अलग समझे। मैं और तुम सब संसार में एक साथ जाहिर होंगे, क्योंकि परमधाम में हम एक तन हैं।

मैं तेहेत-कबाए तुमको रखे, कोई जाने ना मुझ बिन।
तुमको तब सब देखसी, होसी जाहेर बका अर्स दिन।।७३ ।।

मैंने तुमको अपने दामन के नीचे मूल-मिलावा में छिपाकर रखा, जहां मेरे सिवाय और कोई नहीं था। अब अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर होगा, तब सब दुनियां वाले तुमको देखेंगे और तब दुनियां को अखण्ड परमधाम की पहचान होगी।

जब पेहेले मोको सब जानसी, तब होसी तुमारी पेहेचान।
हम तुम अर्स जाहेर हुए, दुनी कायम होसी निदान।।७४ ।।

दुनियां वाले पहले मुझे पहचानेंगे। बाद में तुम्हारी पहचान होगी। हम, तुम और परमधाम जब जाहिर हो जाएंगे, तब दुनियां को निश्चित रूप से अखण्ड मुक्ति मिल जाएगी।

Nijanand App

मैं तुमारा मासूक, तुम मेरे आसिक।
और तुम मासूक मैं आसिक, ए मैं पुकारया माहें खलक।। ७५ ।।

हे रूहो! परमधाम में मैं तुम्हारा माशूक हूं और तुम मेरे आशिक हो। अब संसार में आकर मैंने जाहिर किया कि तुम मेरे माशूक हो और मैं तुम्हारा आशिक हूं।

है को नाहीं कीजिए, सो तो कबूं न होए।
नाहीं को है कीजिए, सो कर न सके कोए।। ७६ ।।

अखण्ड को यदि नष्ट करना चाहें तो कभी भी नहीं कर सकते, क्योंकि यह नष्ट हो ही नहीं सकता। जो नाशवान है उसे अखण्ड करना है। यह भी काम मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं कर सकता।

हक आप काजी होए बैठसी, सो क्या सहूर न किए सुकन।
ला सरीक न बैठे किन में, ना कोई वाहेदत बिन।। ७७ ।।

मैंने कुरान में लिखा है कि मैं स्वयं (खुदा) न्यायाधीश बनकर बैठूंगा। क्या इन वचनों पर तुमने विचार नहीं किया? मैं अपनी रूहों के बिना संसारी नाशवान जीव के तन में नहीं बैठता।

सहूर बिना सब रेहे गया, और सहूर लदुन्नी माहें।
सो तो सूरत हकीय पे, और वाहेदत बिना कोई नाहें।। ७८ ।।

इसका तुमने विचार नहीं किया। विचार जागृत बुद्धि के बिना हो ही नहीं सकता, जो हकी सूरत श्री प्राणनाथजी और रूहों के बिना कहीं नहीं है।

चौदे तबक इतना नहीं, जाके कीजे टूक दोए।
बिना वाहेदत कछूए ना रख्या, क्यों ना देख्या लिख्या सोए।। ७९ ।।

चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड तो इतना छोटा है कि जिसके दो टुकड़े भी नहीं किए जा सकते। मोमिनों के बिना और कुछ है ही नहीं। यह मैंने कुरान में लिखा है। वह तुमने क्यों नहीं देखा?

दई कुंजी सनाखत तुम को, मैं भेज्या मासूक रसूल।
बेसक करियां दे इलम, सो भी गैयां तुम भूल।। ८० ।।

मैंने तारतम ज्ञान की कुंजी देकर श्यामा महारानी को तुम्हारे पास भेजा, ताकि तुम मेरी पहचान कर सको। उन्होंने तारतम वाणी से तुम्हें संशय रहित भी किया, फिर भी तुम मुझे भूल गए।

तुम बैठे जिमी नासूती, आड़ा मलकूत जबरूत।
सात आसमान हवा बीच में, मैं बैठा ऊपर लाहूत।। ८१ ।।

तुम मृत्युलोक में जाकर बैठे हो। मेरे बीच बैकुण्ठ और अक्षरधाम का परदा है। निराकार के बीच भी सात लोक हैं। मैं इन सबसे परे परमधाम में बैठा हूं।

सो दूर राह आसमान लग, बीच ऐसे सात आसमान।
सो भी राह फरिस्तन की, ऊपर जुलमत ला मकान।। ८२ ।।

दुनियां के मृत्युलोक से बैकुण्ठ सात आसमान दूर है। इस रास्ते पर देवी-देवता ही चलते हैं। इसके ऊपर मोह तत्व निराकार है।

Nijanand App

नूर–मकान हुआ तिन पर, राह चले ना नूर पर।
जित पर जले जबराईल, तित वजूद आदम पोहोंचे क्यों कर।। ८३ ।।

अक्षरधाम इसके ऊपर है, जिसके आगे कोई चल ही नहीं पाता, जहां जबराईल नहीं पहुंच सका। वह कहता है कि मेरे पर जलते हैं। वहां आदमी का तन कैसे पहुंच सकता है।

तित पोहोंच्या मेरा मासूक, कई गुझ बातें करी हजूर।
सो फिरया तुम रूहों वास्ते, आए जाहेर करी मजकूर।। ८४ ।।

वहां परमधाम में मेरे माशूक रसूल साहब पहुंचे और हमने आमने-सामने कई गुझ बातें कीं। इन बातों को तुम्हारे वास्ते जाहिर करने के लिए रसूल साहब संसार में लौट गए।

मैं तुम पे भेजी रूह अपनी, अपन एते पड़े थे बीच दूर।
मैं इलम भेज्या बेसक, तुमें दम में लिए हजूर।। ८५ ।।

मैंने तुम्हारे पास अपनी श्यामा महारानी को भेजा, क्योंकि हम बहुत दूर हो गए थे। मैंने जागृत बुद्धि का इलम भेजकर तुम्हारे संशय मिटाए और एक पल में तुम्हें अपने सामने ले लिया।

राह सेहेरग सें देखाई नजीक, दई हादिएं हकीकत।
पुल–सरात सें फिराए के, पोहोंचाए अर्स वाहेदत।। ८६ ।।

इतनी लम्बी दूरी भी सेहेरग से नजदीक कर दी। ऐसा हकीकत का ज्ञान श्री प्राणनाथजी ने दिया जिन्होंने तुम्हें कर्मकाण्ड के बन्धनों से छुड़ाकर अखण्ड परमधाम में पहुंचा दिया।

ऐसे परदेस में बैठाए के, इन बिध लिखी गुहाए।
इन धनी की गुहाई ले ले, हाए हाए उड़त ना अरवाए।। ८७ ।।

तुम्हें परदेश में बिठाकर इस तरह की गवाहियां लिखीं। फिर भी तुम धनी की गवाही ले-लेकर अपने तन को क्यों नहीं छोड़ते?

मैं साख देवाई दोऊ हादियों पे, सो तुमें मिले सब निसान।
अब तो बोले सब कागद, योंही बोली सब जहान।। ८८ ।।

मैंने रसूल साहब से और श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) से गवाहियां दिलवाई, जिनसे तुम्हें अपने घर की सब पहचान हो गई। अब सब धर्मग्रन्थों के भेद खुल गए हैं और सब दुनियां जान गई है।

अब पांचों तत्व पुकारहीं, आई रोड़ें बीच आवाज।
सो सब किए तुम कायम, वास्ते तुमारे राज।। ८९ ।।

अब पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पांचों तत्व पुकार रहे हैं और रसूल साहब की कब्र से गिरे मीनारों की ईंटों से भी आवाज आई है। अब ऐसे मिटने वाले संसार को अपनी साहेबी के वास्ते तुमने अखण्ड किया।

इस्क सबों में अति बड़ा, बका भोम चेतन।
दायम नजर तले नूर के, पेहेचान सबों पूरन।। ९० ।।

परमधाम की सब भूमि अखण्ड और चेतन है, पर वहां इश्क सबसे बड़ा है। अब अक्षर की नजर में अखण्ड होने पर सभी को पूरी पहचान हो गई।

Nijanand App

सो ए करें तुमारी बंदगी, एही इनों जिकर।
इनों सिर हक एक तुम हीं, और कोई ना वाहेदत बिगर।। ९१ ।।

संसार के सब जीव जो अखण्ड होंगे। वह सब तुम्हारी ही लीला की बातें करेंगे, क्योंकि उनको अखण्ड मुक्ति के देने वाले एक तुम ही खुदा हो, इसलिए तुम्हारे बिना और वह कुछ नहीं बोलेंगे।

ए कायम सब आगे ही किए, तुम हादी रूहों वास्ते।
जो देखो अन्दर विचार के, तो रूह साहेदी देवे ए।। ९२ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी और तुम रूहों के आने के कारण ही इन सब जीवों के लिए अखण्ड बहिश्तें कायम कर दी हैं। यदि दिल में विचार करके देखोगे तो तुम्हारी आत्मा भी इस बात की गवाही देगी।

जिन हरबराओ मोमिनों, हुकम करत आपे काम।
खोल देखो आंखें रूह की, जिन देखो दृष्ट चाम।। ९३ ।।

हे मोमिनो! अब तुम किसी काम के लिए जल्दबाजी मत करो। हुकम स्वयं ही सब कुछ काम कर रहा है। तुम अपनी आत्मदृष्टि से देखो। शरीर की नजर से मत देखो।

राज रोज रूहन का, जब पोहोंच्या इत आए।
तखत बैठे साह कहावते, देखो क्यों डारे उलटाए।। ९४ ।।

रूहों के जाहिर होने का जब समय आ गया तो दिल्ली के सिंहासन पर बैठे औरंगजेब बादशाह जो अपने को आलमगीर (दुनियां का खुदा) समझता था, देखो किनके वास्ते किस तरह से उसे तख्त से नीचे पटक दिया।

पैगाम दिए तुम जिन को, जो कहावते थे सुलतान।
सो पटके उसी हुकमें, जिन फेरया हादी फुरमान।। ९५ ।।

जिस औरंगजेब बादशाह के पास बारह मोमिन पैगाम लेकर गए थे और काजियों की सलाह से वह डर गया था और फुरमान को ठुकरा दिया, इसलिए ही हुकम ने उसे सिंहासन से नीचे पटक दिया।

भरत खंड सुलतान कहावते, सो दिए सब फंदाए।
इन विध उरझे आपमें, सो किनहूं न निकस्यो जाए।। ९६ ।।

जो भारतवर्ष के शहंशाह कहलाते थे, वह अपने अहंकार के फंदे में ऐसे उलझ गए। उन्हें कोई निकाल नहीं सका।

उलट पलट दुनियां भई, तो भी देखत नाहीं कोए।
काढ़ ईमान कुफर दिया, ए जो सबे दुनी दीन दोए।। ९७ ।।

औरंगजेब बादशाह दिल्ली का सिंहासन छोड़कर जंगलों में भाग गया। फिर भी दुनियां नहीं देखती। उसका दुनियां और दीन दोनों जगहों से ईमान छीनकर उसे काफिर बना दिया।

हुकमें वेद कतेब में, लिखे लाखों निसान।
सो मिले कौल देखे तुम, हाए हाए अजूं न आवे ईमान।। ९८ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से वेद और कतेब में लाखों निशान लिखे हैं। वह सबके कहे अनुसार समय आ गया। हाय! हाय! मोमिनो, तुमको फिर भी ईमान नहीं आता।

Nijanand App

चाक चढ़ी सब दुनियां, आजूज माजूज हुए जोर।
सो तुम अजूं न देखत, एता पड्या आलम में सोर।। ९९ ।।

सारी दुनियां माया के चक्कर में फंस गई है। दिन और रात उनकी आयु को समाप्त कर रहे हैं। सारे संसार में इतना शोर होने पर भी तुम अभी तक क्यों नहीं देखते हो?

हुकम ल्याया जो हकीकत, सो क्यों कर ना देख्या सहूर।
ल्याया तुमारे अर्स में, हुकम जबराईल जहूर।। १०० ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम जो जागृत बुद्धि के ज्ञान से तुम्हारे घर की हकीकत लाया है। तुम्हारे अर्श दिल में श्री राजजी महाराज का हुकम और जोश आया है।

सिजदा जित सरीयत का, तित आए लिखाई पुकार।
एते किन वास्ते लिखे, ए तुम अजहूं न किया विचार।। १०१ ।।

मक्का मदीने में जहां शरीयत के मानने वाले मुसलमान सिजदा बजाते हैं, वहां से वसीयतनामे लिखवाकर भिजवाए। यह किनके वास्ते भिजवाए? तुमने अभी तक इसका विचार नहीं किया।

किन लिखाए सखत सौगंद, जो सरीयत सामी बल।
तिन सबको किए सरमिंदे, हाए हाए अजूं याद न आवे असल।। १०२ ।।

शरीयत के बादशाह औरंगजेब के पास सौगंध खाकर यह शब्द किसने लिखवाए और फिर किसने सबको शर्मिन्दा किया? हाय! हाय! इतने पर भी तुम्हें अपने असल की याद नहीं आती।

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और अल्ला कलाम।
उठाए दुनी से जबराईल, ल्याया अपने मुकाम।। १०३ ।।

मक्का से बरकत, फकीरों की शफकत तथा कुरान को उठाकर जबराईल इमाम मेंहदी के पास ले आया।

महंमद मेंहेंदी ईसा अहमद, बड़ा मेला इसलाम।
जित सूर फूंक्या असराफीले, होसी चालीस सालों तमाम।। १०४ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ईसा अहमद श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आ गए हैं और निजानन्द सम्प्रदाय का बड़ा भारी मेला भर रहा है, जहां पर जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील कुलजम सरूप की वाणी का बिगुल बजा रहा है। ईसा रूह अल्लाह की बादशाही का यह काम चालीस वर्ष में पूरा हो जाएगा।

किन उठाए हिंदू ठौर सिजदे, किन मिलाए आखिर निसान।
किन खड़े किए मोमिन, कराए पूरन पेहेचान।। १०५ ।।

हिन्दुओं के सभी धर्म-स्थानों की महत्ता किस ने उठा दी और आखिर वक्त के निशान को किसने जाहिर किया? मोमिनों को पूरी पहचान कराकर खड़ा किसने किया?

ए झंडा किने खड़ा किया, ए जो हकीकी दीन।
ए लाखों लोक हिंदुअन के, इनको किनने दिया आकीन।। १०६ ।।

यह हकीकी दीन निजानन्द सम्प्रदाय का झंडा किसने खड़ा किया? लाखों हिन्दुओं को यकीन किसने दिलवाया?

Nijanand App

ए जो द्वार अर्स अजीम का, किन खोल्या कुंजी ल्याए।
इलम लदुन्नी मसी बिना, और काहू न खोल्या जाए।। १०७ ।।

परमधाम का दरवाजा किसने तारतम कुंजी लाकर खोला? श्री श्यामाजी महारानी के तारतम ज्ञान के बिना यह और किसी से खोला नहीं जा सकता था।

ए जो बुजरकी महंमद की, मेयराज हुआ इन पर।
महंमद साहेदी ईसे मेंहेंदी बिना, कोई दूजा देवे क्यों कर।। १०८ ।।

रसूल साहब की साहेबी, जिनको श्री राजजी महाराज का दर्शन हुआ, उनकी बातों की साहेदी को ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) और श्री प्राणनाथजी के बिना दूसरा कौन सत्य करके बताएगा।

उठे दीन सखत बखत में, पसरया सबों में कुफर।
करें रूहें कुरबानी इन समें, ए क्यों होए रसूल रब बिगर।। १०९ ।।

ऐसे सख्त वक्त में जब संसार में सब जगह झूठ ही झूठ फैल गया, तो सभी धर्म समाप्त हो गए। इस समय मोमिन अपनी कुर्बानी देंगे। इसकी जानकारी आखिरी रसूल हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के बिना किसको हो सकती है?

किन सुख देखाय अर्स के, बहु विध बिना हिसाब।
अनुभव अपना देख के, हाए हाए अजूं न उड़या ख्वाब।। ११० ।।

परमधाम के अखण्ड सुख बहुत तरीके के और बिना हिसाब के हैं। यह किसने दिखलाए। हाय! हाय! हे मोमिनो! यह अनुभव करके भी तुम्हारे सपने का तन अभी नहीं छूटता?

उतर आए कही रूहअल्ला, सुख सब अर्सों हकीकत।
पाई हक सूरत की अनुभव, दई निसबत मारफत।। १११ ।।

श्री श्यामाजी ने परमधाम से आकर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की हकीकत बताई है। उन्होंने श्री राजजी महाराज के स्वरूप का अनुभव कराया और अपना मारफत का ज्ञान देकर अंगना होने की पहचान कराई।

बहु विध भेज्या फुरमान, तिन में सब अर्सों न्यामत।
खिलवत वाहेदत सुध भई, और सुध दई कयामत।। ११२ ।।

फुरमान में कई तरह से निशान भेजे हैं, जिनमें सभी अर्शों की (क्षर, अक्षर, अक्षरातीत की) पहचान है, जिससे मूल-मिलावा की, एकदिली की और कयामत की पहचान हुई।

दोऊ हादियों दई साहेदी, मिलाए दिए निसान।
तो भी लज्जत ना पाई रूहों ने, हाए हाए जो एती भई पेहेचान।। ११३ ।।

रसूल साहब और श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने जो हकीकत के निशान बताए थे, उन दोनों के बताए हुए निशानों की पहचान करा दी है। हे रूहों, फिर भी तुमको इतनी पहचान आने पर भी हाय! हाय! तुम्हें लज्जत नहीं आई।

Nijanand App

हौज जोए की साहेदी, और जिमी बाग जानवर।
दई जुदी जुदी दोऊ साहेदी, तो भी दिल गल्या नहीं पत्थर।। ११४ ।।

हौज कौसर, जमुनाजी, परमधाम की जमीन, बगीचे, जानवरों की अलग-अलग गवाही रसूल साहब और श्री देवचन्द्रजी ने दी। फिर भी तुम इतने पत्थर दिल हो गए कि असर नहीं हुआ।

दोए अर्स कहे दोऊ हादियों, कही अर्सों की मोहोलात।
कही अमरद और किसोर, ए अर्स सूरत हक जात।। ११५ ।।

अक्षरधाम, परमधाम की मोहोलातों की हकीकत रसूल साहब और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने बताई। रसूल साहब ने पारब्रह्म के स्वरूप को मोमिनों के वास्ते अमरद कहा और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने किशोर कहा।

भेज्या बेसक दारू हैयाती, तुम पे मेरे हाथ हबीब।
किए चौदे तबक मुरदे जीवते, तुम को ऐसे किए तबीब।। ११६ ।।

मैंने अपनी प्यारी श्यामा महारानी के हाथ अखण्ड कर देने वाली दवाई तारतम ज्ञान भेजा। जिससे तुम ऐसे वैद्य बन गए कि चौदह लोकों के मुर्दे जिन्दा होकर बहिश्तों में अखण्ड हो गए।

न थी हिंमत आप उठे की, सो तुम उठाए चौदे तबक।
ऐसा किया बैठ नासूत में, तुमें इनमें रही न सक।। ११७ ।।

तुम अपने आपको मुर्दा समझ रहे हो। तुमको ऐसी शक्ति दी कि चौदह तबकों के मुर्दे जीव खड़े हो गए। तुमने इतना बड़ा काम मृत्युलोक में बैठकर किया है। इतना होने पर भी तुम्हें दृढ़ता नहीं आई।

ऐसे बेसक होए के, तुमें अजूं न अर्स लज्जत।
एता मता ले दिल में, हाए हाए तुमें दरदा भी न आवत।। ११८ ।।

तुम ऐसे निस्संदेह होने पर भी परमधाम की लज्जत क्यों नहीं ले रहे हो? इतनी न्यामतें दिल में लेकर भी हाय! हाय! तुम्हें अभी तक परमधाम का दर्द क्यों नहीं आता?

हाए हाए ए देख्या बल जुलमत का, दिल ऐसा किया सखत।
ना तो एक साख मिलावते, अर्स अरवा तबहीं उड़त।। ११९ ।।

हाए! हाय! हमने निराकार की शक्ति को इतना बड़ा देखा, जिसने मोमिनों के दिल को कठोर कर दिया। वरना घर की जरा खबर मिलते ही रूहों का तन छूट जाता।

स्याबास तुमारी अरवाहों को, स्याबास हैड़े सखत।
स्याबास तुमारी बेसकी, स्याबास तुमारी निसबत।। १२० ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे मेरी रूहो! तुम्हारी आत्मा को, तुम्हारे पत्थर दिल को तथा तुम्हारे ईमान को और परमधाम की अंगना होने के दावे पर मैं तुम्हें धन्य-धन्य कहता हूं।

धंन धंन तुमारे ईमान, धंन धंन तुमारे सहूर।
धंन धंन तुमारी अकलें, भले जागे कर जहूर।। १२१ ।।

धन्य-धन्य है तुम्हारे ईमान को, तुम्हारे ज्ञान को, तुम्हारी अक्ल को। धन्य-धन्य हैं जो जागृत बुद्धि के ज्ञान को लेकर ऐसे जागे हैं।

Nijanand App

अर्स बताए दिया तुमको, और बताए दई वाहेदत।
सहूर इलम कुंजी सब दई, बैठाए माहें खिलवत।।१२२।।

तुमको परमधाम बताया। मूल-मिलावा बताया। उनका विचार करने के लिए तारतम ज्ञान दिया। फिर तुम्हें मूल-मिलावा में जागृत कर बिठाया।

एता मता जिन दिया, तिन आप देखावत केती बेर।
पर तुमें राखत दोऊ के दरम्यान, ना तो क्यों रहे मोह अंधेर।।१२३।।

इतनी अधिक न्यामतें जिसने दी हैं, उसको तुम कितनी बार याद करते हो? हे मोमिनो! मैं तुम्हें दुनियां और परमधाम में रखे हूं, वरना यह अज्ञान का अंधेरा उड़ जाता।

बड़ाई तुमारी बका मिनें, निपट दई निहायत।
तुमें खुदा कर पूजसी, ऐसी और ना काहू सिफत।।१२४।।

तुम्हारी बुजरकी (महानता) अखण्ड परमधाम की है जो तुम्हें यहां दी है। सारी दुनियां तुम्हें खुदा करके पूजेगी। ऐसी महिमा किसी और की नहीं है।

ऐसी हुई न होसी कबहूं, जो तुम को दई साहेबी।
ए सुध अजूं तुमें ना परी, सुध आगूं तुमें होएगी।।१२५।।

मोमिनों जैसी साहेबी तुमको दी है। ऐसी न कभी हुई है न कभी होगी। अभी तुम्हें इसकी पहचान नहीं आ रही है। आगे इसकी पहचान आएगी।

तुम खेल में आए वास्ते, करी कायम जिमी आसमान।
तिन सब के खुदा तुमको किए, बीच सरभर लाहूत सुभान।।१२६।।

तुम्हारे खेल में आने के कारण ही जमीन और आसमान को अखण्ड किया है। परमधाम में श्री राजजी महाराज के समान दुनियां का खुदा तुमको बनाया है।

सो भी पूजें तुमारे अक्स को, तुम आए असल वतन।
तिन सबकी लज्जत तुमें आवसी, सब तले तुमारे इजन।।१२७।।

यह दुनियां वाले तुम्हारे अक्स (प्रतिबिम्ब) की पूजा करेंगे। तुम तो वापस परमधाम में आ जाओगे। फिर सारी दुनियां में तुम्हारा हुकम चलेगा, जिसकी साहेबी की लज्जत तुम्हें मिलेगी।

ए सब बातें ले दिल में, और दिलको लिख्या अर्स।
भिस्त करी तुम कायम, होसी तामें बड़ा तुमें जस।।१२८।।

इन सब बातों पर विचार करने के बाद ही मैंने तुम्हारे दिल को अर्श लिखा है। तुमने जो बहिश्तें कायम की हैं, उसमें तुम्हें बहुत यश मिलेगा।

तुम दई भिस्त बका ब्रह्मांड को, तिनमें जरा न सक।
किए नाबूद से आपसे, तो भी गुन जरा न देख्या हक।।१२९।।

तुमने ब्रह्माण्ड को बहिश्तों में अखण्ड किया है। इसमें जरा भी शक नहीं है। इस नाचीज दुनियां वालों को तुमने अपने जैसा अखण्ड बनाया। श्री राजजी महाराज के इस एहसान, मेहर को भी तुमने नहीं देखा।

Nijanand App

सो तुमें याद आवसी, ओ तुमें करसी याद।
तुमें पूजें जिमी बका मिने, अजूं इनका केता ल्योगे स्वाद।।१३०।।

अब दुनियां की याद तुम्हें आएगी। दुनियां वाले तुम्हें याद करेंगे। तुम्हें अखण्ड जमीन बहिश्त में पूजेंगे। हे मोमिनो! कब तक झूठी दुनियां का स्वाद लेते रहोगे?

तुम मांगी है बुजरकी, तिनसे कोट गुनी दई।
दे साहेबी ऐसे अघाए, चाह चित्त में कहूं न रही।।१३१।।

तुमने साहेबी मांगी थी। मैंने उससे कोटि गुना दी। तुमको ऐसा तृप्त कर दिया कि तुम्हारे दिल में किसी तरह की चाहना बाकी नहीं रही।

क्यों देवें तुमको साहेबी, बीच जिमी फना मिने।
तिनसे तुमारी उमेदें, होएं न पूरन तिने।।१३२।।

संसार की इस झूठी जमीन में तुमको साहेबी क्यों दें? क्योंकि उनसे तुम्हारी कोई चाहना पूर्ण न होती।

तुम मांगी बीच ख्वाब के, जित आगे अकल चलत नाहें।
धनी देवें आप माफक, याकी सिफत न होए जुबांए।।१३३।।

तुमने संसार में साहेबी मांगी, जहां किसी की अक्ल चलती नहीं है। श्री राजजी महाराज अपने फुरमान से ही यह सब सुख तुम्हें दे रहे हैं। जिसकी सिफत यहां की जबान से नहीं हो पाती।

तुम आए तिन जिमीय में, जिनमें न काहूं सबर।
पेहेलें बिन मांगे दई तुमको, अब होसी सब खबर।।१३४।।

तुम ऐसी जमीन में आए हो, जहां किसी को सन्तोष नहीं है, इसलिए पहले से ही तुमको बिना मांगे ही साहेबी दी है। जिसकी अब पहचान हो जाएगी।

खेल देखाया तिन वास्ते, उपजे तुमको चाह।
ए खेल देख के मांगोगे, जानो होवें हम पातसाह।।१३५।।

खेल तुमको इस वास्ते दिखाया ताकि तुम्हारी चाहना बन जाए। खेल देखकर तुम्हारे दिल में भी इच्छा होगी कि दुनियां में हम भी बादशाह बनें।

सो कई पातसाही जिमी पर, करें पातसाही बीच नासूत।
कई तिन पर इंद्र ब्रह्मा फरिस्ते, तापर पातसाह माहें मलकूत।।१३६।।

मृत्युलोक में बड़े-बड़े बादशाह हुए हैं और उनके ऊपर इन्द्र, ब्रह्माजी और देवी-देवता हैं। उनके ऊपर भगवान विष्णु बादशाह हैं।

कई कोट मलकूत जात हैं, जबरूत के एक पलक।
ए सब पातसाही फना मिने, इनों का खुदा नूर हक।।१३७।।

अक्षरब्रह्म के एक पल में करोड़ों मलकूत (बैकुण्ठ) के शासन मिट जाते हैं। यह सब झूठे संसार के बादशाहों का बादशाह श्री राजजी महाराज का नूरी सत अंग अक्षर है।

Nijanand App

नूरजलाल आवे दीदारें, जो अपन बैठे माहें लाहूतं।
तिन चाह्या देखों रूहों इस्क, तुमें तो देखाया नासूत।। १३८ ।।

हम जब परमधाम में बैठे होते हैं तो अक्षरब्रह्म प्रतिदिन दर्शन करने आते हैं। हे रूहो! उसने तुम्हारे इश्क को देखने की चाहना की थी, इसलिए तुमको मृत्युलोक में भेजकर अक्षर को दिखाया।

तुमें नासूत देख दिल उपज्या, करें पातसाही फना में हम।
मैं दई पातसाही बका मिने, सो अब देखोगे सब तुम।। १३९ ।।

तुमने मृत्युलोक देखकर संसार में बादशाह बनने की चाहना की, इसलिए मैंने तुमको अखण्ड बादशाही दे दी है, जिसे तुम अब देखोगे।

ए सुध तुमको ना हुती, तो तुम थोड़ा मांग्या निपट।
कोट गुना दिया तुमको, खोल देखो अंतर पट।। १४० ।।

पहले तुमको यह खबर नहीं थी, इसलिए तुमने थोड़ा मांगा था। अब तुम आत्मदृष्टि से देखो। मैंने तुम्हें करोड़ों गुना दिया है।

जैसी तुमारी साहेबी, करी मेहेर तिन माफक।
सुध हुए खुसाली होएसी, जो करी अपने मासूक हक।। १४१ ।।

मैंने जितनी बड़ी तुम्हारी साहेबी देखी उतनी बड़ी मेहर की। इसकी सुध होने पर तुम्हें खुशी होगी। जो कृपा श्री राजजी ने हमारे ऊपर की है।

देखो अचरज महामत मोमिनों, जो बेसक हुए हो तुम।
तुमें किन दई एती बुजरकी, दिल अर्स कर बैठे खसम।। १४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! एक बड़ी हैरानी वाली बात देखो कि तुम्हारे संशय मिट गए हैं और तुम्हें इतनी बड़ी साहेबी किसने दी? वह धनी श्री राजजी महाराज तुम्हारे दिल में अर्श कर बैठे हैं।

|| प्रकरण || २९ || चौपाई || २२११ ||

|| प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ||

|| प्रकरण || ४६८ || चौपाई || १६३७६ ||

|| सिनगार सम्पूर्ण ||

Nijanand App